माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थमालायाः

अष्टाविंशतितमो ग्रन्थः ।



जैन-शिलालेखसंग्रहः ।

(प्रथमो भागः)



सम्पादकः—

अमरावतीस्थ किङ्ग एडवर्ड-कालेज-संस्कृताध्यापकः

एम्० ए०, एल्एल्० बी० इत्युपाधिधारी

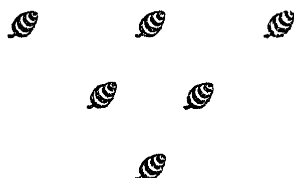
श्रीहीरालालजैनः

प्रकाशिका—

श्रीमाणिकचन्द्र दि० जैनग्रन्थमालासमितिः ।

मूल्यं रूप्यकद्वयम् ।

प्रकाशक —
नाथूराम प्रेमी, मन्त्री—
माणिकचन्द्र जैन ग्रन्थमाला,
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई ।



सिर्फ भूमिका और अनुक्रमणिका आदिके मुद्रक—
मंगेश नारायण कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस,
३१८ ए, ठाकुद्वार, बम्बई ।
और शेष सपूर्ण पुस्तकके मुद्रक—
ए० बोस, इंडियन प्रेस
लिमिटेड, बनारस केण्ट ।

निवेदन

—०—

दिगम्बर जैन सम्प्रदायके शिलालेखों, ताम्रपत्रों, मूर्तिलेखों और ग्रन्थप्रशस्तियोंमें जैनधर्म और जैन समाजके इतिहासकी विपुल सामग्री बिखरी हुई पडी है जिसको एकत्रित करनेकी बहुत है बडी आवश्यकता है। जब तक 'जैनहितैषी' निकलता रहा, तब तक मैं बराबर जैनसमाजके शुभचिन्तकोंका ध्यान इस ओर आकर्षित करता रहा हूँ। परन्तु अभी तक इस ओर कुछ भी प्रयत्न नही हुआ है और जो कुछ थोड़ासा इधर उधरसे हुआ भी है वह नहीं होनेके बराबर है।

बड़ी प्रसन्नताकी बात है कि बाबू हीरालालजीकी कृपा और निस्वार्थ सेवासे आज मेरी एक बहुत पुरानी इच्छा सफल हो रही है और जैन शिलालेखसग्रहका यह प्रथम भाग प्रकाशित हो रहा है। बाबू हीरालालजी इतिहासके प्रेमी और परिश्रमशील विद्वान् है। उनके द्वारा मुझे बड़ी बड़ी आशाये हैं। वे सस्कृतके एम० ए० है। इलाहाबाद यूनीवर्सिटीकी ओरसे उन्हे दो वर्ष तक रिसर्च स्कालर्शिप मिल चुकी है और इस समय अमरावतीके किंग एडवर्ड कालेजमे वे सस्कृतके प्रोफेसर है। कारजाके जैनशास्त्रभण्डारोंका एक अन्वेषणात्मक विस्तृत सूचीपत्र सी० पी० गवर्नमेण्टकी ओरसे आपने ही तैयार किया था, जो मुद्रित हो चुका है। आपकी इच्छा है कि शिलालेखसग्रहके और भी कई भाग प्रकाशित किये जायँ और उनके सम्पादनका भार भी आप ही लेना चाहते है। मुझे आशा है कि माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाकी प्रबन्धकारिणी कमेटी इस भागके समान आगेके भागोंको भी प्रकाशित करनेका श्रेय सम्पादन करेगी। अस्तव्यस्त और जीर्णशीर्ण अवस्थामें पड़े हुए जैन इतिहासके साधनोंको अच्छे रूपमे प्रकाशित करना बडे ही पुण्यका कार्य है।

निवेदक—

नाथूराम प्रेमी



श्री मोदी बालचन्द्रजी

(लेखक के पिता)

समर्पण



पिताजी,

आपने अत्यन्त परिश्रम करके मुझे जो कुछ
विद्यादान व धार्मिक ज्ञान दिलाया है,
उसीके फलस्वरूप यह प्रथम
भेंट आपके करकमलोंमे
सादर समर्पित है।

आपका पुत्र,

हीरालाल

विषय-सूची



PREFACE

The inscriptions at Sravana Belgola, were first collected and published by Mr B Lewis Rice, C I E, M R A S, Director of Archaeological Researches in Mysore, as far back as 1889 A thoroughly revised and enlarged edition of the same was brought out by the late Director of Mysore Archaeological Researches, Práktana Vimarsha Vichakshana Rao Bahadur R Narsinhachar, M A, M R A S While the first edition contained only 144 inscriptions, Rao Bahadur Narsinhachar has brought to light hundreds of other inscriptions from the same locality and his edition contains no less than 500 of them The site may now be said to be more or less thoroughly explored

These inscriptions have a peculiar interest for the historian in so far as all of them are associated in one way or another with the Jain Religion Interest in historical researches has of late been awakened in almost all the important communities of India and it is a happy augury of the times that the Directors of the Manikachandra Digambara Jain Granthamala have decided to include in their distinguished series a set of volumes bringing together in a handy form, all the known inscriptions of the Digambara Jains, thus facilitating the work of the future Jain Historian It was thought suitable and convenient to start this series with a volume of Sravana Belgola inscriptions and the work was entrusted to me

The present edition is based upon the above mentioned two editions It has, thus, nothing new to offer to the scholar, but to the general reader, who is interested in Jain History but who for one reason or another can not go to the previous costly editions in Roman and Kanarese characters, this edition has a few advantages The text of the inscriptions is here presented for the first time in Devanagari characters, the numbers of the inscriptions in the previous

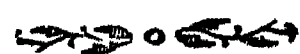
two editions have been given and the verses have been numbered to facilitate reference, the substance of the inscriptions having portions of Kanarese in them has been given in Hindi, all the important information about Sravana Belgola and its surroundings, as contained in the previous two editions is given in the introduction and the historical importance of the inscriptions from the Jain point of view is more thoroughly discussed and the index of the names of Jain monks, poets and works has been separated from the general index

My sincere thanks are due to the Mysore Government and its distinguished Directors of Archaeology, mentioned above, without whose previous labours this edition wou'd have been impossible and to Pandit Nathuram Premi, the able Secretary of the Manikachandra Digambara Jaina Granthamala without whose initiative and encouragement the work would have never been undertaken

AMRAOTI,
King Edward College,
March 21st 1928

HIRALAL

प्राथमिक वक्तव्य



श्रवण बेल्गोल के शिलालेख सबसे प्रथम मैसूर सरकार की कृपासे सन् १८८९ मे प्रकाशित हुए थे। मैसूर पुरातत्त्वविभाग के तत्कालीन अधिकारी लूइस राइस साहब ने उस समय श्रवण बेलगुल के १४४ लेखो का सग्रह प्रकाशित किया। इस सग्रह की भूमिका मे राइस साहबने पहले पहल इन लेखों के साहित्य-सौन्दर्य व ऐतिहासिक महत्व की ओर विद्व समाज का ध्यान आकर्षित किया व चन्द्रगुप्त और भद्रबाहु वाले प्रश्न का विस्तृत विवेचन कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि चन्द्रगुप्त ने यथार्थत भद्रबाहु मुनिसे दीक्षा ली थी व लेख न० १ उन्ही का स्मारक है। तबसे इस प्रश्न पर विद्वानो मे बराबर वादविवाद होता आया है। उक्त सग्रह का दूसरा सस्करण अभी सन् १९२२ इस्वी मे प्रकाशित हुआ है। इस सग्रह के रचयिता प्राक्तनविमर्ष-विचक्षण राव बहादुर आर० नरसिहाचारजी है, जिन्होने श्रवणबेल्गोल के सब लेखो की पुन. सूक्ष्मत जॉच की व परिश्रमपूर्वक खोज करके अन्य सैकडो लेखो का पता लगाया। इस सस्करण मे उन्होने पॉच सौ लेखो का सग्रह किया है व एक विस्तृत व विशद भूमिका मे वहॉ के समस्त स्मारकों का वर्णन व लेखो के ऐतिहासिक महत्त्व का विवेचन किया है।

किन्तु ये सग्रह कनाडी व रोमन लिपिमे प्रकाशित किये जाने व बहुमूल्य होनेके कारण बहुतसे इतिहासप्रेमियो को उनसे कुछ लाभ न हो सका और अधिकाश जैन लेखक इनका उपयोग न कर सके। वास्तवमे इन लेखोका परिशीलन किये बिना आजकल जैन साहित्यिक, धार्मिक व राजनैतिक इतिहास के विषयमे कुछ लिखना एक प्रकारसे अनधिकार चेष्टा है, क्योंकि ये लेख प्राय समस्त प्राचीन दिगम्बर जैनाचार्यों के कृत्यो के प्राचीनतम ऐतिहासिक प्रमाण है। इस प्रकार के समस्त उपलब्ध जैन लेख जब तक सग्रह रूपमें प्रकाशित न हो जॉयगे तबतक प्रामाणिक जैन इतिहास सतोषजनक रीति से नही लिखा जा सकता।

इसी आवश्यकता की भावना से प्रेरित होकर श्रीयुक्त प० नाथूरामजी प्रेमी ने सन् १९२४ मे उक्त लेखोका देवनागरी संस्करण तैयार करने का मुझसे अनुरोध किया। प्रथमत कार्य के भार का ध्यान करके मुझे इसे

स्वीकार करने का साहस न हुआ किन्तु अन्तमें लाचार होकर वह कार्य हाथ मे लेना ही पडा। सन १९२५ मे कार्य प्रारम्भ हुआ। आशा की गई थी कि कुछ मासमे ही कार्य समाप्त हो जावेगा। किन्तु कार्य बडा होने व मेरे अलाहाबाद से अमरावती आ जानेके कारण वह आशा पूर्ण न हो सकी। अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हुई और समय बहुत लग गया। किन्तु हर्षका विषय है कि अन्तत कार्य निर्विघ्न पूण हो गया।

राइस साहब के सग्रह के १४४ लेखो की, श्रीयुक्त बाबू सूरजभानुजी वकील द्वारा कापी की हुई और प० जुगलकिशोर जी मुख्तार द्वारा शुद्ध की हुई एक प्रेस कापी मुझे प० नाथूरामजी द्वारा प्राप्त हुई। प्रथम यह विचार हुआ कि इन्ही लेखो मे नये सस्करण के कुछ चुने हुए लेख सम्मिलित कर प्रथम सग्रह प्रकाशित कर दिया जाय। किन्तु सूक्ष्म विचार करने पर यह उचित न जँचा। किसी न किसी दृष्टिसे सभी लेख आवश्यक जँचने लगे व लेखो का पाठ नये सस्करण के अनुसार रखना आवश्यक प्रतीत हुआ। प्रस्तुत सग्रह मे बड़े परिश्रम से पाठ शुद्ध कर उसे सर्वप्रकार मूलके अनुसार ही रक्खा है। पञ्चमाक्षर भी मूलके अनुसार है यद्यपि इससे कहीं कही शब्दो के रूप अपरिचित से हो गये हैं। किन्तु छापे की कठिनाई के कारण कनाडी भाषा के कुछ वर्णों का भिन्न स्वरूप यहाँ नही दर्शाया जा सका। उदाहरणार्थ, *e*, *e* को यहा 'ए', *o*, *ô* को 'ओ' *r*, *r* को 'र' व *l*, *l*, *l* को 'ल' से ही सूचित किया है। प्रूफ-शोधन मे यथाशक्ति कसर नही रक्खी गई किन्तु फिर भी कुछ छोटी मोटी अशुद्धियाँ आ ही गई है। उल्लेख के सुभीते के लिये लेखो की श्लोक सख्या दे दी गई है। यह बात पूर्व सस्करणो मे नहीं है। जहाँ पर प्रथम और द्वितीय संस्करण के पाठोमे कुछ विचारणीय भिन्नता ज्ञात हुई वहाँ दूसरा पाठ फुटनोटमे दे दिया गया है। बहुत अच्छा होता यदि लेखो का पूरा अनुवाद दिया जा सकता किन्तु इससे ग्रथका आकार बहुत बढ जाता। अतएव जिन लेखो में थोड़ी भी कनाडी आई है उनका हिन्दी भावार्थ देकर ही सतोष करना पडा है। प्रथम १४४ लेख राइस साहब के क्रमानुसार रखकर पश्चात् का क्रम स्वतन्त्रतासे चालू रक्खा गया है। कोष्टक मे नये सस्करण के नम्बर दे दिये गये हैं जिससे आवश्यकता होने पर पहले व दूसरे संस्करण से प्रसगोपयोगी

लेख का सुगमता से मिलान किया जा सकता है। नये संस्करण के पाँच लेख यहाँ दो ही लेखो (७५, ७६)मे आ गये है व लेख न० ३९४ और ४०१–४०६ विशेपोपयोगी न होने के कारण छोड दिये गये हैं। इस प्रकार दस लेखों की जो बचत हुई उनके स्थान मे एपीग्राफिआ कर्नाटिका भाग ५ मे से चुनकर दस लेख सम्मिलित कर दिये गये हैं।

भूमिका का वर्णनात्मक भाग सर्वथा रा० ब० नरसिहाचार के वर्णन के आधार पर ही लिखा गया है किन्तु ऐतिहासिक व आचार्यों के सम्बन्ध का विवेचन बहुत कुछ स्वतन्त्रता से किया गया है। गोम्मटेश्वर मूर्ति की स्थापना का समय निर्णय व शिलालेख न १ का विवेचन नरसिहाचारजी के मतसे कुछ भिन्न हुआ है।

अन्त मे हम मैसूर सरकार व उनके पुरातत्त्व विभाग के सुयोग्य अधिकारी भूतपूर्व राइस साहब व रा० ब० नरसिहाचार के बहुत कृतज्ञ हैं। विना उनकी अपूर्व खोजो और अनुपम प्रयास के जैन इतिहास पर यह भारी प्रकाश पडना व इस पुस्तक का प्रकाशित होना दु साध्य था। हम माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला के मत्री प० नाथूरामजी प्रेमी के विशेष रूपसे उपकृत है। आपके सस्नेह प्रेरण व अपार उत्साह के विना हमसे यह कार्य होना अशक्य था। आपने असाधारण विलम्ब होने पर भी धैर्य रक्खा जिससे ग्रथ सुचारुरूपसे सम्पादित हो सका। पुस्तक के—विशेषत कनाडी अशो के—कम्पोजिंग व प्रूफ शोधन मे प्रेसवालो को भारी कठिनाई और विलम्ब का साम्हना करना पड़ा है किन्तु उन्होने योग्यतापूर्वक इस कार्य को निवाहा। इस हेतु इडियन प्रेस, अलाहाबाद के मैनेजर हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका की अपूर्णताओ और त्रुटियो का ध्यान जितना स्वयं मुझे है उतना कदाचित् हमारे उदार हृदय पाठको को न होगा, किन्तु विषयकी ओर विद्वानो का लक्ष्य दिलाने के हेतु इन त्रुटियो मे पड़ना भी आवश्यक था। यदि इस पुस्तक से जैन ऐतिहासिक प्रश्नो के हल करने मे कुछ भी सहायता पहुँची तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँगा। यदि पाठको ने चाहा और भविष्य अनुकूल रहा तो दक्षिण भारत के जैन लेखोका दूसरा सग्रह भी शीघ्र ही पाठकों की भेंट किया जायगा।

किंग एडवर्ड कालेज, अमरावती,
फाल्गुन शुक्ला ७, सं० १९८४.

हीरालाल

शुद्धिपत्र

(भूमिका)

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	बेल्गोल	वेल्गोल
७	सल्लखना	सल्लेखना
१	१६२४	१२४
१–२	माघनन्दि आचार्यों	माघनन्दि आदि आचार्यो
८	जगदेव के	जगदेव नामक
१३	भटत	भरत
९	वीरद्व	वीर
१०	पदावली	पट्टावली
१५	दयालपाल	दयापाल
४	पुष्पनान्द	पुष्पनन्दि

(लेख)

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०	चौड	चालुक्य
१८	विष्णुवर्द्धनद्वारा	विष्णुवर्द्धनके मन्त्री गगराज [द्वारा
२	विष्णुवर्द्धन नरेश	गगराज मन्त्री
१३	पद्यो	पंक्तियो
१४	एरडु ग्ट्टे वस्ति	एरडुकट्टे वस्तिमे
११	श्रा चामुण्डराज	श्रीचामुण्डराज
१८	रामचल्ल नृप	राचमल्ल नृप
१३	कुलो ङ्ग	कुलोत्तुङ्ग
२	पण्डिताग्य्य	पण्डितार्य्य
अन्तिम	न (३५४)	न ४३४ (३५४)
१२	१८९	१९८
१३	१९७	१९९
१४	२१९ (१२५)	२१९ (११५)
६	२५५ (४१३)	२५५ (४१४)
२	विजयराज्यग्य	विजयराजग्य
१	४७७ (३८६)	४७६ (३८६)

१० वीं पंक्तिके पश्चात् लेखाक ४९१ छूट गया है।

भूमिकामें प्रयुक्त संकेताक्षर

इ. ए =इंडियन एन्टीक्केरी ।

ए इ =एपीग्राफिआ इंडिका ।

ए क.=एपीग्राफिआ कर्नाटिका ।

मै. आ. रि.=मैसूर आर्किलाजीकल रिपोर्ट ।

सा. इ इ =साउथ इंडियन इन्स्क्रिपशन्स ।



श्री गोम्मटेश (बाहूबलि)

(श्रवणबेलगोलकी मुख्य मूर्ति)

"जैनविजय" प्रेस–सूरत ।

श्रवणबेल्गोल के स्मारक

समस्त दक्षिण भारत मे ऐसे बहुत ही कम स्थान होगे जो प्राकृतिक सौन्दर्य में, प्राचीन कारीगरी के नमूनों मे व धार्मिक और ऐतिहासिक स्मृतियों मे 'श्रवणबेल्गुल' की बराबरी कर सके। आर्य जाति और विशेषत: जैन जाति की लगभग अढाई हजार वर्ष की सभ्यता का इतिहास यहाँ के विशाल और रमणीक मन्दिरों, अत्यन्त प्राचीन गुफाओ, अनुपम उत्कृष्ट मूर्त्तियो व सैकडों शिलालेखो मे अङ्कित पाया जाता है। यहाँ की भूमि अनेक मुनि-महात्माओ की तपस्या से पवित्र, अनेक धर्म निष्ठ यात्रियो की भक्ति से पूजित और अनेक नरेशों और सम्राटो के दान से अलकृत और इतिहास मे प्रसिद्ध हुई है।

यहाँ की धार्मिकता इस स्थान के नाम मे ही गर्भित है। 'श्रवण' (श्रमण) नाम जैन मुनि का है और 'बेल्गुल' कनाड़ा भाषा के 'बेल' और 'गुल' दो शब्दो से बना है। 'बेल' का अर्थ धवल व श्वेत होता है और 'गुल' (गोल) 'कोल' का अपभ्रंश है जिसका अर्थ सरोवर है। इस प्रकार श्रवणबेल्गुल का अर्थ जैन मुनियों का धवल-सरोवर होता है। इसका तात्पर्य संभवत: उस रमणीक सरोवर से है जो ग्राम के बीचोबीच अब भी इस स्थान की शोभा बढा रहा है। सात-आठ सौ

वर्ष पुराने कुछ लेखो मे भी इस स्थान का नाम श्वेत सरोवर, धवलसर व धवलसरोवर पाये जाते हैं* ।

'बेल्गोल' नाम लगभग सातवी शताब्दि के एक लेख मे आता है,† और लगभग आठवी शताब्दि के एक दूसरे लेख मे इसका नाम 'बेल्गोल' पाया जाता है‡। इनसे पीछे के अनेक लेखो मे बेलगुल, बेल्गुल और बेलुगुल नाम पाये जाते हैं। एक लेख मे 'देवर बेल्गोल' नाम भी पाया जाता है§ जिसका अर्थ होता है देव का (जिनदेव का) बेल्गोल। श्रवणबेल्गोल के आसपास दो और बेलगोल नाम के स्थान हैं जो हले-बेल्गोल और कोडि-बेल्गोल कहलाते हैं। गोम्मटेश्वर की विशाल मूर्त्ति के कारण इसका नाम गोम्मटपुर भी है+ । कुछ अर्वाचीन लेखों मे दक्षिण काशी नाम से भी इस तीर्थ-स्थान का उल्लेख हुआ है× ।

श्रवणबेल्गोल ग्राम मैसूर प्रान्त मे हासन ज़िले के चेन्नरायपाटन तालुके मे दो सुन्दर पहाडियों के बीच बसा हुआ है। इनमे से बड़ी पहाड़ी (दोड्डुबेट्ट) जो ग्राम से दक्षिण की ओर है 'विन्ध्यगिरि' कहलाती है। इसी पहाडी पर गोम्मटेश्वर की वह विशाल मूर्त्ति स्थापित है जो कोसो की दूरी से यात्रियों की दृष्टि इस पवित्र स्थान की ओर आकर्षित करती है। इसके

---

* देखो लेख न० ५४ और १०८ † देखो लेख नं० १७-१८

‡ देखो लेख न० २४ § देखो लेख नं० १४०

+ देखो लेख न० १२८, १३७ × देखो लेख नं० ३५५, ४८१.

अतिरिक्त कुछ बस्तियाँ (जिन-मन्दिर) भी इस पहाड़ी पर हैं। दूसरी छोटी पहाडी (चिक्क बेट्ट), जो ग्राम से उत्तर की ओर है, चन्द्रगिरि के नाम से प्रख्यात है। अधिकांश और प्राचीनतम लेख और बस्तियाँ इसी पहाडी पर हैं। कुछ मन्दिर, लेख आदि ग्राम की सीमा के भीतर हैं और शेष श्रवणबेल्गोल के आस-पास के ग्रामो मे हैं। अत यहाँ के समस्त प्राचीन स्मारकों का वर्णन इन चार शीर्षको मे करना ठीक होगा—(१) चन्द्रगिरि, (२) विन्ध्यगिरि, (३) श्रवणबेलगोल (खास) और (४) आस-पास के ग्राम। लेख न० ३५४ के अनुसार श्रवणबेल्गोल के समस्त मन्दिरो की सख्या ३२ है अर्थात् आठ विन्ध्यगिरि पर, सोलह चन्द्रगिरि पर और आठ ग्राम मे। पर लेख मे इन बस्तियो के नाम नहीं दिये गये।

चन्द्रगिरि

चन्द्रगिरि पर्वत समुद्र-तल से ३,०५२ फुट की ऊँचाई पर है। प्राचीनतम लेखो मे इस पर्वत का नाम कटवप्र* (सस्कृत) व कल्वप्पु या कलबप्पु† (कनाडी) पाया जाता है। तीर्थ-गिरि और ऋषि-गिरि नाम से भी यह पहाडी प्रसिद्ध रही है‡। इरुवेब्रह्मदेव मन्दिर को छोड इस पर्वत पर के शेष सब

देखो लेख नं० १, २७, २८, २९, ३३, १५२, १५९, १८९

† देखो लेख नं० ३४, ३५, १६०, १६१

‡ देखो लेख नं० ३४, ३५

जिनालय एक दीवाल के घेरे के भीतर प्रतिष्ठित हैं। इस घेरे की उत्कृष्ट लम्बाई ५०० फुट और चौडाई २२५ फुट है। सब मन्दिर द्राविडी ढङ्ग के बने हुए हैं। इनमे से सबसे प्राचीन मन्दिर ईसा की आठवी शताब्दि का प्रतीत होता है। घेरे के भीतर के मन्दिरों की सख्या १३ है। सभी मन्दिरो का ढङ्ग प्राय. एक सा ही है। सभी मे साधारणत एक **गर्भगृह**, एक **सुखनासि** खुला या घिरा हुआ, और एक **नवरङ्ग** रहता है। नीचे इस पहाडी के सब मन्दिरो व अन्य प्राचीन स्मारको का सूक्ष्म वर्णन दिया जाता है —

१ पार्श्वनाथ बस्ति—इस सुन्दर और विशाल मन्दिर की लम्बाई-चौडाई ५९ × २९ फुट है। दरवाजे भारी हैं। नवरङ्ग और सामने के दरवाजे के दोनो ओर बरामदे बने हुए हैं। बाहरी दीवाले स्तम्भों और छोटी-छोटी गुम्मटो से सजी हुई हैं। सप्तफणी नाग की छाया के नीचे भगवान् पार्श्वनाथ की १५ फुट ऊँची मनोज्ञ मूर्त्ति है। इस पर्वत पर यही मूर्त्ति सबसे विशाल है। सामने बृहत् और सुन्दर **मानस्तम्भ** खडा हुआ है जिसके चारो मुखों पर यक्ष-यक्षिणिओं की मूर्त्तियाँ खुदी हैं। कहा नही जा सकता कि इस मन्दिर के निर्माण का ठीक समय क्या है। नवरङ्ग मे एक बडा भारी लेख खुदा हुआ है (लेख नं० ५४) जिसमे शक स० १०५० मे मल्लिषेण-मलधारि देव के समाधि-मरण का सवाद है। पर मन्दिर के निर्माण के विषय की कोई वार्त्ता

लेख मे नहीं पाई जाती। यहाँ के मानस्तम्भ के विषय मे अनन्त कवि-कृत कनाडी भाषा के **'बेल्गोलद गोम्मटेश्वर-चरित'** नामक काव्य मे कहा गया है कि उक्त मानस्तम्भ मैसूर के चिक्क देव-राज ओडेयर नामक राजा (१६७२-१७०४ ईस्वी) के समय मे पुट्टैय नामक एक सेठ-द्वारा निर्माण कराया गया था। इसी काव्य के अनुसार मन्दिर की बाहरी दीवाल भी इसी सेठ ने बनवाई थी। यह काव्य लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना है।

२ कत्तले बस्ति—चन्द्रगिरि पर्वत पर यह मन्दिर सबसे भारी है। इसकी लम्बाई-चौडाई १२४×४० फुट है। गर्भगृह के चारो ओर प्रदक्षिणा है। नवरङ्ग से सटा हुआ एक मुखमण्डप (सभा-भवन) भी है और एक बाहरी बरामदा भी। सामने के दरवाजे के अतिरिक्त इस सारे विशाल भवन मे और कोई खिड़कियाँ व दरवाजे नहीं हैं। बाहरी ऊँची दीवाल के कारण उस एक सामने के दरवाजे से भी पूरा-पूरा प्रकाश नहीं जाने पाता। इसी से इस मन्दिर का नाम कत्तले बस्ति (अन्धकार का मन्दिर) पडा है। बरामदे मे पद्मावती देवी की मूर्त्ति है। जान पडता है, इसी से इस मन्दिर का नाम पद्मावतीबस्ति भी पड़ गया है। मन्दिर पर कोई शिखर नहीं है, पर मठ में इस मन्दिर का जो मान-चित्र है उसमें शिखर दिखाया गया है। इससे जान पड़ता है कि किसी समय यह मन्दिर शिखर-बद्ध रहा है।

मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान् की छ फुट ऊँची पद्मासन मूर्त्ति बडी ही हृदयग्राही है। दोनो बाजुओ पर दो चौरी-वाहक खड़े हैं। मन्दिर के ऊपर दूसरा खण्ड भी है पर वह जीर्ण अवस्था मे होने के कारण बन्द कर दिया गया है। सभा-भवन के बाहरी ईशान कोण पर से ऊपर को सीढियाँ गई हैं। कहा जाता है कि महोत्सव के समय ऊपर प्रतिष्ठित स्त्रियो के बैठने का प्रबन्ध रहता था। आदीश्वर भगवान् के सिंहासन पर जो लेख है (न० ६४) उससे ज्ञात होता है कि इस बस्ति को होयसल-नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति गङ्ग-राज ने अपनी मातृश्री पोचब्बे के हेतु निर्माण कराया था। इससे इसका निर्माण-काल सन् १११८ के लगभग सिद्ध होता है। सभा-भवन पीछे निर्मापित हुआ जान पडता है। इसका जीर्णोद्धार लगभग ७० वर्ष हुए मैसूरराजकुल की दो महि-लाओ—देवीरम्मणि और केम्पम्मणि—द्वारा हुआ है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस पर्वत पर केवल यही एक मन्दिर है जिसके गर्भगृह के चारो ओर प्रदक्षिणा भी है।

३ **चन्द्रगुप्त बस्ति**—यह चद्रगिरि पर्वत पर सबसे छोटा जिनालय है, जिसकी लम्बाई-चौडाई केवल २२ × १६ फुट है। इसमे लगातार तीन कोठे हैं और सामने बरामदा है। बीच के कोठे मे पार्श्वनाथ भगवान् की मूर्त्ति है और दाये-बाये वाले कोठो मे क्रमश पद्मावती और कुष्माण्डिनी देवी की मूर्त्तियाँ हैं। बरामदे के दाहने छोर पर धरणेन्द्रयक्ष और

बाये ओर पर सर्वाह्णयक्ष की मूर्त्तियाँ हैं। सभी मूर्त्तियाँ पद्मासन हैं। बरामदे के सम्मुख जो बहुत ही सुन्दर प्रतोलि (दरवाजा) है वह पीछे निर्मापित हुआ है। इसकी कारीगरी देखने योग्य है। घेरे के पत्थरो पर जाली का काम, जिस पर श्रुतकेवलि भद्रबाहु और मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त के कुछ जीवन-दृश्य खुदे हुए हैं, अपूर्व कौशल का नमूना है। इसी जाली पर एक जगह **'दासोजः'** ऐसा लेख है जो इस प्रतोली के बनानेवाले कारीगर का नाम प्रतीत होता है। इसी नाम के एक व्यक्ति ने लेख न० ५० उत्कीर्ण किया है। यह लेख शक स० १०६८ का है। यदि ये दोनो व्यक्ति एक ही हों तो यह प्रतोली शक स० १०६८ के लगभग की बनी सिद्ध होती है। उपर्युक्त लेख की लिपि भी इसी समय की ज्ञात होती है। मन्दिर के दोनों बाजुओं के कोठों पर छोटे खुदावदार शिखर भी हैं। मध्य के कोठे के सम्मुख सभा-भवन मे क्षेत्रपाल की स्थापना है जिनके सिहासन पर कुछ लेख भी है। इस मन्दिर का नाम चन्द्रगुप्त-बस्ति पडने का कारण यह बतलाया जाता है कि इसे स्वय महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य ने निर्माण कराया था। इसमे सन्देह नहीं कि इस मन्दिर की इमारत इस पर्वत के प्राचीनतम स्मारकों मे से है।

४ **शान्तिनाथ बस्ति**—यह छोटा सा जिनालय २४×१६ फुट लम्बा-चौडा है। इसकी दीवालो और छत पर अभी तक चित्रकारी के निशान हैं। शान्तिनाथ

स्वामी की मूर्त्ति खड्गासन ११ फुट ऊँची है। मन्दिर के बनने का समय ज्ञात नहीं।

५ **सुपार्श्वनाथ बस्ति**—इस मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई २५×१४ फुट है। सुपार्श्वनाथ स्वामी की पद्मासन मूर्त्ति तीन फुट ऊँची है, जिसके ऊपर सप्तफणी नाग की छाया हो रही है। मन्दिर के बनने के विषय की कोई वार्त्ता विदित नहीं है।

६ **चन्द्रप्रभ बस्ति**—इस मन्दिर का क्षेत्रफल ४२× २५ फुट है। चन्द्रप्रभस्वामी की पद्मासन मूर्त्ति तीन फुट ऊँची है। सुखनासि मे उक्त तीर्थंकर के यक्ष और यक्षिणी श्याम और ज्वालामालिनि विराजमान हैं। मन्दिर के सामने एक चट्टान पर '**सिवमारन बसदि**' (२५६) ऐसा लेख है। इस लेख की लिपि से ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः उसमे गङ्गनरेश शिवमार द्वितीय, श्रीपुरुष के पुत्र, का उल्लेख है। शिवमार के द्वारा जिस 'बसदि' (बस्ति) के बनने का लेख मे उल्लेख है, सम्भव है वह यही चन्द्रप्रभ-बस्ति हो, क्योकि इसके निकट अन्य और कोई बस्ति नहीं है। यदि यह अनुमान ठीक हो तो यह बस्ति सन् ८०० ईस्वी के लगभग की सिद्ध होती है।

७ **चामुण्डराय बस्ति**—यह विशाल भवन बनावट और सजावट मे इस पर्वत पर सबसे सुन्दर है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई ६८×३६ फुट है। ऊपर दूसरा खण्ड और

एक सुन्दर गुम्मट भी है। इसमे नेमिनाथ स्वामी की पाँच फुट ऊँची मनोहर प्रतिमा है। गर्भगृह के दरवाजे पर दोनों बाजुओ पर क्रमश. यक्ष सर्वाह्ण और यक्षिणी कुष्माण्डिनी की मूर्त्तियाँ हैं। बाहरी दीवाले स्तम्भो, आलो और उत्कीर्ण या उचेली हुई प्रतिमाओं से अलकृत हैं। बाहरी दरवाजे की दोनों बाजुओ पर नीचे की ओर '**श्रीचामुण्डराज माडिसिद**' (२२३) ऐसा लेख है। इससे स्पष्ट है कि यह बस्ति स्वय गङ्गनरेश राचमल के मन्त्री चामुण्डराज ने निर्माण कराई थी और उसका समय ९८२ ईस्वी के लगभग होना चाहिये। पर नेमिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (६६) कि गङ्गराज सेनापति के पुत्र 'एचण' ने त्रैलोक्यरञ्जन मन्दिर अपरनाम बोप्पणचैत्यालय निर्माण कराया था। यह लेख सन् ११३८ के लगभग का अनुमान किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एचण का निर्माण कराया हुआ चैत्यालय कोई अन्य रहा होगा जो अब ध्वस हो गया है और यह नेमिनाथ स्वामी की प्रतिमा वहाँ से लाकर इस बस्ति मे विराजमान करा दी गई है। मन्दिर के ऊपर के खण्ड मे एक पार्श्वनाथ भगवान् की तीन फुट ऊँची मूर्त्ति है। उनके सिहासन पर लेख है (नं० ६७) कि चामुण्डराज मन्त्री के पुत्र जिनदेव ने बेलगोल में एक जिन-भवन निर्माण कराया। अनुमान किया जाता है कि इस लेख का तात्पर्य मन्दिर के इसी ऊपरी भाग से है जो नीचे के खण्ड से कुछ पीछे बना होगा।

८ शासन बस्ति—मन्दिर के दरवाजे पर जो लेख शासन नं० ५६) है, जान पडता है, उसी से इसका नाम शासनबस्ति पडा है। इसकी लम्बाई-चौडाई ५५ × २६ फुट है। गर्भगृह मे आदिनाथ भगवान् की पॉच फुट ऊँची मूर्त्ति है जिसके दोनों ओर चौरी-वाहक खडे हुए हैं। सुखनासि मे यक्ष यक्षिणी गोमुख और चक्रेश्वरी की प्रतिमाएँ हैं। बाहरी दीवालों मे स्तम्भो और आलो की सजावट है। बीच-बीच मे प्रतिमाएँ भी उत्कीर्ण हैं। आदिनाथ स्वामी के सिहासन पर लेख है (नं० ६५) कि इस मन्दिर को गङ्गराज सेनापति ने "इन्दिराकुलगृह" नाम से निर्माण कराया। दरवाजे पर के लेख मे समाचार है कि शक स० १०३९ फाल्गुण सुदि ५ को गङ्गराज ने 'परम' नाम के ग्राम का दान दिया। यह ग्राम उन्हे विष्णुवर्द्धन नरेश से मिला था। इसी समय से कुछ पूर्व मन्दिर बना होगा।

९ मज्जिगण्णबस्ति—इसकी लम्बाई-चौडाई ३२ × १९ फुट है। इसमे अनन्तनाथ स्वामी की साढे तीन फुट ऊँची प्रतिमा है। बाहरी दीवाल के आसपास फूलदार चित्रकारी के पत्थरो का घेरा है। मन्दिर के नाम से अनुमान होता है कि उसे किसी मज्जिगण्ण नाम के व्यक्ति ने निर्माण कराया होगा। पर समय निश्चित किये जाने के कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं।

१० एरडुकट्टेबस्ति—इस मन्दिर का नाम उसके दायीं और बायीं बाजू पर की सीढियों पर से पडा है। इसकी

लम्बाई-चौडाई ५५ × २६ फुट है। आदिनाथ स्वामी की मूर्त्ति पॉच फुट ऊँची है और प्रभावली से अलकृत है। दोनों ओर चौरी-वाहक खडे हैं। गर्भगृह के बाहर सुखनासि मे यक्ष और यक्षिणी की मूर्त्तियाँ हैं। आदिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (नं० ६३) कि इस मन्दिर को गङ्गराज सेनापति की भार्या लक्ष्मी ने निर्माण कराया था।—

११ सवतिगन्धवारणबस्ति—होय्सलनरेश विष्णुवर्द्धन की रानी का नाम शान्तल देवी और उपनाम 'सवतिगन्धवारण' (सौतो के लिए मत्त हाथी) था। इसी पर से इस मन्दिर का यह नाम पडा है। साधारणत· इसे गन्धवारण-बस्ति कहते हैं। मन्दिर विशाल है जिसकी लम्बाई-चौडाई ६६ × ३५ फुट है। शान्तिनाथ स्वामी की मूर्त्ति प्रभावली-सयुक्त पॉच फुट ऊँची है। दोनो ओर दो चौरी-वाहक खडे हैं। सुखनासि मे यक्ष यक्षिणी किम्पुरुष और महामानसि की मूर्त्तियाँ हैं। गर्भगृह के ऊपर एक अच्छी गुम्मट है। बाहरी दीवाले स्तम्भो से अलकृत हैं। दरवाजे पर के लेख (न० ५६) और शान्तिनाथ स्वामी के सिंहासन पर के लेख (न० ६२) से विदित होता है कि इस बस्ति को विष्णुवर्द्धन नरेश की रानी शान्तल देवी ने शक स० १०४४ मे निर्माण कराया था।

१२ तेरिनबस्ति—इस मन्दिर के सम्मुख एक रथ (तेरु) के आकार की इमारत बनी हुई है। इसी से इसका

नाम तेरिनबस्ति पड़ा है। इसमे बाहुबलि स्वामी की मूर्त्ति है। इसी से इसे बाहुबलि बस्ति भी कहते हैं। इसकी लम्बाई चौडाई ७० × २६ फुट है। बाहुबलि स्वामी की मूर्त्ति पाँच फुट ऊँची है। सन्मुख के रथाकार मन्दिर पर चारो ओर बावन जिन-मूर्त्तियाँ खुदी हुई हैं। मन्दिर दो प्रकार के होते हैं नन्दीश्वर और मेरु। उक्त रथाकार मन्दिर नन्दीश्वर प्रकार का कहा जाता है। इस पर के लेख (नं० १३७ शक स० १०३८) से विदित होता है कि इस मन्दिर और बस्ति को विष्णुवर्द्धन नरेश के समय के पोय्सल सेठ की माता माचिकब्बे और नेमि सेठ की माता शान्तिकब्बे ने निर्माण कराया था।

१३ शान्तीश्वर बस्ति—इसकी लम्बाई-चौडाई ५६ × ३० फुट है। यह मन्दिर ऊँची सतह पर बना हुआ है। इसकी गुम्मट पर अच्छी कारीगरी है। गर्भगृह के बाहर सुखनासि मे यक्ष-यक्षिणी की मूर्त्तियाँ हैं। पीछे की दीवाल के मध्य-भाग मे एक आला है जिसमे एक खड्गासन जिन-मूर्त्ति खुदी हुई है। इस मन्दिर को कब और किसने निर्माण कराया, यह निश्चय नहीं हो सका है।

१४ कूगेब्रह्मदेवस्तम्भ—यह विशाल स्तम्भ चन्द्रगिरि पर्वत पर के घेरे के दक्षिणी दरवाजे पर प्रतिष्ठित है। इसके शिखर पर पूर्वमुखी ब्रह्मदेव की छोटी सी पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इसकी पीठिका आठों दिशाओं मे आठ हस्तियों पर प्रतिष्ठित रही है पर अब केवल थोड़े से ही हाथी

रह गये हैं। स्तम्भ के चारो ओर एक लेख है (नं० ३८) (५९) जो गङ्गनरेश मारसिंह द्वितीय की मृत्यु का स्मारक है। इस राजा की मृत्यु सन् ९७४ ईस्वी मे हुई थी। अतः यह स्तम्भ इससे पहले का सिद्ध होता है।

१५ महानवमी मण्डप—कत्तले बस्ति के गर्भगृह के दक्षिण की ओर दो सुन्दर पूर्व-मुख चतुस्तम्भ मण्डप बने हुए हैं। दोनो के मध्य मे एक एक लेखयुक्त स्तम्भ है। उत्तर की ओर के मण्डप के स्तम्भ की बनावट बहुत सुन्दर है। उसका गुम्मटाकार शिखर बहुत ही दर्शनीय है। उस पर के लेख न० ४२ (६६) मे **नयकीर्त्ति** आचार्य के समाधि-मरण का सवाद है जो सन् ११७६ मे हुआ। यह स्तम्भ उनके एक श्रावक शिष्य नागदेव मन्त्री ने स्थापित कराया था। ऐसे ही अन्य अनेक मण्डप इस पर्वत पर विद्यमान हैं जिनमे लेख-युक्त स्तम्भ प्रतिष्ठित हैं। एक चामुण्डराय बस्ति के दक्षिण की ओर, एक एरडुकट्टे बस्ति से पूर्व की ओर और दो तेरिन बस्ति से दक्षिण की ओर पाये जाते हैं।

१६ भरतेश्वर—महानवमी मण्डप से पश्चिम की ओर एक इमारत है जो अब रसोईघर के काम मे आती है। इस इमारत के समीप एक नव फुट ऊँची पश्चिममुख मूर्त्ति है जो बाहुबलि के भ्राता भरतेश्वर की बतलाई जाती है। मूर्त्ति एक भारी चट्टान में घुटनों तक खोदी जाकर अपूर्ण छोड दी गई है। इस मूर्त्ति से थोडी दूर पर जो शिलालेख नं० २५ (६१) है

उससे अनुमान होता है कि वह किसी अरिट्टोनेमि नाम के कारीगर की बनाई हुई है। पर यह निश्चित रूप से नही कहा जा सकता क्योंकि लेख का जितना भाग पढ़ा जाता है उससे केवल इतना ही अर्थ निकलता कि 'गुरु अरिट्टोनेमि' ने बनवाया। पर क्या बनवाया यह कुछ स्पष्ट नहीं है। अरिट्टोनेमि अरिष्टनेमि का अपभ्रंश है। लेख ईसा की नवमी शताब्दि का अनुमान किया जाता है।

१७ इरुवे ब्रह्मदेव मन्दिर—जैसा कि ऊपर कह आये हैं, केवल यही एक मन्दिर इस पहाडी पर ऐसा है जो घेरे के बाहर है। यह घेरे के उत्तर-दरवाजे के उत्तर मे प्रतिष्ठित है। यहाँ ब्रह्मदेव की मूर्त्ति विराजमान है। सम्मुख एक बृहत् चट्टान है जिस पर जिन-प्रतिमाएँ, हाथी, स्तम्भ आदि खुदे हुए हैं। कहीं-कही खोदनेवालो के नाम भी दिये हुए हैं। मन्दिर के दरवाजे पर जो लेख (न० २३५) है उसकी लिपि से वह दसवी शताब्दि के मध्य-भाग का अनुमान किया जाता है।

१८ कञ्चिन दोणे—इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर से वायव्य की ओर एक चौकोर घेरे के भीतर चट्टान मे एक कुण्ड है। यही कञ्चिन दोणे कहलाता है। 'दोणे' का अर्थ एक प्राकृतिक कुण्ड होता है और 'कञ्चिन' का एक धातु जिससे घण्टा आदि बनते हैं। कहा नहीं जा सकता कि इस कुण्ड का यह नाम क्यो पडा। यहाँ कई छोटे-छोटे लेख हैं। एक लेख है '**मुरुकल्लकदम्ब तरसि**' (२८२) अर्थात् कदम्ब की आज्ञा

से तीन शिलाएँ यहा लाई गईं। इनमे की दो शिलाएँ अब भी यहाँ विद्यमान हैं और तीसरी शिला टूट-फूट गई है। कुण्ड के भीतर एक स्तम्भ है जिस पर यह लेख है—'**मानभ आनन्द-सवच्छदल्लि कट्टिसिद दोणेयु**' (२४४) अर्थात् इस कुण्ड को **मानभ** ने आनन्द-सवत्सर मे बनवाया था। यह सवत् सम्भवत शक स० १११६ होगा।

१९ **लक्किदोणे**—यह दूसरा कुण्ड घेरे से पूर्व की ओर है। सम्भवत यह किसी लक्कि नाम की स्त्री-द्वारा निर्माण कराये जाने के कारण लक्किदोण नाम से प्रसिद्ध हुआ है। कुण्ड से पश्चिम की ओर एक चट्टान है जिस पर कोई तीस छोटे-छोटे लेख हैं जिनमे प्राय यात्रियो के नाम अङ्कित हैं। इनमे कई जैन आचार्यों, कवियों और राजपुरुषो के नाम हैं (न० २८४-३१४)।

२० **भद्रबाहु की गुफा**—कहा जाता है कि अन्तिम श्रुत-केवली भद्रबाहु स्वामी ने इसी गुफा मे देहोत्सर्ग किया था। उनके चरण इस गुफा में अङ्कित हैं और पूजे जाते हैं। गुफा मे एक लेख भी पाया गया था (नं० ७१ (१६६) पर यह लेख अब गुफा मे नहीं है। हाल मे गुफा के सन्मुख एक भद्दा सा दरवाजा बनवा दिया गया है।

२१ **चामुण्डराय की शिला**—चन्द्रगिरि पर्वत के नीचे एक चट्टान है जो उक्त नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि चामुण्डराय ने इसी शिला पर खड़े होकर विन्ध्यगिरि पर्वत की

ओर बाण चलाया था जिससे गोम्मटेश्वर की विशालमूर्त्ति प्रकट हुई थी। शिला पर कई जैन गुरुओं के चित्र हैं जिनके नाम भी अङ्कित हैं।

चन्द्रगिरि पर्वत पर के अधिकाश प्राचीनतम शिलालेख या तो पार्श्वनाथ बस्ति के दक्षिण की शिला पर उत्कीर्ण हैं या उस शिला पर जो शासन बस्ति और चामुण्डराय बस्ति के सन्मुख है।

विन्ध्यगिरि

यह पर्वत दोड्डबेट्ट अर्थात् बडी पहाडी के नाम से भी प्रख्यात है। यह समुद्रतल से ३,३४७ फुट और नीचे के मैदान से लगभग ४७० फुट ऊँचा है। कभी-कभी इन्द्रगिरि नाम से भी इस पर्वत का सम्बोधन किया जाता है। पर्वत के शिखर पर पहुँचने के लिये नीचे से लगाकर कोई ५०० सीढियाँ बनी हुई हैं। ऊपर समतल चौक है जो एक छोटे घेरे से घिरा हुआ है। इस घेरे मे बीच-बीच मे तलघर हैं जिनमे जिन-प्रतिबिम्ब विराजमान हैं। इस घेरे के चारो ओर कुछ दूरी पर एक भारी दीवाल है जो कहीं-कही प्राकृतिक शिलाओं से बनी हुई है। चौक के ठीक बीचो-बीच गोम्मटेश्वर की वह विशाल खड्गासन मूर्त्ति है, जो अपनी दिव्यता से उस समस्त भूभाग को अलङ्कृत और पवित्र कर रही है।

१ **गोम्मटेश्वर**—यह नग्न, उत्तर-मुख, खड्गासन मूर्त्ति समस्त संसार की आश्चर्यकारी वस्तुओं मे से है। सिर के बाल घुँघराले, कान बड़े और लम्बे, वक्षस्थल चौड़ा, विशाल बाहु नीचे को लटकते हुए और कटि किञ्चित् क्षीण है। मुख पर अपूर्व कान्ति और अगाध शान्ति है। घुटनों से कुछ ऊपर तक बमीठे दिखाये गये हैं जिनसे सर्प निकल रहे हैं। दोनो पैरो और बाहुओ से माधवी लता लिपट रही है तिस पर भी मुख पर अटल ध्यान-मुद्रा विराजमान है। मूर्त्ति क्या है मानो तपस्या का अवतार ही है। दृश्य बड़ा ही भव्य और प्रभावोत्पादक है। सिंहासन एक प्रफुल्ल कमल के आकार का बनाया गया है। इस कमल पर बाये चरण के नीचे तीन फुट चार इञ्च का माप खुदा हुआ है। कहा जाता है कि इसको अठारह से गुणित करने पर मूर्त्ति की ऊँचाई निकलती है। जो हो, पर मूर्त्तिकार ने किसी प्रकार के माप के लिये ही इसे खोदा होगा। निस्सन्देह मूर्त्तिकार ने अपने इस अपूर्व प्रयास मे अनुपम सफलता प्राप्त की है। एशिया खण्ड ही नही समस्त भूतल का विचरण कर आइये, गोम्मटेश्वर की तुलना करनेवाली मूर्त्ति आपको क्वचित् ही दृष्टिगोचर होगी। बडे-बड़े पश्चिमीय विद्वानों के मस्तिष्क इस मूर्त्ति की कारीगरी पर चक्कर खा गये हैं। इतने भारी और प्रबल पाषाण पर सिद्धहस्त कारीगर ने जिस कौशल से अपनी छैनी चलाई है उससे भारत के मूर्त्तिकारो का मस्तक सदैव गर्व से ऊँचा उठा रहेगा। यह

सम्भव नही जान पडता कि ५७ फुट की मूर्त्ति खोद निकालने के योग्य पाषाण कही अन्यत्र से लाकर उस ऊँची पहाडी पर प्रतिष्ठित किया जा सका होगा। इससे यही ठीक अनुमान होता है कि उसी स्थान पर किसी प्रकृतिप्रदत्त स्तम्भाकार चट्टान को काटकर इस मूर्त्ति का आविष्कार किया गया है। कम से कम एक हजार वर्ष से यह प्रतिमा सूर्य, मेघ, वायु आदि प्रकृति-देवी की अमोघ शक्तियो से बाते कर रही है पर अब तक उसमे किसी प्रकार की थोडी भी क्षति नही हुई। मानो मूर्त्तिकार ने उसे आज ही उद्घाटित की हो।

एक पहाड़ी के ऊपर प्रतिष्ठित इतनी भारी मूर्त्ति को मापना भी कोई सरल कार्य नही है। इसी से उसकी ऊँचाई के सम्बन्ध मे मतभेद है। बुचानन साहब ने उसकी ऊँचाई ७० फुट ३ इञ्च और सर अर्थर वेल्सली ने ६० फुट ३ इञ्च दी है। सन् १८६५ मे मैसूर के चीफ कमिश्नर मि० बौरिंग ने मूर्त्ति का ठीक ठीक माप कराकर उसकी ऊँचाई ५७ फुट दर्ज की थी। सन् १८७१ ईस्वी मे मस्तकाभिषेक के समय कुछ सरकारी अफसरो ने मूर्त्ति का माप लिया था जिससे निम्नलिखित माप मिले —

	फुट इञ्च
चरण से कर्ण के अधोभाग तक	५०—०
कर्ण के अधोभाग से मस्तक तक (लगभग)	६—६

विन्ध्यगिरि

	फुट इञ्च
चरण की लम्बाई	६—०
चरण के अग्रभाग की चौडाई	४—६
चरण का अंगुष्ठ	२—६
पादपृष्ठ की ऊपर की गुलाई	६—४
जघा की अर्ध गुलाई	१०—०
नितम्ब से कर्ण तक	२४—६
पृष्ठ-अस्थि के अधोभाग से कर्ण तक	२०—०
नाभि के नीचे उदर की चौडाई	१३—०
कटि की चौडाई	१०—०
कटि और टेहुनी से कर्ण तक	१७—०
बाहुमूल से कर्ण तक	७—०
वक्षस्थल की चौडाई	२६—०
ग्रीवा के अधोभाग से कर्ण तक	२—६
तर्जनी की लम्बाई	३—६
मध्यमा की लम्बाई	५—३
अनामिका की लम्बाई	४—७
कनिष्ठिका की लम्बाई	२—८

लगभग एक सौ वर्ष पुराने 'सरसजनचिन्तामणि' काव्य के कर्त्ता कविचक्रवर्त्ति शान्तराज पण्डित के बनाये हुए सोलह श्लोक मिले हैं जिनमे गोम्मटेश्वर की मूर्त्ति के माप हस्त और अगुलों मे दिये हैं। अन्तिम श्लोक से पता चलता है कि

मैसूर-नरेश कृष्णराज श्रोडेयर तृतीय की श्राज्ञा से कवि ने स्वय ये माप लिये थे। ये श्लोक नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

जयति बेलुगुल-श्री-गोमटेशोस्य मूर्त्तं
 परिमितमधुनाह वच्मि सर्वत्र हर्षात्।
स्वसमयजनाना भावनादेशनार्थं
 परसमयजनानामद्भुतार्थं च साक्षात् ॥ १ ॥
पादान्मस्तकमध्यदेशचरम पादार्ध-युक्ता तु षट्-
 त्रिंशद्हस्तमितोच्छ्रयोस्ति हि यथा श्रीदोर्बलि-स्वामिनः।
पादाद्विंशतिहस्तसन्निभमितिर्नाभ्यन्तमस्त्युच्छ्रय.
 पादार्धान्वितषोडशोन्च्छ्रयभरो नाभेश्शिरोन्त तथा ॥ २ ॥
चुबुकन्मूर्ध-पर्यन्त श्रीमद्बाहुबलीशिन.।
अस्त्यङ्गुलि-त्रयी-युक्त-हस्त-षट्कप्रमोच्छ्रय ॥ ३ ॥
पादत्रयाधिक्ययुक्त-द्विहस्तप्रमितोच्छ्रय।
प्रत्येक कर्णयोरस्ति भगवद्दोर्बलीशिन ॥ ४ ॥
पश्चाद्भुजबलीशस्य तिर्यग्भागेस्ति कर्णयो।
अष्ट-हस्त-प्रमोच्छ्राय प्रमाकृद्भि प्रकीर्तित. ॥ ५ ॥
सौनन्दे परित कण्ठ तिर्यगस्ति मनोहरम्।
पाद-त्रयाधिक-दश-हस्त-प्रमित-दीर्घता ॥ ६ ॥
सुनन्दा तनुजस्यास्ति पुरस्तात्कण्ठ-सूच्छ्रय·।
पाद त्रयाधिक्य-युक्त हस्त-प्रमिति निश्चित· ॥ ७ ॥
भगवद्गोमटेशस्याशयोरन्तरमस्य वै।
तिर्यगायतिरस्यैव खलु षोडश-हस्त-मा ॥ ८ ॥

वक्षश्चूचुक-सलक्ष्य रेखाद्वितय-दीर्घता ।
नवाङ्गुलाधिक्ययुक्तचतुर्हस्तप्रमेशितु ॥ ९ ॥
'परितो मध्यमेतस्य परीतत्वेन विस्तृत ।
अस्ति विंशतिहस्तानां प्रमाण दोर्बलीशिन' ॥ १० ॥
मध्यमाङ्गुलिपर्यन्त स्कन्धाद्दीर्घत्वमीशितु ।
बाहु-युग्मस्य पादाभ्या युताष्टादशहस्तमा ॥ ११ ॥
मणिबन्धस्यास्य तिर्यक्परीतत्वात्समन्तत. ।
द्विपादाधिक-षड्-हस्त-प्रमाण परिगण्यते ॥ १२ ॥
हस्ताङ्गुष्ठोच्छ्रयोस्त्यस्यैकाङ्गुष्ठात्पद्द्विहस्त-मा ।
लक्ष्यते गोम्मटेशस्य जगदाश्चर्यकारिण ॥ १३ ॥
पादाङ्गुष्ठस्यास्य दैर्घ्यं द्विपादाधिकता-युज ।
चतुष्टयस्य हस्ताना प्रमाणमिति निश्चितम् ॥ १४ ॥
दिव्य-श्रीपाद-दीर्घत्व भगवद्गोमटेशिन. ।
सैकाङ्गुल-चतुर्हस्त-प्रमाणमिति वर्णितम् ॥ १५ ॥
श्रीमत्कृष्णनृपालकारितमहाससेक-पूजोत्सवे
शिष्ट्या तस्य कटाक्षरोचिरमृतस्नातेन शान्तेन वै ।
आनीत कविचक्रवर्त्युरुतर-श्रीशान्तराजेन तद्
वीक्ष्येत्थ परिमाणलक्षणमिहाकारीदमेतद्विभो. ॥ १६ ॥

इसका निम्नलिखित तात्पर्य निकलता है —

	हस्त अंगुल
चरण से मस्तक तक	३६½—०
चरण से नाभि तक	२०—०

	हस्त अंगुल
नाभि से मस्तक तक	१६—०
चिबुक से मस्तक तक	६—३
कर्ण की लम्बाई	२$\frac{३}{४}$—०
एक कर्ण से दूसरे कर्ण तक	८—०
गले की गुलाई	१०$\frac{३}{४}$—०
गले की लम्बाई	१$\frac{२}{३}$—०
एक कन्धे से दूसरे कन्धे तक	१६—०
स्तन-मुख की गोल रेखा	४—०
कटि की गुलाई	२०—०
कन्धे से मध्यमा अंगुली तक	१८—०
कलाई की गुलाई	६$\frac{१}{४}$—०
अंगुष्ठ की लम्बाई	२$\frac{१}{४}$—०
चरण का अंगुष्ठ	(?) ४$\frac{१}{२}$—०
चरण की लम्बाई	४—१

ये माप उपर्युक्त मापों से मिलते हैं। केवल चरण के अंगुष्ठ की लम्बाई मे त्रुटि ज्ञात होती है।

गोम्मट स्वामी कौन थे और उनकी मूर्त्ति यहाँ किसके द्वारा, किस प्रकार, प्रतिष्ठित की गई इसका कुछ विवरण लेख नं० ८५ (२३४) मे पाया जाता है। यह लेख एक छोटा सा कनाडी काव्य है जो सन् ११८० ईस्वी के लगभग बोप्पण कवि-द्वारा रचा गया है। इसके अनुसार गोम्मट पुरुदेव अपर

नाम ऋषभदेव प्रथम तीर्थङ्कर के पुत्र थे। इनका नाम बाहुबलि या भुजबलि भी था।* इनके ज्येष्ठ भ्राता भरत थे। ऋषभदेव के दीक्षा धारण करने के पश्चात् भरत और बाहुबलि दोनो भ्राताओ मे राज्य के लिये युद्ध हुआ जिसमे बाहुबलि की विजय हुई। पर ससार की गति से विरक्त हो उन्होने राज्य अपने ज्येष्ठ भ्राता भरत को दे दिया और आप तपस्या के हेतु वन को चले गये। थोडे ही काल मे घोर तपस्या कर उन्होने केवल ज्ञान प्राप्त किया। भरत ने, जो अब चक्रवर्त्ति राजा हो गये थे, पौदनपुर मे उनकी शरीराकृति के अनुरूप ५२५ धनुष की प्रतिमा स्थापित कराई। समयानुसार मूर्त्ति के आसपास का प्रदेश कुक्कुट-सर्पो से व्याप्त हो गया जिससे उस मूर्त्ति का नाम कुक्कुटेश्वर पड गया। धीरे-धीरे वह मूर्त्ति लुप्त हो गई और उसके दर्शन केवल दीक्षित व्यक्तियों को मन्त्रशक्ति से प्राप्य हो गये। चामुण्डराय मंत्री ने इस मूर्त्ति का वर्णन सुना और उन्हे उसके दर्शन करने की अभिलाषा हुई। पर पौदनपुर की यात्रा अशक्य जान उन्होने उसी के समान स्वय मूर्त्ति स्थापित कराने का विचार किया और तदनुसार इस मूर्त्ति का निर्माण कराया। इस वार्त्ता के पश्चात् लेख मे मूर्त्ति का वर्णन है। यही वर्णन थोड़े-बहुत हेर-फेर के साथ **भुजबलिशतक, भुजबलि-चरित, गोम्मटेश्वर-चरित, राजावलिकथा** और **स्थलपुराण** मे भी पाया जाता है। इनमे से पहले काव्य को छोड शेष सब कनाडी भाषा मे हैं। ये सब ग्रथ १६वी

शताब्दि से लगाकर १९वी शताब्दि तक के हैं। भुजबलि-चरित में वर्णन है कि आदिनाथ के दो पुत्र थे, भरत, रानी यशस्वती से और भुजबलि, रानी सुनन्दा से। भुजबलि का विवाह इच्छा देवी से हुआ था और वे पौदनपुर के राजा थे। कुछ मतभेद के कारण दोनो भाइयो में युद्ध हुआ और भरत को पराजय हुई। पर भुजबलि राज्य त्यागकर मुनि हो गये। भरत ने ५२५ मारु* प्रमाण भुजबलि की स्वर्णमूर्त्ति बनवाकर स्थापित कराई। कुक्कुट सर्पो से व्याप्त हो जाने के कारण केवल देव ही इस मूर्त्ति के दर्शन कर पाते थे। एक जैनाचार्य जिनसेन दक्षिण मथुरा को गये और उन्होने इस मूर्त्ति का वर्णन चामुण्ड-राय की माता कालल देवी को सुनाया। उसे सुनकर मातश्री ने प्रण किया कि जब तक गोम्मट देव के दर्शन न कर लूँगी, दूध नही खाऊँगी। जब अपनी पत्नी अजितादेवी के मुख से यह सवाद चामुण्डराय ने सुना तब वे अपनी माता को लेकर पौदनपुर की यात्रा को निकल पडे। मार्ग मे उन्होने श्रवण-बेलगोल की चन्द्रगुप्त बस्ती मे पार्श्वनाथ भगवान् के दर्शन किये और भद्रबाहु के चरणो की वन्दना की। उसी रात्रि को पद्मावती देवी ने उन्हे स्वप्न दिया कि कुक्कुट सर्पो के कारण पौदनपुर की वन्दना तुम्हारे लिये असम्भव है। पर तुम्हारी

---

* दोनो बाहुओ को फैलाने से एक हाथ की अगुली के अग्रभाग से लगाकर दूसरे हाथ की अगुली के अग्रभाग तक जितना अन्तर होता है उसे 'मारु' कहते है।

भक्ति से प्रसन्न होकर गोम्मटेश्वर तुम्हे यही बडी पहाडी (विन्ध्य-गिरि) पर दर्शन देंगे। तुम शुद्ध होकर इस छोटी पहाड़ी (चन्द्रगिरि) पर से एक स्वर्ण बाण छोड़ो, और भगवान् के दर्शन करो। मात श्री को भी ऐसा ही स्वप्न हुआ। दूसरे दिन प्रात.काल ही चामुण्डराय ने स्नान-पूजन से शुद्ध हो छोटी पहाड़ी की एक शिला पर अवस्थित होकर, दक्षिण दिशा को मुख करके एक स्वर्ण बाण छोडा जो बडी पहाडी के मस्तक पर की शिला मे जाकर लगा। बाण के लगते ही गोम्मट स्वामी का मस्तक दृष्टिगोचर हुआ। फिर जैनगुरु ने हीरे की छैनी और मोती के हथौडे से ज्योही शिला पर प्रहार किया त्योंही शिला के पाषाण-खण्ड अलग जा गिरे और गोम्मटेश्वर की पूरी प्रतिमा निकल आई। फिर कारीगरो से चामुण्डराय ने दक्षिण बाजू पर ब्रह्मदेव सहित पाताल गम्ब, सन्मुख ब्रह्मदेव-सहित यक्ष-गम्ब, ऊपर का खण्ड, ब्रह्मसहित त्यागद कम्ब, अखण्ड बागिलु नामक दरवाजा और यत्र-तत्र सीढियाँ बनवाई।

इसके पश्चात् अभिषेक की तैयारी हुई। पर जितना भी दुग्ध चामुण्डराय ने एकत्रित कराया उससे मूर्त्ति की जघा से नीचे के स्नान नही हो सके। चामुण्डराय ने घबराकर गुरु से सलाह ली। उन्होंने आदेश दिया कि जो दुग्ध एक वृद्धा स्त्री अपनी 'गुल्लकायि' मे लाई है उससे स्नान कराओ। आश्चर्य कि उस अत्यल्प दुग्ध की धारा गोम्मटेश के मस्तक पर छोड़ते ही समस्त मूर्त्ति के स्नान हो गये और सारी पहाड़ी पर दुग्ध

बह निकला। उस वृद्धा स्त्री का नाम इस समय से 'गुल्लकायज्जि' पड गया। इसके पश्चात् चामुण्डराय ने पहाडी के नीचे एक नगर बसाया और मूर्त्ति के लिये ६६ हजार 'वरहे' की आय के गाँव (६८ के नाम दिये हुए हैं) लगा दिये। फिर उन्होने अपने गुरु अजितसेन से इस नगर के लिये कोई उपयुक्त नाम पूछा। गुरु ने कहा 'क्योकि उस वृद्धा स्त्री के गुल्लकायि के दुग्ध से अभिषेक हुआ है, अत. इस नगर का नाम बेल्गोल ठीक होगा। तदनुसार नगर का नाम बेल्गोल रक्खा गया और उस 'गुल्लकायज्जि' स्त्री की मूर्त्ति भी स्थापित की गई। इस प्रकार इस अभिनव पौदनपुर की स्थापना कर चामुण्डराय ने कीर्त्ति प्राप्त की। इस काव्य के कर्त्ता पञ्चबाण का नाम शक सं० १५५६ के एक लेख न० ८४ (२५०) मे आता है।

अन्य ग्रन्थों मे उपर्युक्त विवरण से जो विशेषताएँ हैं वे सक्षेप मे इस प्रकार हैं। दोड्डय कवि-कृत **'भुजबलिशतक'** मे कहा गया है कि सिहनन्दि आचार्य के शिष्य राजमल्ल द्राविड देश मे मथुरा के राजा थे। ब्रह्मक्षत्र-शिखामणि चामुण्डराय, सिहनन्दि आचार्य के प्रशिष्य व अजितसेन और नेमिचन्द्र के शिष्य, उनके मन्त्री थे। राजमल्ल को किसी व्यापारी द्वारा पौदनपुर मे कर्केतन-पाषाण-निर्म्मित गोम्मटेश्वर की मूर्त्ति का समाचार मिला। इसे सुनकर चामुण्डराय अपनी माता और गुरु नेमिचन्द्र के साथ राजा की आज्ञा ले, यात्रा को

निकले। जब उन्होने श्रवणबेलगोल की छोटी पहाडी पर से स्वर्ण बाण चलाये तब बड़ी पहाड़ी पर पौदनपुर के गोम्मटेश्वर भगवान् प्रकट हुए। चामुण्डराय ने भगवान् के हेतु कई ग्रामो का दान दिया। उनकी धर्म-शीलता से प्रसन्न हो राजमल्ल ने उन्हे राय की उपाधि दी। १८वी शताब्दि के बने हुए अनन्त कवि-कृत **गोम्मटेश्वरचरित** मे यह वार्ता है कि चामुण्डराय के स्वर्ण बाण चलाने से गोम्मट की जो मूर्त्ति प्रकट हुई उसे उन्होंने मूर्त्तिकारो से सुघटित कराकर अभिषिक्त और प्रतिष्ठित कराई। **स्थलपुराण** मे समाचार है कि पौदनपुर की यात्रा करते समय चामुण्डराय ने सुना कि बेलगोल मे अठारह धनुष प्रमाण एक गोम्मटेश्वर की मूर्त्ति है। उन्होने उसकी प्रतिष्ठा कराई और उसे एक लाख छयान्नवे हजार वरह की आय के ग्रामो का दान किया। चामुण्डराय को अपनी अपूर्व सफलता पर जो गर्व हुआ उसे खर्व करने के हेतु पद्मावती देवी गुल्लकायज्जि नामक वृद्धा स्त्री के वेष मे अभिषेक के अवसर पर उपस्थित हुई थी। **राजावलिकथा** के अनुसार गुल्लकायज्जि कूष्माण्डिनि देवी का अवतार थी। इस ग्रथ मे यह भी कहा गया है कि प्राचीन काल मे राम, रावण और रावण की रानी मन्दोदरि ने बेलगोल के गोम्मटेश्वर की वन्दना की थी। सत्रहवी शताब्दि के चिदानन्दकवि-कृत **मुनिवंशाभ्युदय** काव्य मे कथन है कि गोम्मट और पार्श्वनाथ की मूर्त्तियों को राम और सीता लङ्का से लाये थे और उन्हे क्रमश बडी और छोटी

पहाड़ी पर विराजमान कर उनकी पूजन-अर्चन किया करते थे। जाते समय वे इन मूर्त्तियों को उठाने में असमर्थ हुए, इसी से वे उन्हें उसी स्थान पर छोड़कर चले गये।

उपर्युल्लिखित प्रमाणों से यह निर्विवादत सिद्ध होता है कि गोम्मटेश्वर की स्थापना चामुण्डराय द्वारा हुई है। शिलालेख नं० ८५ (२३४), १०५ (२५४), ७६ (१७५) और ७५ (१७९) भी यही बात प्रमाणित करते हैं। शिलालेख नं० ७५, ७६ मूर्त्ति के आस-पास ही खुदे हैं और मूर्त्ति के निर्माण समय के ही प्रतीत होते हैं। चामुण्डराय कौन थे ? भुजबलिशतक आदि ग्रन्थों से विदित होता है कि चामुण्डराय गङ्गनरेश राचमल्ल के मन्त्री थे। शिलालेख नं० १३७ (३४५) से भी यही सिद्ध होता है। राचमल्ल के राज्य की अवधि सन् ९७४ से ९८४ तक बाँधी गई है। अत. गोम्मटेश्वर की स्थापना इसी समय के लगभग होना चाहिये। चामुण्डराय का बनाया हुआ एक चामुण्डराय पुराण मिलता है। इसमे ग्रन्थ-समाप्ति का समय शक सं० ९०० (सन् ९७८ ईस्वी) दिया हुआ है। इसमे चामुण्डराय के कृत्यो का वर्णन पाया जाता है पर गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का कहीं उल्लेख नहीं है। इससे अनुमान होता है कि उक्त ग्रन्थ की रचना के समय (सन् ९७८ ई०) तक चामुण्डराय को इस महत्कार्य के सम्पादन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। बाहुबलि-चरित्र मे गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का समय इस प्रकार दिया है :—

"कल्क्यब्दे षट्शताख्ये विनुतविभवसवत्सरे मासि चैत्रे
पञ्चम्या शुक्लपक्षे दिनमणिदिवसे कुम्भलग्ने सुयोगे।
सौभाग्ये मस्तनाम्नि प्रकटित-भगणे सुप्रशस्ता चकार
श्रीमच्चामुण्डराजो बेल्गुलनगरे गोमटेशप्रतिष्ठाम् ॥"

अर्थात् कल्कि सवत् ६०० मे विभव सवत्सर मे चैत्र शुक्ल ५ रविवार को कुम्भलग्न, सौभाग्य योग, मस्त (मृगशिरा) नक्षत्र मे चामुण्डराज ने बेल्गुल नगर मे गोमटेश की प्रतिष्ठा कराई। विद्याभूषण, काव्यतीर्थ, प्रो० शरच्चन्द्र घोषाल ने इस अनुमान पर कि यह तिथि गङ्गनरेश राचमल्ल के समय मे (सन् ९७४ और ९८४ के बीच) ही पडना चाहिये, उक्त तिथि को तारीख २ अप्रेल ९८० ईस्वी के बराबर माना है। उनके कथनानुसार इस तारीख को रविवार चैत्र शुक्ल ५ तिथि थी और कुम्भ लग्न भी पडा था। हमने इस तारीख का मि० स्वामी कन्नपिलाई के 'इडियन एफेमेरिस' से मिलान किया तो २ अप्रेल ९८० ईस्वी को दिन शुक्रवार और तिथि १४ पाये। न जाने प्रोफेसर साहब ने किस आधार पर उस तारीख को रविवार और पञ्चमी तिथि मान लिया है। इसके अतिरिक्त प्रोफेसर साहब की तारीख मे एक और भारी त्रुटि है। ऊपर उद्धृत श्लोक मे सवत्सर का नाम 'विभव' दिया हुआ है। पर सन् ९८० ईस्वी (शक स० ९०२) 'विभव' नही 'विक्रम' सवत्सर था। इन कारणों से प्रो० घोषाल की निश्चित की हुई तिथि मे सन्देह होता है।

उपर्युक्त श्लोक मे कल्कि सवत् ६०० मे गोमटेश की प्रतिष्ठा होना कहा है। कल्कि कौन था और उसका सवत् कब से चला ? हरिवंशपुराण, उत्तरपुराण, त्रिलोकसार और त्रिलोकप्रज्ञप्ति मे कल्कि राजा का उल्लेख पाया जाता है। कल्कि का दूसरा नाम चतुर्मुख था। त्रिलोकप्रज्ञप्ति मे कल्कि का समय इस प्रकार दिया है —

णिव्वाणगदे वीरे चउसदइगिसट्ठिवासविच्छेदे।
जादो च सगणरिन्दो रज्ज वस्सस्स दुसय वादाला ॥९३॥
दोण्णि सदा पणवण्णा गुत्ताण **चउमुहस्स** वादाल।
वस्स होदि सहस्स केई एव परूवंति ॥९४॥

अर्थात्—वीर निर्वाण के ४६१ वर्ष बीतने पर शक राजा हुआ, और इस वंश के राजाओ ने २४२ वर्ष राज्य किया। उनके पश्चात् गुप्तवंशी नरेशो का २५५ वर्ष तक राज्य रहा और फिर चतुर्मुख (कल्कि) ने ४२ वर्ष राज्य किया। कोई-कोई लोग इस तरह (४६१ + २४२ + २५५ + ४२ = १०००) एक हजार वर्ष बतलाते हैं। अन्य ग्रंथो मे भी कल्कि का समय महावीर के निर्वाण से १००० वर्ष पश्चात् माना गया है। पर इन ग्रंथों मे इस बात पर मत-भेद है कि निर्वाण सवत् से १००० वर्ष पीछे कल्कि का जन्म हुआ या मृत्यु। ऊपर हमने जिस मत का उल्लेख किया है उसके अनुसार १००० वर्ष मे कल्कि के राज्य के ४२ वर्ष भी सम्मिलित हैं। अत: इस मत के अनुसार निर्वाण स० १००० कल्कि की मृत्यु

का है। जिन ग्रन्थों मे कल्कि का उल्लेख पाया जाता है उन सबके अनुसार निर्वाण का समय शक स० से ६०५ वर्ष, विक्रम सं० से ४७० वर्ष व ईस्वी सन् से ५२७ वर्ष पूर्व पडता है। अतएव कल्कि मृत्यु का समय सन् ४७२ ईस्वी आता है।

सवत् बहुधा राजा के राज्य-काल से प्रारम्भ किये जाते हैं। अत कल्कि सवत् सन् ४७२—४२ = ४३० ईस्वी से प्रारम्भ हुआ होगा। गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का समय कल्कि सवत् ६०० कहा गया है जो ऊपर की गणना के अनुसार सन् ईस्वी १०३० के बराबर है। हमने स्वामी कन्नूपिलाई के इण्डियन एफेमेरिस से इस सवत् के लगभग उपर्युक्त तिथि, वार, नक्षत्र आदि का मिलान किया तो २३ मार्च सन् १०२८ को चैत्र सुदि ५ रविवार पाया। इस दिन मृगशिरा नक्षत्र और सौभाग्य योग भी वर्तमान थे, और दक्षिणी गणना के अनुसार यह सवत्सर भी विभव था। इस प्रकार बाहुबलिचरित मे दी हुई समस्त बाते इस तिथि मे घटित होती हैं, जिससे विश्वास होता है कि गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का ठीक समय सन् १०२८, २३ मार्च (शक स० ९५१) है।*

इस तिथि के विरोध मे केवल एक किवदन्ती का प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता है। वह किवदन्ती यह है कि गोम-

* उपर्युक्त विवेचन लिखे जाने के पश्चात् हमे मैसूर आर्किलाजिकल रिपोर्ट १९२३ देखने को मिली। इसमे डा० शाम शास्त्री ने विस्तृत रूप से इसी बात को प्रमाणित किया है।

टेश की मूर्त्ति की प्रतिष्ठा राचमल्लनरेश के समय मे ही हुई थी और इस नरेश का समय शिलालेखों के आधार पर सन् ९७४ से ९८४ तक निश्चित किया गया है। पर इस किंवदन्ती पर विशेष जोर नही दिया जा सकता क्योकि एक तो इसके लिये कोई शिलालेखो का प्रमाण नही है और दूसरे यह कथन केवल भुजबलिशतक मे ही पाया जाता है, जिसकी रचना का समय ईसा की सोलहवी शताब्दि अनुमान किया जाता है। जिन अन्य ग्रन्थो मे गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का कथन है उनमे यह कही नही कहा गया कि यह कार्य राचमल्ल के जीते ही हुआ था। सन् ९७८ ईस्वी मे रचे जानेवाले चामुण्डराय पुराण से यह निश्चित है ही कि उस समय तक मूर्त्ति की स्थापना नही हुई थी, और सन् १०२८ से पहले के किसी शिलालेख मे इस प्रतिष्ठा का समाचार नहीं पाया जाता।

एक बात और है जिसके कारण ऊपर निश्चित किया हुआ समय ही गोमटेश की प्रतिष्ठा के लिये ठीक प्रतीत होता है। कहा जाता है कि नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति चामुण्डराय के गुरु थे और गोमटेश की प्रतिष्ठा के समय उनके साथ थे। द्रव्य-सग्रह नामक ग्रन्थ के टीकाकार ब्रह्मदेव ने ग्रन्थ के मूलकर्त्ता नेमिचन्द्र को धाराधीश भोजदेव के समकालीन कहा है। ऊपर निश्चित किये हुए समय के अनुसार यह कथन अयुक्ति-सङ्गत नही कहा जा सकता क्योकि भोजदेव

का राज्य-काल उस समय विद्यमान था। भोजदेव के सन् १०१६, १०२२ और १०४२ ईस्वी के उल्लेख मिले हैं।

कुछ वर्षों के अन्तर से गोम्मटेश्वर का मस्तकाभिषेक होता है, जो बडी धूमधाम, बहुत क्रियाकाण्ड और भारी द्रव्य-व्यय के साथ मनाया जाता है। इसे महाभिषेक भी कहते हैं। इस मस्तकाभिषेक का सबसे प्राचीन उल्लेख शक स० १३२० के लेख न० १०५ (२५४) मे पाया जाता है। इस लेख मे कथन है कि पण्डितार्य ने सात बार गोम्मटेश्वर का मस्तकाभिषेक कराया था। पञ्चबाण कवि ने सन् १६१२ ईस्वी मे शान्त-वर्णि-द्वारा कराये हुए मस्तकाभिषेक का उल्लेख किया है, व अनन्त कवि ने सन् १६७७ मे मैसूर नरेश चिक्कदेवराज ओडे-यर के मन्त्री विशालाक्ष पण्डित-द्वारा कराये हुए और शान्त-राज पण्डित ने सन् १८२५ के लगभग मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय द्वारा कराये हुए मस्तकाभिषेक का उल्लेख किया है। शिलालेख न०६८ (२२३) मे सन् १८२७ मे होने-वाले मस्तकाभिषेक का उल्लेख है। सन् १६०६ मे भी मस्तकाभिषेक हुआ था। अभी तक सबसे अन्तिम अभिषेक हाल ही मे—मार्च सन् १६२५ मे—हुआ है जिसके विषय मे 'वीर' पत्र मे यह समाचार प्रकाशित हुआ है—"ता० १५-३-२५ को श्रीमान् महाराजा कृष्णराज बहादुर मैसूर अपने दो सालो-सहित पहाड पर पधारे और अपनी तरफ से अभिषेक कराया। बन्दोबस्त बहुत अच्छा था। आज लगभग ३०,००० मनुष्य

अभिषेक देख सके जिसमे करीब पाँच हजार विन्ध्यगिरि पर थे और शेष सब चन्द्रगिरि पहाड पर इधर-उधर बैठकर दूर से अभिषेक देखते थे। महाराजा ने अभिषेक के लिए पाँच हजार रुप्या प्रदान किये। उन्होंने स्वय गोम्मटस्वामी की प्रदक्षिणा की, नमस्कार किया तथा द्रव्य से पूजन की व कुछ रुप्ये प्रतिमाजी व भट्टारकजी को भेट किये व भट्टारकजी को नमस्कार किया। सुबह ६ बजे से दोपहर एक बजे तक इस प्रथम अभिषेक का कार्य अतीव आनन्द व धर्म-प्रभावना के साथ हुआ। इस अभिषेक मे जल, दुग्ध, दही, केला, पुष्प, नारियल व चुरमा, घृत, चन्दन, सर्वोषधि, इक्षुरस, लाल चन्दन, बदाम, खारक गुड, शक्कर, खसखस, फूल, चने की दाल आदि का अभिषेक उपाध्यायों द्वारा मचान पर से हुआ।"

कहा जाता है कि जब होय्सल-नरेश विष्णुवर्द्धन जैन-धर्म को छोड वैष्णव धर्मावलम्बी हो गया तब रामानुजाचार्य ने गोम्मट की मूर्त्ति को तुडवा डाला, पर इस कथन मे कोई सत्य का अश प्रतीत नही होता क्योकि मूर्त्ति आज तक सर्वथा अक्षत है।

गोम्मटेश्वर की दो और विशाल मूर्त्तियाँ विद्यमान हैं। ये दोनो दक्षिण कनाड़ा जिले मे ही हैं, एक कारकल मे और दूसरी एनूर मे। कारकल की मूर्त्ति ४१ फुट ५ इञ्च ऊँची है। इसे सन् १४३२ ईस्वी मे जैनाचार्य ललितकीर्त्ति के उपदेश से वीर पाण्ड्य ने प्रतिष्ठित कराई थी। एनूर की मूर्त्ति ३५ फुट ऊँची है और सन् १६०४ मे चारुकीर्त्ति पण्डित के

उपदेश से चामुण्डवंशीय 'तिम्मराज' द्वारा प्रतिष्ठित की गई थी। इन तीनो मूर्त्तियो की बनावट प्रायः एक सी ही है। वमीठे, सर्प और लताएँ तीनो मे एक से ही दिखाये गये हैं।

विन्ध्यगिरि के गोम्मटेश्वर की दोनो बाजुओ पर यक्ष और यक्षिणी की मूर्त्तियाँ हैं, जिनके एक हाथ मे चौरी और दूसरे मे कोई फल है। मूर्त्ति के बायी ओर एक गोल पाषाण का पात्र है जिसका नाम 'ललितसरोवर' खुदा हुआ है। मूर्त्ति के अभिषेक का जल इसी मे एकत्र होता है। इस पाषाण-पात्र के भर जाने पर अभिषेक का जल एक प्रणाली-द्वारा मूर्त्ति के सम्मुख एक कुएँ में पहुँच जाता है और वहाँ से वह मन्दिर की सरहद के बाहर एक कन्दरा मे पहुँचा दिया जाता है। इस कन्दरा का नाम 'गुल्लकायज्जि बागिलु' है। मूर्त्ति के सम्मुख का मण्डप नव सुन्दर खचित छतो से सजा हुआ है। आठ छतो पर अष्ट दिक्पालो की मूर्त्तियाँ हैं और बीच की नवमी छत पर गोम्मटेश के अभिषेक के लिये हाथ मे कलश लिये हुए इन्द्र की मूर्त्ति है। ये छत बडी कारीगरी के बने हुए हैं। मध्य की छत पर खुदे हुए शिलालेख (न० ३५१) से अनुमान होता है कि यह मण्डप बलदेव मन्त्री ने १२ वी शताब्दि के प्रारम्भ मे किसी समय निर्माण कराया था। शिलालेख नं० ११५ (२६७) से विदित होता है कि सेनापति भरतमय्य ने इस मण्डप का कठघरा (हप्पलिगे) निर्माण कराया था। शिलालेख नं० ७८ (१८२) मे कथन है कि नयकीर्त्तिसिद्धान्त-

चक्रवर्त्ति के शिष्य बसविसेट्टि ने कठघरे की दीवाल और चौबीस तीर्थंकरो की प्रतिमाएँ निर्माण कराई थीं और उसके पुत्रो ने उन प्रतिमाओ के सम्मुख जालीदार खिडकियाँ बनवाई । शिला-लेख नं० १०३ (२२८) से ज्ञात होता है कि चङ्गाल्व-नरेश महादेव के प्रधान सचिव केशवनाथ के पुत्र चन्न बोम्मरस और नञ्जरायपट्टन के श्रावको ने गोम्मटेश्वरमण्डप के ऊपर के खण्ड (बल्लिवाड) का जीर्णोद्धार कराया ।

परकोटा—गोम्मटेश्वर की दोना बाजुओ पर खुदे हुए शिलालेख न० ७५ (१८०) व ७६ (१७७) से विदित होता है कि गोम्मटेश्वर का परकोटा गङ्गराज ने निर्माण कराया था । यही बात लेख न० ४५ (१२५), ५६ (७३), ९० (२४०) व ४८६ से भी सिद्ध होती है । गङ्गराज होय्सल नरेश विष्णु-वर्द्धन के सेनापति थे । उपर्युक्त शिलालेख शक स० १०४० व उसके पश्चात् के हैं । इसके पहले के शिलालेखो मे पर-कोटे का उल्लेख नही है । इससे सिद्ध होता है कि शक स० १०३९ के लगभग ही इसका निर्माण हुआ है ।

परकोटे के भीतर मण्डपो मे इधर-उधर कुल ४३ जिन-मूर्त्तियाँ प्रतिष्ठित हैं, जो इस प्रकार हैं—

ऋषभ	१	सुमति	१	शीतल	२	अनन्त	१
अजित	२	सुपार्श्व	१	श्रेयांस	१	धर्म	१
सभव	२	चन्द्रप्रभ	३	वासुपूज्य	१	शान्ति	३
अभिनन्दन	२	पुष्पदन्त	२	विमल	२	कुन्थु	१

अर	१	मुनिसुव्रत	२	नेमि	२	वर्द्धमान	१
मल्लि	२	नमि	१	पार्श्व	४	बाहुवलि	१
		कुष्माण्डिनि	२			१ (अज्ञात)	

अधिकाश मूर्त्तियाँ ४ फुट ऊँची हैं। पाँच-छ. मूर्त्तियाँ पाँच फुट, एक छ फुट व दो-तीन मूर्त्तियाँ तीन साढे-तीन फुट की हैं। एक चन्द्रप्रभ की व अन्तिम अज्ञात मूर्त्ति को छोडकर शेष जिनमूर्त्तियो पर लेख हैं वे सब नयकीर्त्ति सिद्धान्तदेव और उनके शिष्य बालचन्द्र अध्यात्मि के समय की सिद्ध होती हैं। लेख नं० ७८ (१८२) व ३२७ (१९७) से ज्ञात होता है कि नयकीर्त्ति के शिष्य बसविसेट्टि ने यहाँ चतुर्विंशति तीर्थंकरो की प्रतिष्ठा कराई थी। पर केवल तीन मूर्त्तियो पर बसविसेट्टि का नाम पाया जाता है (लेख न० ३१७, ३१८, ३२७)। उपर्युक्त मूर्त्तियों मे पद्मप्रभ तीर्थंकर की कोई मूर्त्ति नही है। चन्द्रप्रभ की एक मूर्त्ति पर मारवाडी मे लेख है कि उसे (विक्रम) सवत् १६३५ मे सेनवीरमतजी व अन्य सज्जनों ने प्रतिष्ठित कराई थी (३३१)। अज्ञात मूर्त्ति डेढ फुट की है। इस पर मारवाडी मे लेख है कि उसे (विक्रम) संवत् १५४८ मे अगुशाजी जगद. ने प्रतिष्ठित कराई (३३२)।

परकोटे के द्वारे पर दोनो बाजुओ पर छ छ फुट ऊँचे द्वारपालक हैं। परकोटे के बाहर गोम्मटदेव के ठीक सन्मुख लगभग छ फुट की ऊँचाई पर ब्रह्मदेवस्तम्भ है। इसमे ब्रह्मदेव की पद्मासन मूर्त्ति है। ऊपर गुम्मट है। स्तम्भ के नीचे कोई

पाँच फुट ऊँची 'गुल्लकायज्जि' की मूर्त्ति है, जिसके हाथ मे 'गुल्लकायि' है। जन-श्रुति के अनुसार यह स्तम्भ और गुल्लकायज्जि की मूर्त्ति दोनो स्वय चामुण्डराय ने प्रतिष्ठित कराये थे।

२ **सिद्धर बस्ति**—यह एक छोटा सा मन्दिर है जिसमे तीन फुट ऊँची सिद्ध भगवान् की मूर्त्ति विराजमान है। मूर्त्ति के दोनों ओर लगभग छ -छ फुट ऊँचे खचित स्तम्भ हैं। ये स्तम्भ महानवमी मण्डप के स्तम्भ के समान ही उच्च कारीगरी के बने हुए हैं। दायी बाजू के स्तम्भ पर अर्हद्दास कवि का रचा हुआ पण्डितार्य की प्रशस्तिवाला बडा भारी सुन्दर लेख है [१०५ (२५४)] जिसके अनुसार पण्डितार्य की मृत्यु शक सवत् १३२० मे हुई थी। इस स्तम्भ मे पीठिका पर विराजमान, शिष्य को उपदेश देते हुए, एक आचार्य का चित्र है। शिष्य सन्मुख बैठा है। दूसरे चित्र मे जिनमूर्त्ति है। बायी बाजू के स्तम्भ पर मङ्गराज कवि का रचा हुआ सुन्दर लेख है [१०८ (२५८)] जिसमे शक स० १३५५ मे श्रुतमुनि के स्वर्गवास का उल्लेख है।

३ **अखण्ड बागिलु**—यह एक दरवाजे का नाम है। यह नाम इसलिये पडा क्योकि यह पूरा दरवाजा एक अखण्ड शिला को काटकर बनाया गया है। दरवाजे का ऊपरी भाग बहुत ही सुन्दर खचित है। इसमे लक्ष्मी की पद्मासन मूर्त्ति खुदी है जिसको दोनों ओर से दो हाथी स्नान करा रहे हैं। जन-श्रुति के अनुसार यह द्वार भी चामुण्डराय ने निर्माण

कराया था। दरवाजे के दोनो ओर दाये-बाये क्रमशः बाहुबलि और भरत की मूर्त्तियाँ हैं। इन पर जो लेख हैं (३६८-३६९) उनसे विदित होता है कि वे गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के शिष्य दण्डनायक भरतेश्वर द्वारा प्रतिष्ठित की गई हैं। इनका समय शक स० १०५२ के लगभग प्रतीत होता है। इन मूर्तियो की प्रतिष्ठा का उल्लेख शिलालेख न० ११५ (२६७) मे भी आया है जिसके अनुसार ये मूर्त्तियाँ दरवाजे की शोभा बढाने के लिये स्थापित की गई हैं। इस लेख के अनुसार इस दरवाजे की सीढियाँ भी उक्त दण्डनायक ने ही निर्माण कराई हैं।

४ **सिद्धरगुण्डु**—अखण्ड दरवाजे की दाहिनी ओर एक बृहत् शिला है जिसे 'सिद्धर गुण्डु' (सिद्ध-शिला) कहते हैं। इस शिला पर अनेक लेख हैं। ऊपरी भाग की कई सतरो मे जैनाचार्यों के चित्र हैं। कुछ चित्रो के नीचे नाम भी अङ्कित हैं।

५ **गुल्लकायज्जिबागिलु**—यह एक दूसरे दरवाजे का नाम है। इस दरवाजे की दाहिनी ओर एक शिला पर एक बैठी हुई स्त्री का चित्र खुदा है। यह लगभग एक फुट का है। इसे लोगों ने गुल्लकायज्जि का चित्र समझ लिया है। इसी से उक्त दरवाजे का नाम गुल्लकायज्जिबागिलु पड गया। पर चित्र के नीचे जो लेख (४१८) पाया गया है उससे विदित होता है कि वह एक मल्लिसेट्टि की पुत्री का चित्र है। गुल्लकायि की मूर्त्ति का वर्णन ऊपर कर ही चुके हैं।

६ त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ—यह चागद कब (त्याग-स्तम्भ) भी कहलाता है क्योकि कहा जाता है कि यहाँ दान दिया जाता था। इस स्तम्भ की कारीगरी प्रशसनीय है। कहा जाता है कि यह स्तम्भ अधर है, उसके नीचे से रूमाल निकाला जा सकता है। यह भी चामुण्डराय-द्वारा स्थापित कहा जाता है और स्तम्भ पर खुदे हुए लेख न० १०६ (२८१) से भी यही बात प्रमाणित होती है। इस लेख मे चामुण्डराय के प्रताप का वर्णन है। दुर्भाग्यवश यह लेख हमे पूरा प्राप्त नहीं हो सका। ज्ञात होता है कि हेग्गडे कण्न ने अपना छोटा सा लेख [नं० ११० (२८२)] लिखाने के लिये चामुण्डराय का लेख घिसवा डाला। यदि यह लेख पूरा मिल जाता तो सम्भवत उससे गोम्मटेश्वर की स्थापनादि का समय भी ज्ञात हो जाता। स्तम्भ की पीठिका की दक्षिण बाजू पर दो मूर्त्तियाँ खुदी हुई हैं। एक मूर्त्ति, जिसके दोनों ओर चवरवाही खडे हुए हैं, चामुण्डराय की और उसके साम्हनेवाली उनके गुरु नेमिचन्द्र की कही जाती हैं।

७ चेन्नण्ण बस्ति—यह बस्ति त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ से पश्चिम की ओर थोडी दूर पर है। इसमे चन्द्रनाथ स्वामी की २½ फुट ऊँची मूर्त्ति है। साम्हने मानस्तम्भ है। लेख न० ४८० (३९०) से अनुमान होता है कि इसे चेन्नण्ण ने शक स० १५६६ के लगभग निर्माण कराया था। बरामदे मे दो स्तम्भो पर क्रमश. एक पुरुष और एक स्त्री की मूर्त्ति खुदी हुई

है। सम्भव है कि ये मूर्तियाँ चेन्नण्ण और उनकी धर्मपत्नी की हो। बस्ति से ईशान की ओर दो दोणे (कुण्डो) के बीच एक मण्डप बना हुआ है। उपर्युक्त लेख मे सम्भवत. इसी मण्डप का उल्लेख है।

८ **ओदेगल बस्ति**—इसे त्रिकूट बस्ति भी कहते हैं क्योंकि इसमे तीन गर्भगृह हैं। चन्द्रगिरि पर्वत की शान्तीश्वर बस्ति के समान यह बस्ति भी खूब ऊँची सतह पर बनी हुई है। सीढ़ियो पर से जाना पडता है। भीतो की मजबूती के लिये इसमे पाषाण के आधार (ओदेगल) लगे हुए हैं, इसी से इसे ओदेगल बस्ती कहते हैं। बीच की गुफा मे आदिनाथ की और दायी बाई गुफाओ मे क्रमश शान्तिनाथ और नेमिनाथ की पद्मासन मूर्तियाँ हैं। बस्ती के पश्चिम की ओर की चट्टान पर सत्ताइस लेख नागरी अक्षरो मे हैं जिनमे अधिकतर तीर्थ-यात्रियो के नाम अङ्कित हैं (न० ३७८–४०४)।

९ **चौबीस तीर्थकर बस्ति**—यह एक छोटा सा देवालय है। इसमे एक अढाई फुट ऊँचे पाषाण पर चौबीस तीर्थंकरो की मूर्त्तियाँ उत्कीर्ण हैं। नीचे एक कतार मे तीन बडी मूर्त्तियाँ खुदी हुई हैं जिनके ऊपर प्रभावली के आकार मे इक्कीस अन्य छोटी-छोटी मूर्त्तियाँ हैं। इस बस्ति के लेख नं० ११८ (३१३) से ज्ञात होता है कि इस चौबीस तीर्थंकर मूर्त्ति की स्थापना चारुकीर्त्ति पण्डित, धर्मचन्द्र आदि ने शक स० १५७० मे की थी।

१० ब्रह्मदेव मन्दिर—यह छोटा सा देवालय विन्ध्यगिरि के नीचे सीढ़ियों के समीप ही है। इसमे सिन्दूर से रँगा हुआ एक पाषाण है जिसे लोग ब्रह्म या 'जारुगुप्पे अप्पे' कहते हैं। मन्दिर के पीछे चट्टान पर के लेख न० १२१ (३२१) से ज्ञात होता है कि इसे हिरिसालि के गिरिगौड के कनिष्ठ भ्राता रङ्गय्य ने सम्भवत शक स० १६०० मे निर्माण कराया था। मन्दिर के ऊपर दूसरी मजिल भी है जो पीछे से निर्माण कराई गई विदित होती है। इसमे पार्श्वनाथ की मूर्त्ति है।

श्रवणबेल्गोल नगर

ऊपर कहा जा चुका है कि श्रवणबेल्गोल चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि के बीच बसा हुआ है। यहाँ के प्राचीन स्मारक इस प्रकार हैं.—

१ भण्डारि बस्ति—यह श्रवण बेल्गोल का सबसे बडा मन्दिर है। इसकी लम्बाई-चौडाई २६६ × ७८ फुट है। इसमे एक गर्भगृह, एक सुखनासि, एक मुखमण्डप और प्राकार हैं। गर्भगृह मे एक सुन्दर चित्रमय वेदी पर चौबीस तीर्थंकरो की तीन २ फुट ऊँची मूर्त्तियाँ हैं। इसी से इसे चौबीस तीर्थंकरबस्ति भी कहते हैं। गर्भगृह में तीन दरवाजे हैं जिनकी आजू-बाजू जालियाँ बनी हुई हैं। सुखनासि में पद्मावती और ब्रह्म की मूर्त्तियाँ हैं। नवरङ्ग के चार स्तम्भों के बीच

जमीन पर एक दस फुट का चौकोर पत्थर बिछा हुआ है। आगे के भाग और बरामदे मे भी इतने इतने बड़े पत्थर लगे हुए हैं। ये भारी-भारी पाषाण यहाँ कैसे लाये गये होंगे, यह भी आश्चर्यजनक है। नवरङ्गद्वार की चित्रकारी बडी ही मनोहर है। इसमे लताएँ व मनुष्य और पशुओ के चित्र खुदे हुए हैं। मुख्य भवन के चारों ओर बरामदा और पाषाण का चार फुट ऊँचा कठघरा है। बस्ति के सन्मुख एक पाषाण-निर्मित सुन्दर मानस्तम्भ है। होय्सल नरेश नरसिंह (प्रथम) के भण्डारि हुल्ल द्वारा निर्माण कराये जाने के कारण यह भण्डारि बस्ति कहलाती है। लेख न० १३७ (३४५) और १३८ (३४९) से ज्ञात होता है कि यह शक स० १०८१ मे निर्माण कराई गई थी व नरसिंह नरेश ने इसे भव्य-चूडामणि नाम देकर इसकी रक्षा के हेतु सवणेरु ग्राम का दान दिया था। उक्त लेखो मे हुल्ल और उनके बस्ति-निर्माण का सुन्दर वर्णन है।

२ **अक्कन बस्ति**—नगर भर मे यही बस्ति होय्सल-शिल्पकला का एकमात्र नमूना है। इस सुन्दर भवन मे गर्भगृह, सुखनासि, नवरङ्ग और मुखमण्डप है। गर्भगृह मे सप्तफणी पार्श्वनाथ की पाँच फुट ऊँची भव्य मूर्त्ति है। गर्भगृह के दरवाजे पर बडा अच्छा खुदाई का काम है। सुख-नासि मे एक दूसरे के सन्मुख साढे तीन फुट ऊँची पञ्चफणी धरणेन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षिणी की मूर्त्तियाँ हैं। दरवाजे के आसपास जालियाँ हैं। नवरङ्ग के चार काले पाषाण के

बने हुए आइने के सदृश चमकीले स्तम्भ और कुशल कारीगरी के बने हुए नवछत बडे ही सुन्दर हैं। मदिर की गुम्मट अनेक प्रकार की जिन-मूर्त्तियो से चित्रित है, शिखर पर सिहललाट है। दक्षिण की दीवाल सीधी न होने के कारण उसमे पत्थर के आधार लगाये गय हैं। द्वारे के पास के लेख (न० १२४ (३२७) से ज्ञात होता है कि यह बस्ति होय्सल नरेश बल्लाल (द्वितीय) के ब्राह्मण मन्त्री चन्द्रमौलि की जैन धर्मावलम्बिनी भार्या आचियक्क ने शक स० ११०३ मे निर्माण कराई थी व राजा ने उसकी रक्षा के निमित्त बम्मेयनहल्लि नामक ग्राम का दान दिया था। 'अक्कन' आचियक्कन का ही सक्षिप्त रूप है इसी से इसे अक्कन बस्ति कहते हैं। यही बात लेख न० ४२६ (३३१) व ४५४ से भी सिद्ध होती है।

३ सिद्धान्त बस्ति—यह बस्ति अक्कन बस्ति के पश्चिम की ओर है। किसी समय जैन सिद्धान्त के समस्त ग्र थ इसी बस्ति के एक बन्द कमरे मे रक्खे जाते थे। इसी से इसका नाम सिद्धान्त बस्ति पडा। कहा जाता है कि धवल, जयधवल आदि अत्यन्त दुर्लभ ग्रथ यही से मूडविद्री गये हैं। इसमे एक पाषाण पर चतुर्वि शति तीर्थ करो की प्रतिमाये हैं। बीच मे पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा है और उनके आसपास शेष तीर्थंकरो की। यहाँ के लेख नं० ४२७ (३३२) से ज्ञात होता है कि यह चतुर्वि शति मूर्त्ति उत्तर भारत के किसी यात्री ने शक स० १६२० के लगभग प्रतिष्ठित कराई थी।

४ दानशाले बस्ति—यह छोटा सा देवालय अक्कन बस्ति के द्वार के पास ही है। इसमे एक तीन फुट ऊँचे पाषाण पर पञ्चपरमेष्ठी की प्रतिमाये है। चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय (शक स० १६०२) के अनुसार मैसूर के चिक्क देवराज ओडेयर ने अपने पूर्ववर्ती नृप दोड्ड देवराज ओडेयर के समय मे (सन् १६५६—१६७२ ईस्वी) बेल्गोल की यात्रा की, दानशाला के दर्शन किये और राजा से उसके लिये मदनेय ग्राम का दान करवाया। यहाँ पहले दान दिया जाता रहा होगा इसी से इस बस्ति का यह नाम पडा।

५ नगर जिनालय—इस भवन मे गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग हैं। इसमे आदिनाथ की प्रभावली सयुक्त अढाई फुट ऊँची मूर्त्ति है। नवरङ्ग की बाई ओर एक गुफा मे दो फुट ऊँची ब्रह्मदेव की मूर्त्ति है जिसके दाये हाथ मे कोई फल और बायें हाथ मे कोडे के आकार की कोई चीज है। पैरों मे खडाऊँ है। पीठिका पर घोडे का चिह्न बना हुआ है। यहाँ के लेख न० १३० (३३५) से ज्ञात होता है कि इस मन्दिर को होय्सल नरेश बल्लाल (द्वितीय) के 'पट्टणस्वामी' व नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्ति के शिष्य नागदेव मत्री ने शक स० ११६८ मे निर्माण कराया था। नगर के महाजनो-द्वारा ही इसकी रक्षा होती थी इसी से इसका नाम नगर जिनालय पडा। 'श्रीनिलय' भी इस मदिर का नाम रहा है। उक्त लेख मे नागदेव मत्री द्वारा कमठपार्श्वनाथबसदि के सन्मुख 'नृत्य

रङ्ग' और अश्मकुट्टिम (पाषाणभूमि) व अपने गुरु नयकीर्ति देव की निषद्या निर्माण कराये जाने का भी उल्लेख है। लेख न० १२२ (३२६) के अनुसार उन्होंने नयकीर्त्ति के नाम से ही नागसमुद्र नामक सरोवर भी बनवाया। यह सरोवर अब 'जिगणेकट्टे' कहलाता है। पर लेख न० १०८ (२५८) मे कहा गया है कि पण्डित यति के तप के प्रभाव से ही नगर जिनालय (नगर जिनास्पद) की सृष्टि हुई।

६ मङ्गायि बस्ति—इसमे एक गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग है। इसमे एक साढे चार फुट ऊँची शान्तिनाथ की मूर्त्ति विराजमान है। सुखनासि के द्वार पर आजू-बाजू पाँच फुट ऊँची चवरवाहियो की मूर्त्तियाँ हैं। नवरङ्ग मे वर्द्धमान स्वामी की मूर्त्ति है जिस पर लेख है, ४२९ (३३८)। मन्दिर के सन्मुख सुन्दरता से खचित दो हस्ती हैं। लेख न० १३२ (३४१) व ४३० (३३९) से ज्ञात होता है कि यह बस्ति अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य बेलगोल के मङ्गायि ने बनवाई थी। उक्त लेखो मे इसे त्रिभुवनचूडामणि कहा है। ये लेख शक की तेरहवीं शताब्दि के ज्ञात होते हैं। शान्तिनाथमूर्त्ति की पीठिका पर के लेख से विदित होता है कि वह मूर्त्ति पण्डिताचार्य की शिष्या व देवराय महाराज की रानी भीमादेवी ने प्रतिष्ठित कराई थी [लेख न० ४२८ (३३७)]। ये देवराय सम्भवत विजयनगर के राजा देवराज प्रथम हैं जिनका राज्य सन् १४०६ से १४१६ तक रहा था।

उक्त महावीर स्वामी की पीठिका पर के लेख से सिद्ध होता है कि उनकी प्रतिष्ठा पण्डितदेव की शिष्या वसतायि ने कराई थी। इसका भी उक्त समय ही अनुमान होता है। इसी म दिर के एक लेख [न० १३४ (३४२)] से विदित होता है कि इसकी मरम्मत सम्भवत शक स० १३३४ मे गेरसोप्पे के हिरिय अय्य के शिष्य गुम्मटण्ण ने कराई थी।

७ **जैनमठ**—यह यहाँ के गुरु का निवास-स्थान है। इमारत बहुत सुन्दर है, बीच मे खुला हुआ आँगन है। हाल ही मे दूसरी मञ्जिल भी बन गई है। मण्डप के खम्भे अच्छी कारीगरी के बने हुए हैं। उन पर खूब चित्रकारी है। यहाँ के तीन गर्भगृहो मे अनेक पाषाण और धातु की मूर्त्तियाँ हैं। इनमे की अनेक मूर्त्तियाँ बहुत अर्वाचीन हैं। इन पर सस्कृत व तामिल भाषा मे ग्रथ अक्षरो के लेख हैं जिनसे ज्ञात होता है कि वे अधिकाश मद्रास प्रान्तीय धर्मिष्ठ भाइयो ने प्रदान की हैं। नवदेवता बिम्ब मे पञ्चपरमेष्ठी के अतिरिक्त जिनधर्म, जिनागम, चैत्य और चैत्यालय भी चित्रित हैं। मठ की दीवालो पर तीर्थ करो व जैन राजाओ के जीवन की घटनाओ के अनेक रङ्गीन चित्र हैं। इनमे मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय के 'दसर दरबार' का भी चित्र है। पार्श्वनाथ के समवसरण व भरत चक्रवर्त्ति के जीवन के चित्र भी दर्शनीय हैं। चार चित्र नागकुमार की जीवन-घटनाओं के हैं। एक वन के दृश्य मे षड्लेश्याओ के पुरुषो के चरित्र बडी उत्तम रीति

से चित्रित किये गये हैं। ऊपर की मञ्जिल मे पार्श्वनाथ की मूर्त्ति है और एक काले पाषाण पर चतुर्विंशति तीर्थंकर खचित हैं।

कहा जाता है कि चामुण्डराय ने गोम्मटेश्वर की मूर्त्ति निर्माण कराकर अपने गुरु नेमिचन्द्र को यहाँ का मठाधीश नियुक्त किया। यह भी कहा जाता है कि इससे पहले भी यहाँ गुरु-परम्परा चली आती थी। लेख न० १०५ (२५४) व १०८ (२५८) मे उल्लेख है कि यहाँ के एक गुरु चारु-कीर्त्ति पण्डित ने होय्सल नरेश बल्लाल प्रथम (सन् ११००-११०६) को एक बडी दुस्साध्य व्याधि से मुक्त किया था जिससे उन्हे बल्लालजीवरक्षक की उपाधि मिली थी।

८ **कल्याणि**—यह नगर के बीच के एक छोटे से सरोवर का नाम है। इसके चारो ओर सीढियाँ और दीवाल हैं। दीवाल के दरवाजे शिखरबद्ध हैं। उत्तर की ओर एक सभा-मण्डप है जिसके एक स्तम्भ पर लेख है (४४४ (३६५) कि यह सरोवर चिक्कदेव राजेन्द्र ने बनवाया। मैसूर के चिक्क-देवराजेन्द्र ने सन् १६७२ से १७०४ तक राज्य किया है। अनन्त कवि-कृत गोम्मटेश्वरचरित (शक स०१७००) मे उल्लेख है कि चिक्कदेवराज ने अपने टकसाल के अध्यक्ष अण्णय्य की प्रार्थना से 'कल्याणि' निर्माण कराया। पर सरोवर के पूरे होने से प्रथम ही राजा की मृत्यु हो गई, तब अण्णय्य ने उसे चिक्कदेवराज के पौत्र कृष्णराज ओडेयर

प्रथम (सन् १७१३–१७३१) के समय मे शिखर, सभामण्डप आदि बनवाकर पूर्ण कराया। सम्भवत यही बडा पुराना सरोवर रहा है जिस पर से इस नगर का नाम बेल्गुल (धवल सरोवर) पडा। उक्त पुरुषों ने सम्भवत इसका जीर्णोद्धार कराया होगा। यह भी हो सकता है कि इस स्थान को नाम देनेवाला धवल सरोवर कोई अन्य ही रहा हो।

९ जक्किकट्टे—यह भण्डारि बस्ति के दक्षिण मे एक छोटा सा सरोवर है। इसके पास की दो चट्टानों पर जैन प्रतिमाओ के नीचे के दो लेखों नं० ४४६ (३६७) और ४४७ (३६८) से ज्ञात होता है कि बोप्पदेव की माता, गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता की भार्या, शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या जक्किमव्वे ने ये जिनमूर्त्तियाँ और सरोवर निर्माण कराये। लेख न० ४३ (११७) व अन्य लेखो से सिद्ध है कि गङ्गराज होय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति थे और शक स० १०४५ मे जीवित थे। इस लेख मे जक्किमव्वे की भी प्रशस्ति है। साणेहल्लि के एक लेख न० ४८९ (४००) से ज्ञात होता है कि इसी धर्मपरायणा साध्वी महिला ने वहाँ भी एक बस्ति निर्माण कराई थी।

१० चेन्नण्ण का कुण्ड—नगर से दक्षिण की ओर कुछ दूरी पर यह कुण्ड है। इसका निर्माता वही चेन्नण्ण बस्ति का निर्माता चेन्नण्ण है। चेन्नण्ण की कृतियों का उल्लेख लेख न० १२३ तथा ४४८-४५३ व ४६३–४६५ मे है।

न० ४८० (३९०) से इस कुण्ड का समय शक स० १५९५ के लगभग प्रतीत होता है ।

श्रवणबेल्गोल के आसपास के ग्राम

जिननाथ पुर—यह श्रवणबेल्गोल से एक मील उत्तर की ओर है। लेख न० ४७८ (३८८) के अनुसार इसे होय्सल-नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति गङ्गराज ने शक स० १०४० के लगभग बसाया था।

शान्तिनाथ बस्ति

यहाँ की शान्तिनाथ बस्ति होय्सल शिल्पकारी का बहुत सुन्दर नमूना है। इसमे एक गर्भगृह सुखनासि और नवरङ्ग हैं। शान्तिनाथ का साढे पाँच फुट ऊँची मूर्त्ति बडी भव्य और दर्शनीय है। वह प्रभावली और दोनों ओर चवरवाहियों से सुसज्जित है। नवरङ्ग के चार स्तम्भ अच्छी मूँगे की कारीगरी के बने हुए हैं। इसके नवछत भी बडे सुन्दर हैं। आमने सामने दो सुन्दर आले बने हुए हैं जो अब खाली हैं। बाहिरी दीवालों पर अनेक चित्रपट हैं। कई चित्र अधूरे ही रह गये हैं। इनमे तीर्थकर, यक्ष, यक्षिणी, ब्रह्म, सरस्वती, मन्मथ, मोहिनी, नृत्यकारिणी, गायक, वादित्रवाही आदि के चित्र हैं। नारी-चित्रों की सख्या चालीस है।

यह बस्ति मैसूर राज्य भर के जैन मदिरों में सबसे अधिक आभूषित है। शान्तिनाथ की पीठिका के लेख न० ४७१

(३८०) से ज्ञात होता है कि इस बस्ति को 'वसुधैकबान्धव रेचिमय्य' सेनापति ने बनवाकर सागरनन्दि सिद्धान्तदेव के अधिकार में दे दी थी। एक लेख (ए० क० अर्सीकेरे ७७ सन् १२२०) में उल्लेख है कि उक्त सेनापति कलचुरि-नरेश के मत्री थे, पश्चात् उन्होंने होयसल नरेश बल्लाल (द्वितीय) (सन् ११७३ १२२०) की शरण ली। इससे शान्तिनाथ बस्ति के निर्माण का समय लगभग शक स० ११२० सिद्ध होता है। नवरङ्ग के एक स्तम्भ पर के लेख न० ४७० (३८६) से विदित होता है कि इस बस्ति का जीर्णोद्धार पालेद पदुमन्न ने शक स० १५५३ मे कराया था।

ग्राम के पूर्व मे अरेगल बस्ति नाम का एक दूसरा मदिर है। यह शान्तिनाथ बस्ति से भी पुराना है। इसम पार्श्वनाथ भगवान् की सप्तफणी, प्रभावली सयुक्त पॉच फुट ऊँची पद्मासन मूर्ति है। सुखनासि में धरणेन्द्र और पद्मावती के सुन्दर चित्र हैं। मन्दिर में सफाई अच्छी रहती है। एक चट्टान (अरेगल) के ऊपर निर्मित होने से ही यह मन्दिर अरेगल बस्ति कहलाता है। पार्श्वनाथ की पीठिका पर के लेख न० ४७४ (३८३) से विदित होता है कि वह मूर्ति शक स० १८१२ में बेलगुल के भुजबलैय्य ने प्रतिष्ठित कराई है। इसका कारण यह था कि प्राचीन मूर्ति बहुत खण्डित हो गई थी। यह प्राचीन मूर्ति अब पास ही के तालाब मे पडी हुई है और उसका छत्र बस्ति के द्वारे के पास

अरेगल बस्ति

रक्खा हुआ है जहाँ पर कि लेख न० १४४ (३८४) है। मदिर मे चतुर्विंशति तीर्थंकर, पञ्चपरमेष्ठी, नवदेवता, नन्दीश्वर आदि की धातुनिर्मित मूर्त्तियाँ भी हैं।

ग्राम की नैऋत दिशा मे एक समाधिमण्डप है। इसे शिलाकूट कहते हैं। मण्डप चार फुट लम्बा चौडा और पाँच फुट ऊँचा है। ऊपर शिखर है। इसके चारो ओर दीवाले हैं पर दरवाजा एक भी नही है। इस पर के लेख न ४७९ (३८९) से वह बालचन्द्रदेव के तनय की निषद्या सिद्ध होती है जिनकी मृत्यु शक स ११३६ मे हुई। लख मे बाल चन्द्रदेव के तनय का नाम घिस गया है, पर उनके गुरु बेलि-कुम्ब के नमिचन्द्र पण्डित व निषद्या निर्मापक बैरोज के नाम लख मे पढे जाते हैं। लेख के अन्तिम भाग मे यह भी लिखा है कि एक साध्वी स्त्री कालब्बे ने सल्लेखना विधि से शरीरान्त किया। सम्भवत यह उक्त मृत पुरुष की विधवा पत्नी रही होगी।

ऐसा ही एक समाधिमण्डप तावरेकेरे सरोवर के समीप है। इसके पास जो लेख (न० १४२ (३६२) है उससे विदित होता है कि यह चारुकीर्ति पण्डित की निषद्या है जिनकी मृत्यु शक स० १५६५ में हुई।

लेख न० ४० (६४) मे उल्लेख है कि देवकीर्ति पण्डित, जिनकी मृत्यु शक स० १०८५ में हुई, न जिननाथ पुर मे एक दानशाला निर्माण कराई थी।

हलेबेल्गोल—यह ग्राम श्रवणबेल्गोल से चार मील उत्तर का ओर है। यहाँ का होटमल शिल्पकारी का बना हुआ जैनमन्दिर ध्वस अवस्था मे है। गर्भगृह में अढाई फुट की खड्गासन मूर्त्ति है। सुखनासि में लगभग पाँच फुट ऊँची सप्तफणी पार्श्वनाथ की खण्डित मूर्त्ति रक्खी है। नवरङ्ग मे अच्छी चित्रकारी है। बोच की छत पर देवियो सहित रथारूढ अष्टदिक्पालो के चित्र हैं जिनके बीच मे पञ्चफणी धरणेन्द्र का चित्र है। धरणेन्द्र के बाये हाथ में धनुष और दाहिने मे सम्भवत शङ्ख है। नवरङ्ग मे दो चवरवाही और एक तीर्थंकर मूर्त्ति खण्डित रक्खी हुई है। नवरङ्ग के द्वार पर अच्छी कारीगरी दिखलाई गई है। इस मन्दिर के सन् १०९४ के लेख (न० ४९२) से विदित होता है कि विष्णु वर्द्धन के पिता होय्सल एरेयङ्ग ने बेल्गोल के मन्दिरो के जीर्णोद्धार के लिये जैनगुरु गोपनन्दि को राचनहल्ल ग्राम का दान दिया। इस लेख व लेख न० ५५ (६९) म गोपनन्दि की खूब प्रशसा पाई जाती है। यह बस्ति सभवत लगभग शक स० १०१६ की बनी हुई है।

इस ग्राम मे एक शैव और एक वैष्णव मन्दिर भी है। ज्ञात होता है कि प्राचीन काल मे यहाँ अधिक मन्दिर रहे हैं क्योंकि यहाँ के एक तालाब की नहर मे प्राय सारा मसाला टूटे हुए मन्दिरों का लगा हुआ है। ग्राम के मध्य मे एक तालाब के पास एक खण्डित जिन प्रतिमा भी है।

साणेहल्लि—यह ग्राम श्रवणबेल्गुल से तीन मील पर है। यहाँ एक ध्वस जैन मन्दिर है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, लेख न० ४८६ (४००) के अनुसार इसे गङ्गराज की भावज जक्किमव्वे ने निर्माण कराया था।

लेखों की ऐतिहासिक उपयोगिता

विशेष राजवशों से सम्बन्ध रखनवाले लेखो का विवेचन करने से पूर्व यहाँ एक ऐसी घटना पर कुछ विचार करना आवश्यक है जिसका राजकीय व जैन-धार्मिक इतिहास से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। जैनसघ के नायक भद्रबाहु स्वामी के साथ भारतसम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य की दक्षिण यात्रा का प्रसङ्ग जैसा जैन इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है वैसा ही वह भारत के राजकीय इतिहास मे अनुपेक्षणीय है। लगातार कई वर्षों से इस विषय पर इतिहासवेत्ताओं मे मतभेद चला आता है। यद्यपि मतभेद का अभी तक अन्त नहीं हुआ, पर अधिकाश विद्वानों का झुकाव एक ओर होने से इस विषय का प्राय निर्णय ही समझना चाहिए। सक्षेप मे, जैनसाहित्य में यह प्रसङ्ग इस प्रकार पाया जाता है—अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी ने निमित्त-ज्ञान से जाना कि उत्तर भारत में एक बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पडनेवाला है। ऐसी विपत्ति के समय में वहाँ मुनिवृत्ति का पालन होना कठिन जान

लेख लगभग शक स० ८२२ के हैं। श्रवणबेलगोल के लगभग शक स० ५७२ के लेख न० १७–१८ (३१) मे कहा गया है कि 'जो जैनधर्म भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र के तेज से भारी समृद्धि को प्राप्त हुआ था उसके किञ्चित् क्षीण हो जाने पर शान्तिसेन मुनि ने उसे पुनरुत्थापित किया।' शक स० १०५० के लेख न० ५४ (६७) (श्लोक ४) मे भद्रबाहु और उनके शिष्य चन्द्रगुप्त का उल्लेख है। ऐसा ही उल्लेख शक स० १०८५ के लेख न० ४० (६४) (श्लोक ४–५) मे व शक स० १३५५ के लेख न० १०८ (२५८) (श्लोक ८–६) मे है। इन उल्लेखो म चन्द्रगुप्त की गुरुभक्ति और तपश्चरण की महिमा गाई गई है।

साहित्य मे इस प्रसङ्ग का सबसे प्राचीन उल्लेख हरिषेण कृत 'बृहत्कथाकोष' मे पाया जाता है। यह ग्रन्थ शक स० ८५३ का रचा हुआ है। इसमे भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त का वर्णन इस प्रकार पाया जाता है—'पौण्ड्रवर्धन देश मे देवकोट नाम का नगर था। इस नगर का प्राचीन नाम कोटिपुर था। यहा पद्मरथ नाम का राजा राज्य करता था। इनके एक पुरोहित सोमशर्मा और उनकी भार्या सोमश्री के भद्रबाहु नामक पुत्र हुआ। एक दिन अन्य बालकों के साथ नगर मे खेलते हुए भद्रबाहु को चतुर्थ श्रुतकेवली गोवर्धन ने देखा। उन्होंने देखकर जान लिया कि यही बालक अन्तिम श्रुतकेवली होनेवाला है। अतएव माता पिता की अनुमति से उन्होंने

भद्रबाहु को अपने सरक्षण मे ले लिया और उन्हें सब विद्याएँ सिखाई। यथासमय भद्रबाहु ने गोवर्धन स्वामी से जिन दीक्षा धारण की। एक समय विहार करते हुए भद्रबाहु स्वामी उज्जैनी नगरी मे पहुँचे और सिप्रा नदी के तीर एक उपवन में ठहरे। इस समय उज्जैनी मे जैनधर्मावलम्बी राजा चन्द्रगुप्त अपनी रानी सुप्रभा सहित राज्य करते थे। जब भद्रबाहु स्वामी आहार के निमित्त नगरी मे गये तब एक गृह मे झूले में झूलते हुए शिशु ने उन्हें चिल्लाकर मना किया और वहाँ से चले जाने को कहा। इस निमित्त से स्वामी को ज्ञात हो गया कि वहाँ एक बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पडनेवाला है। इस पर उन्होने समस्त सघ को बुलाकर सब हाल कहा और कहा कि "अब तुम लोगों को दक्षिण देश को चले जाना चाहिए। मैं स्वय यहीं ठहरूँगा क्योकि मेरी आयु क्षीण हो चुकी है।"*

जब चन्द्रगुप्त महाराज ने यह सुना तब उन्होंने विरक्त होकर भद्रबाहु स्वामी से जिन दीक्षा ले ली। फिर चन्द्रगुप्त मुनि, जो दशपूर्वियो मे प्रथम थे, विशाखाचार्य के नाम से जैन सघ के नायक हुए। भद्रबाहु की आज्ञा से वे सघ को दक्षिण के पुन्नाट† देश को ले गये। इसी प्रकार रामिल्ल, स्थूलवृद्ध,

---

* अहमत्रैव तिष्ठामि क्षीणमायुर्ममाधुना।

† पुन्नाट बडा पुराना राज्य रहा है। कन्नड साहित्य में यह पुन्नाड के नाम से प्रसिद्ध है। टालेमी' ने इसका उल्लेख 'पोन्नट'

और भद्राचार्य अपने अपने संघों सहित सिंधु आदि देशों को भेजे गये। स्वयं भद्रबाहु स्वामी उज्जयिनी के 'भाद्रपद' नामक स्थान पर गये और वहाँ उन्होंने कई दिन तक अनशन व्रत कर समाधिमरण किया *। जब द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष का अन्त हो गया तब विशाखाचार्य संघ-सहित दक्षिण से मध्यदेश को लौट आये।

दूसरा ग्रंथ, जिसमें उपर्युक्त प्रसङ्ग आया है रत्ननन्दिकृत भद्रबाहुचरित है। रत्ननन्दि, अनन्तकीर्ति के शिष्य ललित-कीर्ति के शिष्य थे। उनका ठीक समय ज्ञात नहीं है पर वे पन्द्रहवीं सोलहवीं शताब्दि के लगभग अनुमान किये जाते हैं। इस ग्रन्थ में प्रायः ऊपर के ही समान भद्रबाहु का प्राथमिक वृत्तान्त देकर कहा गया है कि वे जब उज्जयिनी आ गये तब वहाँ के राजा 'चन्द्रगुप्त' ने उनकी खूब भक्ति की और उनसे

नाम से किया है और कहा है कि वहां रक्तमणि (beryl) बहुत पाये जाते हैं। यहाँ के राष्ट्रवर्मा आदि राजाओं की राजधानी कीर्तिपुर' थी। कीर्तिपुर कदाचित् मैसूर जिले के हेग्गड्डे व-कोटे तालुके में कपिनी नदी पर के आधुनिक कित्तूर का ही प्राचीन नाम है। हरिषेण और जिनसेन कवि अपने को पुन्नाट संघ के कहते हैं। यह संघ सम्भवतः 'कित्तूर' संघ का ही दूसरा नाम है जिसका उल्लेख शिलालेख नं० १९४ (८१) में आया है।

प्राप्य भाद्रपदं देशं श्रीमदुज्जयिनीभवम्।
चकारानशनं धीरः स दिनानि बहून्यलम्॥
समाधिमरणं प्राप्य भद्रबाहुर्दिवं ययौ॥

अपने सोलह स्वप्नों का फल पूछा। इनके फल कथन मे भद्र-बाहु ने कहा कि यहाँ द्वादश वर्ष का दुर्भिक्ष पडनेवाला है। इस पर चन्द्रगुप्त न उनसे दीक्षा ले ली। फिर भद्रबाहु अपने बारह हजार शिष्यों-सहित 'कर्नाटक' को जाने के लिये दक्षिण को चल दिय। जब वे एक वन मे पहुँचे तब अपनी आयु पूरी हुई जान उन्होंने विशाखाचार्य को अपन स्थान पर नियुक्त कर उन्हे सघ को आगे ले जाने के लिये कहा और आप चन्द्रगुप्ति सहित रहीं ठहर गये। सघ चौड देश को चला गया। थोडे समय पश्चात् भद्रबाहु न समाधिमरण किया। चन्द्रगुप्ति उनक चरण-चिह्न बनाकर उनका पूजा करते रहे। विशाखाचार्य जब दक्षिण से लौटे तब चन्द्रगुप्ति मुनि न उनका आदर किया। विशाखाचार्य ने भद्रबाहु की समाधि की वन्दना कर कान्यकुब्ज को प्रस्थान किया।

चिदानन्द कवि के मुनिवशाभ्युदय नामक कन्नड काव्य मे भी भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त की कुछ वार्ता आई है। यह ग्रन्थ शक स० १६०२ का बना हुआ है। इसमे कथन है कि "श्रुतकेवली भद्रबाहु बेलगोल को आय और चिक्कबट्ट (चन्द्र-गिरि) पर ठहरे। कदाचित् एक व्याघ्र ने उन पर धावा किया और उनका शरीर विदीर्ण कर डाला। उनके चरणचिह्न अब तक गिरि पर एक गुफा मे पूजे जाते हैं अर्हद्बलि की आज्ञा से दक्षिणाचार्य बेलगोल आये। चन्द्रगुप्त भी यहाँ तीर्थ यात्रा को आये थे। इन्होने दक्षिणाचार्य से दीक्षा ग्रहण की

और उनके बनवाये हुए मन्दिर की तथा भद्रबाहु के चरण चिह्नो का पूजा करते हुए वहाँ रहे। कुछ कालोपरान्त दक्षिणाचार्य ने अपना पद चन्द्रगुप्त को दे दिया।"

शक स० १७६१ के बने हुए दवचन्द्रकृत राजावलीकथा नामक कन्नड ग्रन्थ मे यह वार्ता प्राय रत्ननन्दिकृत भद्रबाहुचरित के समान ही पाई जाती है। पर इस ग्रन्थ मे और भी कई छोटी-छोटी बाते दी हुई हैं जो अधिक महत्त्व की नही हैं। यहाँ कथन है कि श्रुतकेवली विष्णु, नन्दिमित्र और अपराजित व पाँच सौ शिष्यों के साथ गोवर्धनाचार्य जम्बूस्वामा के समाधिस्थान की वन्दना करने के हेतु कोटिकपुर में आये। राजा पद्मरथ की सभा मे भद्रबाहु ने एक लेख, जिसे अन्य कोई भी विद्वान् नही समझ सका था, राजा को समझाया। इससे उनकी विलक्षण बुद्धि का पता चला। कार्त्तिक की पूर्णमासी की रात्रि को पाटलिपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त को सोलह स्वप्न हुए। प्रात काल यह समाचार पाकर कि भद्रबाहु नगर के उपवन मे विराजमान हैं, राजा अपने मन्त्रियो सहित उनके पास गये। राजा का अन्तिम स्वप्न यह था कि एक बारह फण का सर्प उनकी ओर आ रहा है। इसका फल भद्रबाहु ने यह बतलाया कि वहाँ बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पडनेवाला है। एक दिन जब भद्रबाहु आहार के लिये नगर मे गये तब उन्होने एक गृह के सामने खडे होकर सुना कि उस घर मे एक झूले मे झूलता हुआ बालक जोर-जोर स चिल्ला रहा है।

वह शिशु बारह बार चिल्लाया पर किसी ने उसकी आवाज नहीं सुनी। इससे स्वामीजी को विदित हुआ कि दुर्भिक्ष प्रारम्भ हो गया है। राजा के मन्त्रियो ने दुर्भिक्ष को रोकने के लिये कई यज्ञ किये। पर चन्द्रगुप्त ने उन सबके पापो के प्रायश्चित्त स्वरूप अपने पुत्र सिंहसेन को राज्य दे भद्रबाहु से जिन दीक्षा ले ली और उन्हीं के साथ हो गये। भद्रबाहु अपने बारह हजार शिष्यों-सहित दक्षिण को चल पडे। एक पहाडी पर पहुँचने पर उन्हे विदित हुआ कि उनकी आयु अब बहुत थोडी शेष है, इसलिये उन्होंने विशाखाचार्य को सघ का नायक बनाकर उन्हे चौल और पाड्य देश को भेज दिया। केवल च द्रगुप्त को उन्होने अपने साथ रहने की अनुमति दी। उनके समाधिमरण के पश्चात् चन्द्रगुप्त उनके चरणचिह्नों की पूजा करते रहे। कुछ समय पश्चात् सिंहसन नरेश के पुत्र भास्कर नरेश भद्रबाहु के समाधिस्थान की तथा अपने पिता मह की बन्दना के हेतु वहाँ आये और कुछ समय ठहरकर उन्होंने वहाँ जिनमन्दिर निर्माण कराये, तथा चन्द्रगिरि क समीप बेल्गोल नामक नगर बसाया। चन्द्रगुप्त ने उसी गिरि पर समाधिमरण किया।

इस सम्बन्ध मे सबसे प्राचीन प्रमाण चन्द्रगिरि पर पार्श्व-नाथ बस्ति के पास का शिलालेख (न० १) है। यह लेख श्रवणबेल्गोल के समस्त लेखो म प्राचीनतम सिद्ध होता है। इस लेख मे कथन है कि "महावीर स्वामी के पश्चात् परमर्षि

गौतम, लोहार्य, जम्बू विष्णुदेव, अपराजित, गोवर्द्धन, भद्रबाहु, विशाख, प्रोष्ठिल, कृतिकार्य, जय, सिद्धार्थ, धृतिषेण, बुद्धिलादि गुरुपरम्परा में होनेवाले भद्रबाहु स्वामी के त्रैकाल्यदर्शी निमित्त ज्ञान द्वारा उज्जयिनी मे यह कथन किये जाने पर कि वहाँ द्वादश वर्ष का वैषम्य (दुर्भिक्ष) पडनेवाला है, सारे सघ ने उत्तरापथ से दक्षिणापथ को प्रस्थान किया और क्रम से वह एक बहुत समृद्धियुक्त जनपद मे पहुँचा। यहाँ आचार्य प्रभाचन्द्र ने व्याघ्रादि व दरीगुफादि सकुल सुन्दर कटवप्र नामक शिखर पर अपनी आयु अल्प ही शेष जान समाधितप करने की आज्ञा लेकर, समस्त सघ को आगे भेजकर व केवल एक शिष्य को साथ रखकर देह की समाधि आराधना की।"

ऊपर इस विषय के जितने उल्लेख दिये गये हैं उनमे दो बाते सर्वसम्मत हैं—प्रथम यह कि भद्रबाहु ने बारह वर्ष के दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी की और दूसरे यह कि उस वाणी को सुनकर जैनसघ दक्षिणापथ को गया। हरिषेण के अनुसार भद्रबाहु दक्षिणापथ को नही गये। उन्होंने उज्जयिनी के समीप ही समाधिमरण किया और चन्द्रगुप्ति मुनि अपर नाम विशाखाचार्य सघ को लेकर दक्षिण को गये। भद्रबाहुचरित तथा राजावलीकथा के अनुसार भद्रबाहु स्वामी ने ही श्रवणबेल्गोल तक सघ के नायक का काम किया तथा श्रवणबेल्गोल की छोटी पहाडी पर वे अपने शिष्य चन्द्रगुप्त सहित ठहर गये। मुनिवशाभ्युदय तथा उपर्युल्लिखित सेरिङ्गपट्टम के दो लेख,

श्रवणबेल्गोल के लेख नं० १७ १८, ४०, ५४ तथा १०८ भद्र-बाहु और चन्द्रगुप्त दोनों का चन्द्रगिरि से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। पर जैसा कि ऊपर के वृत्तान्त से विदित होगा, शिलालेख नं० १ की वार्ता इन सबसे विलक्षण है। उसके अनुसार त्रिकालदर्शी भद्रबाहु ने दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी की, जैन सघ दक्षिणापथ को गया व कटवप्र पर प्रभाचन्द्र ने जैन सघ को आगे भेजकर एक शिष्य सहित समाधि आराधना की। यह वार्ता स्वय लेख के पूर्व और अपर भागों मे वैषम्य उपस्थित करने के अतिरिक्त ऊपर उल्लिखित समस्त प्रमाणों के विरुद्ध पडती हैं। भद्रबाहु दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी करके कहा चले गये, प्रभा चन्द्र आचार्य कौन थे, उन्हे जैन सघ का नायकत्व कब और कहा से प्राप्त हो गया इत्यादि प्रश्नों का लेख में कोई उत्तर नहीं मिलता। इस उलझन को सुलझाने के लिये हमने लेख के मूल की सूक्ष्म रीति से जाँच की। इस जाँच से हमे ज्ञात हुआ कि उपर्युक्त सारा बखेडा लेख की छठी पक्ति मे 'आचार्य प्रभाचन्द्रोनामावनितल 'इत्यादि पाठ से खडा होता है। यह पाठ डा० फ्लीट और रायबहादुर नर सिंहाचार का है। श्रवणबेल्गोल शिलालेखों के प्रथम सग्रह के रचयिता राइस साहब ने 'प्रभाचन्द्रोना ' की जगह 'प्रभाचन्द्रेण ' पाठ दिया है। डा० टा० के० लड्डू भी राइस साहब के पाठ को ठीक समझते हैं। 'प्रभाचन्द्रो' की जगह 'प्रभाचन्द्रेण' होने से उपर्युक्त सारा बखेडा सहज ही

तय हो जाता है। इससे 'आचार्य' का सम्बध भद्रबाहु स्वामी से हो जाता है और लेख का यह अर्थ निकलता है कि भद्रबाहु स्वामी सघ को आगे बढने की आज्ञा देकर आप प्रभाचन्द्र नामक एक शिष्य सहित कटवप्र पर ठहर गये और उन्होंने वहीं समाधिमरण किया। इससे लेख के पूर्वापर भागों मे सामञ्जस्य स्थापित हो जाता है और अन्य प्रमाणों से कोई विरोध नहीं रहता। मूल मे 'प्रभाचन्द्रोना' 'प्रभाचन्द्रेणाम' भी पढा जा सकता है। इस पाठ मे कठिनाई केवल यह आती है कि 'म' अक्षर का कोइ अर्थ व सम्बन्ध नहीं रहता। पर इसके परिहार मे यह कहा जा सकता है कि लेख को खोदनेवाले न 'प्रभाचन्द्रेणनाम ' की जगह भ्रम स 'प्रभाचन्द्रेणाम' खोद दिया है, वह 'न' को भूल गया। ऐसी भूलें शिलालखों मे बहुधा पाई जाती हैं। प्रभाचन्द्र के भद्रबाहु के शिष्य होने से ऊपर के समस्त प्रमाणो द्वारा यह बात सहज ही समझ मे आ जाता है कि प्रभाचन्द्र चन्द्रगुप्त का ही नामान्तर व दीक्षा-नाम होगा।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि ये भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त कौन थे और कब हुए। शिलालेख न० १, जिसकी वार्त्ता पर हम ऊपर विचार कर चुके हैं, अपनी लिखावट पर से अपने को लगभग शक सवत् की पाँचवीं छठी शताब्दि का सिद्ध करता है। अत उसमें उल्लिखित भद्रबाहु और प्रभाचन्द्र (चन्द्रगुप्त) शक का पाँचवी छठी शताब्दि से पूर्व

होना चाहिये। दिगम्बर पट्टावलियों मे महावीर स्वामी के समय से लगाकर शक की उक्त शताब्दियों तक 'भद्रबाहु' नाम के दो आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं, एक तो अन्तिम श्रुत केवली भद्रबाहु और दूसरे वे भद्रबाहु जिनसे सरस्वती गच्छ का नन्दी आम्नाय की पट्टावली प्रारम्भ होती है। दूसरे भद्रबाहु का समय ईस्वी पूर्व ५३ वर्ष व शक सवत् से १३१ वर्ष पूर्व पाया जाता है। इनके शिष्य का नाम गुप्तिगुप्त पाया जाता है जो इनके पश्चात् पट्ट के नायक हुए। डा० फ्लीट का मत है कि दक्षिण की यात्रा करनेवाले ये ही द्वितीय भद्र-बाहु हैं और चन्द्रगुप्त उनके शिष्य गुप्तिगुप्त का ही नामान्तर है। पर इस मत के सम्बन्ध में कई शकाएँ उत्पन्न होती हैं। प्रथम तो गुप्तिगुप्त और चन्द्रगुप्त को एक मानने के लिये कोई प्रमाण नहीं है, दूसरे इसस उपर्युक्त प्रमाणो मे जो चन्द्र-गुप्त नरेश के राज्य त्यागकर भद्रबाहु से दीक्षा लेने का उल्लेख है, उसका कुछ खुलासा नही होता और तीसरे जिस द्वादश-वर्षीय दुर्भिक्ष के कारण भद्रबाहु ने दक्षिण की यात्रा की थी उस दुर्भिक्ष के द्वितीय भद्रबाहु के समय मे पडने के कोई प्रमाण नही मिलते। इन कारणों से डा० फ्लीट की कल्पना बहुत कमजोर है और अन्य कोई विद्वान् उसका समर्थन नही करते। विद्वानों का अधिक झुकाव अब इसी एकमात्र युक्तिसगत मत की ओर है कि दक्षिण की यात्रा करनेवाले भद्रबाहु अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु ही हैं और उनके

साथ जाने वाले उनके शिष्य चन्द्रगुप्त स्वयं भारत सम्राट् चन्द्रगुप्त के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हैं। यद्यपि वीर निर्वाण के समय का अब तक अन्तिम निर्णय न हो सकने के कारण भद्रबाहु का जो समय जैन पट्टावलियों और ग्रंथों मे पाया जाता है तथा चन्द्रगुप्त सम्राट् का जो समय आजकल इतिहास सर्व सम्मति से स्वीकार करता है उनका ठीक समीकरण नहीं होता, * तथापि दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदाय के ग्रंथों से भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त समसामयिक सिद्ध होते हैं। इन दोना सम्प्रदायों के ग्रंथों में इस विषय पर कई विरोध होने पर भी वे उक्त बात पर एकमत हैं। हेमचन्द्राचार्य के 'परिशिष्ट पर्व' से यह भी सिद्ध होता है कि इस समय बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पडा था, तथा 'उस भयङ्कर दुष्काल क पडने पर जब साधु समुदाय को भिक्षा का अभाव होने लगा तब सब लोग निर्वाह के लिय समुद्र क समीप गाँवो मे चले गये'। इस समय चतुर्दशपूर्वधर श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी

* दि० जैन ग्रंथो के अनुसार भद्रबाहु का आचार्यपद निर्वाण संवत् १३३ स १६२ तक २९ वर्ष रहा जो प्रचलित निर्वाण सवत् के अनुसार ईस्वीपूर्व ३९४ से ३६५ तक पड़ता है, तथा इतिहासानुसार चन्द्रगुप्त मौर्य्य का राज्य ईस्वीपूर्व ३२१ से २९८ तक माना जाता है। इस प्रकार भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के अन्तकाल मे ६७ वर्ष का अन्तर पडता है। श्वेताम्बर ग्रंथो के अनुसार भद्रबाहु का समय नि० सं० १५६ से १७० तदनुसार ईस्वी पूर्व ३७१ से ३५७ तक सिद्ध होता है। इसका चन्द्रगुप्त के समय के साथ प्राय समीकरण हो जात है।

ने बारह वर्ष के महाप्राण नामक ध्यान की आराधना प्रारम्भ कर दी थी। परिशिष्ट पर्व के अनुसार भद्रबाहु स्वामी इस समय नेपाल की ओर चले गये थे और श्रीसंघ के बुलाने पर भी वे पाटलिपुत्र को नहीं आये जिसके कारण श्रीसंघ ने उन्हें संघबाह्य कर देने की भी धमकी दी। उक्त ग्रंथ में चन्द्रगुप्त के समाधि पूर्वक मरण करने का भी उल्लेख है।

इस प्रकार यद्यपि दिगम्बर और श्वेताम्बर ग्रन्थों में कई बारीकियों में मत-भेद है पर इन भेदों से ही मूल बातों की पुष्टि होती है क्योंकि उनसे यह सिद्ध होता है कि एक मत दूसरे मत की नकल मात्र नहीं है व मूल बातें दोनों के ग्रन्थों में प्राचीनकाल से चली आती हैं।

अब इस विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों के मत देखिये। डा० ल्यूमन* और डा० हार्नले† श्रुतकेवली भद्रबाहु की दक्षिण यात्रा को स्वीकार करते हैं। टामस साहब अपनी एक पुस्तक‡ में लिखते हैं कि "चन्द्रगुप्त जैन समाज के व्यक्ति थे यह जैन ग्रन्थकारों ने एक स्वयंसिद्ध और सर्व प्रसिद्ध बात के रूप से लिखा है जिसके लिये कोई अनुमान प्रमाण देने की आवश्यकता ही नहीं थी। इस विषय में लेखों के प्रमाण बहुत प्राचीन और साधारणतः सन्देह-रहित हैं। मैगस्थनीज

* Vienna Oriental Journal VII, 382

† Indian Antiquary XXI, 59 60

‡ Jainism or the Early Faith of Asoka P 23

के कथनों से भी झलकता है कि चन्द्रगुप्त ने ब्राह्मणों के सिद्धान्तों के विपक्ष मे श्रमणों (जैन मुनियो) के धर्मोपदेशो को अङ्गीकार किया था।" टामस साहब इसके आगे यह भी सिद्ध करते हैं कि चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र और प्रपौत्र बिन्दुसार और अशोक भी जैनधर्मावलम्बी थे। इसके लिये उन्होने 'मुद्राराक्षस' 'राजतरङ्गिणी' तथा 'आइने अकबरी' के प्रमाण दिये हैं। श्रीयुक्त जायसवाल महोदय लिखते हैं* कि "प्राचीन जैनग्रथ और शिलालेख चन्द्रगुप्त को जैन राजर्षि प्रमाणित करते हैं। मेरे अध्ययन ने मुझे जैनग्र थो का ऐतिहासिक वार्ताओं का आदर करने को बाध्य किया है। कोई कारण नहीं है कि हम जैनियो के इस कथन को कि चन्द्रगुप्त अपने राज्य के अन्तिम भाग मे राज्य को त्याग जिन दीक्षा ले मुनि वृत्ति से मरण को प्राप्त हुए, न मानें। मैं पहला ही व्यक्ति यह माननेवाला नहीं हूँ। मि० राइस, जिन्होंने श्रवण बेलगोला के शिलालेखों का अध्ययन किया है, पूर्णरूप से अपनी राय इसी पक्ष मे देते हैं और मि० व्ही० स्मिथ भी अन्त मैं इस मत की ओर झुके हैं।" डा० स्मिथ लिखते हैं† कि "चन्द्रगुप्त मौर्य का घटना पूर्ण राज्यकाल किस प्रकार समाप्त हुआ इस पर ठीक प्रकाश एक मात्र जैन कथाओ से ही

---

* Journal of the Behar and Orissa Research Society Vol III

†Oxford History of India 75-76

पडता है। जैनियो ने सदैव उक्त मौर्य सम्राट् को बिम्बसार (श्रेणिक) के सदृश जैन धर्मावलम्बी माना है और उनके इस विश्वास को झूठ कहने के लिये कोई उपयुक्त कारण नहीं है। इसमे जरा भी सन्देह नहीं है कि, शैशुनाग, नन्द और मौर्य राजवशों के समय में जैन धर्म मगध प्रान्त मे बहुत जोर पर था। चन्द्रगुप्त ने राजगद्दी एक कुशल ब्राह्मण की सहायता से प्राप्त की थी यह बात चन्द्रगुप्त के जैनधर्मावलम्बी होने के कुछ भी विरुद्ध नहीं पडती। 'मुद्राराक्षस' नामक नाटक मे एक जैन साधु का उल्लेख है जो नन्द नरेश के और फिर मौर्य सम्राट् के मन्त्री राक्षस का खास मित्र था।

"एक बार जहा चन्द्रगुप्त के जैनधर्मावम्बी होने की बात मान ली तहॉ फिर उनके राज्य को त्याग करने व जैनविधि के अनुसार सल्लेखना द्वारा मरण करने की बात सहज ही विश्वसनीय हो जाती है। जैनग्रन्थ कहते हैं कि जब भद्रबाहु की द्वादशवर्षीय दुर्भिक्षवाली भविष्यवाणी उत्तर भारत मे सच होने लगी तब आचार्य बारह हजार जैनियों को साथ लेकर अन्य सुदेश की खोज मे दक्षिण को चल पडे। महाराज चन्द्रगुप्त राज्य त्यागकर सङ्घ के साथ हो लिये। यह सङ्घ श्रवण बेलगोला पहुँचा। यहॉ भद्रबाहु ने शरीर त्याग किया। राजर्षि चन्द्रगुप्त ने उनसे बारह वर्ष पीछे समाधिमरण किया। इस कथा का समर्थन श्रवणबेलगोला के मन्दिरों आदि के नामो, ईसा की सातवी शताब्दि के उपरान्त के लेखो तथा दसवीं

शताब्दि के ग्रन्थों से होता है। इसकी प्रामाणिकता सर्वत पूर्ण नही कही जा सकती किन्तु बहुत कुछ सोच विचार करने पर मेरा झुकाव इस कथन की मुख्य बातों को स्वीकार करने की ओर है। यह तो निश्चित ही है कि जब ईस्वी पूर्व ३२२ मे व इसके लगभग चन्द्रगुप्त सिहासनारूढ हुए थे तब वे तरुण अवस्था मे ही थे। अतएव जब चौबीस वर्ष के पश्चात् उनके राज्य का अन्त हुआ तब उनकी अवस्था पचास वर्ष से नीचे ही होगी। अत उनका राजपाट त्याग देना उनके इतनी कम अवस्था मे लुप्त हो जाने का उपयुक्त कारण प्रतीत होता है। राजाओं के इस प्रकार विरक्त हो जाने के अन्य भी उदाहरण हैं और बारह वर्ष का दुर्भिक्ष भी अविश्वसनीय नही है। सक्षेपत अन्य कोई वृत्तान्त उपलब्ध न होने क कारण इस क्षेत्र मे जैन कथन ही सर्वोपरि प्रमाण हैं।"

अब शिलालेखों मे जो राजवशों का परिचय पाया जाता है उसका सिलसिलेवार परिचय दिया जाता है।

१ गङ्गवश—इस राजवश का अब तक का ज्ञात इतिहास लखों, विशेषत ताम्रपत्रों पर से सङ्कलित किया गया है। इस वश से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ताम्रपत्रो की डा० फ्लीट ने पूर्णरूप से जाचकर यह मत प्रकाशित किया था कि वे सब ताम्रपत्र जाली हैं और गङ्गवश की ऐतिहासिक सत्ता के लिये कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है। इसके पश्चात् मैसूर पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर रावबहादुर नरसिंहाचार ने इस वश

के अन्य अनेक लेखों का पता लगाया जो उनकी जाँच में ठीक उतरे। इनके बल से उन्होंने गङ्गवंश की ऐतिहासिकता सिद्ध की है।

इस वंश का राज्य मैसूर प्रान्त मे लगभग ईसा की चौथी शताब्दि से ग्यारहवीं शताब्दि तक रहा। आधुनिक मैसूर का अधिकांश भाग उनके राज्य के अन्तर्गत था जो गङ्गवाडि ९६००० कहलाता था। मैसूर में जो आजकल गङ्गडिकार (गङ्गवाडिकार) नामक किसानों की भारी जनसंख्या है वे गङ्गनरेशों की प्रजा के ही वंशज हैं। गङ्गराजाओं की सबसे पहली राजधानी 'कुवलाल' व 'कोलार' थी जो पूर्वी मैसूर मे पालार नदी के तट पर है। पीछे राजधानी कावेरी के तट पर 'तलकाड' को हटा ली गई। आठवीं शताब्दि मे श्रीपुरुष नामक गङ्गनरेश अपनी राजधानी सुविधा के लिये बङ्गलोर के समीप मण्णे व मान्यपुर मे भी रखते थे। इसी समय मे गङ्गराज्य अपनी उत्कृष्ट अवस्था पर पहुँच गया था। तलकाड ईसा की ११ हवीं शताब्दि के प्रारम्भ मे चोल नरेशो के अधिकार मे आ गया और तभी से गङ्गराज्य की इतिश्री हुई। आदि से ही गङ्गराज्य का जैनधर्म स घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। लेख नं० ५४ (६७) के उल्लेख से ज्ञात होता है कि गङ्गराज्य की नींव डालने में जैनाचार्य सिंहनन्दि ने भारीसहायता की थी। सिंहनन्द्याचार्य की इस सहायता का उल्लेख गङ्गवंश के अन्य कई लेखों मे भी पाया जाता है, उदाहरणार्थ लेख नं०

३६७, उदयेन्दिरम् का दानपत्र (सा० इ० इ० २, ३८७), कूडलु का दानपत्र (मै० आ० रि० १६२१ पृ० २६), ए० क० ७, शिमोग ४, ए० क० ८ नगर ३५ व ३६ इत्यादि। इसके अतिरिक्त गोम्मटसार वृत्ति के कर्त्ता अभयचन्द्र त्रैविद्य चक्रवर्ती ने भी अपने ग्रन्थ की उत्थानिका मे इस बात का उल्लेख किया है। इन अनेक उल्लेखो से यद्यपि यह स्पष्ट नहीं ज्ञात होता कि जैनाचार्य ने गङ्गराज्य की जड जमाने में किस प्रकार सहायता की थी तथापि यह बात पूर्णत सिद्ध होती है कि गङ्गवश की जड जमानेवाले जैनाचार्य सिहनन्दि ही थे। कहा जाता है कि आचार्य पूज्यपाद देवनन्दि इसी वश के सातवें नरेश दुर्विनीत के राजगुरु थे। गङ्गवश के अन्य अनेक प्रकाशित लेख जैनाचार्यों से सम्बन्ध रखते हैं।

लेख न० ३८ (५६) मे गङ्गनरेश मारसिंह के प्रताप का अच्छा वर्णन है। अनेक भारी भारी युद्धो में विजय पाकर अनेक दुर्ग किले आदि जीतकर व अनेक जैन मन्दिर और स्तम्भ निर्माण कराकर अन्त में अजितसेन भट्टारक के समीप सल्लेखना विधि से बङ्कापुर में उन्होंने शरीर त्याग किया। उन्होंने राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र (चतुर्थ) का अभिषेक किया था। यद्यपि इस लेख में उनके स्वर्गवास का समय नहीं दिया गया पर एक दूसरे लेख (ए० क० १०, मूल्बागल् ८४) मे कहा गया है कि उन्होंने शक स० ८९६ मे शरीर त्याग किया था। गङ्गनरेश मारसिंह और राष्ट्रकूट नरेश कृष्णराज तृतीय इन

दोनों के बीच घनिष्ठ मित्रता थी। मारसिंह ने अनेक युद्ध कृष्णराज के लिये ही जीते थे। कूडलूर के दानपत्र (मै० आ० रि० १६२१ पृ० २६ सन् ६६३) मे कहा गया है कि स्वयं कृष्णराज ने मारसिंह का राज्याभिषेक किया था।

मारसिंह के उत्तराधिकारी राचमल्ल (चतुर्थ) थे। इन्हीं के मन्त्री चामुण्डराज ने विन्ध्यगिरि पर चामुण्डरायबस्ती निर्माण कराई और गोम्मटेश्वर की वह विशाल मूर्ति उद्घाटित की (नं० ७५–७६ आदि)। लेख नं० १०६ (२८१) यद्यपि अधूरा है तथापि इसमे चामुण्डराय का कुछ परिचय पाया जाता है। उससे विदित होता है कि चामुण्डराय ब्रह्मक्षत्र कुल के थे और उन्होंने अपने स्वामी के लिये अनेक युद्ध जीते थे। इतना ही नहीं चामुण्डराय एक कवि भी थे। उनका लिखा हुआ चामुण्डराय पुराण नाम का एक कन्नड ग्रन्थ भी पाया जाता है। यह अधिकांश गद्य में है। इसमे चौबीस तीर्थंकरो के जीवन का वर्णन है। यह ग्रन्थ उन्होंने शक सं० ६०० मे समाप्त किया था। इस ग्रन्थ मे भी उनके कुल व गुरु अजितसेन आदि का परिचय पाया जाता है तथा किस प्रकार भिन्न भिन्न युद्ध जीतकर उन्होंने समर धुरन्धर, वीर मार्तण्ड, रणरङ्गसिंग, वैरिकुलकालदण्ड, भुजविक्रम, समर-परशुराम की उपाधियाँ प्राप्त की थीं इसका भी वर्णन इस ग्रन्थ मे है। वे अपनी सत्यनिष्ठा के कारण सत्ययुधिष्ठिर कहलाते थे। कई लेखो मे उनका उल्लेख केवल 'राय' नाम से

ही किया गया है न० १३७ (३४५) । लेख न० ६७ (१२१) मे उल्लेख है कि चामुण्डराय के पुत्र, व अजितसेन के शिष्य जिनदेवन ने बेल्गोल मे एक जैन मन्दिर निर्माण कराया था ।

इनके अतिरिक्त अन्य कई लेखो में गङ्गवश के ऐसे नरेशो का उल्लेख मात्र आया है, जिनका अभी तक अन्य कहीं कोई विशेष परिचय नहीं पाया गया। लेख न० २५६ (४१५) मे जिस शिवमारन बसदि का उल्लेख है वह सम्भवत गङ्गवश के शिवमार नरेश (सम्भवत शिवमार द्वि० श्री पुरुष के पुत्र) ने निर्माण कराई थी। लेख न० ६० (१३८) मे किसी गङ्गवज्र अपर नाम रक्कसमणि का उल्लेख है जिनके बोयिग नाम के एक वीर योद्धा ने वद्देग और कोणेयगङ्ग के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपने प्राण विसर्जित किये। वद्देग राष्ट्रकूटनरेश अमोघवर्ष तृतीय का उपनाम भी था। गङ्गवज्र मारसिंग नरेश की उपाधि भी थी (न० ३८ (५६) । लेख न० ६१ (१३९) में लोकविद्याधर अपर नाम उदयविद्याधर का उल्लेख है। निश्चयत नहीं कहा जा सकता कि यह भी कोई गङ्गवशी नरेश का नाम है या नहीं, किन्तु कुछ गङ्गनरेशों की विद्याधर उपाधि थी। उदाहरणार्थ, रक्कसगङ्ग के दत्तक पुत्र का नाम राजविद्याधर था (ए० क० ८, नगर ३५) व मारसिंग की उपाधि गङ्गविद्याधर थी ३८ (५९) । अतएव सम्भव है कि लोकविद्याधर व उदयविद्याधर भी कोई गङ्गनरेश रहा हो। न० २३५ (१५०) में गङ्गराज्य व एरेगङ्ग के महामन्त्री नर

सिंग के एक नाती नागवर्म के सल्लेखना मरण का उल्लेख है। सूडि व कूडलूर के दान-पत्रों (ए० इ० ३, १५८, म० आ० रि० १९२५, पृ० २५) मे गङ्गनरेश एरेयप्प और उनके पुत्र नरसिंग का उल्लेख है। सम्भव है कि उपर्युक्त लेख के एरगङ्ग और नरसिंग ये ही हो।

कुछ लेखों मे बिना किसी राजा के नाम के गगवंश मात्र का उल्लेख है [लेख नं० १६३ (३७), १५१ (४११), २४६ (१६४), ४६९ (३७८)]। लेख नं० ५५ (६९) मे उल्लेख है कि जो जैन धर्म ह्रास अवस्था को प्राप्त हो गया था उसे गोपनन्दि ने पुन गङ्गकाल के समान समृद्धि और ख्याति पर पहुँचाया। लेख नं० ५४ (६७) मे उल्लेख है कि श्रीविजय का गङ्गनरेशो ने बहुत सम्मान किया था। लेख नं० १३७ (३४५) मे उल्लेख है कि हुल्ल ने जिस केल्लगेरे मे अनेक बस्तियाँ निर्माण कराई थीं उसकी नीव गङ्गनरेशों न ही डाली थी। लेख नं० ४९६ मे गङ्ग वाडि का उल्लेख हैं।

२ राष्ट्रकूटवंश—राष्ट्रकूटवंश का दक्षिण भारत मे इतिहास ईस्वी सन् की आठवीं शताब्दि के मध्यभाग से प्रारम्भ होता है। इस समय राष्ट्रकूटवंश के दन्तिदुर्ग नामक एक राजा ने चालुक्यनरेश कीर्त्तिवर्मा द्वितीय को परास्त कर राष्ट्रकूट साम्राज्य की नींव डाली। उसके उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम ने चालुक्य राज्य के प्राय सारे प्रदेश अपने आधीन कर लिये। कृष्ण के पश्चात् क्रमश गोविन्द (द्वितीय) और ध्रुव ने राज्य

किया। इनके समय मे राष्ट्रकूट राज्य का विस्तार और भी बढ गया। आगामी नरेश गोविन्द तृतीय के समय मे राष्ट्रकूट राज्य विन्ध्य और मालवा से लगाकर काञ्ची तक फैल गया। इन्होने अपने भाई इन्द्रराज को लाट (गुजरात) का सूबेदार बनाया। गोविन्द तृतीय के पश्चात् अमोघवर्ष राजा हुए जिन्होंने लगभग सन् ८१५ से ८७७ ईस्वी तक राज्य किया। इन्होंने अपनी राजधानी नासिक को छोड मान्यखेट मे स्थापित की। इनके समय मे जैन धर्म की खूब उन्नति हुई। अनेक जैन कवि—जैसे जिनसेन, गुणभद्र, महावीर आदि—इनके समय में हुए। गुणभद्राचार्य ने उत्तर पुराण मे कहा है कि राजा अमोघवर्ष जिनसेनाचार्य को प्रणाम करके अपने को धन्य समझता था। अमोघवर्ष स्वय भी कवि थे। इनकी बनाई हुई 'रत्नमालिका' नामक पुस्तक से ज्ञात होता है कि वे अन्त समय में राज्य को त्यागकर मुनि हो गये थे।

"विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेय रत्नमालिका।
रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलकृति ॥"

अमोघवर्ष के पश्चात् कृष्णराज द्वितीय हुए जिनकी अकालवर्ष, शुभतुङ्ग, श्रीपृथ्वीवल्लभ, वल्लभराज, महाराजाधिराज, परमेश्वर परमभट्टारक उपाधियाँ पाई जाती हैं। इनके पश्चात् इन्द्र (तृतीय) हुए जिन्होंने कन्नौज पर चढाई कर वहाँ के राजा महीपाल को कुछ समय के लिये सिंहासनच्युत कर दिया। इनके उत्तराधिकारियों में कृष्णराज तृतीय सबसे प्रतापी हुए

जिन्होने राजादित्य चोल के ऊपर सन् ९४९ मे बडी भारी विजय प्राप्त की। इस समय के युद्धो का मूल कारण धार्मिक था। राष्ट्रकूटनरेश जैनधर्मपोषक और चोलनरेश शैव धर्मपोषक थे। इनके समय में सोमदेव, पुष्पदन्त, इन्द्रनन्दि आदि अनेक जैनाचार्य हुए हैं। कृष्णराज के उत्तराधिकारी खोटिग देव और उनके पीछे कर्कराज द्वितीय हुए। इनके समय मे चालुक्यवश पुन जागृत हो उठा। इस वश के तैल व तैलप ने कर्कराज को सन् ९७३ मे बुरी तरह परास्त कर दिया जिससे राष्ट्रकूट व श का प्रताप सदैव के लिये अस्त हो गया। जैसा कि आगे विदित होगा, लेख न० ५७ (शक स० ९०४) में कृष्णराज तृतीय के पौत्र एक इन्द्रराज (चतुर्थ) का भी उल्लेख है व लेख न० ३८ मे कहा गया है कि गङ्गनरेश मारसिह ने इन्द्र का अभिषेक किया था। सम्भवत राष्ट्रकूटवश के हितैषी गङ्गनरश ने राष्ट्रकूट राज्य को रक्षित रखने के लिये यह प्रयत्न किया पर इतिहास में इसका कोई फल देखने मे नहीं आता। दक्षिण का राष्ट्रकूटवश इतिहास के सफे से उड गया।

अब इस सग्रह के लेखो मे इस वश के जो उल्लेख हैं उनका परिचय कराया जाता है।

इस वश के वहेग व अमोघवर्ष तृतीय ने कोणेय गग के साथ गङ्गवज्र, व रक्कसमणि के विरुद्ध युद्ध किया था, ऐसा लेख न० ६० (१३८) (अनु० शक ८६२) के उल्लेख से

ज्ञात होता है। लेख नं० १०६ (२८१) (अनु० शक ९५०) से ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूटनरेश इन्द्र की आज्ञा से चामुण्डराय के स्वामी जगदेकवीर राचमल्ल ने वज्वलदेव को परास्त किया था। लेख नं० ३८ (५९) (शक ८९६) से विदित होता है कि राष्ट्रकूटनरेश कृष्ण तृतीय के लिये गङ्गनरेश मारसिंह ने गुर्जर प्रदेश को जीता था व राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र (चतुर्थ) का राज्याभिषेक किया था। इन उल्लेखो से स्पष्ट ज्ञात होता है कि गङ्गवंश और राष्ट्रकूटवंश के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध था। इस वंश का सबसे प्राचीन लेख जो इस सग्रह मे आया है, लेख नं० २४ (३५) (अनु० शक ७ ०) है। इस लेख मे ध्रुव के पुत्र व गोविन्द (तृतीय) के ज्येष्ठ भ्राता रणावलोक कम्बय्य का उल्लेख है। एक लेख (ए० क० ४, हेग्गडदेव-न्कोटे ९३) से ज्ञात होता है कि जब गङ्गराज शिवमार द्वितीय को ध्रुव ने कैद कर लिया था तब राजकुमार कम्ब गङ्गप्रदेश के शासक नियुक्त किये गये थे व ए० क० ९, नेलमङ्गल ६१ से ज्ञात होता है कि कम्ब शक स० ७२४ (ई० सन् ८०२) मे गङ्गप्रदेश का शासन कर रहे थे। हाल ही मे चामराज नगर से कुछ ताम्रपत्र मिले हैं (मै० आ० रि १९२० पृ० ३१) जिनसे ज्ञात होता है कि जिस समय कम्ब का शिविर तलवन नगर (तलकाड) मे था तब उन्होंने अपने पुत्र शङ्करगण्ण की प्रार्थना से शक स० ७२९ (सन् ८०७ ई०) मे एक ग्राम का दान जैनाचार्य वर्धमान को दिया था। अन्य प्रमाणों से ज्ञात

हुआ है कि ध्रुव नरेश ने अपना उत्तराधिकारी अपने कनिष्ठ पुत्र गोविन्द (तृतीय) को बनाया था व कम्ब को गङ्गप्रदेश दिया था। इस हेतु कम्ब ने गोविन्द के विरुद्ध तैयारी की पर अन्त मे उन्हे गोविन्द का आधिपत्य स्वीकार करना पडा।

लेख न० ५७ (१३३) मे इन्द्र चतुर्थ की किसी गेंद के खेल मे चतुराई आदि का वर्णन है व उल्लेख है कि उन्होने शक स० ९०४ मे श्रवणबेल्गुल मे सल्लेखना मरण किया। लेख मे यह भी कहा गया है कि इन्द्र कृष्ण (तृतीय) के पौत्र, गङ्गगगेय (बूतुग) के कन्यापुत्र व राजचूडामणि के दामाद थे। यह विदित नहीं हुआ कि ये राजचूडामणि कौन थे। इन्द्र की रट्टकन्दर्प राजमार्तण्ड, चलङ्कराव, चलदग्गलि, कीर्तिनारायण, एलेवबेडेंग, गेडेगलाभरण, कलिगलोल्गण्ड और वीरर वीर ये उपाधियाँ थीं। जैसा ऊपर कहा जा चुका है, गङ्गनरेश मारसिंह ने इन्द्र का राज्याभिषेक किया था। लेख न० ५८ (१३४) 'मावणगन्धहस्ति' उपाधिधारी एक वीर योधा पिट्ट की मृत्यु का स्मारक है। लेख मे इस वीर के पराक्रम वर्णन के पश्चात् कहा गया है कि उसे राजचूडामणि मार्गेड-मल्ल ने अपना सेनापति बनाया था। लेख की लिपि और राजचूडामणि व चित्रभानु सवत्सर के उल्लेख से अनुमान होता है कि यह भी इन्द्र चतुर्थ के समय का है।

प्रसङ्गवश लेख न० ५४ (६७) में साहसतुङ्ग और कृष्ण-राज का उल्लेख है। अकलङ्कदेव ने अपनी विद्वत्ता का वर्णन

साहसतुङ्ग को सुनाया था (पद्य न० २१), और परवादि-मल्ल ने अपने नाम की सार्थकता कृष्णराज को समझाई थी (पद्य न० २६)। ये दोनो क्रमश राष्ट्रकूटनरेश दन्तिदुर्ग और कृष्ण द्वितीय अनुमान किये जाते हैं।

३ चालुक्यवंश—चालुक्यनरेशो की उत्पत्ति राजपुताने के सोलङ्की राजपूतों म से कही जाती है। दक्षिण मे इस राजव श की नींव जमानेवाला एक पुलाकेशी नाम का सामन्त था जो इतिहास मे पुलाकेशी प्रथम के नाम से प्रख्यात हुआ है। इसने सन् ५५ ईस्वी के लगभग दक्षिण के बीजापुर जिले के वातापि (आधुनिक बादामी) नगर मे अपनी राजधानी बनाई और उसके आसपास का कुछ प्रदेश अपने अधीन किया। इसके उत्तराधिकारी कीर्त्तिवर्मा, म लेश और पुला केशी द्वितीय हुए जिन्होने चालुक्यराज्य को क्रमश खूब फैलाया। पुलाकेशी द्वितीय के समय मे चालुक्यराज्य दक्षिण भारत मे सबसे प्रबल हो गया। इस नरेश ने उत्तर के महाप्रतापी हर्षवर्धन नरेश की भी दक्षिण की ओर प्रगति रोक दी। इस राजा की कीत्ति विदेशो मे भी फैली और ईरान के बादशाह खुसरो (द्वितीय) ने अपना राजदूत चालुक्य राजदरबार मे भेजा। पुलाकेशी द्वितीय ने सन् ६०८ से ६४२ ईस्वी तक राज्य किया। पर उसके अन्तिम समय मे पल्लव नरेशों ने चालुक्यराज्य की नीव हिला दी। उसके उत्तराधिकारी विक्रमादित्य प्रथम के समय में इस व श की एक शाखा ने

गुजरात में राज्य स्थापित किया। आठवीं शताब्दी के मध्य भाग मे दन्तिदुर्ग नामक एक राष्ट्रकूट राजा ने इस वश के कीर्त्तिवर्मा द्वितीय को बुरी तरह हराकर राष्ट्रकूटव श की जड जमाई। चालुक्यवश कुछ समय के लिये लुप्त हो गया।

दशमी शताब्दी के अन्तिम भाग मे चालुक्यव श के तैल नामक राजा ने अन्तिम राष्ट्रकूट नरेश कर्क द्वितीय को हराकर चालुक्यव श को पुनर्जीवित किया। इस समय से चालुक्यो की राजधानी कल्याणी मे स्थापित हुई। इसके उत्तराधिकारियो को चोल नरेशों से अनेक युद्ध करना पडा। सन् १०७६ से ११२६ तक इस व श के एक बडे प्रतापी राजा विक्रमादित्य षष्ठम ने राज्य किया। इन्ही के समय मे बिल्हण कवि ने 'विक्रमाङ्कदेवचरित' काव्य रचा। इनके उत्तरा धिकारियों के समय मे चालुक्यराज्य के सामन्त नरेश देवगिरि के यादव और द्वारासमुद्र के होय्सल स्वतन्त्र हो गये और सन् ११९० मे चालुक्य साम्राज्य की इतिश्री हो गई।

अब इस सग्रह के लेखो में जो इस व श के उल्लेख हैं उनका परिचय दिया जाता है।

लेख न० ३८ (५९) (शक ८९६) में गङ्गनरेश मार सिह के प्रताप वर्णन मे कहा गया है कि उन्होने चालुक्य-नरेश राजादित्य को परास्त किया था। न० ३३७ (१५२) मे किसी चगभच्चण चक्रवर्ती उपाधिधारी गोग्गि नाम के एक सामन्त का उल्लेख है। यह सभवत वही चालुक्य सामन्त

है जिसका उल्लेख ए० क० ३, मैसूर ३७ के लेख मे पाया जाता है। इस लेख में वे 'समधिगतपञ्चमहाशब्द'' महा-सामन्त कहे गये हैं। जहा से यह लेख मिला है उसी वरुण नामक ग्राम में अन्य भी अनेक वीरगल हैं जिनमें गोग्गि के अनुजीवी योद्धाओ के रण मे मारे जाने के उल्लेख हैं (मै० आ० रि० १६१६ पृ० ४६–४७)। लेख न० ४५ (१२५) और ५६ (७३) मे उल्लेख है कि होय्सलनरेश विष्णुवर्धन के सेनापति गङ्गराज ने चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्ल पेर्माडि देव (विक्रमादित्य षष्ठ (१०७६ ११२६ ई०) को भारी पराजय दी। इन लेखों मे गङ्गराज का कन्नेगाल मे चालुक्य सेना पर रात्रि मे धावा मारने व उसे हराकर उसकी रसद व वाहन आदि सब स्वाधीन कर अपने स्वामी को देने का जोर-दार वर्णन है। न० १४४ (३८४) होय्सलवंश का लेख है पर उसके आदि में चालुक्याभरण त्रिभुवनमल्ल की राज्य वृद्धि का उल्लेख है जिससे होय्सल राज्य के ऊपर त्रिभुवन मल्ल के आधिपत्य का पता चलता है। लेख न० ५५ (६६) में मलधारि गुणचन्द्र ''मुनीन्द्र बलिपुरे मल्लिकामोद शान्तीशच रणार्चक'' कहे गये हैं (पद्य न० २०)। अन्य अनेक लेखों (ए० क० ७, शिकारपूर २० अ १२५, १२६, १५३, ए० इ० १२, १४४) से ज्ञात हुआ है कि मल्लिकामोद चालुक्य नरश जयसिंह प्रथम की उपाधि थी। इससे अनुमान किया जा सकता है कि सम्भवत बलिपुर में शान्तिनाथ की प्रतिष्ठा

जयसिंह नरेश ने ही कराई थी। इसी 'लेख' में यह भी उल्लेख है कि वासवचन्द्र ने अपने वाद पराक्रम से चालुक्य राजधानी में बालसरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी। लेख नं० ५४ (६७) में उल्लेख है कि वादिराज ने चालुक्य राजधानी में भारी ख्याति प्राप्त की थी तथा जयसिंह (प्रथम) ने उनकी सेवा की थी (पद्य ४१, ४२) इसी लेख में यह भी उल्लेख है कि जिन जैनाचार्य को पांड्यनरेश ने स्वामी की उपाधि दी थी उन्हें ही आहवमल्ल (चालुक्यनरेश १०४२-१०६८ ई०) ने शब्दचतुर्मुख की उपाधि प्रदान की थी। लेख नं० १२४ (३२७) व १३७ (३४५) में होय्सल नरेश एरेयङ्ग चालुक्य नरेश की दक्षिण बाहु कहे गये हैं (पद्य नं० ८)।

४ होय्सलवंश—पश्चिमी घाट की पहाडियों में कादुर जिले के मुडेगेरे तालुका में 'अगडि' नाम का एक स्थान है। यही स्थान होय्सल नरेशों का उद्गमस्थान है। इसी का प्राचीन नाम शशकपुर है जहां पर अब भी वासन्तिका देवी का मन्दिर विद्यमान है। यहां पर 'सल' नामक एक सामन्त ने एक व्याघ्र से जैनमुनि की रक्षा करने के कारण पोय्सल नाम प्राप्त किया। इस वंश के भावी नरेशों ने अपने को 'मलपरोल्गण्ड' अर्थात् 'मलपाओं' (पहाड सामन्तों) में मुख्य कहा है। इसी से सिद्ध होता है कि प्रारम्भ में होय्सलवंश पहाडी था। इस वंश के एक 'काम' नाम के नृप के कुछ शिलालेख मिले हैं जिनमें उसके कुर्ग के कोङ्गाल्व नरेशों से

युद्ध करने के समाचार पाये जाते हैं। होय्सलनरेश इस समय चालुक्यनरेश के माण्डलिक राजा थे। जिस समय ईसा की ११ वीं शताब्दि के प्रारम्भ में चोलनरेशो द्वारा गङ्ग वश का अन्त हो गया उस समय होय्सल माण्डलिकों को अपना प्राबल्य बढाने का अवसर मिला। 'काम' के उत्तराधिकारी 'विनयादित्य' ने चोलो से लड भिडकर अपना प्रभुत्व बढ़ाया यहाँ तक कि चालुक्यनरेश सोमेश्वर आहवमल्ल के महामण्डलेश्वरों मे विनयादित्य का नाम गङ्गवाडि ९६००० के साथ लिया जाने लगा। विनयादित्य के उत्तराधिकारी बल्लाल ने अपनी राजधानी शशपुरी से 'बेलूर' मे हटा ली। द्वारा समुद्र मे भी उनकी राजधानी रहने लगी। इन्होंने चङ्गाल्व नरेशों से युद्ध किया था। इनके उत्तराधिकारी विष्णुवर्द्धन के समय मे होय्सल नरशों का प्रभाव बहुत ही बढ गया। गङ्गवाडि का पुराना राज्य सब उनके आधीन हो गया और विष्णुवर्द्धन ने कई अन्य प्रदेश भी जीते। प्रारम्भ मे विष्णुवर्द्धन जैन धर्मावलम्बी थे पर पीछे वैष्णव हो गये थे। तथापि जैन धर्म में उनकी सहानुभूति बनी ही रही। विष्णुवर्द्धन ने लगभग सन् ११०६ से ११४१ तक राज्य किया और फिर उनके पुत्र नरसिंह ने सन् ११७३ तक। नरसिंह ने अपने पिता के समान ही होय्सल राज्य की वृद्धि की। उनके पुत्र वीर बल्लाल के समय में यह राज्य चालुक्य साम्राज्य के अन्तर्गत नहीं रहा और स्वतत्र हो गया। वीर बल्लाल ने सन् १२२०

तक राज्य किया। इसके पश्चात् वीर बल्लाल के उत्तराधिकारियो ने होय्सल राज्य को नव्वे वर्ष तक और कायम रक्खा। सन् १३१० ईस्वी मे दक्षिण पर मुसलमानों की चढ़ाई हुई। दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफूर ने होय्सल राज्य को नष्ट भ्रष्ट कर डाला, होय्सलनरेश को पकडकर कैद कर लिया और राजधानी द्वारासमुद्र का भी नाश कर डाला। द्वारासमुद्र का पूर्णत सत्यानाश मुसलमानी फौजो ने सन् १३२६ २७ मे किया।

अब इस वश के सम्बन्ध के जो उल्लेख सगृहीत लेखो मे आये हैं उनका परिचय दिया जाता है।

इस सग्रह मे होय्सलवश के सबसे अधिक लेख हैं। लेख नं० ५३ (१४३), ५६ (१३२), १४४ (३४८) व ४९३ मे विनयादित्य से लगाकर विष्णुवर्धन तक, लेख न १३७ (३४५) और १३८ (३४९) मे विनयादित्य से नारसिंह (प्रथम) तक व १२४ (३२७), १३० (३३५) और ४९१ मे विनयादित्य से बल्लाल (द्वितीय) तक की वशपरम्परा पाई जाती है। न० ५६ (१३२) मे इस वश की उत्पत्ति का इस प्रकार वर्णन पाया जाता है—"विष्णु के कमलनाल से उत्पन्न ब्रह्मा के अत्रि, अत्रि के चन्द्र, चन्द्र के बुध, बुध के पुरूरव, पुरूरव के आयु, आयु के नहुष, नहुष के ययाति व ययाति के यदु नामक पुत्र उत्पन्न हुए। यदु के वश मे अनेक नृपति हुए। इस वश के प्रख्यात नरेशो मे एक सल नामक नृपति हुए। एक

समय एक मुनिवर ने एक कराल व्याघ्र को देखकर कहा 'पोय्सल' 'हे सल, इसे मारो'। इस वृत्तान्त पर से राजा ने अपना नाम पोय्सल रक्खा और व्याघ्र का चिह्न धारण किया। इसके आगे द्वारावती के नरेश पोय्सल कहलाये और व्याघ्र उनका लाञ्छन पड गया। इन्ही नरेशो मे विनयादित्य हुए"। अन्य शिलालेखो (ए० क० ४, अर्सिकेरे १४१, १५७) से ज्ञात होता है कि विनयादित्य के पिता नृप काम होय्सल थे। अनेक लेखों (ए० क० ५, मञ्जराबाद ४३, अर्कल्गुद ७६, ए० क० ६, मूडगेरे १९) से सिद्ध है कि नृप काम ने भी उसी प्रदेश पर राज्य किया था। लेख न० ४४ (११८) मे भी नृप काम का एचि के रक्षक के रूप मे उल्लेख है (पद्य ५) अतएव यह कुछ समझ मे नहीं आता कि उपर्युक्त व शावली मे उनका नाम क्यों नही सम्मिलित किया गया। विनयादित्य के विषय मे लेख न० ५४ (६७) मे कहा गया है कि उन्होने शान्तिदेव मुनि की चरणसेवा से राज्यलक्ष्मी प्राप्त की थी (पद्य न० ५१), तथा लेख न० ५३ (१४३) मे कहा गया है कि उन्होने कितने ही तालाब व कितन ही जैनमन्दिर आदि निर्माण कराये थे यहाँ तक कि ईटो के लिए जो भूमि खोदी गई वहाँ तालाब बन गये, जिन पर्वतों से पत्थर निकाला गया वे पृथ्वी के समतल हो गये, जिन रास्तों से चूने की गाडियाँ निकलीं वे रास्ते गहरी घाटियाँ हो गये। पोय्सलनरेश जैनमदिर निर्माण कराने मे ऐसे दत्तचित्त थे। (पद्य न० ४—५)।

विनयादित्य के कलेयबरसि रानी से एरेयङ्ग पुत्र हुए जा लेख न० १२४ (३२७) व १३७ (३४५) मे चालुक्यनरेश की दक्षिण बाहु कहे गये हैं। लेख न १३८ (३४६) के कई पद्यों मे इस नरेश के प्रताप का वर्णन पाया जाता है। वे वहाँ 'क्षत्रकुलप्रदीप' व 'क्षत्रमौलिमणि' 'साक्षात्समर कृतान्त' व मालवमण्डलेश्वर पुरी धारा के जलानेवाले, कराल चोलकटक को भगानेवाले, चक्रगोट्ट के हरानेवाले, व कलिङ्ग का विध्वस करनेवाले कहे गये हैं।

लेख न० ४९२ (शक १०१५) विनयादित्य के पुत्र एरेयङ्ग के समय का है। इस लेख मे एरेयङ्ग और उनके गुरु गोप नन्दि की कीर्त्ति के पश्चात् नरेश द्वारा चन्द्रगिरि की बस्तियो के जीर्णोद्धार के हेतु गोपनन्दि को कुछ ग्रामो का दान दिये जाने का उल्लेख है। एरयङ्ग गङ्गमण्डल पर राज्य करते थे, लेख में इसका भी उल्लेख है। एरेयङ्ग की रानी एचलदेवी से बल्लाल, विष्णुवर्धन और उदयादित्य ये तीन पुत्र उत्पन्न हुए।

विष्णुवधन की उपाधियो व प्रतापादि का वर्णन लेख न० ५३ (१४३), ५६ (१३२), १२४ (३२७), १३७ (३४५), १३८ (३४६), १४४ (३८४) और ४९३ मे पाया जाता है। वे महामण्डलेश्वर, समधिगतपञ्चमहाशब्द, त्रिभुवनमल्ल, द्वारावतीपुरवराधीश्वर, यादवकुलाम्बरद्युमणि, सम्यक्त्वचूडामणि, मलपरोल्गण्ड, तलकाडु कोङ्ग नङ्गलि कोय्तूर उच्छङ्गि-नोलम्बवाडि हानुगल-गोण्ड, भुजबल वीरगङ्ग आदि प्रताप

सूचक पदवियो से विभूषित किये गये हैं। उन्होने इतने दुर्जय दुर्ग जीते, इतने नरेशो को पराजित किया व इतने आश्रितो को उच्च पदों पर नियुक्त किया कि जिससे ब्रह्मा भी चकित हो जाता है। लेखो मे उनकी विजयो का खूब वर्णन है। लेख न० २२६ (१३७) जो शक स० १०३६ का है विष्णु वर्द्धन के राज्यकाल का ही है। इस लेख मे पोय्सलसेट्टि और नेमिसेट्टि नाम के दो राजव्यापारियो का उल्लेख है। इन व्यापारियो की माताओं माचिकब्बे और शान्तिकब्बे ने जिन-मन्दिर और नन्दाश्वर निर्माण कराकर भानुकीर्ति मुनि से जिन दीक्षा ले ली। यह मन्दिर चन्द्रगिरि पर तेरिन बस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। लेख न० ४४५ (३६६) अधूरा है पर इसमे विष्णुवर्द्धन का उल्लेख है। न० ४७८ (३८८) से ज्ञात होता है कि इस नृपति के हिरियदण्डनायक, स्वामिद्रोहघरट्ट गङ्गराज ने बेल्गुल में जिननाथपुर निर्माण कराया। यह लेख बहुत घिस गया है। विदित होता है कि गङ्गराज ने उक्त नरेश का अनुमति से कुछ दान भी मन्दिर को दिया था। लेख मे कोलग का उल्लेख है। 'कोलग' एक माप विशेष था। लेख न० ४६३ (शक १०४७) मे विष्णुवर्द्धन के वस्तियो के जीर्णोद्धार व ऋषियों को आहारदान के हेतु शल्य ग्राम के दान का उल्लेख है। यह दान नन्दि सघ, द्रमिड गण, अरुङ्गलान्वय के श्रीपाल त्रैविद्यदेव को दिया गया। लेख मे उक्त अन्वय की परम्परा भी है। लेख न० ४६७ मे चालुक्य

त्रिभुवनमल्ल के साथ-साथ विष्णुवर्द्धन का उल्लेख है जिससे सिद्ध होता है कि विष्णुवर्द्धन चालुक्यों के आधिपत्य को स्वीकार करते थे। इस लेख मे नयकीर्त्ति के स्वर्गवास का भी उल्लेख है। लेख नं० ४५ (१२५), ५९ (७३), ९० (२४०), १४४ (३८४) ३६० (२५१) तथा ४८६ (३९७) विष्णुवर्द्धन नरेश ही के समय के हैं। इन लेखों मे गङ्गराज की वंशावली तथा उनके प्रतापमय व धार्मिक कार्यों का वर्णन पाया जाता है। गङ्गराज का वंशवृक्ष इस प्रकार है—

कौण्डिन्यगोत्रीय नागवर्मा
|
मार—माकणब्बे
|
एच (अपर नाम बुधमित्र—नृपकाम होय्सल के आश्रित)—पोचिकब्बे
|
बम्मचमूप | गङ्गराज

(देखो लेख नं० १४४, पृ० २९९)

लेख नं० ४४ (११८) मे गङ्गराज की ये उपाधियां पाई जाती हैं—समधिगतपञ्चमहाशब्द, महासामन्ताधिपति, महा प्रचण्डदण्डनायक, वैरिभयदायक, गोत्रपवित्र, बुधजनमित्र, श्रीजैनधर्मामृताम्बुधिप्रवर्द्धनसुधाकर, सम्यक्त्वरत्नाकर, आहार-

भयभैषज्यशास्त्रदारुविनोद, भव्यजनहृदयप्रमोद, विष्णुवर्द्धन भूपालहोय्सलमहाराजराज्याभिषेकपूर्णकुम्भ, धर्महर्म्योद्धरण मूलस्तम्भ और द्रोहघरट्ट। इसी लेख में यह भी कहा गया है कि गङ्गराज के पिता बुल्लूर के कनकनन्दि आचार्य के शिष्य थे। चालुक्यवंशवर्णन में कहा जा चुका है कि इन्होंने कन्नेगाल में चालुक्य सेना को पराजित किया था। उनके तलकाडु, कोङ्गु, चेङ्गिरि आदि स्वाधीन करने, नरसिंग को यमलोक भेजने, अदियम, तिमिल, दाम, दामोदरादि शत्रुओं को पराजित करने का वर्णन लेख नं० ९० (२४०) के ९, १० व ११ पद्यों में पाया जाता है। जिस प्रकार इन्द्र का वज्र, बलराम का हल, विष्णु का चक्र, शक्तिधर की शक्ति व अर्जुन का गाण्डीव उसी प्रकार विष्णुवर्द्धन नरेश के गङ्ग राज सहायक थे। गङ्गराज जैसे पराक्रमी थे वैसे ही धर्मिष्ठ भी थे। उन्होंने गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाया, गङ्गवाडि परगने के समस्त जिनमन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, तथा अनेक स्थानों पर नवीन जिनमन्दिर निर्माण कराये। प्राचीन कुन्दकुन्दान्वय के वे उद्धारक थे। इन्हीं कारणों से वे चामुण्ड-राय से भी सौगुणे अधिक धन्य कहे गये हैं। धर्म बल से गङ्गराज में अलौकिक शक्ति थी। लेख नं० ५९ (७३) के पद्य १४ में कहा गया है कि जिस प्रकार जिनधर्माग्रणी अत्ति यब्बरसि के प्रभाव से गोदावरी नदी का प्रवाह रुक गया था उसी प्रकार कावेरी के पूर से घिर जाने पर भी, जिनभक्ति के

कारण गङ्गराज की लेशमात्र भी हानि नहीं हुई। जब वे कन्नेगल मे चालुक्यों को पराजित कर लौटे तब विष्णुवर्द्धन ने प्रसन्न होकर उनसे कोई वरदान माँगने को कहा। उन्होंने परम नामक ग्राम माँगकर उसे अपनी माता तथा भार्या द्वारा निर्माण कराये हुए जिनमन्दिरो के हेतु दान कर दिया। इसी प्रकार उन्होंने गोवि दवाडि ग्राम प्राप्त कर गोम्मटेश्वर को अर्पण किया। गङ्गराज शुभचन्द्र सिद्धान्तदव के शिष्य थे। लेख नं० ५९ (७३) से विदित होता है कि दण्डनायक एचि-राज ने इस परम ग्राम के दान का समर्थन किया था।

गङ्गराज से सम्बन्ध रखनेवाले और भी अनेक शिलालेख हैं, यद्यपि उनमे गङ्गराज के समय के नरेश का नाम नहीं आया। लेख नं० ४६ (१२६) गङ्गराज की भार्या लक्ष्मी ने अपने भ्राता बूचन की मृत्यु के स्मरणार्थ लिखवाया था। बूचन शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। लेख न० ४७ (१२७) जैनाचार्य मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव की मृत्यु का स्मारक है और इसे गङ्गराज और उनकी भार्या लक्ष्मी ने लिखवाया था। लेख न० ४९ (१२९) लक्ष्मीमतिजी ने अपनी भगिनी दमति के स्मरणार्थ लिखवाया था। लेख न० ६३ (१३०) से ज्ञात होता है कि शुभचन्द्रदेव की शिष्या लक्ष्मी ने एक जिन मन्दिर निर्माण कराया जो अब 'एरडुकट्टे बस्ति' के नाम से प्रख्यात है। लेख न० ६४ (७०) मे कहा गया है कि गङ्गराज ने अपनी माता पोचब्बे के हेतु कत्तले बस्ति निर्माण कराई। लेख न०

६५ (७४) मे गङ्गराज के इन्द्रकुल गृह (शासन बस्ति) बनवाने का उल्लेख है। लेख न० ७५ (१८०) और ७६ (१७७) मे गङ्गराज द्वारा गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाये जाने का उल्लेख है। लेख न० ४३ (११७), ४४ (११८), ४८ और (१२८) गङ्गराज द्वारा निर्माण कराये हुए क्रमश उनके गुरु शुभचन्द्र, उनकी माता पोचिकब्बे और भार्या लक्ष्मी के स्मारक हैं। लेख न० १४४ (३८४) में गङ्गराज के वश का बहुत कुछ परिचय मिलता है व लेख न० ४४६ (३६७), ४४७ (३६८) और ४८९ (४००) मे गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता बम्मदेव की भार्या जक्कणब्बे के सत्कार्यों का उल्लेख है। ये सब लेख विष्णुवर्द्धन नरेश के समय के व उस समय से सम्बन्ध रखनेवाले हैं इसी लिये इनका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक हुआ।

विष्णुवर्द्धन के समय के अन्य लेख इस प्रकार हैं। लेख न० १४३ (३७७) मे राजा के नाम के साथ ही गङ्गराज के नामोल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि चलदङ्कराव हेडेजीय और अन्य सज्जनो ने कुछ दान किया। जान पडता है यह दान गोम्मटेश्वर के दायी ओर की एक कदरा को भरकर समतल करने के लिये दिया गया था। लेख न० ५६ (१३२) मे विष्णुवर्द्धन की रानी शान्तलदेवी द्वारा 'सवति गन्धवारण बस्ति' के निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। इस लेख में मेघचन्द्र के शिष्य प्रभाचन्द्र की स्तुति, हाय्सल वश की उत्पत्ति

शिष्य थे और अन्य शिलालेखो (नागमङ्गल ३२ ए० क ४, चिकमगलूर १६० ए० क० ६) से सिद्ध है कि वे और उनके बडे भाई मरियाणे विष्णुवर्द्धन नरेश के सेनापति थे। लेख न० ४० (६४) (शक १०८५) मे भी भरत के गण्डविमुक्त देव के शिष्य होने का उल्लेख है। लेख न० ११५ (२६७) से विदित होता है कि भरतेश्वर ने जिन दो मूर्तियो की स्थापना कराई थी वे भरत और बाहुबली स्वामी की मूर्तियाँ थी। इस लेख मे भरतेश्वर के अन्य धार्मिक कृत्यों का भा उल्लेख है। उन्होने उक्त दोनो मूर्तियों के आसपास कटघर (हुप्पलिगे) बनवाया, गोम्मटेश्वर के आसपास बडा गर्भगृह बनवाया, सीढियाँ बनवाई तथा गङ्गवाडि मे दो पुरानी बस्तियों का उद्धार कराया और अस्सी नवान बस्तियाँ निर्माण कराई। यह लेख भरत की पुत्री शान्तलदेवी ने लिखवाया था। लेख न० ६८ (१५९) और ३५१ (२२१) भी इसी नरेश के समय के विदित होते हैं उनमे कुछ जिन भक्त पुरुषो का उल्लेख है।

विष्णुवर्द्धन और लक्ष्मीदेवी के पुत्र नारसिंह प्रथम हुए जिनकी उपाधियो आदि का उल्लेख लेख न० १३७ (३४५) और १३८ (३४९) में है। लेख न० १३८ (३४९) मे उल्लेख है कि उक्त नरेश के भण्डारि और मन्त्रा हुल्ल ने बेल्गोल मे चतुर्विंशति जिनमन्दिर निर्माण कराया। यह मन्दिर भण्डारि बस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। लेख मे विनयादित्य से लगाकर नारसिंह प्रथम तक के वर्णन और हुल्ल के वंशपरिचय

के पश्चात् कहा गया है कि एक बार अपनी दिग्विजय के समय नरेश बेलोल मे आये, गोम्मटेश्वर की वन्दना की और हुल्ल के बनवाये हुए चतुर्विंशति जिनालय के दर्शन कर उन्होने उस मन्दिर का नाम 'भव्यचूडामणि' रक्खा क्योकि हुल्ल की उपाधि 'सम्यक्त्वचूडामणि' थी। फिर उन्होने मन्दिर के पूजन, दान तथा जीर्णोद्धार के हेतु 'सवणेरु' नामक ग्राम का दान किया। लेख मे यह भी उल्लेख है कि हुल्ल ने नरेश की अनुमति से गोम्मटपुर के तथा व्यापारी वस्तुओ पर के कुछ कर (टैक्स) का दान मन्दिर को कर दिया। हुल्ल वाजि वंश के जक्किराज (यक्षराज) और लोकाम्बिका के पुत्र, लक्ष्मण और अमर के ज्येष्ठ भ्राता तथा मलधारि स्वामी के शिष्य थे। सवणेरु ग्राम का दान उन्होने भानुकीर्ति को दिया था। वे राज्यप्रबन्ध मे 'योगन्धरायण' से भी अधिक कुशल और राजनीति मे बृहस्पति से भी अधिक प्रवीण थे। लेख न० १३७ (३४५) में भी नारसिंह के बेल्गोल की वन्दना करने का उल्लेख है और इस लेख से यह भी ज्ञात होता है कि हुल्ल विष्णुवर्द्धन के समय मे भी राजदरबार मे थे तथा लेख न० ९० (२४०) व ४९१ से विदित होता है कि वे अगामी नरेश बल्लाल द्वितीय के समय मे भी विद्यमान थे क्योकि उन्होने उक्त नरेश से एक दान प्राप्त किया था। इस लेख मे हुल्ल की कीर्ति और धर्मपरायणता का खूब वर्णन है। वे चामुण्डराय और गङ्गराज की श्रेणी मे ही सम्मिलित किये गये हैं। उन्होने

बङ्कापुर और कलिविट के जिनमन्दिरो का जीर्णोद्धार कराया, कापण मे जैनाचार्यों के हेतु बहुत सी जमीन लगाई, केलङ्गेरे मे छ नवीन जिनमन्दिर बनवाये और बेलगोल मे चतुर्विंशति तीर्थंकर मन्दिर बनवाया। उन्होने गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य महामण्डलाचार्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेव को इस मन्दिर के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। लेख न० ९० (२४०) मे भी नारसिंह की बेलगोल की वन्दना का उल्लेख है। इस लेख से विदित होता है कि सवणेरु के अतिरिक्त नरेश ने दो और ग्रामो—बेक और कगोरे—का दान दिया था। हुल्ल की प्रार्थना स इसी दान का समर्थन बल्लाल द्वितीय न भी किया था (४९१)। लेख न० ८० (१७८) और ३१६ (१८१) मे भा इस दान का उल्लेख है। लेख न० ४० (६४) मे उल्लख है कि हुल्ल ने अपने गुरु महामण्डलाचार्य देवकीति पण्डितदेव की निषद्या निर्माण कराई जिसकी प्रतिष्ठा उन्होंने उनक शिष्य लक्खनन्दि, माधव और त्रिभुवनदेव द्वारा कराई। लेख न० १३७ (३४६) मे हुल्ल की भार्या पद्मावती के गुणो का वर्णन है। इस लेख मे भी हुल्ल के नयकीर्ति के पुत्र भानुकीर्ति को सवणेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है।

नारसिंह प्रथम और उनको रानी एचलदेवी के बल्लालदेव द्वितीय हुए। लेख न० १२४ (३२७) १३० (३३१) और ४९१ मे इनके वश व उपाधियों आदि का वर्णन है।

वे सनिवार सिद्धि, गिरिदुर्गमल्ल व कुम्मट और एरम्बरगे के विजेता भी कहे गये हैं। उनकी उच्छङ्गि की विजय का बडा वीरतापूर्ण वर्णन दिया गया है। लेख न० ४९१ (शक १०९५) इस राज्य का सबसे प्रथम लेख है। इसमे इन नरेश और उनके दण्डाधिप हुल्ल का परिचय है। नरेश ने चतुर्विंशति तीर्थंकर की पूजन के हेतु मारुहल्लिग्राम का दान दिया व हुल्ल के अनुरोध से बेक्क ग्राम के दान का समर्थन किया। यह दान नयकीर्ति के शिष्य भानुकीर्ति को दिया गया। लेख न० ९० (२४०) मे गङ्गराज की कीर्ति का वर्णन, व गुणचन्द्र के पुत्र नयकीर्त्ति का, नारसिंह प्रथम की बेल्गोल की वन्दना का तथा बल्लाल द्वारा नारसिंह के दान के समर्थन का उल्लेख पाया जाता है। लेख के अन्तिम भाग मे कथन है कि नयकीर्ति के शिष्य अध्यात्मि बालचन्द्र ने एक बडा जिन मदिर, एक बृहत् शासन, अनेक निषद्याये व बहुत से तालाब आदि अपने गुरु की स्मृति मे निर्माण कराये। लेख न० १२४ (३२७) (शक ११०३) में नरेश के मन्त्री चन्द्रमौलि की भार्या आचियक्क द्वारा बेल्गोल मे पार्श्वनाथ बस्ति निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। यह बस्ति अब अक्कन बस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। चन्द्रमौलि शम्भूदेव और अक्कब्बे के पुत्र थे। वे शिवधर्मी ब्राह्मण थे और न्याय, साहित्य, भरत शास्त्र आदि विद्याओं मे प्रवीण थे। उनकी भार्या आचियक्क व आचलदेवी जिनभक्ता थी। (आचलदेवी की वंशावली

के लिये देखो लेख नं० १६२४)। उनके गुरु नयकीर्ति और बालचन्द्र थे। लेख मे कहा गया है कि चन्द्रमौलि की प्रार्थना पर बल्लालदेव ने आचलदेवी द्वारा निर्मापित मदिर के हेतु बम्मेयन हल्लिग्राम का दान दिया। लेख मे और भी दानों का उल्लेख है। उक्त दान का उल्लेख उसी ग्राम के लेख नं० ४९४ (शक ११०४) तथा लेख नं० १०७ (२५६) और ४२६ (३३१) में भी है। लेख नं० १३० (३३५) मे विनयादित्य से लगाकर होय्सल नरेशों के परिचय के पश्चात् महामण्डलाचार्य नयकीर्ति की कीर्ति का वर्णन है और फिर नरेश के 'पट्टणस्वामी' नागदेव का परिचय है। देखो लेख नं० १३०)। नागदेव के अपने गुरु नयकीर्ति की निषद्या बनवाने का उल्लेख लेख नं० ४२ (६६) मे भी है। नागदेव के कुछ और सत्कृत्यों और कुछ आचार्यों का परिचय लेख नं० १२२ (३२६) और ४९० (४०७) मे पाया जाता है। लेख नं० ४७१ (३८०) मे वसुधैकबान्धव रेचिमय्य के जिननाथपुर में शान्तिनाथ की प्रतिष्ठा कराने व शुभचन्द्र त्रैविद्य के शिष्य सागरनन्दि को उस मदिर के आचार्य नियुक्त करने का उल्लेख है। यद्यपि इस लेख मे किसी नरेश का उल्लेख नहीं है तथापि अन्य शिलालेखों से ज्ञात होता है कि रेचिमय्य इन्ही बल्लालदेव के सेनापति थे। बल्लालदेव के पास आने से प्रथम वे कलचुरि नरेशों के मन्त्री थे। (मै० आ० रि० १९०९, पृ० २१, ए० क० ५, अर्सिकेरे ७७, ए० क० ७,

शिकारपुर १९७) लेख नं० ४९५ मे बल्लालदेव के समय में अपने गुरु श्रीपाल योगीन्द्र के स्वर्गवास होने पर वादिराजदेव के परवादिमल्ल जिनालय निर्माण कराने व भूमिदान देने का उल्लेख है।

इस राज्य का अन्तिम लेख नं० १२८ (३३३) (शक ११२८) का है जिसमे वीर बल्लालदेव के कुमार सोमेश्वरदेव और उनके म त्री रामदेव नायक का उल्लेख है। इतिहास में कही अन्यत्र बल्लालदेव के सोमेश्वर नामक पुत्र का कोई उल्लेख नही पाया जाता। कुछ विद्वानो का अनुमान है कि सम्भवत नरेश का कोई प्रतिनिधि ही यहाँ विनय से अपने को नरेश का पुत्र कहता है। (लेख के साराश के लिये देखो नं० १२८)।

बल्लाल द्वितीय के पुत्र नारसिंह द्वितीय के समय का एक ही लेख इस सग्रह मे आया है। लेख नं० ८१ (१८६) में कहा गया है कि पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर नारसिह के राज्य मे पदुमसेट्टि के पुत्र व आध्यात्मि बालचन्द्र के शिष्य गोम्मटसेट्टि ने गोम्मटेश्वर की पूजा के लिये बारह गद्याण का दान दिया।

नरसिह द्वितीय के उत्तराधिकारी सोमेश्वर के समय का लेख नं० ४९९ (शक ११७०) है। इसमें सोमेश्वर की विजय व कीर्ति का परिचय उनकी उपाधियों मे पाया जाता है। लेख में कहा गया है कि सोमेश्वर के सेनापति 'शान्त' ने

शान्तिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। लेख मे माघनन्दि आचार्यों की परम्परा भी दी है।

लेख न० ९६ (२४६) (शक ११९६) मे वीर नारसिंह तृतीय (सोमेश्वर के पुत्र व नारसिंह द्वितीय के प्रपौत्र) का उल्लेख है। लेख न० १२९ (३३४) (शक १२०५) भी सम्भवत इसी राजा के समय का है। इस लेख मे होय्सल व श की स्तुति है, और कहा गया है कि उस समय के नरेश के गुरु मेघनन्दि थे। ये ही सम्भवत शास्त्रसार के कर्ता थे जिसका उल्लेख लेख के प्रथम पद्य में ही है। (सारांश के लिये देखो लेख न० ९६)।

लेख न० १०५ (२५४) (शक १३८०) के ४६ वे पद्य मे व लेख न० १०८ (२५८) (शक १३५५) के २९ वे पद्य मे उल्लेख है कि बल्लाल नरेश की एक घोर व्याधि से चारुदत्त गुरु ने रक्षा की थी। यह नरेश इस व श के बल्लाल प्रथम, विष्णुवर्द्धन के ज्येष्ठ भ्राता हैं जिन्होंने बहुत अल्पकाल राज्य किया था। 'भुजबलि शतक' मे कहा गया है कि इस नरेश को पूर्वजन्म के सस्कार से भारी प्रेत बाधा थी जिसे चारुकीर्ति ने दूर की। इसी से इन आचार्य को 'बल्लालजीव-रक्षक' की उपाधि प्राप्त हुई।

विजयनगर

जब सन् १३२७ ईस्वी मे मुहम्मद तुगलक ने होय्सल राज्य का पूर्ण रूप से सत्यानाश कर डाला और होय्सल राज्य को अपने साम्राज्य मे मिला लिया तब दक्षिण के अन्य राज्य सचेत हुए। वे सब दो वीर योधाओ के नायकत्व मे एकत्र हुए। इन वीर योधाओ, जिनके व श आदि का विशेष कुछ पता नहीं चलता, ने थोडे ही वर्षों मे एक राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी उन्होने विजयनगर बनाई। उक्त दोनो वीरो के नाम क्रमश हरीहर और बुक्क थे और वे दोनों भ्राता थे। इन्होने मुसलमानो के बढते प्रवाह को रोक दिया। इसी समय दक्षिण मे मुसलमानो ने बहमनी राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी गुलबर्गा थी। अब दक्षिण मे ये दोनों राज्य ही मुख्य रहे और दोनो आपस में लगातार झगडते रहे। सन् १४८१ के लगभग बहमनी राज्य बरार, विदर, अहमदनगर, गोलकुण्डा और बीजापुर इन पाँच भागो में बट गया। विजयनगर नरेशो का झगडा बीजापुर के आदिल शाहों से चलता रहा। इनमे अधिकत विजयनगर विजयी रहता था क्योकि उक्त पाँचो मुसलमानी राज्यो मे द्वेष था। अन्त मे मुसलमानी राजाओ ने अपनी भूल पहचान ली। वे सन् १५६५ मे एक होकर तालीकोटा के मैदान पर इकट्ठे हुए और यहाँ दक्षिण भारत में हिन्दू साम्राज्य का निपटारा सदैव के लिये हो गया। विजयनगर नरेश रामराय कैद कर लिये

गये और मार डाले गये और उनकी सुन्दर राजधानी विजय-नगर विध्वंस कर दी गई। यह संक्षिप्त में विजयनगर राज्य का इतिहास है।

अब संग्रहीत लेखो मे इस राज्य के जो उल्लेख आये हैं उन्हे देखिये।

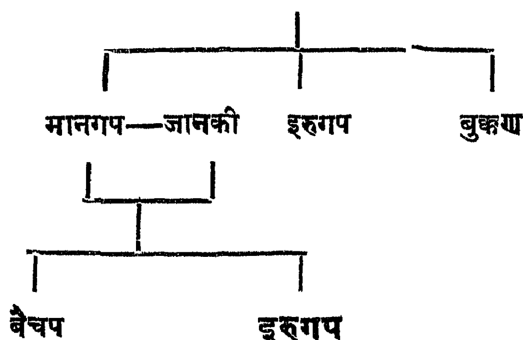
इस राजवंश के सम्बन्ध का सबसे प्रथम और सबसे महत्व का लेख नं० १३६ (३४४) (शक १२९०) का है जिसमें बुक्कराय प्रथम द्वारा जैन और वैष्णव सम्प्रदायों के बीच शान्ति और संधि स्थापित किये जाने का वर्णन है। वैष्णवो ने जैनियो के अधिकारो मे कुछ हस्तक्षेप किया था। इसके लिये जैनियों ने नरेश से प्रार्थना की। नरेश ने जैनियो का हाथ वैष्णवो के हाथ पर रखकर कहा कि धार्मिकता मे जैनियो और वैष्णवो मे कोई भेद नहीं है। जैनियों को पूर्ववत् ही पञ्च महावाद्य और कलश का अधिकार है। जैन दर्शन की हानि व वृद्धि को वैष्णवों को अपनी ही हानि व वृद्धि समझना चाहिए। श्री वैष्णवों को इस विषय के शासन समस्त बस्तियों मे लगा देना चाहिए। जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक वैष्णव जैन धर्म की रक्षा करेंगे। इसके अतिरिक्त लेख मे कहा गया है कि प्रत्येक जैन गृह से कुछ द्रव्य प्रति वर्ष एकत्रित किया जायगा जिससे बेल्गोल के देव की रक्षा के लिये बीस रक्षक रक्खे जावेंगे व शेष द्रव्य मंदिरो के जीर्णोद्धारादि मे खर्च किया जावेगा। जो इस शासन का उल्लंघन करेगा

वह राज्य का, सघ का व समुदाय का द्रोही ठहरेगा। इस सम्बन्ध मे कदम्बहल्लि की शान्तीश्वर बस्ती का स्तम्भ लेख भी महत्व पूर्ण है। इस लेख मे शैवो द्वारा जैनियों के अधिकारो की रक्षा का उल्लेख है। उसमे कहा गया है कि यमादि याग गुणो के धारक, गुरु और देवों के भक्त कलिकाल की कालिमा के प्रक्षालक, लाकुलीश्वर सिद्धान्त के अनुयायी, पञ्चदीक्षा क्रियायों के विधायक सात करोड श्रीरुद्रो ने एकत्रित होकर मूलसघ, देशीगण, पुस्तक गच्छ के कदम्बहल्लि के जिनालय को एककोटि जिनालय' की उपाधि तथा पञ्चमहावाद्य का अधिकार प्रदान किया। जो कोई इसमें ऐसा नहीं होना चाहिए' कहेगा वह शिव का द्रोहा ठहरेगा। यह लेख लगभग शक स० ११२२ का है।

लेख न० १२६ (३२६) मे हरिहर द्वितीय की मृत्यु का उल्लेख है जो तारण सवत्सर (शक १३६८) भाद्रपद कृष्णा दशमी सामवार को हुई। अन्य एक लेख (ए० क० ८, तीर्थहल्लि १२६) से भी इसी बात का समर्थन होता है। लेख न० ४२८ (३३७) से विदित होता है कि देवराय महाराय की रानी व पण्डिताचार्य की शिष्या भीमादेवी ने मङ्गायी बस्ति मे शान्तिनाथ भगवान् की प्रतिष्ठा कराई। यह राजा सम्भवत देवराय प्रथम है। शिलालेख से यह नई बात विदित होती है कि इस राजा की रानी जैनधर्मावलम्बिनी थी। यह लख लगभग शक स० १३३२ का है। लेख

न० ८२ (३५३) (शक १३४४) मे हरिहर द्वितीय के सेनापति इरुगप का परिचय है और कहा गया है कि उन्होंने बेलगोल, एक वनकुञ्ज और एक तालाब का दान गोम्मटेश्वर के हेतु कर दिया। लेख में इरुगप की वशावली इस प्रकार पाई जाती है—

बैच दण्डनायक (बुक्कराय प्र० के मत्री)



लेख में पण्डितार्य और श्रुतमुनि की प्रशसा के पश्चात् कहा गया है कि श्रुतमुनि के समक्ष उक्त दान दिया गया था। यह लेख शक स० १३४४ का है जिससे विदित होता है कि इरुगप देवराय द्वितीय के समय में भी विद्यमान थे। इरुगप सस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। उन्होंने 'नानार्थरत्नमाला' नामक पद्यात्मक कोष की रचना की थी। उनके तीन और लेख मिले हैं (ए० इ० ७, ११५, स० इ० इ० १—१५६) जिनमें से दो शक स० १३०४ और १३०९ के हैं जिनमें पण्डितार्य की प्रशसा है व तीसरा शक स० १३०७ का है और उसमे

कथन है कि इरुगप ने विजयनगर में कुंथजिनालय निर्माण कराया। लेख नं० १२५ (३२८) और १२७ (३३०) मे देवराय द्वितीय की क्षय संवत्सर (शक १३६८) में मृत्यु का उल्लेख है।

मैसूर राजवंश

लेख नं० ८४ (२५०) शक सं० १५५६ का है। इसमें मैसूर नरेश चामराज ओडेयर द्वारा बेलगोल के मंदिरो की जमीन के, जो बहुत दिनों से रहन थी, मुक्त कराये जाने का उल्लेख है। नरेश ने जिन लोगों को इस अवसर पर बुलवाया था उनमे भुजबलि चरित के कर्ता पञ्चबाण कवि के पुत्र बोम्यप्प व कवि बोमण्ण भी थे। इसी विषय का कुछ और विशेष विवरण लेख नं० १४० (३५२) (शक १५५६) मे पाया जाता है। इस लेख मे राजा की ओर से मंदिर की भूमि रहन करने व कराने का निषेध किया गया है। यद्यपि लेखों में इस बात का उल्लेख नहीं है तथापि यह प्राय निश्चय ही है कि उक्त विषय के निर्णय के लिये नरेश बेलगोल अवश्य गये होंगे। चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय मे नरेश की बेलगोल की यात्रा का इस प्रकार वर्णन है। "मैसूर नरेश चामराज बेलगोल मे आये और गर्भगृह मे से गोम्मटेश्वर के दर्शन किये। फिर उन्होंने द्वारे पर आकर दोनों बाजुओ के

शिलालेख पढवायें। उन्होने यह ज्ञात किया कि किस प्रकार चामुण्डराय बेल्गोल आये थे और अपने गुरु नेमिचन्द्र की प्रेरणा से उन्होन गोम्मटेश्वर को एक लाख छयानवे हजार 'वरह' की आय के ग्रामो का दान दिया था। इसके पश्चात् नरेश सिद्धर बस्ति मे गये और वहाँ के लेखों से जैनाचार्यों की वशावली, उनके महत्व व उनके कार्यों का परिचय प्राप्त किया। फिर उन्होंने यह पूछा कि अब गुरु कहाँ गये। बम्मण कवि, जो मन्दिर के अध्यक्षो मे से थे, ने उत्तर दिया कि जगदेव के तेलुगु सामन्त के त्रास के कारण गोम्मटेश्वर की पूजा बन्द कर दी गई है और गुरु चारुकीर्ति उस स्थान को छोड भैरव-राज की रक्षा मे भल्लातकीपुर (गरुसोप्पे) मे रहते हैं। इस पर नरेश ने गुरु को बुला लेने के लिये कहा और नया दान देने का वचन दिया। फिर उन्होने भण्डारि बस्ति के दर्शन किये और चन्द्रगिरि के सब मदिरो के दर्शन कर वे सेरिङ्गा-पट्टम को लौट गये। पदुमण सेट्टि और पदुमण पण्डित चारु-कीर्ति को लेने के लिये भल्लातकीपुर भेजे गये। उनके आने पर वे सत्कार से बेल्गोल पहुँचाये गये और राजा ने वचना-नुसार दान दिया।" उपरोक्त वर्णन में जिस जगदेव का उल्लेख आया है वह चेन्नपट्टन का सामन्त राजा था। वह शक स० १५५२ में चामराज द्वारा हराकर राज्यच्युत कर दिया गया।

लेख न० ४४४ (३६५) मे चिक्कदेवराज ओडेयर द्वारा बेल्गोल मे एक कल्याणी (कुण्ड) निर्माण कराये जाने का

उल्लेख है। लेख न० ८३ (२४६) मे कृष्णराज ओडेयर के शक स० १६४५ मे बेल्गोल म आने व गोम्मटेश्वर के हेतु बेल्गोल आदि कई ग्रामों के दान का व चिक्कदेवराजवाले कुण्ड के निकट बनी हुई दानशाला के हेतु कबाले नामक ग्राम के दान का उल्लेख है। लेख मे कहा गया है कि गोम्मटेश्वर के दर्शन कर नरेश बहुत ही प्रसन्न हुए और पुलकितगात्र होकर उन्होने उक्त दान दिये। अनन्तकवि कृत 'गोम्मटेश्वर चरित' मे भी इस नरेश की बेल्गोल यात्रा का वर्णन है।

लेख न० ४३३ (३५३) और ४३४ (३५४) कागज पर लिखी हुई कृष्णराज ओडेयर तृतीय की सनदे हैं जो समय समय पर बेल्गोल के गुरु को दी गई हैं। इनमे की प्रथम सनद नरेश के मत्री पुर्णय्य की दी हुई है और उस मे कृष्णराज ओडेयर प्रथम के दान का समर्थन किया गया है। द्वितीय सनद स्वय नरेश ने दी है। उसमें बेल्गोल के समस्त मदिरों के खर्च व जीर्णोद्धार के लिये तीन ग्रामों के दान का उल्लेख है। इस लेख मे समस्त मदिरो की सख्या तेतीस दी है—विन्ध्यगिरि पर आठ, चन्द्रगिरि पर सोलह, ग्राम मे आठ व मलेयूर की पहाडी पर एक। इससे पूर्व मठ को उक्त मदिरो के खर्च व जीर्णोद्धार के लिये राज्य से एक सौ बीस वरह का दान मिलता था। पर यह उक्त कार्य के लिये यथेष्ट नहीं था इसी से राजमहल के

लक्ष्मी पण्डित की प्रार्थना पर इसके बदले तीन ग्रामो का उक्त दान दिया गया * ।

कृष्णराज ओडेयर तृतीय के समय का एक और लेख न० ९८ (२२३) (शक १७४८) है । इस लेख मे उल्लेख है कि चामुण्डराज के एक वशज कृष्णराज के प्रधान अङ्गरक्षक की मृत्यु गोम्भटेश्वर के मस्तकाभिषेक के दिवस हुई । इस पर उनके पुत्र ने गोम्मट स्वामी की प्रतिवर्ष पूजा के हेतु कुछ दान दिया ।

वर्तमान महाराजा कृष्णराज ओडेयर चतुर्थ का नाम तिथि सहित चन्द्रगिरि के शिखर पर अकित है जो नवम्बर १९०० ईस्वी मे उनके बेल्गोल आने का स्मारक है ।

कदम्ब वंश

अनुमान शक की नवमी शताब्दि के लेख न० २८२ (४४३) मे काञ्चिन दोणे के पास एक कदम्ब राजा की आज्ञा से तीन शिलाये लाई जाने का उल्लेख है । यह कदम्ब नरेश कौन था व शिलाये किस हेतु लाई गई थीं यह विदित करने के कोई साधन उपलब्ध नही हैं ।

---

* लेख नं० १४१ राइस साहब के संग्रह मे छपा है पर श्रीयुक्त नरसिहाचार के नये संस्करण में वह नहीं छापा गया । श्रीयुक्त नरसिहाचार का कथन है कि यह लेख उपर्युक्त दोनो सनदो के ऊपर से तैयार किया गया है और इसका अब मठ में पता नहीं चलता (देखो लेख नं० १४ ।)

नोलम्ब व पल्लव वंश

लेख नं० १०९ (२८१) मे चामुण्डराज द्वारा नोलम्ब नरेश के हराये जाने का उल्लेख है। सम्भवत यह नरेश दिलीप का पुत्र नन्नि नोलम्ब था। लेख नं० १२० (३१८) मे अरकेरे के वीर पल्लवराय व उसके पुत्र शङ्कर नायक के नाम पाये जाते हैं। शङ्कर नायक का नाम लेख नं० ७३ (१७०) व २४९ (१७१) मे भी पाया जाता है। ये लेख लगभग शक सं० ११४० के हैं।

चोलवंश

शक की दशवीं शताब्दि के एक अधूरे लेख नं० ४६९ (३७८) मे एक चोल पेर्मडि का गङ्गो के साथ युद्ध का उल्लेख है। सम्भवत यह नरेश राजेन्द्र चोल ही था जो गङ्गनरेश भूतराय द्वारा शक सं० ८७१ के लगभग मारा गया था जिसका कि उल्लेख अतकूर के लेख मे है। लेख नं० ९० (२४०), ३६० (२५१) व ४८६ (३९७) मे गङ्गराज द्वारा चोलराज नरसिंह वर्मा व दामोदर की पराजय का उल्लेख है।

कोङ्गाल्ववंश

कोङ्गाल्व नरेशों का राज्य अर्कल्गुद तालुका के अन्तर्गत कावेरी और हेमवती नदियों के बीच था। इनके लेख शक सं० ९४२ से १०२२ तक के पाये गये हैं। इन्हीं के दक्षिण मे चङ्गाल्व राज्य था। इस वंश का सबसे अच्छा परिचय लेख नं० ५०० में राजा की उपाधियों मे पाया जाता है।

वहाँ इस वंश के राजा राजेन्द्र पृथ्वी 'समधिगतपञ्चमहाशब्द', 'महामण्डलेश्वर', 'ओरेयूरपुरवराधीश्वर', 'चोलकुलोदयाचलगभस्तिमाली' व 'सूर्यवंशशिखामणि' कहे गये हैं। इससे स्पष्ट है कि कोङ्गाल्व नरेश सूर्यवंशी थे और चोलवंश से उनकी उत्पत्ति थी। ओरेयूर व उरगपूर चोल राज्य की प्राचीन राजधानी थी। इस वंश के शिलालेखो से अब तक निम्नलिखित राजाओ के नाम व समय विदित हुए हैं—

	सन् ईस्वी
बडिव कोङ्गाल्व	
राजेन्द्र चोल पृथुवी महाराज	१०२२
राजेन्द्र चोल कोङ्गाल्व	१०२६
राजेन्द्र पृथुवी कोङ्गाल्वदेव अदटरादित्य	१०६६–११००
त्रिभुवनमल्ल चोल कोङ्गाल्वदेव अदटरादित्य	११००

लेख नं० ५०० (शक १००१) व अन्य लेखो से स्पष्ट है कि अदटरादित्य जैनधर्मावलम्बी था। उक्त लेख मे उभयसिद्धान्त रत्नाकर प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव की कीर्ति के पश्चात् कहा गया है कि अदटरादित्य नरेश राजेन्द्र पृथुवी कोङ्गाल्व ने गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के लिये चैत्यालय बनवाया। यह लेख चतुर्भाषाविज्ञ सान्धिविग्रहिक नकुलार्य का लिखा हुआ है। लेख नं० ४९८ त्रिभुवनमल्ल चोल कोङ्गाल्व देव के समय का है।

चङ्गल्ववंश

इस वंश के नरेशों का राज्य पश्चिम मैसूर और कुर्ग में था। वे अपने को यादववंशी कहते थे। उनका प्राचीन स्थान

चङ्गनाडु (आधुनिक हुणसूर तालुका) था। लेख न० १०३ (२८८) मे कथन है कि इस वंश के एक नरेश कुलोत्तुङ्ग चङ्गाल्व महादेव के मन्त्री के पुत्र ने गोम्मटेश्वर की ऊपरी मञ्जिल का शक सं० ४२२ मे जीर्णोद्धार कराया। उक्त नरेश का उल्लेख एक और लेख मे भी पाया गया है (ए क ४, हुणसूर ६३)

निडुगलवंश

निडुगल नरेश सूर्यवंशी थे और अपने को करिकाल चोल के वंशज कहते थे। वे ओरेयूराधीश्वर की उपाधि धारण करते थे। ओरेयूर (त्रिचनापल्ली के समीप) चोल राज्य की प्राचीन राजधानी थी। ये नरेश चोल महाराजा भी कहलाते थे। उनकी राजधानी पेञ्जेरु थी जो अब अनन्तपुर जिले मे हेमावती कहलाती है। होय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के समय इस वंश का एक 'इरुङ्गोल' नाम का राजा राज्य करता था। लेख न० ४२ (६६) मे उसके नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य होने व लेख न० १३८ (३४९) मे उसके विष्णुवर्द्धन द्वारा हराये जाने का उल्लेख है।

उपर्युक्त राजकुलो के अतिरिक्त कुछ लेखों मे और भी फुटकर राजाओं व राजवंशो का उल्लेख है। लेख न० १५२ (११) में अरिष्टनेमि गुरु के समाधिमरण के समय **दिण्डिकराज** उपस्थित थे। दिण्डिक का उल्लेख एक और लेख (सा इ इ २–३८१) में भी आया है पर वह लेख लगभग

सन् ८०० का है और प्रस्तुत लेख उससे कोई दो सौ वर्ष प्राचीन अनुमान किया जाता है। लेख न० १४ (३४) की नागसेन प्रशस्ति मे **नागनायक** नाम के एक सामन्त राजा का उल्लेख है। लेख न० ५५ (६९) मे कहा गया है कि प्रभाचन्द्र **धाराधीश भोज** द्वारा व यश कीर्ति **सिंहलनरेश** द्वारा सम्मानित हुए थे। लेख न० ५४ (६७) मे कथन है कि अकलङ्क देव ने **हिमशीतल** नरेश की सभा मे बौद्धों को परास्त किया था व चतुर्मुखदेव ने **पाण्ड्यनरेश** द्वारा स्वामी की उपाधि प्राप्त की थी। लेख न० ३७ (१४९) मे **गरुडकेसिराज** व न० २९६ (४५७) में **बालादित्य**, वत्सनरेश, का उल्लेख है। लेख न० ४० (६४) मे सामन्त केदार नाकरस कामदेव व निम्बदेव माघनन्दि के, व दण्डनायक मरियाणे और भरत व बूचिमय्य और कोरय्य गण्डविमुक्तदेव के शिष्य कहे गये हैं। निम्ब के माघनन्दि के शिष्य होने का समाचार तेरदाल के एक लेख (इ ए १४, १४) मे भी पाया जाता है। शुभचन्द्र के शिष्य पद्मनन्दि न अपनी 'एकत्वसतति' मे उन्हे सामन्तचूडामणि कहा है। न० ४७७ (३८७) में **सिंगयपनायक** व न० ४१ (६५) मे बेलुकेरे के राजा **गुम्मट** का उल्लेख है। गुम्मट ने शुभचन्द्र देव की निषद्या बनवाई थी। लेख न० १०५ (२५४) में हरियण और माणिकदेव नामक दो सामन्त राजाओं के पण्डितार्य के शिष्य होने का उल्लेख है।

लेखों का मूल प्रयोजन

प्रस्तुत लेखो का मूल प्रयोजन धार्मिक है। इस सङ्ग्रह मे लगभग एक सौ लेख मुनिओं, आर्जिकाओ, श्रावक और श्राविकाओ के समाधिमरण क स्मारक हैं, लगभग एक सौ मन्दिर निर्माण, मूतिप्रतिष्ठा, दानशाला, वाचनालय, मन्दिरो के दरवाजे, परकोटे, सिढिया, रङ्गशालाये, तालाब, कुण्ड, उद्यान, जीर्णोद्धार आदि कार्यों के स्मारक है, अन्य एक सौ के लगभग मन्दिरो के खर्च, जीर्णोद्धार, पूजा, अभिषेक, आहारदान आदि के लिये ग्राम, भूमि, व रकम के दान के स्मारक हैं, लगभग एक सौ साठ सघों और यात्रियो की तीर्थयात्रा के स्मारक हैं और शेष चालीस ऐसे हैं जो या तो किसी आचार्य, श्रावक, व योधा की स्तुति मात्र हैं, व किसी स्थान विशेष का नाम मात्र अंकित करते हैं व जिनका प्रयोजन अपूर्ण होने के कारण स्पष्ट विदित नहीं हो सकता।

सल्लेखना—समाधिमरण से सम्बन्ध रखनेवाले सौ लेखो मे अधिकांश—अर्थात् लगभग साठ—सातवी आठवीं शताब्दि व उससे पूर्व के हैं और शेष उससे पश्चात् के। इससे अनुमान होता है कि सातवी आठवीं शताब्दि मे सल्लेखना का जितना प्रचार था उतना उससे पश्चात् की शताब्दियो मे नहीं रहा। समाधिमरण करनेवालों मे लगभग सोलह के सख्या स्त्रियो—अजिकाओं व श्राविकाओं—की भी है। लेखो मे कहीं पर इसे सल्लेखना, कहीं समाधि, कहीं सन्यसन,

कही व्रत व उपवास व अनशन द्वारा मरण व स्वर्गारोहण कहा है। अनेक स्थानो पर सल्लेखना मरण की सूचना केवल मुनियो व श्रावको की निषद्याओ (स्मारकों) से चलता है।

सल्लेखना क्यो और किस प्रकार की जाती थी इसके सम्बन्ध मे प्राचीन जैन ग्रन्थो मे समाचार मिलते हैं। इस विषय पर समन्तभद्र स्वामी कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार मे इस प्रकार कहा है—

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च नि प्रतीकारे।
धर्माय तनुविमोचनमाहु सल्लेखनामार्या ॥ १ ॥
स्नेह वैर सङ्ग परिग्रह चापहाय शुद्धमना ।
स्वजन परिजनमपि च क्षान्त्वा क्षमयेत्प्रियवचनै ॥ २ ॥
आलोच्य सर्वमेन कृतकारितमनुमत च निर्व्याजम् ।
आरोपयेन्महाव्रतमामरणस्थायि निश्शेषम् ॥ ३ ॥
शोक भयमवसाद क्लेद कालुष्यमरतिमपि हित्वा ।
सत्वोत्साहमुदीर्य च मन प्रसाद्य श्रुतैरमृतै ॥ ४ ॥
आहार परिहाप्य क्रमश स्निग्ध विवर्धयेत्पान ।
स्निग्ध च हापयित्वा खरपान पूरयेत्क्रमश ॥ ६ ॥
खरपानहापनामपि कृत्वा कृत्वोपवासमपि शक्त्या ।
पञ्चनमस्कारमनास्तनु त्यजेत्सर्वयत्नेन ॥ ६ ॥

अर्थात् "जब कोई उपसर्ग व दुर्भिक्ष पडे, व बुढापा व व्याधि सतावे और निवारण न की जा सके उस समय धर्म की रक्षा के हेतु शरीर त्याग करने को सल्लेखना कहते हैं। इसके

लिये प्रथम स्नेह व वैर, संग व परिग्रह का त्याग कर मन को शुद्ध करे व अपने भाई बन्धु व अन्य जनों को प्रिय वचनो द्वारा क्षमा प्रदान करे और उनसे क्षमा करावे। तत्पश्चात् निष्कपट मन से अपने कृत, कारित व अनुमोदित पापो की आलोचना करे और फिर यावज्जीवन के लिये पञ्चमहाव्रतो को धारण करे। शोक, भय, विषाद, स्नेह, रागद्वेषादि परिणति का त्याग कर शास्त्र-वचनो द्वारा मन को प्रसन्न और उत्साहित करे। तत्पश्चात् क्रमश कवलाहार का परित्याग कर दुग्धादि का भोजन करे। फिर दुग्धादि का परित्याग कर कञ्जिकादि शुद्ध पानी (व गरम जल) का पान करे। फिर क्रमश इसे भी त्यागकर शक्त्यनुसार उपवास करे और पञ्चनमस्कार का चिन्तवन करता हुआ यत्नपूर्वक शरीर का परित्याग करे।" यह सल्लेखना मुनियो के लिये ही नहीं श्रावको को भी उपादेय कही गई है। आशाधरजी ने अपने धर्मामृत ग्रन्थ म कहा है—

सम्यक्त्वममलममलान्यनुगुणशिक्षाव्रतानि मरणान्ते।
सल्लेखना च विधिना पूर्ण सागारधर्मोऽयम्॥

अर्थात् शुद्ध सम्यक्त्व, अणुव्रत, गुणव्रत और शिक्षा व्रतों का पालन व मरण समय सल्लेखना यह गृहस्थों का सम्पूर्ण धर्म है। कुछ शिलालेखों में जितने दिनो के उपवास के पश्चात् समाधि मरण हुआ उसकी सख्या भी दी है। लेख न० ३८ (५६) मे तीन दिन, न० १३ (३३) में इक्कीस दिन, व न० ८ (२५), ५३ (१४३) और ७२ (१६७)

मे एक माह का उल्लेख है। सबसे प्राचीन लेख समाधि-मरण के विषय के ही हैं। लेख न० १ जो सब लेखो मे प्राचीन है, भद्रबाहु के (व कुछ विद्वानो के मतानुसार प्रभाचन्द्र के) समाधिमरण का उल्लेख करता है। इसका विवेचन ऊपर किया जा चुका है। इस लेख की लिपि छठवीं सातवी शताब्दि की अनुमान की जाती है। इसी प्रकार जैन इतिहास के लिये सबसे महत्वपूर्ण लेख भी इसी विषय के हैं। देवकीति प्रशस्ति न० ३९ ४० (६३ ६४) शुभचन्द्र प्रशस्ति न० ४१ (६५), मेघचन्द्र प्रशस्ति ४७ (१२७), प्रभाचन्द्र पशस्ति ५० (१४०) मल्लिषेण प्रशस्ति ५४ (६७), पण्डितार्य प्रशस्ति १०५ (२५४), व श्रुतमुनि प्रशस्ति १०८ (२५८) मे उक्त आचार्यों के कीर्ति सहित स्वर्गवास का वर्णन है। लेख न० १५९ (२२) मे कहा गया है कि कालत्तूर के एक मुनि ने कटवप्र पर १०८ वर्ष तक तपश्चरण करके समाधिमरण किया। इन्ही लेखों मे आचार्यों की परम्पराये व गण गच्छो के समाचार पाये जाते हैं, जिनका सविस्तर विवेचन आगे किया जावेगा।

यात्रियो के लेख—जैन औपदेशिक ग्रन्थों मे श्रावक धर्म के अन्तर्गत तीर्थयात्रा का भी विधान है। जिन स्थानों पर जैन तीर्थ करो के कल्याणक हुए हैं व जिन स्थानों से मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया है व जहाँ अन्य कोई असाधारण धार्मिक घटना घटी हो वे सब स्थान 'तीर्थ' कहलाते हैं। गृहस्थो को समय समय पर पुण्य का लाभ करने के हेतु इन स्थानों की

वन्दना करनी चाहिए। श्रवणबेलगोल बहुत काल से एक ऐसा ही स्थान माना जाता रहा है। इस लेख सग्रह मे लगभग १६० लेख तीर्थ-यात्रियों के हैं। इनमे के अधिकाश लगभग १०७—दक्षिण भारत के यात्रियो के और शेष उत्तर भारत वासियों के हैं। दक्षिणी यात्रियो के लेखो मे लगभग ५४ मे केवल यात्रियों के नाम मात्र अकित हैं, शेष लेखो मे यात्रियों की केवल उपाधियाँ व उपाधियो सहित नाम पाये जाते हैं। कुछ लेखो में यह भी स्पष्ट कहा है कि अमुक यात्रा व यात्रियो ने देव की व तीर्थ की वन्दना की। यात्रियो के जो नाम पाये जाते हैं उनमें से कुछ ये हैं—श्रीधरन्, वीतराशि, चावुण्डय्य, कविरत्न, अकलङ्क पण्डित, अलसकुमार महामुनि, मालव अमावर, सहदेव मणि, चन्द्रकीति, नागवर्म्म, मारसिङ्गय्य और मल्लिषेण। सम्भव है कि इनमे के 'कविरत्न' वही कन्नड भाषा के प्रसिद्ध कवि हो जिन्हे चालुक्य नरेश तैल तृतीय ने 'कविचक्रवर्त्ति' की उपाधि से विभूषित किया था व जिन्होंने शक स० ९१५ मे 'अजितपुराण' की रचना की थी। नाग वर्म सम्भवत वही प्रसिद्ध कनाडी कवि हों जिन्हे गङ्गनरेश रकसगङ्ग ने अपने दरबार में रक्खा था और जिन्होंने 'छन्दो म्बुधि' और 'कादम्बरी' नामक काव्यों की रचना की थी। 'चन्द्रकीर्ति' सम्भव है वे ही आचार्य हों जिनका उल्लेख ४३ (११७) में आया है। आश्चर्य नही जो चावुण्डय्य और मारसिङ्गय्य क्रमश चामुण्डराज मन्त्री और मारसिंह नरेश ही

हों। केवल उपाधियो मे से कुछ इस प्रकार हैं—समधिगत पञ्चमहाशब्द, महामण्डलेश्वर, श्रीराजन् चट्ट (राजव्यापारी), श्रीबडवरबण्ट (गरीबो का सेवक), रणधीर, इत्यादि। उपाधि सहित नामो के उदाहरण इस प्रकार हैं—श्री ऐचय्य विरोधि-निष्ठुर श्रीजिनमार्गनीति-सम्पन्न सर्पचूडामणि, श्रावत्सराज बालादित्य, अरिष्टनमि पण्डित परसमयध्वसक, इत्यादि। जिनके साथ मे यह भी कहा गया है कि उन्होने देव की व तीर्थ का वन्दना की, उनमे से कुछ के नाम ये हैं—मल्लिषेण भट्टारक के शिष्य चरेङ्गय्य अभयनन्दि पण्डित के शिष्य कोत्तय्य, श्रीवर्म्मचन्द्रगीतय्य, नयनन्दि विमुक्तदेव के शिष्य मधुवय्य, नागति के राजा इत्यादि। कुछ शिल्पियों के नाम भी हैं, जैसे—गण्डविमुक्तसिद्धान्तदेव के शिष्य श्रीधरवोज, बिदिग, ववोज चन्द्रादित्य और नागवर्म्म।

इस प्रकार के शिलालेख यो तो निरुपयोगी समझ पडते हैं पर इतिहासखोजक के लिये कभा-कभी ये ही बडे उपयोगी सिद्ध होते हैं। कम से कम उनसे यह बात तो सिद्ध होती ही है कि कितने प्राचीन समय से उक्त स्थान तीर्थ माना जाता रहा है और यति, मुनि, कवि, राजा, शिल्पी, आदि कितने प्रकार के यात्रियों ने समय समय पर उस स्थान की पूजा वन्दना करना अपना धर्म समझा है। इससे उस स्थान की धार्मिकता, प्राचीनता और प्रसिद्धि का पता चलता है।

उत्तर भारत के यात्रियों के लेखो की सख्या लगभग ५३ है। ये सब मारवाडी हिन्दी भाषा मे हैं। लिपि के अनुसार ये लेख दो भागो मे विभक्त किये जा सकते हैं। ३६ लेखो की लिपि नागरी है और १७ की महाजनी। नागरी लेखों का समय लगभग शक स० १४०० से १७६० तक है। इनमे के दो लेख स्याही से लिखे हुए हैं। इन लेखो मे के अधिकांश यात्री काष्ठा सघ के थे जिनमे के कुछ मण्डितटगच्छ के थे। यह गच्छ काष्ठा सघ के ही अन्तर्गत है। कुछ यात्रियो के साथ उनकी **बघेरवाल** जाति व **गोनासा** और **पीनला** गोत्र का उल्लेख है। कुछ लेखो में यात्रियो के निवासस्थान पुरस्थान, माडवागढ व गुडवटीपुर का उल्लेख है। महाजनी लिपि के १७ लेख उस विचित्र लिपि के हैं जिसे मुण्डा भाषा कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि इसमे मात्राये प्राय नही लगाई जातीं। केवल 'अ' और 'इ' की मात्राओं से ही अन्य सब मात्राओ का भी काम निकाल लिया जाता है। व्यञ्जनो मे 'ज' और 'झ', 'ट' और 'ठ', 'ड' और 'ण', 'भ' और 'व' मे कोई भेद नही रक्खा जाता। यह भाषा आगरा, अवध और पञ्जाब प्रदेशो के व्यापारी महाजनो मे प्रचलित है। कुछ लेखो में 'टाकरी' लिपि के अक्षर भी पाये जाते हैं, जो पञ्जाब के पहाडी हिस्सो मे प्रचलित हैं। इस पर से अनुमान किया जा सकता है कि उक्त सब प्रदेशों से यात्री इस तीर्थस्थान की वन्दना को आते थे। उल्लिखित यात्रियों मे अधिकांश अग्र-

वाल और सरावगी जातियो के थे। अग्रवालो के अन्तर्गत ही वे सब अवान्तर भेद पाये जाते हैं जिनका उल्लेख लेखो मे आया है, यथा—नरथनवाला, सहनवाला, गङ्गानिया इत्यादि। अनेक यात्रियो ने अपने को 'पानीपथीय' कहा है जिससे विदित होता है कि वे 'पानीपत' के थे। लेखो मे गोयल और गर्ग गोत्रो व स्थानपेठ और माडनगढ स्थानो के नाम भी आये हैं। इन लेखो का समय लगभग शक स० १६७० से १७१० तक है।

जीर्णोद्धार और दान—मन्दिरादिनिर्माण, जीर्णोद्धार और पूजाभिषेकादि के हेतु दान से सम्बन्ध रखनेवाले लेखों की सख्या लगभग दो सौ है। मन्दिरादिनिर्माण के विषय के लेखो का उल्लेख पहले मन्दिरों आदि के वर्णन मे आ चुका है। यहाँ शेष लेखो मे के मुख्य २ का कुछ परिचय दिया जाता है। शक स० ११०० के लगभग के लेख न० ८८ (२३७), ८९ (२३८) और ९२ (२४२) मे गोम्मटेश्वर की पूजा के हेतु पुष्पों के लिये दान का उल्लेख है। प्रथम लेख मे कहा गया है कि महापसायित विजपण के दामाद चिक मदुकण्ण ने महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव से कुछ भूमि मोल लेकर उसे गोम्मटेश की नित्य पूजा मे बीस पुष्पमालाओ के लिये लगा दो। द्वितीय लेख मे कथन है कि सोमेय के पुत्र कविसेट्टि ने उक्त देव की पूजार्थ पुष्पो के लिये कुछ भूमि का दान महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव को दिया। तीसरे

लेख मे उल्लेख है कि बेलगोल के समस्त व्यापारियो ने 'सघ' से कुछ भूमि खरीद कर उसे मालाकार को गोम्मटेश की पूजा मे पुष्प देने के लिये दान कर दी। लेख न० ९१ (२४१) मे कथन है कि बेलगोल के समस्त व्यापारियो ने गोम्मटेश और पार्श्वदेव की पूजा मे पुष्पो के लिये प्रतिवर्ष कुछ चन्दा देने का वचन दिया। लेख न० ९३ (२४३) के अनुसार चेन्नि सेट्टि के पुत्र व चन्द्रकीर्ति भट्टारक के शिष्य कल्लय्य ने कुछ द्रव्य का दान इस हेतु दिया कि कम से कम पुष्पो की छ माला प्रतिदिवस गोम्मटदेव और तीर्थकरों को चढाई जाव। लेख न० ९४, ९५, ९७ व ३३० (२४४, २४५, २४७, २००) मे गोम्मटेश के प्रतिदिन अभिषेक के हेतु दुग्ध के लिये दान का उल्लेख है। इन लेखों मे दुग्ध का परिमाण भी दिया गया है। और बेलगोल के व्यापारी इस कार्य के प्रबन्धक नियुक्त किये गये हैं। लेख न० १०६ (२५५) (शक स० १३३१) मे गोम्मटेश की मध्याह्न पूजन के हेतु दान का उल्लेख है।

लगभग शक स० ११०० के लेख न० ८६, ८७, ३६१ (२३५, २३६, २५२) मे बसविसेट्टि द्वारा स्थापित चतुर्विंशति तीर्थकरो की अष्टविध पूजा के हेतु व्यापारियों के वार्षिक चन्दो का उल्लेख है। इसी प्रकार लेख न० ९९ १०२, १३१, १३५, १३७, ४५४ और ४७५ मे भिन्न भिन्न सत्पुरुषो द्वारा भिन्न भिन्न देवों और मन्दिरो की भिन्न भिन्न प्रकार की सेवा और पूजा के हेतु भिन्न भिन्न समय पर नाना प्रकार के दानो का उल्लेख है।

लेख नं० १९४ (३४२) मे कहा गया है कि हिरिय अय्य के शिष्य गुम्मटन्न ने चन्द्रगिरि पर की चिक्कबस्ति, उत्तरीय दरवाजे पर की तीन बस्तियों और मङ्गायि बस्ति का जीर्णोद्धार कराया। लेख न० ३७० (२७०) के अनुसार बेगूरु के बैयण ने एक बड़ा हौज और छप्पर बनवाया। न० ४६८ (५००) के अनुसार एक साध्वी स्त्री जिण्णान्न ने एक मन्दिर को रथ का दान दिया, व न० ४८२ के अनुसार मदेय नायक ने एक नन्दिस्तम्भ बनवाया।

लेखों से तत्कालीन दूध के भाव का अनुमान–

अनेक लेखों मे मस्तकाभिषेक के हेतु दुग्ध के लिये दान दिये जाने के उल्लेख हैं जिनसे उस समय के दूध के भाव का कुछ ज्ञान हो सकता है। उदाहरणार्थ, शक स० ११९७ के एक लेख न० ९५ (२४५) मे कहा गया है कि हलसूर के केतिसेट्टि ने गोम्मटदेव के नित्याभिषेक के लिये ३ मान दूध के लिये ३ गद्याण का दान दिया। यह दूध उक्त रकम के व्याज से जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक लिया जावे। गद्याण दक्षिण भारत का एक प्राचीन सोने का सिक्का है जो करीब दस आना भर होता है, और मान दक्षिण भारत का एक माप है जो ठीक दो सेर का होता है। अतएव स्पष्ट है कि १॥।=) भर (दो आना कम दो तोला) सोने के साल भर के व्याज से ३६० × ३ × २ = २१६० सेर दूध आता था। शक स० ११२८ के लेख न० १२८ (३३३) से ज्ञात होता

है कि उस समय आठ 'हण' का सालाना एक 'हण' व्याज आ सकता था अर्थात् व्याज की दर सालाना मूल रकम का अष्टमांश थी। इसके अनुसार १।।।=) भर सोने का साल भर का व्याज ≡)।।। (पौने चार आना) भर सोना हुआ। अतएव स्पष्ट है कि शक की बारहवी शताब्दी के लगभग अर्थात् आज से छ सात सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत मे पौने चार आना भर सोने का २१६० सेर दूध बिकता था। इसे आजकल के चाँदी सोने के भाव के अनुसार इस प्रकार कह सकते हैं कि उक्त समय एक रुपया का लगभग साढे नौ मन दूध आता था।

इसी प्रकार लेख न० ६४ (२४४) मे जो नित्यप्रति ३ मान दूध के लिये ४ गद्याण के दान का उल्लेख है उसका हिसाब लगाने से २१६० सेर दूध की कीमत पॉच आना भर सोना निकलती है। शक स० १२०१ के लेख १३१ (३३६) मे नित्यप्रति एक 'बल्ल' दूध के लिये पॉच 'गद्याण' के दान का उल्लेख है जिसके अनुसार ३६० 'बल्ल' दूध की कीमत सवा छ आना भर सोना निकलती है। बल्ल सम्भवत उस समय 'मान' से बडा कोई माप रहा है*।

'गद्याण' और मान' का अर्थ मुझे श्रीयुक्त प० नाथूरामजी प्रेमी द्वारा विदित हुआ है। उन्होने श्रवण वेल्गोला से समाचार मँगाकर अपने पहले पत्र में मुझे इस प्रकार लिखा था—"गद्याण = यह माप अनुमान १ तोले के बराबर होता है और एक सुवर्ण नाण्य (?) को

आचार्यों की वंशावली

जैन इतिहास की दृष्टि से वे लेख बहुत महत्वपूर्ण हैं जिनमे आचार्यों की परम्पराये दी हैं। प्रस्तुत सग्रह के दस बारह लेखो मे ऐसी परम्पराये व पट्टावलियाँ पाई जाती हैं। इस सम्बन्ध मे सबसे पहले हम उन लेखो को लेते हैं जिनमे उन सुगृहीतनाम आचार्यों का क्रमबद्ध उल्लेख आया है जिन्होंने महावीर स्वामी के पश्चात् जैन आगम का अध्ययन और प्रचार किया। ऐसे लेख न० १ और १०५ (२५४) हैं। इनमे उक्त आचार्यों की निम्नलिखित परम्परा पाई जाती है। मिलान के लिये साथ मे हरिवंश पुराण की गुर्वावली भी दी जाती है।

भी कहते है। मान = यह अनुमान एक मर के बराबर होता है। इनका प्रचार प्राचीन काल मे था अब नही है।" इसके पश्चात् उनका दूसरा पत्र आया जिसमे निम्नलिखित वार्ता थी— गद्याण पुराने समय का साने का सिक्का है जो करीब दस आने भर होता है। अब यह नहीं चलता। चार गुञ्जाओ का एक हण, नौ हणाओ का एक बरहा और दो बरहा का एक गद्याण। मान ठीक दो सेर का होता है। अब इसको बल्ला' बोलते है। खेडा मे इसका प्रचार है और अनाज मापने के काम मे यह आता है। पहले दूध, दही, घी भी इससे मापा जाता था।" ऊपर के विवेचन में दूसरे पत्र का ही आधार लिया गया है। इसके अनुसार 'मान' और 'बल्ला' एक ही बराबर ठहरते है पर जैसा कि ऊपर कहा गया है प्राचीन काल का 'बल्ल' सम्भवत मान से बड़ा रहा है।

न० १०५ (२५४) हरिवंश पुराण नं० १

(शक सं० १३२०)	(शक सं० ७०५)	(अनु० ७ वीं शताब्दी)
महावीर	महावीर	महावीर

११ गणधर व केवली

१ इन्द्रभूति । गौतम	१ गौतम	१ गौतम
२ अग्निभूति		
३ वायुभूति		
४ अकम्पन		
५ मौर्य		
६ सुधर्म । सुधर्म	२ सुधर्म	२ लोहाचार्य
७ पुत्र		
८ मैत्रेय		
९ मौण्ड्य		
१० अन्धवेल		
११ प्रभासक । जम्बू	३ जम्बू	३ जम्बू

५ श्रुतकेवली

१ विष्णु	१ विष्णु	१ विष्णुदेव
२ अपराजित	२ नन्दिमित्र	२ अपराजित
३ नन्दिमित्र	३ अपराजित	३ गोवर्धन
४ गोवर्द्धन	४ गोवर्द्धन	४ भद्रबाहु
५ भद्रबाहु	५ भद्रबाहु	

११ दशपूर्वी	१ क्षत्रिय	१ विशाख	१ विशाख
	२ प्रोष्ठिल	२ प्रोष्ठिल	२ प्रोष्ठिल
	३ गङ्गदेव	३ क्षत्रिय	३ कृत्तिकार्य (क्षत्रिकार्य)
	४ जय	४ जय	४ जय
	५ सुधर्म	५ नाग	५ नाम (नाग)
	६ विजय	६ सिद्धार्थ	६ सिद्धार्थ
	७ विशाख	७ धृतिषेण	७ धृतिषेण
	८ बुद्धिल	८ विजय	८ बुद्धिल आदि-
	९ धृतिषेण	९ बुद्धिल	
	१० नागसेन	१० गङ्गदेव	
	११ सिद्धार्थ	११ धर्मसेन	
५ एकादशाङ्गी	१ नक्षत्र	१ नक्षत्र	
	२ पाण्डु	२ यश पाल	
	३ जयपाल	३ पाण्डु	
	४ कंसाचार्य	४ ध्रुवसेन	
	५ द्रुमसेन (धृति सेन)	५ कंसाचार्य	
४ आचाराङ्गी	१ लोहार्य	१ सुभद्र	
	२ सुभद्र	२ यशोभद्र	
	३ जयभद्र	३ यशोबाहु	
	४ यशोबाहु	४ लोहाचार्य	

यह अङ्गधारी आचार्यों की पट्टावली है। नामो के क्रम मे जो हेर फेर पाये जाते हैं, उसका कारण यह है कि लेख न०१०५ हरिवंश पुराण से भिन्न छन्दो मे लिखा गया है। कवि को अपने छन्द मे नामों का समावेश करने के लिये उनको इधर उधर रखना पडा है। इसी कारण कहीं कही नामो म भी हेर फेर पाये जाते हैं। लेख मे यश पाल के लिये जयपाल, धर्मसेन के लिए सुधर्म, और यशोभद्र की जगह जयभद्र नाम आये हैं। ध्रुवसेन की जगह जो लेख मे द्रुमसेन पाया जाता है, यह सम्भवत मूल लेख के प ़ न मे भूल हुई है। लेख न० १ मे जो अधूरी परम्परा पाई जाती है उसका कारण यह ज्ञात होता है कि वहाँ लेखक का अभिप्राय पूरी पट्टावलि देने का नही था। उन्होने कुछ नाम देकर आदि लगाकर उस सुप्रसिद्ध परम्परा का उल्लेख मात्र किया है इसी से श्रुतकेवलिया के बीच एक नाम छूट भी गया है। उक्त लेखो मे यद्यपि इन आचार्यों का समय नही बतलाया गया, तथापि इन्द्रनन्दि कृत श्रुतावतार से जाना जाता है कि महावीर स्वामी के पश्चात् तीन केवली ६२ वर्ष मे, पाच श्रुत केवली १०० वर्ष मे, ग्यारह दशपूर्वी १८३ वर्ष मे, पॉच एकादशाङ्गी २२० वष मे और चार एकाङ्गी ११८ वर्ष मे हुए हैं। इस प्रकार महावीर स्वामी की मृत्यु के पश्चात् लोहाचार्य तक ६८३ वर्ष व्यतीत हुए थे।

बहुत से लेखो में आ ा के आचार्यो की परम्परा कुन्दकुन्दाचार्य से ली गई है। दुर्भाग्यत किसी भी लेख मे उपर्युक्त

श्रुतज्ञानियों और कुन्दकुन्दाचार्य के बीच की पूरी गुरुपरम्परा नहीं पाई जाती। केवल उपर्युक्त लेख नं० १०५ मे ही इस बीच के आचार्यों के कुछ नाम पाय जाते हैं जो इस प्रकार हैं—

१ कुम्भ	७ सर्वज्ञ
२ विनीत या अविनीत	८ सर्वगुप्त
३ हलधर	९ महिधर
४ वसुदेव	१० धनपाल
५ अचल	११ महावीर
६ मेरुधीर	१२ वीरद्र इत्यादि

नन्दि सघ की पट्टावली मे कुन्दकुन्दाचार्य की गुरुपरम्परा इस प्रकार पाई जाती है —

भद्रबाहु
|
गुप्तिगुप्त
|
माघनन्दि
|
जिनचन्द्र
|
कुन्दकुन्द

इन्द्रनन्दिकृत श्रुतावतार के अनुसार कुन्दकुन्द उन आचार्यों मे हुए हैं जिन्होंने अगज्ञान के लोप होने के पश्चात् आगम को पुस्तकारूढ किया।

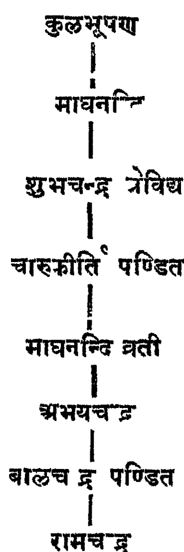
कुन्दकुन्दाचार्य जैन इतिहास, विशेषतः दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के इतिहास, मे सबसे महत्वपूर्ण पुरुष हुए हैं। वे प्राचीन और नवीन सम्प्रदाय के बीच की एक कड़ी हैं। उनसे पहले जो भद्रबाहु आदि श्रुतज्ञानी हो गये हैं उनके नाममात्र के सिवाय उनके कोई ग्रंथ आदि हमे अब तक प्राप्त नहीं हुए हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से कुछ प्रथम ही जिन पुष्पदन्त, भूतबलि आदि आचार्यों ने आगम को पुस्तकारूढ किया उनके भी ग्रन्थो का अब कुछ पता नही चलता। पर कुन्दकुन्दाचार्य के अनेक ग्रन्थ हमे प्राप्त हैं। आगे के प्राय सभी आचार्यो ने इनका स्मरण किया है और अपने को कुन्दकुन्दान्वय के कह कर प्रसिद्ध किया है। लेखो मे दिगम्बर सम्प्रदाय का एक और विशेष नाम मूल सघ पाया जाता है। यह नाम सम्भवत सबसे प्रथम दिगम्बर सघ का श्वेताम्बर सघ से पृथक् निर्देश करने के लिये दिया गया। अनुमान शक सवत् १०२२ के शिलालेख न० ५५ मे कुन्दकुन्द को ही मूल सघ के आदि गणी कहा है यथा—

श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने।
श्रीकोण्डकुन्दनामाभून्मूलसघाग्रणीर्गणी ॥

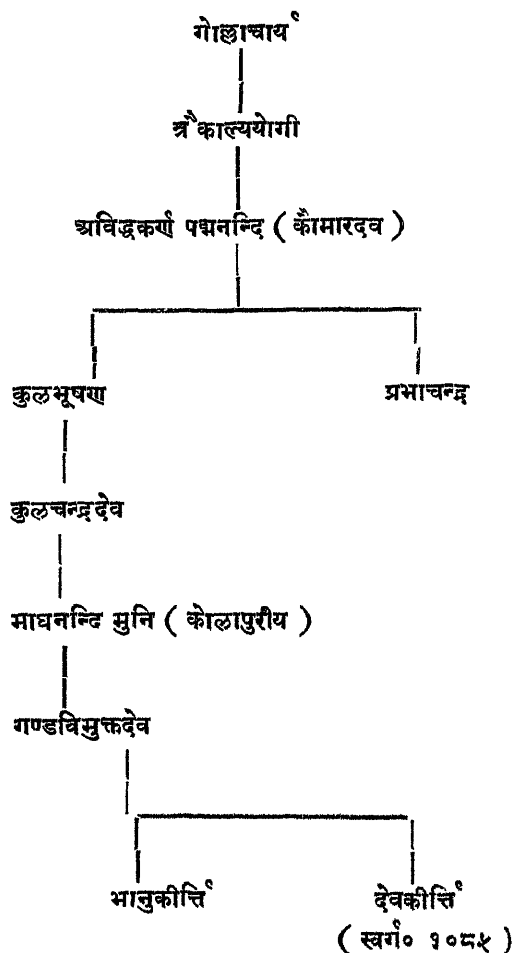
पर शिलालेख न० ४२, ४३, ४७ और ५० (क्रमश शकस० १०९९, १०४५, १०३७ और १०६०) मे गौतमादि मुनीश्वरो का स्मरण कर कहा गया है कि उन्हीं की सन्तान के नन्दि गण में पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्दाचार्य हुए। लेख

न० ५४ (शक १०५०), ४० (शक १०८५) और १०८ (शक १३५५) मे गौतम स्वामी के उल्लेख के पश्चात् उन्हा की सन्तति मे भद्रबाहु और फिर उनके शिष्य चन्द्रगुप्त का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उनके ही अन्वय मे कुन्द कुन्द मुनि हुए। इन लेखा मे इस स्थल पर सघ गणादि का नाम निर्देश नही किया गया।

लेख न० ४१ मे विना किसी पूर्व सम्बन्ध के यह आचार्य परम्परा भी दी है—



लेख नं० ४७, ४३, ५० और ४२ में नन्दिगण कुन्दकुन्दान्वय की परम्परा इस प्रकार पाई जाती है।



अनुमान शक स० १०२२ के लेख न० ५५ की आचार्य परम्परा इस प्रकार है—

मूल संघ, देशीगण, वक्रगच्छ

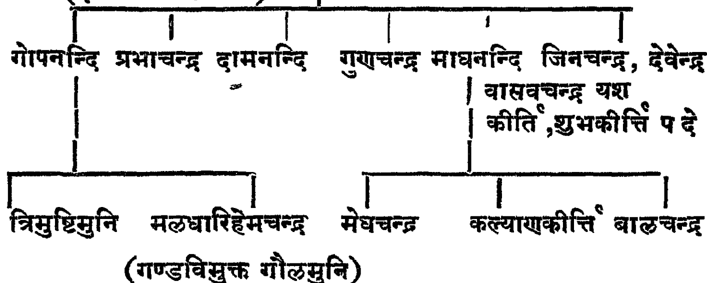
कुंदकुन्द (मूलसंघाग्रणी)

(उनके अन्वय मे)

देवेन्द्र सिद्धान्तदेव

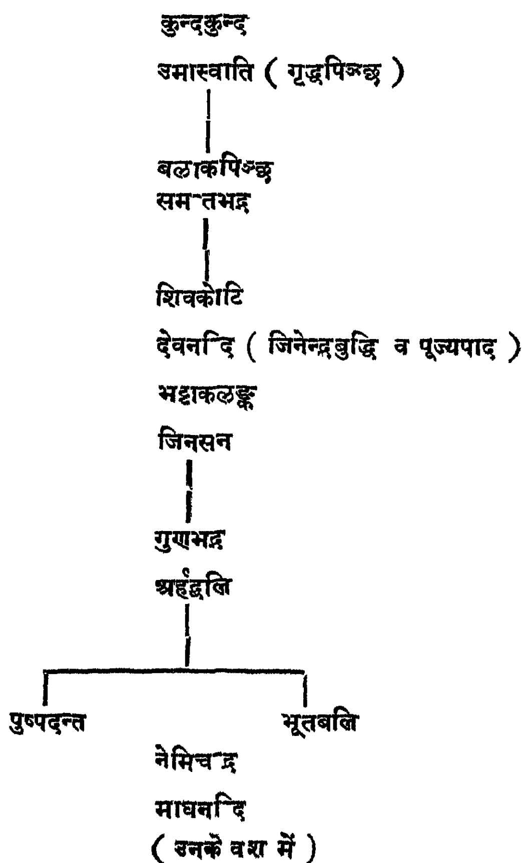
चतुर्मुखदेव (वृषभ-आचार्य)

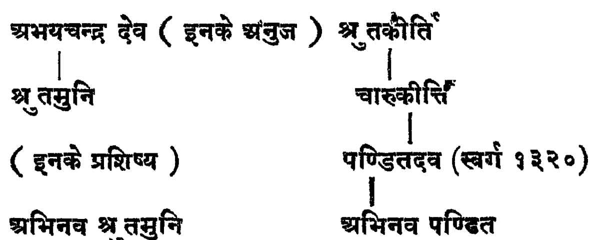
(इनके ८४ शिष्य थे)



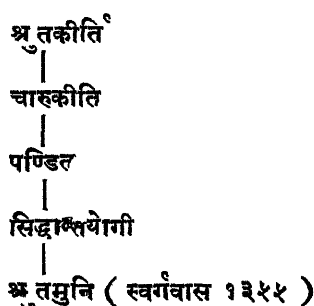
मूल पद्यात्मक लेख के पश्चात् आचार्यों के नामो की गद्य मे पुनरावृत्ति है। इस नामावली में ऊपर के भाग से कुछ विशेषताये पाई जाती हैं। मूलसघ देशीगण, वक्रगच्छ कुन्दकुन्दान्वय मे यहाँ देवेन्द्र सिद्धान्तदेव से प्रथम वड्डदेव का नामोल्लेख है। देवेन्द्र सिद्धान्तदेव के पश्चात् चतुर्मुखदेव का द्वितीय नाम वृषभन्द्याचार्य दिया है। चतुर्मुखदेव के शिष्यों मे महेन्द्रचन्द्र पण्डितदेव का नाम अधिक है। माघनन्दि के शिष्यों मे त्रिरत्ननन्दि का नाम अधिक है। यश कीर्त्ति और वासवचन्द्र गोपनन्दि के शिष्यों में गिनाये गये हैं। इनमें चन्द्रनन्दि का नाम अधिक है।

लेख नं० १०५ (शक १३२०) की कुन्दकुन्दाचार्य तक की परम्परा हम ऊपर देख चुके हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से आगे इस लेख की गुरु-परम्परा इस प्रकार है—





लेख नं० १०८ की परम्परा आदि से अकलङ्कदेव तक लेख नं० ४० के समान ही है। अकलङ्कदेव के पश्चात् सघ भेद हुआ जिसकी इंगुलेश बलि की कुछ परम्परा इस प्रकार ही है।



शक सवत् १२६५ के लेख नं० १११ मे मूलसघ बलात्कार गण की कुछ परम्परा निम्न प्रकार पाई जाती है। लेख बहुत घिसा हुआ होने के कारण परम्परा के ऊपर और नीचे के कुछ नाम स्पष्ट नहीं पढ़े गये।

मूल संघ—बलात्कार गण

कीर्त्ति (वनवासि के)
|
देवेन्द्र विशालकीर्त्ति
|
शुभकीर्त्तिदेव भट्टारक
|
धर्मभूषणदेव
|
अमरकीर्त्ति आचार्य
|
धर्मभूषणदेव (की निषद्या बनवाई गई शक सं० १२९५)

शक स० १०४७ के लेख न० ४९३ में नन्दि सघ, द्रमिण गण अरुङ्गलान्वय की निम्न प्रकार परम्परा है। इस लेख मे आचार्यों का गुरु शिष्य-सम्बन्ध नहीं बतलाया गया केवल एक के पश्चात् दूसरे हुए ऐसा कहा गया है।

नन्दि संघ, द्रमिणगण, अरुङ्गलान्वय

महावीर स्वामी
|
गोतम गणधर

समन्तभद्रव्रती

एक सन्धिसुमति भट्टारक

अकलङ्कदेव वादीभसिह

वक्रग्रीवाचार्य

श्रीनन्द्याचार्य

सिहनन्द्याचाय

श्रीपाल भट्टारक

कनकसेन वादिराजदेव

श्रीविजयशान्तिदेव

पुष्पसेन सिद्धान्तदेव

वादिराज

शान्तिषेण देव

कुमारसेन सैद्धान्तिक

मल्लिषेण मलधारि

श्रीपाल त्रैविद्यदेव (शक स० १०४७ मे

विष्णुवर्द्धन नरेश ने शल्य ग्राम का दान दिया।)

लगभग शक स० १०६६ के लेख न० ११३ मे उल्लेख है कि देसी गण पुस्तक गच्छ कुन्दकुन्दान्वय के निम्नो ल्लिखित आचार्यों ने मिलकर पञ्चकल्याणोत्सव मनाया—

त्रिभुवनराजगुरु भानुचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, सोमचन्द्र सि० च०, चतुर्मुख भट्टारकदेव, सिहनन्दि भट्टाचार्य, शान्ति भट्टारक, शान्तिकीर्त्ति, कनकचन्द्र मलधारिदेव और नेमिचन्द्र मलधारिदेव।

शक सं० १६५० का लेख नं० ५४ आचार्यो की नामावली में और आचार्यों के सम्बन्ध की बहुत सी वार्त्ता देने मे सब लेखो मे विशेष महत्वपूर्ण है। किन्तु दुर्भाग्यवश इस लेख मे आचार्यों का पूर्वापर सम्बन्ध व गुरु शिष्य सम्बन्ध स्पष्टत नहीं बतलाया गया। इससे इस लेख का ऐतिहासिक महत्व उतना नहीं रहता जितना अन्यथा रहता। इस लेख के आचार्यों की नामावली का क्रम लेख मे इस प्रकार है—

वर्द्धमानजिन
गौतमगणधर
भद्रबाहु
|
चन्द्रगुप्त
कुन्दकुन्द
समन्तभद्र—वाद में 'धूर्जटि' की जिह्वा को भी स्थगित करनेवाले।
सिंहनन्दि
वक्रग्रीव—छ मास तक 'अथ' शब्द का अर्थ करनेवाले।
वज्रनन्दि (नवस्तोत्र के कर्त्ता)
पात्रकेसरि गुरु (त्रिलक्षण सिद्धान्त के खण्डनकर्त्ता)
सुमतिदेव (सुमतिसप्तक के कर्त्ता)
कुमारसेन मुनि
चिन्तामणि (चिन्तामणि के कर्ता)
श्रीवर्द्धदेव (चूड़ामणि काव्य के कर्ता, दण्डी द्वारा स्तुत्य)
महेश्वर (ब्रह्मराक्षसो द्वारा पूजित)

अकलङ्क (बौद्धो के विजेता, साहसतुङ्ग नरेश के सम्मुख हिमशीतल नरेश की सभा मे)

पुष्पसेन (अकलङ्क के सधर्म)

विमलचन्द्र मुनि—इन्होने शैवपाशुपतादिवादियो के लिये 'शत्रु भयङ्कर' के भवन द्वार पर नोटिस लगा दिया था ।

इन्द्रनन्दि

परवादिमल्ल (कृष्णराज के समक्ष)

आर्य्यदेव

चन्द्रकीर्त्ति (श्रुतविन्दु के कर्त्ता)

कर्मप्रकृति भट्टारक

श्रीपालदेव मतिसागर	वादिराज कृत पार्श्वनाथचरित (शक ९४७) से विदित होता है कि वादिराज के गुरु मतिसागर थे और मतिसागर के श्रीपाल ।

हेमसेन विद्याधनञ्जय महामुनि

दयालपाल मुनि (रूपसिद्धि के कर्त्ता, मतिसागर के शिष्य) वादिराज (दयापाल के सहब्रह्मचारी चालुक्यचक्रेश्वर जयसिंह के कटक मे कीर्त्ति प्राप्त की)

श्रीविजय (वादिराज द्वारा स्तुत्य हेमसेन गुरु के समान)

कमलभद्र मुनि

दयापाल पण्डित, महासूरि

शान्तिदव (विनयादित्य पोय्सल नरेश द्वारा पूज्य) चतुर्मुखदेव (पाण्ड्य नरेश द्वारा स्वामी की उपाधि और आहवमल्लनरेश द्वारा चतुर्मुखदेव की उपाधि प्राप्त की)

गुणसन (गुल्लूर के)

अजितसन वादीभसिंह

शान्तिनाथ कवितारान्त — पद्मनाभ वादिकोलाहल

कुमारसन

मल्लिषेण मलधारि (अजितसन पण्डितदेव के शिष्य, स्वर्गवास शक सं० १०५०)

उपर्युक्त वशावलियो के आचार्यो मे से कुछ के विषय मे जो खास खास बाते लेखो मे कही गई हैं वे इस प्रकार हैं —

कुन्दकुन्दाचार्य—ये मूल सघ के अग्रगणी थे (मूलसघाग्रणीर्गणी) (५५)। इन्होने उत्तम चारित्र द्वारा चारण ऋद्धि प्राप्त की थी (४०, ४२, ४३, ४७, ५०) जिसके बल से वे पृथ्वी से चार अगुल ऊपर चलते थे (१३८) मानों यह बतलाने के हेतु कि वे बाह्य और अभ्यन्तर रज से अस्पृष्ट हैं (१०५)* ।

उमास्वाति—ये गृद्धपिच्छाचार्य कहलाते थे (४०, ४३, ४७, ५०) वे बलाकपिच्छ के गुरु और तत्त्वार्थसूत्र के कर्त्ता थे (१०५)* ।

---

* इन आचार्यों के विषय में विशेष जानने के लिये माणिकचन्द्र ग्रथमाला के 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' की भूमिका देखिए ।

समन्तभद्र—ये वादिसिंह, गणभृत और समस्तविद्या-निधि पदों से विभूषित थे (४०, ५४, ४९३) इन्होने भस्मक व्याधि को जीता तथा पाटलिपुत्र, मालवा, सिन्धु, ठक्क (पञ्जाब), काञ्चीपुर, विदिशा (उज्जैन) व करहाटक (कोल्हापूर) मे वादियों को आमन्त्रित करने के लिये भेरी बजाई। उन्होने 'धूर्जटि'* की जिह्वा को भी स्थगित कर दिया था (५४)। समन्तभद्र 'भद्रमूर्ति' जिन शासन के प्रणेता और प्रतिवाद शैलो को वाग्वज्र से चूर्ण करनेवाले थे (१०८)

शिवकोटि—ये समन्तभद्र के शिष्य व तत्त्वार्थसूत्रटीका के कर्त्ता थे (१०५)।

पूज्यपाद—इनका दीक्षा नाम 'देवनन्दि' था, महद्बुद्धि के कारण वे जिनेन्द्रबुद्धि कहलाए तथा इनके पादो की पूजा वनदेवता करते थे इससे विद्वानो मे ये पूज्यपाद के नाम से प्रख्यात हुए (४०, १०५)। वे जैनेन्द्र व्याकरण, सर्वार्थसिद्धि (टीका), जैनाभिषेक, समाधिशतक, छन्द शास्त्र व स्वास्थ्यशास्त्र के कर्त्ता थे (४०)। हुमच के एक लेख (रि ए जै ६६७) मे वे न्यायकुमुदचन्द्रोदय, शाक-टायन सूत्र न्यास, जैनेन्द्र न्यास, पाणिनि सूत्र के शब्दावतार

---

* 'धूर्जटि' की जिह्वा को स्थगित करने का श्रेय गोपनन्दि आचार्य को भी दिया गया है (५५ ४९२)। धूर्जटि शङ्कर की उपाधि है व इसका तात्पर्य शङ्कराचार्य से भी हो सकता है क्योकि शङ्कराचार्य हिन्दू ग्रन्थो मे शङ्कर के अवतार माने गये है।

न्यास, वैद्यशास्त्र और तत्त्वार्थ सूत्रटीका (सर्वार्थसिद्धि) के कर्त्ता कहे गये हैं। वे सुराधीश्वरपूज्यपाद, अप्रतिमौषधर्द्धि, 'विदेहजिनदर्शनपूतगात्र' थे। उनके पादप्रक्षालित जल से लोहा भी सुवर्ण हो जाता था (१०८)*।

गोल्लाचार्य—ये मुनि होने से प्रथम गोल्ल देश के नरेश थे। नूत्न चन्दिल नरेश के वशचूडामणि थे (४७)।

त्रैकाल्ययोगी—इन्होने एक ब्रह्मराक्षस को अपना शिष्य बना लिया था। उनके स्मरणमात्र से भूत प्रेत भाग जाते थे। उन्होने करञ्ज के तेल को घृत मे परिवर्तित कर दिया था (४७)।

गोपनन्दि—बडे भारी कवि और तर्क प्रवीण थे। उन्होने जैन धर्म की वैसी ही उन्नति की जैसी गङ्गनरेशो के समय मे हुई थी। उन्होने धूर्जटि की जिह्वा को भी स्थगित कर दिया था (५५—४९२)।

प्रभाचन्द्र—ये धारा के भोज नरेश द्वारा सम्मानित हुए थे (५५)।

दामनन्दि—इन्होने महावदि 'विष्णुभट्ट' को परास्त किया था जिससे वे 'महावादिविष्णुभट्टघरट्ट' कहे गये हैं (५५)।

जिनचन्द्र—ये व्याकरण में पूज्यपाद, तर्क मे भट्टाकलङ्क और साहित्य में भारवि थे (५५)।

---

* विशेष जानने के लिये माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला के रत्नकरण्ड श्रावकाचार की भूमिका व 'जैन साहित्य संशोधक' भा० १ अं० २, देखिए पृ० ६७ ८७।

वासवचन्द्र—इन्होने चालुक्य नरेश के कटक मे बाल-सरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी (५५)।

यश कीर्त्ति—इन्होने सिहल नरेश से सम्मान प्राप्त किया था (५५)।

कल्याणकीर्त्ति—साकिनी आदि भूत प्रेतों को भगाने मे प्रवीण थे (५५)।

श्रुतकीर्त्ति—'राघवपाण्डवीय' काव्य के कर्त्ता थे। यह काव्य अनुलोमप्रतिलोम नामक चित्रालङ्कार-युक्त था अर्थात् वह आदि से अन्त व अन्त से आदि की ओर एक सा पढा जा सकता था। जैसा कि काव्य के नाम से ही विदित होता है वह द्वयर्थक भी था। श्रुतकीर्त्ति ने देवेन्द्र व अन्य विपश्चियो को वाद में परास्त किया था। सम्भव है कि उक्त देवेन्द्र उस नाम के वे ही श्वेताम्बराचार्य हो जिनके विषय में प्रभावक चरित मे कहा गया है कि उन्होने दिगम्बराचार्य कुमुदचन्द्र को परास्त किया था। (लेख न० ४० के नीचे का फुटनोट देखिए।)

वादिराज—जयसिह चालुक्य द्वारा सम्मानित हुए थे (५४)।

चतुर्मुखदेव—पाण्ड्य नरेश से स्वामी की उपाधि प्राप्त की थी।

इन आचार्यो के अतिरिक्त अन्य जिन प्रभावशाली आचार्यों का परिचय हमे लेखों से मिलता है उनका विवरण ऊपर ऐति-

हासिक विवेचन मे आ चुका है। एक बात विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि जैनाचार्यों ने हर प्रकार से अपना प्रभाव महा राजाओं और नरेशो पर जमाने का प्रयत्न किया था। इसी से वे जैन धर्म की अपरिमित उन्नति कर सके। जैनाचार्यों का राजकीय प्रभाव उठ जाने से जैन धर्म का ह्रास हो गया।

अन्य लेखो से जिन आचार्यों का जो परिचय हमे मिलता है वह भूमिका के अन्त मे तालिकारूप मे दिया जाता है।

सघ, गण, गच्छ और बलि भेद

मूलसघ—ऊपर कहा जा चुका है कि लेखों म दिगम्बर सम्प्रदाय को मूल सघ कहा है। सम्भवत यह नाम उक्त सम्प्रदाय को श्वेताम्बर सम्प्रदाय से पृथक् निर्दिष्ट करने के लिये दिया गया है। लेखों मे इस सघ के अनेक गण, गच्छ और शाखाओ का उल्लेख हैं। इनमे मुख्य **नन्दिगण** है। लेख न० ४२, ४३, ४७, ५८ आदि मे इस गण के आचार्यों की परम्पराये पाई जाती है। सबसे अधिक लेखों मे मूल सघ, देशीगण और पुस्तकगच्छ का उल्लेख है। यह देशीगण नन्दिगण से भिन्न नहीं है किन्तु उसी का एक प्रभेद है जैसा कि लेख न० ४०, (शक १०८५) से विदित होता है। इस लेख मे कुन्दकुन्द से लगाकर अकलङ्क तक के

नन्दिगण और देशीगण

मुख्य मुख्य आचार्यों के उल्लेख के पश्चात् पद्य न० १३ मे कहा गया है कि इसी मूल सघ के नन्दिगण का प्रभेद देशी गण हुआ जिसमे गोल्लाचार्य नाम के प्रसिद्ध मुनि हुए। लेख न० १०८ (शक १३५५) मे भी इसी के अनुसार नन्दिसघ, देशीगण, पुस्तकगच्छ का उल्लेख है। 'नन्दिसघे सदेशीयगणे गच्छे च पुस्तके'। अन्य अनेक लेखो मे भी (यथा ४७, ५० आदि) नन्दिगण के उल्लेख के पश्चात् देशीगण पुस्तकगच्छ का उल्लेख है। लेख न० १०५ (शक १३२०) और १०८ (शक १३५५) मे सघभेद की उत्पत्ति का कुछ विवरण पाया जाता है। लेख न० १०५ मे कथन है कि अर्हद्वलि आचार्य ने आपस का द्वेष घटाने के लिये 'सेन', 'नन्दि', 'देव' और 'सिह' इन चार सघो की रचना की। इनमे कोई सिद्धान्त भेद नही है और इसलिय जो कोई इनमे भेद बुद्धि रखता है वह 'कुदृष्टि' है। यह कथन इन्द्रनन्दिकृत नीतिसार के कथन से बिलकुल मिलता है।* लेख न० १०८ मे कहा गया है कि अकलङ्क के स्वर्गवास के पश्चात् सघ देश भेद से उक्त चार भेदो मे विभाजित हो गया। इन भेदों

तदेव यतिराजोऽपि सर्वनैमित्तिकाग्रणी ।
अर्हद्वलिगुरुश्चक्रे सघसघट्टनं परम् ॥ ६ ॥
सिहसघो नन्दिसघ सेनसघो महाप्रभ ।
देवसघ इति स्पष्ट स्थानस्थितिविशेषत ॥ ७ ॥
गणगच्छादयस्तेभ्यो जाता स्वपरसौख्यदा ।
न तत्र भेद कोप्यस्ति प्रव्रज्यादिषु कर्मसु ॥ ८ ॥

में कोई चारित्र भेद नही है। कई लेखो (१११, १२९ आदि) मे बलात्कारगण का उल्लेख है। इन्ही उल्लेखो से स्पष्ट है कि यह भी नन्दिगण व देशीगण से अभिन्न है।

पुस्तकगच्छ और वक्रगच्छ

लेख न० १०५ मे कहा गया है कि प्रत्येक सघ गण, गच्छ और बलि (शाखा) मे विभाजित है। देशीगण का सबसे प्रसिद्ध गच्छ **पुस्तकगच्छ** है जिसका उल्लेख अधिकांश लेखो मे पाया जाता है। इसी गण का दूसरा गच्छ '**वक्रगच्छ**' है जिसकी एक परम्परा लेख न० ५५ (लगभग शक १०८२) में पाई जाती है।

इगुलेश्वरबलि

लेख न० १०५, १०८ व १२९ मे देशीगण की **इंगुलेश्वरबलि** (शाखा) का उल्लेख है। बलि या शाखा किसी आचार्य-विशेष व स्थान विशेष के नाम से निर्दिष्ट होती थी। देशीगण की एक दूसरी '**हनसोगे**' नामक

हनसागे व पनसागे बलि

शाखा का उल्लेख लेख न० ७० मे पाया जाता है। लेख घिसा हुआ होने से वहाँ यह स्पष्ट नही ज्ञात होता कि यह शाखा देशीगण की ही है। पर जिन आचार्यो (गुणचन्द्र व नयकीर्त्ति) को वहाँ हनसोगे शाखा का कहा है वे ही लेख न० १२४ मे मूल सघ देशीगण, पुस्तकगच्छ के कहे गये हैं। इसी से उक्त शाखा का देशीगणान्तर्गत होना सिद्ध होता है। हनसोगे शाखा का कई अन्य लेखो मे भी उल्लेख आया है। हनसोगे एक

स्थान विशेष का नाम था। कही कही इसे पनसोगेबलि भी कहा है। (शि० ए० जै० न० २२३, २३६, ४४६ आदि)

अनेक लेखो (२८, ३१, २११, २१२, २१४, २१८) मे नविलूर सघ का उल्लेख है। इसी सघ को कहीं कहीं (२७, २०७, २१५) नमिलुर सघ कहा है। इसी का दूसरा नाम 'मयूर स घ' पाया जाता है (२७, २९)। लेख न० २७ मे पहले नमिलुर सघ का उल्लेख है और फिर उसे ही मयूर सघ कहा है। लेख न० २९ मे इसे 'मयूर ग्राम' सघ कहा है जिससे स्पष्ट है कि यह सघ बलि व शाखा के समान स्थान विशेष की अपेक्षा से पृथक् निर्दिष्ट हुआ है। कहीं पर स्पष्ट उल्लेख तो नहीं पाया गया पर जान पडता है कि यह भी देशीगण के ही अन्तर्गत है। इसी प्रकार जो लेख न० १९४ मे **कितूरस घ*** न० २०३, २०६ मे **कोलातूर स घ** न० ४९६ में **दिगिडगूर शाखा** व न० २२० मे **'श्रीपूरान्वय'** का उल्लेख है वे सब भी देशीगण की ही स्थानीय शाखाएँ विदित होती हैं।

नविलूर, नमिलूर व मयूर सघ

---

* कित्तूर मैसूर जिले के होग्गडेवन्कोटे तालुका मे है। इसका प्राचीन नाम कीर्त्तिपुर था जो पुन्नाट राज्य की राजधानी था। कन्नड साहित्य मे पुन्नाट राज्य का उल्लेख है। टालेमी ने भी 'पौन्नट' नाम से इसका उल्लेख किया है। इसी राज्य का पुन्नाट संघ प्रसिद्ध है। हरिवंश पुराण के कर्त्ता जिनसेन व कथाकोष के कर्त्ता हरिषेण पुन्नाट संघीय ही थे। सम्भवत कित्तूर संघ पुन्नाट संघ का ही दूसरा नाम है।

लेख नं० ४९३ मे **द्रमिणगण** के **अरुङ्गलान्वय** का उल्लेख है। इन्द्रनन्दि कृत नीतिसार व देवसेन कृत दर्शनसार मे द्राविड सघ जैनाभासो मे गिनाया गया है। पर जिस द्रमिणगण का उक्त लेख मे उल्लेख है वह इस जैनाभास सघ से भिन्न है। उक्त द्रमिण सघ स्पष्टत **नन्दि सघ** के अन्तर्गत कहा गया है।

द्रमिणगण अरुङ्गलान्वय

लेख नं० ५०० मे मूल सघ **काणूरगण, तगरिलगच्छ** का उल्लेख है। सम्भवत यह गण भी देशीगण व नन्दि सघ से सम्बन्ध रखनेवाला ही है।

काणूरगण, तगरिल गच्छ

काष्ठा सघ मण्डितटगच्छ

लेख नं० ११९ मे **काष्ठा सघ मंडितट गच्छ** का उल्लेख है।

ऊपर वर्णित लेख न० ४०,४१,४२,४३,४७,५०,५४,५५,१०५ १०८,१११,११३ और ४६० को छोड शेष लेखो में उल्लिखित आचार्यों का परिचय।

नबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ,गण,गच्छादि	लेख न०	समय शक स० मे	विशेष विवरण
१	बलदेव मुनि	कनकसेन	×	१५	अ० ५७२	समाधिमरण।
२	शान्तिसेन मुनि	×	×	१७	,,	समाधिमरण। भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र ने जिस धर्म की उन्नति की थी उसके क्षीण होने पर इन मुनिराज ने उसे पुनरुत्थापित किया।
३	अरिष्टनेमि आचार्य	×	×	१५२ (१५४) (२१७)	,,	समाधिमरण। इनके अनेक शिष्य थे। समाधि के समय 'दिण्डिकराज' साक्षी थे। लेख नं० १५४ व २१७ यद्यपि क्रमश ८वीं व ९वीं शताब्दि के अनुमान किये जाते है तथापि सम्भवत उनमे भी इन्ही आचार्य का उल्लेख है। लेख नं० २१७ म वे 'परसमयध्वसक' पद से विभूषित किये गये हैं व 'मले गोल' के कहे गये है।
४	वृषभनदि आचार्य	×		१८९	,,	इनके किसी शिष्य ने समाधिमरण किया।
५	मौनि गुरु	×	×	२	अ० ६२२	एक शिष्या का समाधिमरण। ये ही सम्भवत लेख न० ९ के गुणसेन गुरु के व लेख न० ३१ के वृषभनन्दि गुरु के गुरु थे।

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय शक सं० में	विशेष विवरण
६	चरितश्री मुनि	×	×	३	अ० ६२२	समाधिमरण।
७	पानप (मौनद)	×	×	६	,,	समाधिमरण ।
८	बलदेव गुरु	धर्मसेन गुरु	×	७	,,	, । इनके गुरु कित्तूर' परगने मे 'वेल्माद' नामक स्थान के थे ।
९	उग्रसेन गुरु	पट्टिनि गुरु	×	८		। इनके गुरु मालनूर' के थे । उग्रसेनजी ने एक मास तक अनशन किया ।
१०	गुणसेन गुरु	मौनि गुरु	×	६	,,	,, । लेख नं० २ मे सम्भवत इन्हीं मोनिगुरु का उल्लेख है । गुणसेन कोट्टर' के थे।
११	उल्लिकल गुरु	×	×	११	,,	।
१२	कालावि(कलापक) गुरु	×	×	१३	,,	एक शिष्य का समाधिमरण ।
१३	नागसेन गुरु	ऋषभसेन गुरु	×	१४	,,	समाधिमरण ।
१४	सिंहनंदि गुरु	वेट्टेडे गुरु	×	१६		, ।
१५	गुणभूषित	×	सन्दिगगण(?)	२१	,,	, । लेख बहुत घिसा है, इसमे भाव स्पष्ट नहीं हुआ ।

१६	मेल्लगवास गुरु	×	×	१३	अ० ६२२	समाधिमरण ।	ये गुरु 'इनुङ्गूर' के थे ।
१७	नन्दिसेन मुनि	×	×	२६	,,	,, ।	
१८	गुणकीर्त्ति	×	×	३०	,,	,, ।	
१९	वृषभनन्दि मुनि	मानिय आचार्य	नविलूर सघ	३१	,,	, ।	
२०	चन्द्रदेवाचार्य	×	×	३४	,	,, ।	ये आचार्य 'नदि' राज्य के थे ।
२१	मेघनन्दि मुनि	×	नमिलूर संघ	२१५	,,	, ।	
२२	नन्दि मुनि	×	×	२१७	,,	,, ।	
२३	महादेव मुनि	×	×	१६३	,,	,, ।	
२४	सर्वज्ञभट्टारक	×	×	१५३	,,	, ।	ये 'वेगुरा' के थे ।
२५	अक्षयकीर्त्ति	×	×	१५८	,,	,, ।	ये दक्षिण 'मदुरा' से आये थे। इन्हें सर्प ने सताया था ।
२६	गुणदेव सूरि	×	×	१६०	,,	,, ।	
२७	मासेन (महासेन) ऋषि	×	×	१६१	,,	,, ।	
२८	सर्वनन्दि	चिकुरापरविय(?)	×	१६२	,	, ।	चिकुरा परविय का तात्पर्य चिकूर के परविय गुरु व चिकुरापरविय के गुरु हो सकता है । 'परवि' एक प्राचीन तालुके का नाम भी पाया जाता है ।

नम्बर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
२९	बलदेवाचार्य	×	×	१९५	अ० ६२२	समाधिमरण।
३०	पद्मनन्दि मुनि	×	×	१९६	,,	,, ।
३१	पुष्पनान्द	×	×	१९७	,,	,, ।
३२	विशोक भट्टारक	×	कोलातूर संघ	२०३	,,	,, ।
३३	इन्द्रनन्दिआचार्य	×	×	२०५	,,	,, ।
३४	पुष्पसेनाचार्य	×	नविलूर सघ	२१२	,,	समाधिमरण।
३५	श्रीदेवाचार्य	×	×	२१३	,,	,,
३६	मल्लिसेन भट्टारक	×	×	१४६	अनु० ९वी शताब्दि	इनके एक शिष्य ने तीर्थ वन्दना की।
३७	कुमारनदिभट्टारक	×	×	२२७	,,	×
३८	अजितसेनभट्टारक ,, मुनि	×	×	३८ ६७	अनु० ८९९	लेख नं० ३८ में कहा गया है कि गङ्गनरेश मारसिह ने इनके निकट समाधिमरण किया। व लेख नं० ६७ के अनुसार इनके शिष्य चामुण्डराय के पुत्र जिनदेवन ने जिन मदिर बनवाया।
३९	मलधारिदेव	नयनन्दि विमुक्त	×	३०४	अनु० ९७०	नयनन्दि विमुक्त क एक शिष्य न तीर्थ वदना की।
४०	पद्मनन्दिदेव	×	×	४९८	अ० १०००	महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल कोङ्गाल्व ने

						कुछ भूमि का दान दिया।
४१	प्रभाचन्द्रसिद्धान्त देव	×	×	५००	अ० १००१	चैत्यालय के हेतु कोङ्गाल्व नरेश अदटरादित्य द्वारा भूमिदान। उपाधि उभयसिद्धान्तरत्ना कर।
४२	गण्डविमुक्तदेव	×	मूलसंघ कानूर गण तगरिल गच्छ	,,	,,	कोङ्गाल्वनरेश राजेन्द्र पृथुवी द्वारा बस्ती-निर्माण और भूमिदान।
४३	देवनन्दि भट्टारक	×	×	४५६	अ० १०००	
४४	गोपनन्दि पण्डित देव	चतुर्मुखदेव	मू० दे० पु०	४६२	अ० १०१५	पोय्सल नरेश त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग ने बस्तियो के जीर्णोद्धार के हेतु ग्राम का दान दिया। गोपनन्दि ने क्षीण होते हुए जैनधर्म का गङ्ग नरेशो की सहायता से पुनरुद्धार किया। वे षड्दर्शन के ज्ञाता थे।
४५	देवेन्द्रसिद्धान्तदेव	×	,,	,,	,,	उपर्युक्त नरेश के गुरुओ मे से थे।
४६	अकलङ्क पण्डित	×	×	१६६	अ० १०२०	×
४७	सातनन्दि देव	×	×	२२४	,,	चरणचिह्न है।
४८	चन्द्रकीर्त्तिदेव	×	×	२२५	,,	,,
४९	अभयनन्दिपण्डित	×	×	२२	अ० १०२२	एक शिष्य ने देववन्दना की।
५०	शुभचन्द्रसि० देव	कु० मलधारिदेव	मू० दे० पु०	४६	१०३७	ये पोय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के मन्त्री
				५६	१०३९	गगराज दण्डनायक और उनके कुटुम्ब
				४५, ६३ ६४९५	१०४०	के गुरु थे। इन्होने उक्त कुटुम्ब के सदस्यो से कितने ही जिनालय निर्माण कराये,

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ,गण,गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
				४४६, ४४७ ४८६ ४८९,	अ० १०४१	जीर्णोद्धार कराया मूर्ति या प्रतिष्ठित कराई और कितनो ही को दीक्षा सन्यास आदि दिये।
				४९	१०४२	
				४८,६२	१०४४	
				५३	१०५०	
				९०	अ० ११००	
५१	दिवाकरनन्दि	देवेन्द्र सि० देव	मू० द० पु०	१२९	१०४१	इस लेख से यह गुरुक्रम विदित होता है— देवेन्द्र सि० देव । दिवाकरनंदि । मलधारिदेव शुभचन्द्रदेव सि० मु०
५२	भानुकीर्त्ति मुनि	×	मू० दे०	२२९	१०३९	पोयसल रानसेट्टि ने इनसे दीक्षा ली।
५३	प्रभाचन्द्रसि०देव	मेघचन्द्रत्रै०देव		५१,५२	१०४१	इनकी एक शिष्या ने पट्टशाला (वाचनालय) स्थापित कराई। ये विष्णुवर्द्धन नरेश की रानी शान्तलदेवी के गुरु थे।
				४४	१०४३	
				५६	१०४५	

				५३	१०५०	उसके निर्माण कराये हुए सवति गन्ध वारण मन्दिर के लिये इन्हे ग्राम आदि के दान दिये गये थे ।
५४	चारुकीर्त्ति देव	×	×	,,	,,	लेख के लेखक बोकिमय्य के गुरु ।
५५	कनकनन्दि	×	×	४४	१०४३	ये मुल्लूर निवासी थे (मुल्लूर कुर्ग में है)। नृप कामपोय्सल के आश्रित एचिगाङ्क के गुरु थे।
५६	वर्धमानदेव }	×	×	५३	१०५०	इनकी और प्रभाचन्द्र सि० देव की साक्षी से शान्तलदेवी की माता ने सन्यास लिया था ।
५७	रविचन्द्रदेव }					
५८	गण्डविमुक्त सि० देव	×	मू० दे० पु०	३६८	१०५०	इनके शिष्य दण्डनायक भरतेश्वर ने भुज
				२४१	अ०१०७०	बलि स्वामी का पादपीठ निर्माण कराया।
५९	नयकीर्त्ति	×	×	४९७	१०५०	विष्णुवर्धन नरेश के राज्यकाल मे नय कीर्त्ति का स्वर्गवास हो जाने पर कल्याण कीर्ति को जिनालय बनवाने व पूजनादि के हेतु भूमि का दान दिया गया ।
६०	कल्याणकीर्त्ति	×	×			
६१	भानुकीर्तिदेव	×	×	१४४	अ०१०५७	
६२	माधवचन्द्रदेव	शुभचन्द सि०देव	मू० दे० पु०	,,	,,	
६३	नयकीर्त्ति देव म०म० (हिरिय) }	×	×	४५४	अ०१०६५	
६४	नयकीर्ति देव (चिक्क) }					
६५	शुभकीर्तिदेव	×	×	१८८	अ०१०६७	

नम्बर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
६६	त्रिकालयोगी	×	×	४७३	अ० १०६७	
६७	अभयदेव	×	मूलसंघ	”	”	
६८	कु० मलधारि देव	×	×	१३७	अ० १०८०	हुल्ल मन्त्री के गुरु।
६९	नयकीर्ति सि० देव (म० म०)	गुणचन्द्र सि० दे०	मू० दे० पु० हनसोगे शाखा	”	”	हुल्ल मन्त्री ने ग्राम का दान दिया।
				७८	अ० १०२०	
				१२१	”	
				३१७ २०	”	
				३२४	”	
				३२६	”	
				३२७	”	
७०	दामनन्दित्रै० देव			१३८	१०८१	
				१३७	अ० १०८७	
७१	भानुकीर्ति सि० देव			६९	” १ ९२	
				७०	” १०९२	
७२	बालचन्द्रदेव अध्यात्मि	म० म० नय कीर्ति देव	मू० दे० पु० हनसोगे शाखा	४९१	” १०९५	कुन्दकुन्दाचार्य के प्राभृत त्रय पर इनकी कनाडी टीका पाई जाती है।
				९०	’ ११००	
७३	प्रभाचन्द्रदेव			१०४		

				१८७	"	
७४	माघनन्दि भट्टारक			८५	" ११०२	
				१२४	,, ११०३	
७५	पद्मनान्ददेव म त्रवादि			४३६	"	
				४६४	११०४	
७६	नेमिचन्द्रप० देव			१३०	ग्र० १११८	
				३३३, ३२५, ३२८	" ११२०	
				१२८	" ११२८	
				८१	अ० ११५३	
७७	लक्खनन्दि मुनि					
७८	माधवचन्द्र व्रती	देवकीर्ति म०म०	×	३६	१०८५	देवकीर्ति मुनि बडे भारी कवि, तार्किक और वक्ता थे। उक्त तिथि को उनका स्वर्गवास होने पर उक्त शिष्यो ने उनकी निषद्या बनवाई।
७९	त्रिभुवनमल्ल योगी					
८०	मेघचन्द्र	बालचद्र अध्यात्मी	मू० दे० पु०	४६६	११०८	इनके एक शिष्य रामदेव विभ्र ने जिनालय बनवाया व दान दिया।
८१	नयकीर्ति देव	(हिरिय) नय कीर्त्ति देव	×	४७५	अ० १११०	
८२	धनकीर्ति देव	×	×	२४३	अ० १११२	

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
८३	चन्द्रप्रभदेव म० म०	हिरियनयकीर्त्ति	×	८८ ८९	अ ११०८ ११२०	
८४	चन्द्रकीर्ति	×	×	२९८	अ ११२०	
८५	कनकनन्दिदेव	×	×	२५१	,,	इनकी प्रतिमा है।
८६	मल्लिषेण	×	×	४६१	,,	
८७	सागरनन्दि सि० देव	शुभचन्द्र त्रै० देव	मू० दे० पु०	४७१		
८८	शुभचन्द्र त्रै० देव	माघनन्दिसि० देव	,,	,,	,,	
८९	वादिराज	×	×	४९५	अ० ११२२	
९०	मल्लिषेण मलधारि	×	×	,,	,,	
९१	श्रीपालयोगीन्द्र	×	×	,,	,,	
९२	वादिराजदेव	श्रीपाल योगीन्द्र	×	,,	,,	
९३	शान्तिसिगपण्डित	,,	×	,,	,,	
९४	परवादिमल्ल पण्डित	,,	×	,,	,,	
९५	नेमिचन्द्र प० देव म०म०राजगुरु	×	×	४७९	११३६	

९६	अभयनन्दि	×	^	४२१	अ० ११७०	
९७	सुरकीर्त्ति	×	×	”		
९८	गुणचन्द्र	×	×	,		
९९	भानुकीर्त्ति	माघनन्दिसि०च०	मू० दे० पु०	४९९	११७०	
१००	माघनन्दि भट्टारक	भानुकीर्त्ति	,	,	,	
१०१	चन्द्रप्रभदेव	नयकीर्त्ति देव म० म०	×	९	अ० ११९६	
१०२	चन्द्रकीर्त्तिभट्टारक	×	×	९३	अ० ११९७	
१०३	प्रभाचन्द्रभट्टारक	×	×	९४,९७	”	
१०४	मुनिचन्द्रदेव	उदयचन्द्रदेव म० म०	^	१०७	१२०	इन आचार्यों और अन्य सज्जनों ने चन्दा किया।
१०५	पद्मनन्दिदेव	चन्द्रप्रभदेव	×	,		
१०६	कुमुदचन्द्र	×	×	१२९	१२०५	
१०७	माघनन्दि सि०च०	×	×	”	”	होय्सलराय राजगुरु। सम्भवत ये ही उस शास्त्रसार के कर्ता है जिसका उल्लेख प्रारम्भ के एक श्लोक मे आया है। माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला न० २१ मे एक 'शास्त्रसार समुच्चय' नामक ग्रन्थ छपा है और भूमिका मे कहा गया है कि सम्भवत वे कुमुदचन्द्र के गुरु थे। (देखो मा० ग्र० भूमिका पृ० २३ २४)

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	सघ,गण,गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
१०८	बालचन्द्रदेव	नेमिचन्द्र प० देव	मू० दे० इगिलेश्वर बलि	”	”	
				४६०	अ० ”	
१०९	अभिनव पण्डिताचार्य	×	×	४२१	अ १२३३	
११०	पद्मनन्दिदेव	त्रैविद्यदेव	मू० दे० पु०	११४	अ १२३८	समाधि मरण।
१११	चारुकीर्त्ति प० आचार्य	×	”	४३२	श १२३९	
११२	” (अभिनव)	×	”	१३५	अ १२४७	एक शिष्य ने मगायिबस्ति निर्माण कराई।
				४३०	”	”
११३	मल्लिषेणदेव	लक्ष्मीसेन भट्टारक	×	२४७	अ १३२०	निषद्या।
११४	सोमसेनदेव	×	×	७१	”	एक शिष्य ने बन्दना की।
११५	भुवनकीर्त्ति देव	×	×	३७२	”	निषद्या।
११६	सिंहनन्दि आचार्य	×	×	३७४	”	
११७	हेमचन्द्रकीर्त्ति देव	शान्तिकीर्त्ति देव	×	११२	”	निषद्या।
११८	चन्द्रकीर्त्ति	×	×	१०६	१३३१	भूमिदान।
११९	पण्डिताचार्य व पण्डितदेव	×	×	४२८	अ ३०	इनकी शिष्या देवराज महाराज की रानी
				२१६	”	भीमादेवी ने मूर्ति प्रतिष्ठा कराई।
१२०	श्रुतमुनि	पण्डितार्य मुनि	×	८२	१३४०	इनके समक्ष दण्डनायक इरुगप ने वल्गोल

						ग्राम का दान दिया।
१२१	जिनसेन भट्टारक (पट्टाचार्य)	×	×	४२२	अ० १२६०	संघ सहित बन्दना को आये।
१२२	अभिनव पण्डित देव	चारुकीर्ति प देव	×	३६२	१३७१	
१२३	पण्डितदेव	×	×	४८४	अ० १४२०	
				१३३	”	
१२४	चारुकीर्ति भट्टारक	×	×	३७७	अ० १५२०	चरणचिह्न।
१२५	पण्डितदेव	×	×	११७	अ० १५३१	
१२६	ब्रह्म धर्मरुचि	अभयचन्द्र भट्टारक		३३८	सवत् १५ ५८ (वि०)	यात्रा।
१२७	” गुणसागर		×			
१२८	चारुकीर्ति प० देव	×	×	८४	१५५६	इनके समक्ष मैसूर नरेश ने मंदिर की
				१४२	१५६५	भूमि ऋणमुक्त कराई।
	”	×	×			स्वर्गवास।
१२९	धर्मचन्द्र	चारुकीर्त्ति	बलात्कार गण	११८	१५७०	इनके उपदेश से बघेरवालो ने चौबीस तीर्थंकर प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई।
१३०	श्रुतसागर वर्णी		×	११६	१६०२	इनके साथ तीर्थ यात्रा।
१३१	इन्द्रभूषण	राजकीर्ति के शिष्य लक्ष्मीसेन	×	११६	वि० स० १७१६	इनके साथ बघेरवालो ने तीर्थयात्रा की।

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण गच्छादि	लेख नं	समय	विशेष विवरण
१३२	अजितकीर्ति	चारुकीर्ति | अजितकीर्ति | शान्तिकीर्ति	देसी गण	७२	१७३१	एक मास के अनशन से सल्लेखना ।
१३३	चारुकीर्ति प० आचार्य	×	मू० दे० पु०	४३३	१७३२	मेसूर नरेश कृष्णराज की ओर से सनदे प्राप्त की ।
				४३४	१७५२	
१३४	सन्मतिसागरवर्णी	चारुकीर्त्ति गुरु	”	४३५	१७७८	इनके मनोरथ से बिम्बस्थापना की गई ।
				४५६	”	
				४५७		
				४३६	१७८०	
				४५५	”	

सकेताक्षरो का अर्थ

अ० व अनु० = अनुमात । कु० = कुक्कुटासन । त्रै० देव = त्रैविद्यदेव । प० आचार्य = पडिताचार्य । प० देव = पडितदेव । ब्रह्म = ब्रह्मचारी । म० म० = महामण्डलाचार्य । मू० द० पु० = मूल सघ, देशीगण, पुस्तक गच्छ । सि० देव = सिद्धान्तदेव । सि० च० = सिद्धान्त चक्रवर्ती । सि० मु० = सिद्धान्त मुनीश्वर ।

चन्द्रगिरि पर्वत पर के शिलालेख

पार्श्वनाथ वस्ति के दक्षिण की ओर के शिलालेख

१ (१)

(लगभग शक सं० ५२२)

सिद्धम् स्वस्ति ।

जितम्भगवता श्रीमद्धर्म्मं तीर्त्थ-विधायिना ।
वर्द्धमानेन सम्प्राप्त सिद्धि सौख्यामृतात्मना ॥ १ ॥
लोकालोक-द्वयाधारम्वस्तु स्थास्नु चरिष्णु वा ।
*सविदालोक शक्ति स्वाव्यश्नुते यस्य केवला ॥ २ ॥
जगत्यचिन्त्य-माहात्म्य-पूजातिशयमीयुष ।
तीर्त्थकृन्नाम पुण्यौघ-महार्हन्त्यमुपेयुष ॥ ३ ॥
तदनु श्री विशालयम् (लायाम्†) जयत्यद्य जगद्धितम् ।
तस्य शासनमव्याज प्रवादि-मत-शासनम् ॥ ४ ॥

अथ खलु सकल-जगदुदय-करणोदित-निरतिशय-गुणास्पदीभूत परमजिन शासन-सरस्समभिवर्द्धित - भव्यजन कमल-विकसन वितिमिर-गुण-किरण सहस्र महोति **महावीर** सवितरि परिनिवृ'ते भगवत्परमर्षि - **गौतम** गणधर - साक्षाच्छिष्य-

---

* सच्चिदा † विशालेयत्

लोहार्य्य - जम्बु - विष्णुदेवापराजित-गोवर्द्धन - भद्र-बाहु-विशाख-प्रोष्ठिल-कृ।त्तकार्य्य* - जयनाम सिद्धार्य्य-धृतिषेणबुद्धिला द - गुरुपरम्परीणक्रमाभ्यागत - महापुरुष-सन्तति-सम वातितान्वय-भद्रबाहु-स्वामिना उज्जयन्या-मष्टाङ्ग महानिमित्त-तत्वज्ञेन त्रैकाल्य-दर्शिना निमित्तेन द्वादश-सवत्सर-काल-वैषम्यमुपलभ्य कथिते सर्व्वस्सङ्घ उत्तरापथाद्दक्षि-णापथम्प्रस्थित क्रमेणैव जनपदमनेक ग्राम-शत-सङ्ख्य मुदित-जन धन कनक सस्य-गो-महिषा जावि कुल समाकीर्णम्प्राप्तवान् [।] अत आचार्य्य प्रभाचन्द्रो†नामावनितल-ललाम भूतेऽ-थास्मिन्कटवप्र-नामकोपलक्षिते विविध तरुवर - कुसुम दला-वलि विरचना-शबल विपुल सजल जलद निवह नीलोपल - तल वराह - द्वीपि व्याघ्रर्क्ष तरक्षु व्याल-मृगकुलोपचितोपत्यक कन्दर-दरी महागुहा गहनाभोगवति समुत्तुङ्ग शृङ्ग सिखरिणि जीवित-शेषमल्पतर कालमवबुध्यात्मन ‡ सुचरित§ - तपस्समाधिमारा धयितुमापृच्छ्य निरवसेषेण सङ्घ विसृज्य शिष्यणैकेन पृथुलत-रास्तीर्ण्ण-तलासु शिलासु शीतलासु स्वदेह सन्यस्याराधितवान् क्रमेण सप्त-शतमृषीणामाराधितमिति जयतु जिन शासनमिति।

२ (२०)

(लगभग शक स० ६२२)

अदेयरेनाड चित्तूर मौनिगुरवडिगल शिषित्तियर् नागमतिगन्तियर् मूरु तिङ्गल् नोन्तु मुडिप्पिदर्।

---

* क्त्रिकार्य्य † प्रभाचन्द्रेण ‡ अध्वनः § सुचरित

[अदेयरेनाडु[1] में चित्तूर के मौनि गुरु की शिष्या नागमति गान्तियर् ने तीन मास के व्रत के पश्चात् शरीरान्त किया ।]

३ (१२)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री । दुरिताभूद् वृषमान्कील्तलरे पोदेदज्ञानशैलेन्द्रमान्पोल्
दुर-मिथ्यात्व-प्रमूढ स्थिरतर-नृपनान्मेट्टिगन्धेभमयूदान् ।
सुरविद्यावल्लभेन्द्रास्सुरवरमुर्निभिस्तुत्य **कल्वप्पिनामेल्**
चरितश्रीनामधेयप्रभुमुनिन्व्रतगल् नोन्तुसौख्यस्थनाय्दान् ॥

[पाप, अज्ञान व मिथ्यात्व को हत और इन्द्रियों का दमन कर कटवप्र पर्वत पर चरितश्री मुनि व्रत पाल सुख को प्राप्त हुए ।]

४ (१७)

(लगभग शक सं० ६२२)

गल्नोन्तु मुडिप्पिदर् ।

[व्रतधार प्राणोत्सर्ग किया ।]

५ (१८)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्री **जम्बुनायगिर्** तीत्थदोल् नोन्तु मुडिप्पिदर् ।

[जम्बुनायगिर् ने व्रतपाल प्राणोत्सर्ग किया ।]

६ (६)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **नेडुबोरेय पानप*-भटार**नोन्तु मुडिप्पिदार् ।

---

[1] पल्लवनरेश नन्दिवर्म के एक दानपत्र में अदेयरराष्ट्र का उल्लेख आया है। संभव है अदेयरेनाडु भी उसी का नाम हो (इंडि एन्टी ८, १६८)

*मौनद् ।

[पेरुमालुगुरु की शिष्या धण्णेकुत्तारेविगुरवि (?) ने प्राणोत्सर्ग किया।]

११ (६)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **उल्लिक्कल्**गोरवडिगल् नोन्तु दार्।

[उल्लिकल् गुरु (या उल्लिकल के गुरु) ने व्रत पाल प्राणोत्सग किया]

१२ (५)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्रीतीर्त्थद गोरवडिगल् नो

[तीर्थदगुरु (या तीर्थ के गुरु) ने व्रत पाल (प्राणोत्सर्ग किया)]

१३ (३३)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **कालाविर्ग्गु**रवडिगल शिष्यर् **तरेकाड** पेर्जेडिय मोदेय कलापकद गुरवडिगळिप्पेत्तोन्दु दिवस सन्यासन नोन्तु मुडिप्पिदार्।

[तलेकाडु में पेल्जडि क कलापक* गुरु कालाविर गुरु के शिष्य ने इक्कीस दिन तक सन्यास व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया।]

१४ (३४)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **ऋषभसेन** गुरवडिगल शिष्यर् **नागसेन** गुर वडिगल् सन्यासनविधि इन्तु मुडिप्पिदार्।

---

* कलापक का शब्दार्थ मुञ्जतृण या समूह होता है।

नागसेनमनघ गुणाधिक नागनायकजितारिमण्डल ।
राजपूज्यममलश्रीयास्पद कामद हतमद नमाम्यह ॥

[ऋषभसेनगुरु के शिष्य नागसेनगुरु ने सन्यास विधि से प्राणोत्सर्ग किया ।]

१५ (२)

(लगभग शक स० ५७२)

श्री । उद्यानैर्ज्जितनन्दन ध्वनदलिव्यासक्तरक्तोत्पल—
व्यामिश्रीकृत†-शालिपिञ्जरदिश कृत्वा तु बाह्याचल ।
सर्व्वप्राणिदयार्त्थदाङ्धिभगवद्ध्यानेन‡सम्बोधयन्
आराध्याचलमस्तके कनकसत्सेनोत्भवत्सत्पति ॥ १ ॥
अहो बहिर्गिरिन्त्यक्त्वा बलदेवमुनिश्श्रीमान् ।
आराधनम्प्रगृहीत्वा सिद्धलोक गतपुन ॥ २ ॥

१६ (३०)

(लगभग शक स० ६२२)

श्री स्मडिगल् नोन्तु काल केयूदार् ।

[स्मडिगल ने व्रत पाल देहोत्सर्ग किया ।]

१७ १८ (३१)

(लगभग शक स० ५७२)

श्री —भद्रबाहु सचन्द्रगुप्तमुनीन्द्रयुग्मदिनोप्पेवल् ।
भद्रमागिद धर्म्ममन्दु वलिक्केवन्दिनिसल्कलो ॥

---

† व्यापि श्रीकृत ‡ भगव ना (ज्ञा) नेन (तथा एडीशन)

विद्रुमाधर **शान्तिसेन**मुनीशनाकिए**वेल्गोल**।
अद्रिमेलशनादि विट्टपुनर्भवक्केरे आगि ॥

[जो जैन धर्म भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र के तेज से भारी समृद्धि को प्राप्त हुआ था उसके किञ्चित् क्षीण हो जाने पर शान्तिसेन मुनि ने उसे पुनरुत्थापित किया। इन मुनियों ने वेल्गोल पर्वत पर अशन आदि का त्याग कर पुनर्जन्म को जीत लिया।]

१९ (३२)

(लगभग शक सं० ६७२)

श्री वेट्टेडे गुरवडिगल्माणाक्क**र्सिङ्गणन्दि**गुरवडिगल्नोन्तु-काल-केयूदार्।

[वेट्टेडेगुरु के शिष्य सिंहनन्दिगुरु ने व्रत पाल देहोत्सर्ग किया]

२० (२६)

(लगभग शक सं० ६२२)

यरुळ्ळरि पाठ दिल्दो नान्
तारि कुमाररि नच्चिर्वक्केयूयेता
स्थिरदरलिन्तुपेगुरम सुरलोकविभूति एय्दिदार्।

[इस प्रकार पेगुरम (?) ने सुरलोक विभूति को प्राप्त किया।]

२१ (७९)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति **श्रीगुणभूषित**मादि उलाडग्गेरेरिसिदा निसिदिगे **भद्रबाहु**गुरुसन्तानान् **सन्दिनग**गणता-नयान् गिरितलदामे-

लति स्थलमान् तीरदाणमाकलग नलदि मानदा सद्धम्मद्ग गेलि ससानदि पतान् ।

[इस लेख का भाव स्पष्ट नहीं हुआ ।]

२२ (४८)

(लगभग शक सं० १०२२)

श्री **अभयणन्दि** पण्डितर गुड्डु **कोत्तय्य** बन्दिह्लि देवर बन्दिसिद ।

[अभयनन्दि पण्डित के गृहस्थ शिष्य कोत्तय्य ने यहां आकर देव बन्दना की ।]

२३ (२८)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति **श्रीइनुड् गूरा मे*लगवास**गुरवर् **कल्बप्प** बेट्टम्मेल्काल केयूदार् ।

[इनूड् गूर के मेल्लगवासगुरु ने कल्वप्प (कटवप्र) पर्वत पर देहोत्सर्ग किया ।]

२४ (३५)

(लगभग शक सं० ७२२)

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दपदङकेदलिध्वजसाम्या महामहासामन्ताधिपति **श्रीबल्लभ** हा राजाधिराज मेश्वर महाराजरा मगन्दिर् **रणावलोक-श्रीकम्बय्यन्** पृथुवीराज्य गये ब रस **क्कूल्वप्पु** ल पेर्गल्वप्पिना पोलदिअ-

---

* च

उदु\ कोट्टदु सेन अडिगला **मनसिजरा** गनाअरसि बेनेएत्ति मौनमुज्जमिसुवल्लि कोट्टदु पालमेरे **तट्टगेरेय** किल्केरे पैगि अत्तरकल्ल मेगे अल्लिन्दा वसेल् कर्गोल्मारदु सल्लु पेरिय आल वारि मरल् पुणुसपरि तारेयु आलरे मरे दुवेट्टगे निरुकल्लु कोवण्णदा पेरिय एलवु अल्लि कुडित्तु अरसरा श्रीकरणमु गादियर **दिरिडगगामुण्डरुम् एन्नुवरु** वन्नुरु **वल्लभ** गामुण्डरुम् **रुन्दि वच्चुरु रुगिड मारम्मनु कादलूर श्रीविक्रम** गामुण्डरु **कलिदुर्ग**गामुण्डरु **अगदिपो** यरर **रणपार**गामुण्डरु **अन्दमासल उत्तम** गामुण्डरु **नविलूर** नालूगामुण्डरु **बेल्गोलद गोविन्द**पा डिय उ ल्लामन्दु **बेल्गोलदा** वलि **गोविन्द**पाडिगे कोट्टदु

बहुभिर्व्वसुधाभुक्ता राजभिस्**सगरादि**भि ।
यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फल ॥
स्वदत्ता परदत्ता वा या हरेत वसुन्धरा ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायत क्रमि ॥*

[श्रीवल्लभमहाराज के पुत्र महासामन्ताधिपति रणावलाक श्रीकम्बय्यन् के राज्य में मनसिज (?) की राज्ञी के व्याधि से मुक्त होने के पश्चात् मौन व्रत समाप्त होने पर कुछ भूमि का दान दिया गया था, जिसकी सीमा आदि लेख में दी है। लेख दान की शपथ के साथ समाप्त होता है ।]

---

* ये दो श्लोक नये एडीशन म बहुत अशुद्ध है। उसमें 'यदाभूमि के स्थान पर 'यथाभूमि' व 'स्वदत्त' 'परदत्त' 'हरन्ति' 'प्रष्ठाया' पाठ है ।

२५ *(६१)

(लगभग शक सं० ८२२)

श्रीमत्　　पु　शिष्यर् अरिट्टोनेमि माडिसिदर् सिद

[　　के शिष्य अरिट्टोनेमि ने बनवाया ।]

---

* भरतेश्वर की मूर्त्ति के दक्षिण की ओर ।

शासनवस्ति के पूर्व की ओर के शिलालेख

२६ (८८)

(लगभग शक सं० ६२२)

सुरचापबोले विद्युल्लतेगल तेरवोलमञ्जुवोल्तोरि बेग।
पिरिगु श्रीरूप-लीला-धन-विभव महाराशिगल्निल्लवार्ग्ग ॥
परमार्त्थं मेच्चेनानीधरणियुलिरवानेन्दु सन्यासन-गो-।
य्दुरु सत्वन्नन्दिसेन प्रवर मुनिवरन्देवलोकके सन्दान् ॥

[रूप, लीला, धन व विभव, इन्द्र धनुष, बिजली व ओसबिन्दु के समान क्षणिक है, ऐसा विचारकर नन्दिसन मुनि ने सन्यास धार सुरलोक को प्रस्थान किया।]

२७ (११४)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ शुभान्वित श्रीनमिलूरसङ्घदा। प्रभावती ।
प्रभाख्यमी पर्व्वतदुल्ले नोन्तुताम्। स्वभाव सौन्दर्य्य कराङ्ग-
राधिपर् ॥
ग्रामे मयूरसङ्घ ऽस्य आर्य्यिका दमितामती।
कट्वप्रगिरिमध्यस्था साधिता च समाधिता ॥

[नमिलूरसंघ की प्रभावती ने इस पर्वत पर व्रत धार दिव्य शरीर प्राप्त किया।]

[मयूरग्रामसंघ की आर्यिका दमितामती ने कटवप्र पर्वत पर समाधि-मरण किया ।]

२८ (८८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ तपमान्द्वादशदा विधानमुखदिन् केय्दोन्दुताधात्रिमेल् ।
चपलिल्ला नविलूर सङ्घदमहानन्तामतीखन्तियार् ॥
विपुलश्रीकटवप्रनल् गिरियमेल्नोन्तोन्दु सन्मार्ग्गदिन् ।
उपमील्या सुरलोकसौख्यदेडेयान्तामेय्दि इल्दाल् मनम् ॥

[नविलूर संघ की अनन्तामती गन्ति ने द्वादश तप धार कटवप्र पर्वत पर यथाविधि व्रतों का पालन किया और सुरलोक का अनुपम सुख प्राप्त किया ।]

२९ (१०८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ अनवरतन्नालम्पि भूत शय्यममेन्ते विच्छय
वनदोलयोग्य नक्कुमदि गलो
मनवमिकुत रदि नोन्तुसमाधिकूडिदों
अनुपम दिव्यप्पदु सुरलोकद मार्ग्गं दोलिल्दरिन्बिनिम् ॥
मयूरग्रामसङ्घस्य सौन्दर्य्या आर्य्य-नामिका ।
कटप्रगिरिशैलेच माधितस्य समाधित ॥

[उत्साह के साथ आत्म संयम सहित समाधि व्रत का पालन किया और सहज ही अनुपम सुरलोक का मार्ग ग्रहण किया । (?)]

[मयूरग्रामसंघ की आर्या ने कटवप्र पर्वत पर समाधि-मरण किया ।]

३० (१०५)

(लगभग शक सं० ६२२)

अङ्गादिनामननेक **गुणकीर्त्ति** देन्तान्
तुङ्गोचभक्तिवशदिन् तोरदिल्लिदेहम्
पोङ्गोल् विचित्रगिरिकूटमयकुचेलम् ।

[गुणकीर्त्ति ने भक्ति सहित यहां देहोत्सर्ग किया ।]

३१ (१०६)

(लगभग शक सं० ६२२)

नविलूरा श्रीसङ्घदुल्ले गुरवनम्मौनियाचारियर्
अवराशिष्यरनिन्दिताग्गुणमि **वृषभनन्दी**मुनी ।
भवविज्जैन-सुमार्ग्गदुल्ले नडदोन्दाराधना-योगदिन्
अवरु साधिसि स्वर्ग्गलोकसुख-चित्त माधिगल् ।

[नविलूर संघ के मौनिय आचार्य के शिष्य वृषभनन्दि मुनि ने समाधि मरण किया ।]

३२ (११३)

(लगभग शक सं० ६२२)

तनग मृत्युवरवानरि देन्दु सुपण्डितन् ।
अनेक-शील गुणमालेगलिन्सगिदोप्पिदोन् ॥
विनय **देवसेन** नाम महामुनि नोन्तु पिन् ।
इन दरिल्दु पलितङ्कदे तान्दिवमेरिदान् ॥

[मृत्यु का समय निकट जान गुणवान् और शीलवान देवसेन महामुनि व्रत पाल स्वर्गगामी हुए ।]

३३ (८३)

(लगभग शक सं० ६२२)

एडेपरेगीनडे केय्दु तप सय्यममान्कोलत्तूरसङ्घ ।
वडे कोरदिन्तुवाल्वुदरिदिन्नेनगेन्दु समाधि कूडिए ॥
एडे-विडियल्करडि कटवप्रवएरिय निल्लदनन्धन्
पडेगमोलिप्प न्दी सुरलोक-महा विभवस्थननाद ।

["अब मेरे लिये जीवन असम्भव है" ऐसा कहकर कोलत्तूर संघ के (?) ने समाधि व्रत लिया और कटवप्र पर्वत पर से सुरलोक प्राप्त किया ।]

३४ (८४)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्री

अनवद्यन्नदि-राष्ट्रदुल्लं प्रथित यशो न्दकान्वन्दु लाम्
विनयाचार प्रभावन्तपदिन्नधिकन्चन्द्र-देवाचार्य्य नामन्
उदित-श्री कल्वप्पिनुल्ले रिषिगिरि शिले मेल्नोन्तुतन्देहमिकि
निरवद्यन्न रि स्वर्ग्ग शिवनिलेपडेदान्साधु ाल्पूज्यमानन् ।

[नदिराज्य के यशस्वी, प्रभावयुक्त, शील सदाचार सम्पन्न चन्द्रदेव आचार्य कल्वप्प नामक ऋषिपर्वत पर व्रत पाल स्वर्ग गामी हुए ।]

३५ (७६)

(लगभग शक सं० ६२२)

सिद्धम्

नेरेदाद व्रत-शील नोन्पि-गुणदिं स्वाध्याय-सम्पत्तिनिम् ।

करेइल् नलतप-धर्म्मदा-**ससिमति**-श्री-गन्तियर्व्वन्दुमेल् ॥
अरिदायुष्यमनेन्तु नोडेनगे तानिन्तेन्दु **कल**वप्पिनुल् ।
तोरदाराधने-नोन्तु तीर्त्थ गिरि-मेल् स्वर्ग्गालयक्केरिदार् ॥

[व्रत शील आदि सम्पन्न ससिमति गन्ति कल्वप्पु पर्वत पर आई और यह कहकर कि मुझे इसी मार्ग का अनुसरण करना है तीर्थगिरि पर सन्यास धारणकर स्वर्ग गामी हुई ।]

काञ्चिन दोणो के मार्ग पर के शिलालेख

३६ (१४५)

(लगभग शक स० ६२२)

श्री **एरेयगवे** कवट्टद लो ।

[कवट्ट में एरेयगवे]

३७ (१४६)

(लगभग शक स० १०७२)

श्रीमतु **गरुडकेसिराज** स्थिर जीयातु ।

३८ (५९)

(शक स० ८९६)

कूगे ब्रह्मदेव स्तम्भ पर

(दक्षिणमुख)

स्वस्ति म म् उदधि कृत्वावधि मेदिनी
चक्र धवो भुञ्जन् भुजासेर्बलात् ।
न्यश्रीजग पतेर्गङ्गान्वयव्दमाभुजा
भूषा-रत्नमभू ननितावक्त्रेन्दुमेघोदय ।। १ ।।

गद्य । तस्य सकलजगतीतलोत्तुङ्गगङ्गकुलकुमुद-

कौमुदी-महालेजायमानस्य। **सत्यवाक्यकोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-**
महाराजाधिराजस्य। कृष्णराजोत्तरदिग्विजयविदितगुर्ज्जराधि
राजस्य। वनगजमल्लप्रतिमल्लबलवदल्लदर्प्प दलनप्रकटीकृतविक्र
मस्य। गण्डमार्त्तण्ड-प्रतापपरिरक्षित-सिंहासनादि सकल-राज्य-
चिह्नस्य। विन्ध्याटवीनिकटवर्त्ति ण्डक-किरातप्रकरभङ्ग करस्य।
भुजबलपरि **मान्यखेट**-प्रवेशितचक्रवर्त्तिकट विक्रम ,
श्रीम**दिन्द्रराज**पट्टबन्धोत्सवस्य। समुत्साहितसमरसज्ज
वज्जल घ नस्य। भयोपनत**बनबा**सिदेशाधि
मणिकुण्डलमदद्विपादि-समस्त वस्तुग्र समुपलब्ध-सङ्कीर्त्त
नस्य। प्रणत**माटूर**वंशजस्य ज सुतसत-भुज बलावलेप-गज
घटाटोपगर्व्वदुर्व्वृत्तसकल**नोलम्बाधिराज**समरविध्वंसकस्य।
समुन्मूलितराज्यकण्टकस्य। सञ्चूर्णितोच्चङ्गिगिरिदुर्गस्य। संहृत
नरगाभिधानशबरप्रधानस्य। प्रतापावनत**चेर-चोल-पाण्ड्य-
पल्लवस्य**। प्रतिपालितजिनशासनस्य। त महाध्वजस्य।
बलवदरिनृपद्रविणापहरण कृतमहादानस्य। परिपालितसेतु
बन्धभै न्धुसम्बन्धवसुन्धरातलस्य। श्री**नोलम्बकु(लान्त)क**
देवस्य। शौर्य्यशासन धर्म्मशासन च सञ्चरतु दिग्मण्डलान्तरमा-
कल्पान्तरमाचन्द्रतारम्॥

(पश्चिममुख)

या कै रप्यु पायान्त तिशिखाशेखर
नान्य एवाहृतो श्रीगङ्गचूडामणि
वना । द वाणि क **पल्लव** मा येनामित

भुजावलेपमल कृत्वा ग स्वय गुत्तियगङ्गभूपति
नोलम्बान्तक ॥ यिय मन्मुख युधि गादस्मय
प्रतिगज विक्रम ॥ त्पलमिव **नोलम्बान्तक**
भूलोकादनेक-द्र नेकबन्धान्धक **चोल पल्लव** का
नन्दहेतोर श्री**मारसिंह**-त्वि तिलक त्त्र-चन्द्रस्य चन्द्र
.. व र्य्येर दर्प्प ग स ाग ह र ॥ वद्रोषणा
न्महाविजयोत्सवे सिंहासनोर्व्वी-ध
इत्याधिष्कृत वीर सङ्कर-गिर **चालुक्य** चूडामणे
राजादित्य हरेर्द्देवाग्निरजनिश्रीगङ्ग चूडामणि ।
दैत्येन्द्रैर्म्मधुकैटभप्रभृतिभिर्ध्वस्तैर्म्मुरद्वे
किं मायारिभिरित्थमुत्थितमिति क्ष्मातङ्क-शङ्काकु
लैर्न्नरगासुरस्य वसुधानन्दाश्रुमिश्रैश्शि
दार्त्थैरकरोत्सरागमवनीचक्र नोलम्बान्तक ।

(उत्तरमुख)

(प्रथम ८ पङ्क्तियाँ अस्पष्ट हैं)

गन ङ्ग-क्ष्माभृत
याव न ड ति तिना पद क्षति ॥
मिश्रीकृत म क वीर विस्मय तेज गुत्तिय गङ्ग
भूपमितिय विश्व कृता , ति पतिमह
वष्टभ्यदुष्टावनिप-कुलमिलामिन्द्रराज ण कुम्ब-
दल यक न्छत्र श्रीगङ्ग चूडामणिरिति धरणी स्तौतिय
कीर्त्तिं ॥ स्सम्प्रति **मारसिंह**-नृपतिर्व्विक्रान्त

क सौ यत्र स्थिति साहसोन्मद महासामन्त मत्त-द्विपेभ्रू। स्वामिनि पट्ट बन्ध महिमा निर्व्वि मित्युर्व्वराचक्र यस्य पराक्रम स्तुति-परै व्यावर्णयत्यङ्कै ॥ येनेन्द्र-क्षिति वल्लभस्य जगती राज्याभिषेक कृत। येना द-मद पेनविजित**पाताल मल्लानुज**। श्रो रणाङ्गणे रण-पटुस्तस्यात्मजोजा

• रभू म

(पूर्वमुख)

बगेयललुम्बमप्प बल**दल्लन** डिसि गेल्द शौर्य्यम
पोगल्वेनो धात्रियोल् नेगल्द वज्जलन बिडेयट्टि देलगेय
पोगल्वेनो **पल्लवाधिप** म तवे कोन्द वीरम
पोगल्वेनो पेलिमेवोगल्वेनेन्दरिये चलदुत्तरङ्गन ॥
श्रोलियेकोदु **पल्लवर** पन्दलेयेल्लमनेय्देदट्टिका—
पालिकरूरि सारि परमण्डलिककॅल नम्मनीवुईयू।
श्रोलिगे निम्म पन्दलेगल बरलीयदे कण्डु बाल्वु ।
श्रोलिय लेम्बिन नेगल्दुदोट्टजि **मण्डलिक त्रिणेत्रना** ॥
तुङ्ग पराक्रम पलवु कालमगुर्व्विसे सुत्तिवुत्ति बि—
ट्टुङ्गडकाडुवट्टि कोललारन मुन्नमेनिप्प पेम्पिनु—
च्चङ्गिय कोटेय जगमसुङ्गोले कोण्ड नगल्ते मूरु लो—
कङ्गलोलम्पोगल्तेगेडेयादुदु **गुत्तिय गङ्ग** भूपना ॥

कन्द ॥ कालनो रावणनो शिशु—
पालनो नानेनिसि नेगल्द नरगन तले त—
ग्रालाल कयूगे वन्दुदु

हेलासाध्यदोले **गङ्ग**-चूडामणिया ।
नुडिदने कावुदने एल्दे-
गिडदिरुजवनिट्ट रक्के निनगीवुदन
नुडिदने एअदु कय्यदु
नुडिदुदु तप्पुगुमे **गङ्ग** चूडामणिया ॥

इन्तु बिन्ध्याटवी निकट-तापी तटवु । **मान्यखेट**-पुरवरवु । गोनूरुमुच्चङ्गियु । बनवासिदेशवु । पाभसेयकोटेयु । मोदलागे पलवेडेयोलमरियर पिरियरुव कादि गेल्दु पलवेडगलोल महाध्वजमनेत्तिसि महादानगेय्दु नेगल्द गङ्ग-विद्याधर । गङ्गरोल्गण्ड । गङ्गरसिङ्ग । गङ्गचूडामणि गङ्गकन्दर्प्प । गङ्गवज्र । **चलदुत्तरङ्ग** । **गुत्तिय**गङ्ग । धर्म्मावतार । जगदेकवीर । नुडिदन्तेगण्ड । अहितमार्त्तण्ड । कदनकर्कश । मण्डलिक त्रिणेत्र । **श्रीमन्नोलम्बकुलान्तकदेव** पलवेडेगलोल बसदिगलु मानस्तम्भङ्गलुव माडिसिद । मङ्गल । धर्म्म(भ)ङ्गल नमस्य नडयिसिअलियमोन्दुवर्ष राज्यम पत्तुविट्टु **बङ्कापुरदोल् अजितसेनभट्टारकर** श्रीपादसन्निधियोल् आराधनाविधियिमूरुदे स नोन्तु समाधिय साधिसिद ॥

वृत्त ॥ एले **चोल**क्षितिपाल सन्तवेल्देय नीं नीबिकोल् निन्ननु-गोले माण्डत्तिरु **पाण्ड्य पल्लव** भयङ्गोण्डोडदिर्म्निम मण्डलदिं पिङ्गदे निल्वदीगनिवनिन्नु त गङ्गमण्डलिक देवनिवासदत्त विजय-गेय्द नोलम्बान्तक ॥

[इस लेख में गङ्गराज मारसिंह के प्रताप का वर्णन है। इसमें कथन है कि मारसिंह ने (राष्ट्रकूट नरेश) कृष्णराज (तृतीय) के लिए गुर्जर देश को विजय किया, कृष्णराज के विपक्षी अल्ल का मद चूर किया, विन्ध्य पर्वत की तली में रहने वाले किरातों के समूहों को जीता मान्यखेट में नृप (कृष्णराज) की सना की रक्षा की, इन्द्रराज (चतुर्थ) का अभिषेक कराया, पातालमल्ल के कनिष्ठ भ्राता वज्जल को पराजित किया, वनवासीनरेश की धन सम्पत्ति का अपहरण किया, माटूर वंश का मस्तक झुकाया नोलम्ब कुल के नरेशों का सर्वनाश किया, काडुवट्टि जिस दुर्ग को नहीं जीत सका था उस उच्चङ्गि दुर्ग को स्वाधीन किया शवराधिपति नरग का संहार किया, चौड नरेश राजादित्य को जीता, तापी तट, मान्यखेट गोनूर, उच्चङ्गि, बनवासि व पाभसे के युद्ध जीते, व चर, चोड, पाण्ड्य और पल्लव नरेशो को परास्त किया व जैन धर्म का प्रतिपालन किया और अनेक जिन मन्दिर बनवाये। अन्त में उन्होंने राज्य का परित्याग कर अजितसेन भट्टारक के समीप तीन दिवस तक सल्लेखना व्रतका पालन कर बकापुर में देहोत्सर्ग किया। लेख मे वे गङ्ग चूडामणि, नोलम्बान्तक, गुत्तिय गङ्ग, मण्डलिकत्रिनेत्र, गङ्ग विद्याधर गङ्गकन्दर्प, गङ्गबज्र गङ्गसिंह, सत्यवाक्य कोङ्गणिवर्म धर्म महाराजाधिराज आदि अनेक पदवियों स विभूषित किये गये है।]

३६ (६३)

महनवमी मण्डप मे

(शक स० १०८५)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छन।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम्॥ १॥

स्वस्ति समस्त-भुवन स्तुत्य-नित्य निरवद्य विद्या विभव-प्रभाव प्रह्वरुह्वरीपाल मौलि - मणि मयूख शेखरीभूत पूत पद नख प्रकररु । जितवृजिन**जि**नपतिमतपयर्पयोधिलीलासुधाकररु । चार्व्वाकाखर्व्वगर्व्वदुर्व्वारोर्व्वीधरोत्पाटनपटिष्ठनिष्ठुरोपालम्भद - म्भोलिदण्डरु अकुण्ठ-कण्ठ कण्ठीरव गभीर-भूरि - भीम ध्वान निर्द्दलितदुर्द्दमेद्ध**बौ**द्धमदवेदण्डरुम् । अप्रतिहत प्रसरदसम-लसदु-पन्यसननित्यनैसित्य - पात्र दात्र दलितनैयायिकनयनिकरनलरु । चपलकपिलविपुलविपिनदहन-दावानलरु । शुम्भदम्भोद नाद नोदितविततवैशेषिकप्रकरमदमराजरु । शरदमलशशधरकरनिकरनीहारहाराकारानुवर्त्तिकीर्त्तिवल्लीवेल्लितदिगन्तरालरुमप्पश्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु श्रीम**द्देवकीर्त्ति**पण्डितदेवरु ।

कुर्व्वेनम कपिल वादि वनोग्र-वह्नये
चार्व्वाक वादि मकराकर-बाडवाग्नये ।
बौद्धोग्रवादितिमिरप्रविभेदभानवे
श्री**देवकीर्त्ति**मुनये कविवादिवाग्मिने ॥ २ ॥

सङ्कल्प जलपवल्लीविलयमुपनयश्चण्डवैतण्डिकोक्ति
श्रीखण्ड मूलखण्ड झटिति विघटयन्वादमेकान्तभेद ।
निर्पिण्डगण्डशैल सपदि विदलयन्सूक्तिप्रौढगर्ज्ज-
त्स्फूर्ज्जन्मेवामदोर्ज्जाजयतु विजयते **देवकीर्त्ति**द्विपेन्द्र ॥ ३ ॥

चतुर्म्मुखचतुर्व्वक्त्रनिर्ग्गमागमदुस्सहा ।
देवकीर्त्तिमुखाम्भोजे नृत्यतीति सरस्वती ॥ ४ ॥

चतुरते सत्कवित्वदोलभिज्ञते शब्दकलापदोल् प्रस-

न्नतेमतियोल् प्रवीणते नयागम-तर्क-विचारदोल् सुपू-
ज्यते तपदोल् पवित्रते चरित्रदोलोन्दि विराजिसल् प्रसि-
द्धते मुनि **देवकीर्त्ति** विबुधाग्रणिगोप्पुवुदी धरित्रियोल् ॥ ५ ॥
शकवर्षसासिरद एम्भत्तय्देनेय ॥

वर्षे ख्यात-सुभानु नामनि सिते पक्षे तदाषाढके
मासे तन्नवमीतिथौ बुध युते वारे दिनेशोदये ।

श्रीमत्तार्क्किकचक्रवर्त्ति-दशदिग्वर्त्तोर्द्धकीर्त्तिप्रियो
जात स्वर्ग्गवधूमन प्रियतम श्री**देवकीर्त्ति**व्रती ॥ ६ ॥
जातेकीर्त्यवशेषके यतिपतौ श्री**देवकीर्त्ति**प्रभौ
वादीभेभरिपौ जिनेश्वर मत क्षीराब्धितारापतौ ।
क्व स्थान वरवाग्वधूर्ज्जिनमुनिव्रात ममेति स्फुट
चाक्रोश कुरुते समस्तधरणौ दाक्षिण्य लक्ष्मीरपि ॥ ७ ॥
तच्छिष्यो नुत**लक्खणन्दि**मुनिप श्री**माधवेन्दु**व्रती
भव्याम्भोरुहभास्करस्त्रिभुवनाद्यानश्चयोगीश्वर ।
एते ते गुरुभक्तितो गुरुनिषद्याया प्रतिष्ठामिमां
भूत्याकाममकारयन्निजयशस्सम्पूर्णदिग्मण्डला ॥ ८ ॥

[इस लेख में अपने समय के अद्वितीय कवि, तार्किक और वक्ता महामण्डलाचार्य मुनि देवकीर्त्ति पण्डित की विद्वत्ता का व्याख्यान है। इस समय जैनाचार्य के सन्मुख सांख्यिक, चार्वाक, नैयायिक, वेदान्ती बौद्ध आदि सभी दार्शनिक हार मानते थे।

शक सं० १०८५ सुभानु संवत्सर आषाढ़ शुक्ल ९ बुधवार को सूर्योदय के समय इन तार्किक चक्रवर्त्ति श्री देवकीर्त्ति मुनि का स्वर्ग

वास हुआ। उनके शिष्य लक्खनन्दि, माधवेन्दु और त्रिभुवनमल्ल ने अपने गुरु की स्मारक यह निषद्या प्रतिष्ठित कराई।]

४० (६४)

उसी स्तम्भ पर

(शक सं० १०८५)

(दक्षिणमुख)

भद्र भूयाज्जिनेन्द्राणा शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थ्ये ध्वान्त सङ्घात प्रभिन्नघन भानवे ॥१॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल जिनवरानीक सौधोरु वार्द्धि
प्रध्वस्ताघ प्रमेय प्रचय विषय कैवल्य बोधोरु वेदि ।
शस्तस्यात्कार मुद्रा शवलित जनतानन्द नादोरु-घोष
स्थेयादाचन्द्र तार परम सुख महावीर्य्य वीचो निकाय ॥२।
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गा श्रीगौतमाद्या प्रभविष्णवस्ते
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ बोधनिधिर्ब्बभूव ॥३॥
[श्री] भद्रस्सर्व्वतो योहि भद्रबाहुरिति श्रुत ।
श्रुतकेवलिनाथेषु चरमर्परमो मुनि ॥४॥
चन्द्र-प्रकाशोज्वल नान्द्र कीर्त्ति श्रीचन्द्रगुप्तोऽजनि तस्य शिष्य ।
यस्य प्रभावाद्वनदेवताभिराराधित स्वस्य गणो मुनीना ॥५॥
तस्यान्वये भू विदिते बभूव य पद्मनन्दिप्रथमाभिधान ।
श्रीकोण्डकुन्दादि मुनीश्वराख्यस्सत्संयमादुद्गत चारणर्द्धि ॥६॥
अभूदुमास्वाति मुनीश्वरोऽसावाचार्य्य शब्दोत्तरगृद्धपिच्छ ।

तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेष पदार्थ वेदी ॥७॥
श्री **गृद्धपिच्छ** मुनिपस्य **बलाकपिच्छ**
शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्ति ।
चारित्रचञ्चुरखिलावनिपाल मौलि
माला शिलीमुख विराजितपादपद्म ॥८॥
एव महाचार्य्य परम्पराया स्यात्कारमुद्राङ्कितत्वदीप ।
भद्रस्समन्ताद्गुणतोगणीशस्**समन्तभद्रो**ऽजनिवादिसिंह ॥९॥
नत ॥
यो **देवनन्दि**-प्रथमाभिधानो बुद्ध्या महत्या स **जिनेन्द्रबुद्धि** ।
श्री**पूज्यपादो**ऽजनिदेवताभिर्य्यत्पूजित पाद युग यदीय ॥१०॥
जैनेन्द्र निज शब्द भोगमतुल सर्व्वार्थसिद्धि परा
सिद्धान्ते निपुणत्वमुद्धकविता **जै**नाभिषेक स्वक ।
छन्दस्सूक्ष्मधिय समाधिशतक स्वास्थ्य यदीय विदा
माख्यातीह स **पूज्यपाद** मुनिप पूज्यो मुनीना गणै ॥११॥
ततश्च ॥
(पश्चिममुख)
अजनिष्टाकलङ्क यज्जिनशासनमादित ।
अकलङ्क बभौ येन सो**ऽकलङ्को** महामति ॥१२॥
इत्याद्युद्धमुनीन्द्रसन्ततिनिधौ श्रीमूलसङ्घे ततो
जाते **नन्दि**गण प्रभेदविलस**द्देशी**गणेविश्रुते ।
गोल्लाचार्य्य इति प्रसिद्ध मुनिपोऽभूद्गोल्लदेशाधिप
पूर्व्व केन च हेतुना भवभिया दीक्षा गृहीतस्सुधी ॥१३॥

श्रीमत्त्रैकाल्ययोगी समजनि महिका काय-लग्ना तनुत्र
यस्याभूद्वृष्टि-धारानिशितशर गणाग्रीष्ममार्त्तण्डबिम्ब ।
चक्र सद्वृत्तचापाकलित यति वरस्याघशत्रून्विजेतु
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्स जयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दु ॥१४॥

तच्छिष्यस्य ॥

अविद्धकर्णादिक**पद्मनन्दिसैद्धान्तिका**ख्योऽजनि यस्य लोके ।
कौमारदेव व्रतिताप्रसिद्धिर्जीयात्तुसो ज्ञाननिधिस्सधीर ॥१५॥

तच्छिष्य **कुलभूषणा**ख्ययतिपश्चारित्रवाराान्निधि-
स्सिद्धान्ताम्बुधिपारगो नतविनेयस्तत्सधर्म्मो महान् ।
शब्दाम्भोरुहभास्कर प्रथिततर्कग्रन्थकार **प्रभा**—
चन्द्राख्यो मुनिराज पण्डितवर श्रीकुण्डकुन्दान्वय ॥१६॥

तस्य श्री**कुलभूषणा**ख्यसुमुनेश्शिष्यो विनेयस्तुत
स्सद्वृत्त कुलचन्द्रदेवमुनिपस्सिद्धान्तविद्यानिधि ।
तच्छिष्योऽजनि **माघनन्दि**मुनिप **कोल्लापुरे** तीर्थकृ
द्राद्धान्तार्ण्णवपारगोऽचलधृतिश्चारित्रचक्रेश्वर ॥१७॥

एले मार्वि बनवब्जदि तिलिगोल माणिक्यदिं मण्डना-
वलिताराधिपनि नभ शुभदमा गिर्प्पन्तिरिर्द्दत्तुनि
र्म्मलवीगल् **कुलचन्द्रदेव**-चरणाम्भोजातसेवाविनि—
श्चलसैद्धान्तिक**माघनन्दि**मुनियिं श्रीकोण्डकुन्दान्वयम् ॥१८॥

हिमवत्कुत्कोल मुक्ताफल तरलतरत्तार-हारेन्दुकुन्दो—
पमकीर्त्ति व्याप्तदिग्मण्डलनवनत भू-मण्डल भव्य पद्मो-
ग्र मरीचीमण्डल पण्डित तति विनत माघनन्द्याख्यवाच

यमिराज वाग्वधूटीनिटिलतटहटन्नूलसद्रत्नप ' ॥१९॥

त मद रदनिकुलम भरदिं निब्भेदिसल्के सरियेनिप

वरसयमाब्धिचन्द्र धरेयोल् **माघनन्दि** सैद्धान्तेश ॥२०॥

तच्छिष्यस्य ॥

अवर गुड्डुगलु सामन्त**केदारनाकरस**† दानश्रेयास सामन्त **निम्बदेव** जगदेकवीर्गण्ड सामन्त**कामदेव** ॥

(उत्तरमुख)

गुरुसैद्धान्तिक**माघनन्दि**मुनिप श्रीमच्चमूवल्लभ

भरत छात्रनपारशास्त्रनिधिगल् श्री**भानुकीर्त्ति**प्रभा-

स्फुरितालङ्कृत **देवकीर्त्ति**-मुनिपशिष्यर्ज्जगन्मण्डन

रेये गण्डविमुक्तदेवनिनगिन्नीनामसैद्धान्तिकर् ॥२१॥

क्षीरोदादिव चन्द्रमा मणिरिव प्रख्यात रत्नाकरात्

सिद्धान्तेश्वर**माघनन्दि**यमिनो जातो जगन्मण्डन ।

चारित्रैकनिधानधामसुविनम्रो दीपवर्त्ती स्वय

श्रीम**द्गण्डविमुक्तदेव**यतिपस्सैद्धान्तचक्राधिप ॥२२॥

अवर सधर्म्मर् ।

आवो वादिकथात्रयप्रवणदोल् विद्वज्जन मेच्चे वि-

द्यावष्टम्भमनप्पुकेय्दु परवादिक्षोणिभृत्पक्षम ।

देवेन्द्र कडिवन्ददि कडिदेले स्याद्वादविद्यास्त्रदिं

त्रैविद्य**श्रुतकीर्त्ति**दिव्यमुनिवोल् विख्यातिय तालिददों ॥२३॥

श्रुतकीर्ति त्रैविद्य—

---

† निकरस

व्रति **राघवपाण्डवीयम** विभु (बु) धचम-
त्कृतियेनिसि गत प्रत्या —
गतदिं पेल्दमलकीर्त्तिंय प्रकटिसिद ॥२४॥

अवरग्रजरु ॥

यो बौद्धक्षितिभृत्करालकुलिशश्चार्व्वाकमेघान (नि) लो
मीमासा मत वर्त्ति वादि मदवन्मातङ्ग कण्ठीरव ॥
स्याद्वादाब्धि शरत्समुद्गतसुधा शोचिस्समस्तैस्स्तुत
स्स श्रीमान्भुवि भासते **कनकनन्दि** ख्यात योगीश्वर ॥२५॥

वेताली मुकुलीकृताञ्जलिपुटा ससेवते यत्पदे
भ्कोट्टिङ्ग प्रतिहारको निवसति द्वार च यस्यान्तिके ।
येन क्रीडति सन्तत नुततपोलक्ष्मीर्य्यशः ( ) श्रीप्रिय—
स्सोऽय शुम्भति **देवचन्द्र**मुनिपो भट्टारकौघाग्रणी ॥२६॥

अवर सधर्म्म**र्म्माघनन्दि** त्रैविद्य देवरु विद्याचक्रवर्त्ति श्रीम**द्देवकीर्त्ति**-पण्डितदेवर शिष्यरु श्री**शुभचन्द्र**त्रैविद्य देवरु **गण्डविमुक्त**वादि **चतुर्म्मुख-रामचन्द्र**त्रैविद्यदेवरु वादिवज्राङ्कुश श्रीमद**कलङ्क**त्रैविद्यदेवरुमापरमेश्वरन गुड्डुगलु **माणिक्यभण्डारि मरियाने** दण्डनायकरु श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारिपिरियदण्डनायक**भरतिमय्यङ्गलु** श्रीकरणद हेग्गडे **बूचिमय्यङ्गलु** जगदेक दानि हेग्गडे कोरय्यनु ॥

अकलङ्क पितृ **बाजि** वश-तिलक श्री **यक्षराज** निजा-
म्बिके **लोकाम्बिके** लोक वन्दिते सुशीलाचारे दैव दिवी—

-शा-कदम्ब स्तुत-पाद पद्मनरुह नाथ यदुवोणिपा-
लक-चूडामणि नारसिङ्गनेनलेन्नोम्पुल्लनोहुल्लप ॥२७॥

श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि अभिनवगङ्ग-दण्डनायक श्रीहुल्लराज तम्म गुरुगलप्पश्रीकोण्डकुन्दान्वयद श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद श्रीकोल्लापुरद श्रीरूप नारायणन बसदिय प्रतिबद्धद श्रीमत्केल्लङ्गेरेय प्रतापपुरव पुनर्भ्भरणव माडिसि जिननाथपुरदलु कल्ल दानशालेय माडिसिद श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर्देवकीर्त्तिपण्डितदेवर्ग्गे परोक्षविनय वागि निशिदिय माडिसिद अवर शिष्यर्लक्खणन्दि-माधव-त्रिभुवनदेवर्महादान पूजाभिषेक-माडि प्रतिष्ठेय माडिदरु मङ्गल महा श्री श्री श्री ॥

[इस लेख में गौतम गणधर से लगाकर मुनिदेवकीर्त्ति पण्डितदेव की गुरु परम्परा दी है† । कनकनन्दि और देवचन्द्र के भ्राता श्रुतकीर्त्ति त्रैविद्य मुनि की प्रशसा में कहा गया है कि उन्होंने देवेन्द्र सदृश विपक्ष वादियो को पराजित किया और एक चमत्कारी काव्य राघव पाण्डवीय की रचना की जो आदि से अन्त को व अन्त से आदि को दोनो ओर पढा जा सके × । प्रतापपुर की रूपनारायण बस्ती का

† भूमिका देखो।

× श्रुतकीर्त्ति की प्रशसा के ये दोनो छन्द नागचन्द्रकृत 'रामचन्द्र चरितपुराण अपर नाम 'पम्प रामायण' के प्रथम आश्वास में नं० २४ २५ पर भी पाये जाते है। इस काव्य की रचना शक स० १०२२ के लगभग हुई है। जिन विपक्ष सैद्धान्तिक देवेन्द्र का यहाँ उल्लेख है वे सम्भवत 'प्रमाणनय तत्वालोकालङ्कार के कर्त्ता वादि प्रवर श्वेताम्बरा

जीर्णोद्धार व जिननाथपुर में एक दानशाला का निर्माण कराने वाले महामण्डलाचार्य देवकीर्त्ति पण्डितदेव के स्वर्गवास होने पर यादव वंशी नारसिंह नरेश (प्रथम) के मंत्री हुल्लप ने यह निषद्या निर्माण कराई जिसकी प्रतिष्ठा देवकीर्त्ति आचार्य के शिष्य लक्खनन्दि, माधव और त्रिभुवनदेव ने दान सहित की।]

४१ (६५)

उसी मण्डप में

(शक सं० १२३५)

श्रीमत्स्याद्वादमुद्राङ्कितममलमहीनेन्द्रचक्रेश्वरेड्य
जैनीयं शासनं विश्रुतमखिलहितं दोषदूरं गभीरं ।
जीयात्कारुण्यजन्मावनिरमितगुणैर्व्वर्ण्यनीक-प्रवेकै
सस्सेव्यं मुक्तिकन्या परिचय करणप्रौढमेतत्त्रिलोक्या ॥१॥

श्रीमूलसङ्घ देशीगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वाये ।
गुरुकुलमिह कथमिति चेद्ब्रवीमि सङ्क्षेपतो भुवने ॥२॥

य सेव्य सर्व्वलोकै परहितचरित य समाराधयन्ते
भव्या येन प्रबुद्ध स्वपर मत महा-शास्त्र तत्त्व नितान्त ।
यस्मै मुक्त्यङ्गना सस्पृहयति दुरित भीरुता याति यस्मा—
द्यस्याशानास्ति यस्मिंस्त्रिभुवन महितो विद्यते शीलराशि ॥३॥

चार्य देवेन्द्र व देवसूरि हैं, जिनके विषय में प्रभावक चरित में कहा गया है कि उन्होंने वि० सं० ११८१ में दिगम्बराचार्य कुमुदचन्द्र को वाद में परास्त किया था।]

तन्मेघचन्द्रत्रैविद्यशिष्या राद्धान्तवेदी लोकप्रसिद्ध ।
श्रीवीरणन्दी मोत्तुस्तदन्तेवासी गुणाब्धि प्रास्ताङ्गजन्मा ॥४॥
य स्याद्वाद रहस्य-नाइनिपुणोऽगण्यप्रभावो जना
नन्द श्रीमदनन्तकीर्त्तिमुनिपश्चारित्रभास्वत्तनु ।
कामोग्राहि-गर-द्विजापहरणे रूढो नरेन्द्रोऽभव-
त्तन्छिष्यो गुरुपञ्चकस्मृति पथ स्वच्छन्द सन्मानस ॥ ५ ॥
मलधारिरामचन्द्रो यमी तदीय-प्रशस्य शिष्योऽसौ ।
यच्चरणयुगलसेवापरिगतजनतैति चन्द्रता जगति ॥ ६ ॥
परपरिणतिदूरोऽध्यात्मसत्सारधीरो
विषय विरति भावो जैनमार्गप्रभाव ।
कुमत घन समीरो ध्वस्तमायान्धकारो
निखिलमुनिविनूतो रागकोपादिघात ॥ ७ ॥
चित्ते शुभावना जैनीं वाक्ये पञ्चनमस्क्रियां ।
काये व्रतसमारोप कुर्व्वन्नध्यात्मविन्मुनि ॥ ८ ॥
पञ्चाशत्सयुत-शत द्वयाधिक सहस्र नुतवर्षेषु।
वृत्तेषु शकनृपस्य तु काले विस्तीर्ण्णविलसदर्ण्णवनमौ॥९॥
प्रमादि (स)वत्सरेमासे श्रावणे तनुमत्यजत् ।
वक्रे कृष्णचतुर्दश्या शुभचन्द्रो महायति ॥१०॥
अमरपुरममरवास तद्गत जिन चैत्य चैत्यभवनानां ।
दर्शन कुतूहलेन तु यातो यातार्त्त रौद्र परिणाम ॥ ११ ॥
तन्छिष्यर् ॥

दुरितान्धकाररविहिम—

कररोगेदर्प्पपद्मणन्दिपण्डितदेवर् ।
बर माधवेन्दु समया —
भरणश्रीमूलसङ्घ देशीगणदोल् ।। १२ ।।
गुरु रामचन्द्र यतिपन
बर शिष्य शुभेन्दुमुनिय निसिगेय वि—
स्तरदिं माडिसिद बेलु—
करेयधिप राय-राज-गुरुगुम्मट्ट ।। १३ ।।
श्रीविजय पार्श्व जिनवर चरणारुण कमल-युगल यजन रत ।
बोगार राज नामा तद्वैयापृत्यतो हि शुभचन्द्र ।। १४ ।।
हेयादेय विवेकता जनतया यस्मात्मदादीयते
तस्य श्रीकुलभूषणस्य वरशिष्योमाघनन्दिव्रती ।
सिद्धान्ताम्बुधितीरगो विशद कीर्तिस्तस्य शिष्योऽभवत्
त्रैविद्य शुभचन्द्र योगि तिलक स्याद्वाद-विद्याञ्चित ।।१५।।
तच्छिष्य श्चारुकीर्त्ति प्रथित-गुण गण पण्डितस्तस्य शिष्य
ख्यात श्री माघनन्दि व्रति पति नुत भट्टारकस्तस्य शिष्य ।
सिद्धान्ताम्भोधिसीत द्युतिरभयशशी तस्य शिष्यो महीयान्
बालेन्दु पण्डितस्तत्पदनुतिरमलो रामचन्द्रोऽमलाङ्ग ।१६।
चित्र सम्प्रति पद्मनन्दिनिह कृत्त तावकीन तप
पद्मानन्द्यपि विश्रुतप्रमद इत्यासीस्तता नम्रता ।
काम पूरयसे शुभेन्दु पद भक्त्यासक्त-चेत सदा
काम दूरयसे निराकृत महा मोहान्धकारागम ।।१७।।
काम-विदारोद्दार चमावृतेप्यत्तमो आगतिभासि

श्री**पद्मनन्दि**पण्डित पण्डित जन-हृदय-कुमुदशीतकर ॥१८॥

पण्डित-ममुदयवति **शुभचन्द्र**-प्रिय-शिष्य भवति

सुदयास्ति ।

श्री-**पद्म नन्दि** पण्डित यमीश भवदितर-मुनिपुनालोके।१९।

श्रीमद**ध्यात्मिशुभचन्द्रदेव**स्य स्वकीयान्तेवासिना **पद्म नन्दि** पण्डित देवेन **माधवचन्द्र**देवेन च परोक्ष विनय-निमित्त निषद्यका कारयिता ॥ भद्र भवतु जिनशासनाय ॥

[इस लेख में शुभचन्द्र मुनि की आचार्य्यपरम्परा और उनके स्वर्ग वास की तिथि दी हुई है। कुन्दकुन्दान्वय, मूल सघ, पुस्तक गच्छ, देशी गण में गुरुशिष्य परम्परा से मेघचन्द्र त्रैविद्य वीरनन्दि, अनन्त कीर्त्ति मलधारि रामचन्द्र और शुभचन्द्र मुनि हुए। शुभचन्द्र मुनि का शक सं० १२३१ श्रावण कृष्ण १० को स्वर्गवास हुआ। उनके शिष्य पद्मनन्दि पण्डितदेव और माधवचन्द्र ने उनकी निषद्या निर्माण कराई। लेख में रामचन्द्र मुनि की आचार्य परम्परा इस प्रकार दी है। कुलभूषण, माघनन्दि व्रती, शुभचन्द्र त्रैविद्य, चारुकीर्त्ति पण्डित, माघनन्दि भट्टारक, अभयचन्द्र, बालचन्द्र पण्डित और रामचन्द्र ।]

---

४२ (६६)

महानवमी मण्डप के उत्तर में एक स्तम्भ पर

(शक स० १०९९)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥

श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल जिनवरानीक सौधोरु वार्द्धि
प्रध्वस्ताघ प्रमेय प्रचय विषय कैवल्य बोधोरु वेदि ।
शस्त स्यात्कार मुद्रा शबलित जनतानन्द नादोरु घोष
स्थेयादाचन्द्रतार परम सुख महावीर्य्य वीची निकाय ॥२॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गा श्री**गौतमा**द्याप्रभविष्णवस्त ।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धि युक्तास्तत्सन्ततौ **नन्दिगणे** बभूव ॥३॥
श्री**पद्मनन्दी**त्यनवद्यनामा ह्याचार्य्यशब्दोत्तर**कोण्डकुन्द**
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धि ॥४॥
अभूदु**मास्वाति**मुनीश्वरोसावाचार्य्य-शब्दोत्तरगृद्ध्रपिञ्छ ।
तदन्वये तत्सदृसो(शो)ऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेष
पदार्त्थ वेदी ॥५॥

श्री**गृद्ध्रपिञ्छ** मुनिपस्य **बलाकपिञ्छ**
शिष्योऽजनिष्ट भुवनत्रय वर्त्ति कार्त्ति ।
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलि-
माला शिलीमुख विराजित पाद पद्म ॥६॥
तच्छिष्यो **गुणनन्दि**पण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर
स्तर्क्क व्याकरणादि शास्त्र-निपुणस्साहित्य विद्यापति ।
मिथ्यावादिमदान्ध सिन्धुर घटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोज दिवाकरो विजयतां कन्दर्प्प दर्प्पापह ॥ ७ ॥
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेक निधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता
स्तेषूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्त शास्त्रार्थक—
व्याख्याने पटवा विचित्र चरितास्तेषु प्रसिद्धोमुनि—

आनान्न नय प्रमाणनिपुणो **देवेन्द्र** सैद्धान्तिक ॥ ८ ॥
अजनि महिपचूडा रत्नराराजिताङ्घ्रि
र्व्विजित **मकरके**तूद्दण्ड-दोर्द्दण्ड गर्व्व ।
कुनय निकर भूद्ध्रानीक दम्भोलि दण्ड
स्सजयतु विभुधेन्द्रोभारती भाल पट्ट ॥ ९ ॥
तच्छिष्य **कलधौतनन्दि**मुनिपस्सिद्धान्त चक्रेश्वर
पारावार परीत धारिणि कुल व्याप्तोरुकीर्तीश्वर ।
पञ्चाचोन्मद कुम्भि कुम्भ दलन प्रोन्मुक्त मुक्ताफल
प्राशु प्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनी-वल्लभ ॥ १० ॥
अवर्ग्गे **रविचन्द्र**-सिद्धान्तविदर्स्सम्पूर्णचन्द्रसिद्धान्तमुनि-
प्रवररवरवर्ग्गे शिष्यप्रवर श्री**दामनन्दि** सन्मुनि पतिगल् ।११।
बोधित भव्यरत्त मदनम्मद वर्ज्जित शुद्ध मानसर्
श्रीधरदेवरेम्बरवर्ग्गग्र तनूभवरादरा यश—।
श्रीधरर्ग्गाद शिष्यरवरोल् नेगल्दर्म्म**लधारिदे**वरु
श्रीधरदेवरु नत नरेन्द्र ति (कि)रीट तटार्न्चितक्रमर् ।१२।
आनआवनिपाल जालकशिरा रत्न प्रभा भासुर
श्रीपादाम्बुरुह द्वयो वर तपोलक्ष्मीमनोरञ्जन ।
मोह-व्यूह-महीदध्र दुर्द्धर पवि सच्छीलशालिर्ज्जग-
त्ख्यात**श्रीधरदेव** एष मुनिपो भाभाति भूमण्डले ॥१३॥
तच्छिष्यर् ॥
भव्याम्भोरुह षण्ड चण्ड किरण कर्प्पूर हार-स्फुर-
त्कीर्त्तिश्रीधवलीकृताखिलदिशाचक्रश्चरित्रोन्नत ।

(दक्षिणमुख)

भातिश्रीजिन पुङ्गव प्रवचनाम्भोराशि-राका शशा
भूमौ विश्रुत **माघनन्दि**मुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वर ॥१४॥

तच्छिष्यर् ॥

सच्छीलश् शरदिन्दु-कुन्द-विशद-प्रोद्यद्यश श्रीपति
र्ध्यद्दर्प्पक दर्प्प दाव दहन-ज्वालालि कालाम्बुद ।
श्रीजैनेन्द्र वच पयोनिधि शरत्सम्पूर्ण्ण चन्द्र क्षितौ
भाति श्री**गुणचन्द्र** देव मुनिपो राद्धान्त-चक्राधिप ॥१५॥

तत्सधर्म्मर् ॥

उद्भूते नुत **मेघचन्द्र**-शशिनि प्रोद्यद्यशश्चन्द्रिक
सवर्द्धेत तदस्तु नाम नितरां राद्धान्त रत्नाकर ।
चित्र तावदिद पयोधि परिधि क्षोणौ समुद्रीच्यत
प्रायेणात्र विजृम्भते भरत शास्त्राम्भोजिनी सन्तत ॥१६॥

तत्सधर्म्मर् ॥

चन्द्र इव धवल कीर्त्तिर्द्ध वलीकुरुते समस्त भुवन यस्य ।
त**च्चन्द्रकीर्त्ति**सञ्ज्ञ भट्टारक चक्रवर्त्तिनाऽस्य विभाति ।१७।

तत्सधर्म्मर् ॥

नैयायिकेभ-सिहो **मी**मासकतिमिर निकरनिरसन तपन
बौद्ध-वन दाव दहनोजयतिमहा**नुदयचन्द्र**पण्डितदेव ।१८।
सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती श्री**गुणचन्द्र**व्रतीश्वरस्य बभूव
श्री**नयकीर्त्ति**-मुनीन्द्रो जिनपति गदिताखिलार्थवेदी शिष्य
॥१९॥

स्वस्त्यनवरत विनत महिप-मुकुट मौक्तिक-मयूख-माला सरो-मण्डनीभूत चारुचरणारविन्दरु। भव्यजन हृदयानन्दरु। कोण्डकुन्दान्वय-गगन-मार्त्तण्डरु। लीला मात्र विजितोचण्ड-कुसुमकाण्डरु। देशीय गण गजेन्द्र सान्द्र मद-धारावभासरु। वितरणविलासरु। पुस्तकगच्छस्वच्छ सरसी-सरोजरु। वन्दि-जनसुरभूजरु। श्रीमद्गुणचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्त्ति चारुतर-चरण सरसीरुह षट्चरणरु। अशेष दोषदूरीकरणपरिणतान्त करण रुमप्प श्रीमन्नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगले न्तप्परेन्दडे ॥

साहित्य प्रमदा मुखाब्जमुकुरश्चारित्र चूडामणि
श्रीजैनागम वार्द्धि वर्द्धन सुधाशोचिस्समुद्भासत।
यश्शल्य त्रय गारव त्रय लसद्दण्ड-त्रय ध्वंसक —
स्स श्रीमान्नयकीर्त्ति देवमुनिपस्सैद्धान्तिकाग्रेसर ॥२०॥
माणिक्यनन्दिमुनिप श्रीनयकीर्त्तिव्रतीश्वरस्य सधर्म्म।
गुणचन्द्रदेवतनया राद्धान्त-पयोधि पारगो भुवि भाति॥२१॥
हार क्षीर-हराट्टहास हलभृत्कुन्देन्दु मन्दाकिनी—
कर्पूर स्फटिक स्फुरद्वरयशो धौतत्रिलोकोदर।
उच्चण्ड स्मर भूरि भूधरपवि ख्यातो वभूवक्षितौ
सश्रीमान्नयकीर्त्ति दवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वर ॥२२॥
शाके रन्ध्रनवद्युचन्द्रमसि दुर्म्मुख्याच*सवत्सरे
वैशाखेधवले चतुर्द्दशदिने वारे च सूर्य्यात्मजे।
पूर्वाह्णे प्रहरेगतेऽर्द्धसहिते स्वर्गं जगामात्मवान्

---

* ख्य

विख्याता **नयकीर्त्ति**-देव मुनिपो राद्धान्त चक्राधिप ॥२३॥
श्रीमज्जैन वचोब्धि वर्द्धन-विधुस्साहित्यविद्यानिधिस्

(पश्चिम मुख)

सर्प्पदर्प्पक हस्ति-मस्तक लुठत्प्रोत्कण्ठ कण्ठीरव ।
स श्रीमान् **गुणचन्द्र**देवतनयस्सौजन्यजन्यावनि
स्थेयात् श्री**नयकीर्त्ति** देवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वर ॥२४॥
गुरुवाद खचराधिपङ्गे बलिग दानक्के विण्पिङ्गे ता
गुरुवाद सुर भूधरक्के नेगल्दा कैलास शैलक्के ता ।
गुरुवाद विनुतङ्गे राजिसुविरुङ्गोलङ्गे लोकक्क सद्
गुरुवाद **नयकीर्त्ति**देवमुनिप राद्धान्त चक्राधिप ॥२५॥

तच्छिष्यर् ॥

हिमकर-शरदभ्र क्षीर-कल्लोल जाल-स्फटिक सित यश श्री
शुभ्र दिक् चक्रवाल ।
मदन-मद तिमिस्र श्रेणितीव्रांशुमाली जयति निखिल वन्द्यो
मेघचन्द्र व्रतीन्द्र ॥२६॥

तत्सधर्म्मर् ॥

कन्दर्प्पाहवकर्पितोद्धुरतनुत्राणोपमोरस्थली
चञ्चद्भूरमला विनेय-जनता-नीरेजिनी-भानव ।
त्यक्ताशेष-बहिर्व्विकल्प-निचयाश्चारित्र-चक्रेश्वर
शुम्भन्त्यण्णितटाक वासि **मलधारि** स्वामिनो भूतल ॥२७॥

तत्सधर्म्मर् ॥

षट् कर्म्म विषय मन्त्रे नानाविध-रोग हारि-वैद्ये च ।

जगदेकसूरिरेष **श्रीधरदेवो** बभूव जगति प्रवण ॥२८॥

तत्सधर्म्मर् ॥

तर्क व्याकरणागम-साहित्य प्रभृति सकल शास्त्रार्थज्ञ ।
विख्यात-**दामनन्दि** त्रैविद्य मुनीश्वरो धराग्रे जयति ॥२९॥
श्रीमज्जैनमताब्जिनीदिनकरो **नै**य्यायिकाभ्रानिल
श्चार्व्वाकावनिभृत्करालकुलिशो **बौ**द्धाब्धिकुम्भोद्भव ।
योमीमासकगन्धसिन्धुरशिरोनिर्ब्भेदकण्ठीरव—
स्त्रैविद्योत्तम**दामनन्दि**मुनिपस्सोऽयभुविभ्राजते ॥३०॥

तत्सधर्म्मर् ॥

दुग्धाब्धि-स्फटिकेन्दु-कुन्द कुमुद व्याभासि-कीर्त्तिप्रिय-
स्सिद्धान्तोदधि-वर्द्धनामृतकर पारार्थ्य-रत्नाकर ।
ख्यात श्री-**नयकीर्त्ति**देवमुनिपश्रीपाद-पद्म-प्रियो ।
भात्यस्याभुवि**भानुकीर्त्ति**-मुनिपस्सिद्धान्तचक्राधिप ॥३१॥
उरगेन्द्र-क्षीर-नीराकर-रजत गिरि श्रासितच्छत्र गङ्गा—
हरहासैरावतेभ स्फटिक-वृषभ-शुभ्राभ्रनीहार-हारा—।
मर राज श्वेत पङ्केरुह-हलधर वाक् शङ्ख-हसेन्दु-कुन्दो-
त्करचञ्चत्कीर्त्तिकान्त धरेयोन्नेसेदनी **भानुकीर्त्ति** व्रतीन्द्र

तत्सधर्म्मर् ॥ ॥३२॥

सद्वृत्ताकृति-शाभिताखिलकला पूर्ण्णा स्मर ध्वसक
शश्वद्विश्व-वियागि हृत्सुखकर श्री**बालचन्द्रो** मुनि ।
वक्रेणान-कलेन काम-सुहृदाचञ्चद्वियागिद्विषा
त्ताकेस्मिन्नुपमीयते कथमसौ तेनाथ बालेन्दुना ॥३३॥

उच्चण्ड मदन मद-गज निर्भेदन पटुतर प्रताप मृगन्द्र ।
भव्य कुमुदौघ-विकसन चन्द्रो भुवि भाति **बालचन्द्र** मुनीन्द्र ॥३४॥

ताराद्रि चीर पूर-स्फटिक सुर-सरित्तारहारेन्दु कुन्द—
श्वेतोद्यत्कीर्त्ति लक्ष्मी **प्रसर**-धवलिताशेषदिक् चक्रवाल ।
श्रीमत्सिद्धान्त-चक्रेश्वर नुत **नयकीर्त्ति** व्रतीशाङ्घ्रि भक्त

(उत्तर मुख)

श्रीमान्भट्टारकेशा जगति विजयते मेघचन्द्र व्रतान्द्र ॥३५॥
गाम्भीर्य्ये मकराकरो वितरणे कल्पद्रुमस्तेजसि
प्रोच्चण्ड द्युमणि कलास्वपि शशी धैर्य्ये पुनर्मन्दर ।
सर्व्वोर्व्वी परिपूर्ण्ण निर्म्मल यशो लक्ष्मी मनो रञ्जनो
भात्यस्या भुवि **माघनन्दि**मुनिपो भट्टारकाग्रेसर ॥३६॥
वसुपूर्ण्णसमस्ताश क्षितिचक्रे विराजत ।
चञ्चत्कुवलयानन्द **प्रभाचन्द्रो**मुनीश्वर ॥३७॥

तत्सधर्म्मर् ॥

उच्चण्डग्रहकोटयो नियमितास्तिष्ठन्ति यन क्षितौ
यद्वाग्जातसुधारसोऽखिलविषव्युच्छेदकश्शोभते ।
यत्तन्त्रोद्धविधि समस्तजनतारोग्याय सवर्त्तत
सोऽय शुम्भति **पद्मनन्दि**मुनिनाथो मन्त्रवादीश्वर ॥३८॥

तत्सधर्म्मर् ॥

चञ्चच्चन्द्र मरीचि शारद-घन क्षोराब्धि-ताराचल—
प्रोद्यत्कीर्त्ति -विकास पाण्डुर तर ब्रह्माण्ड-भाण्डोदर ।

वाक्कान्ता-कठिन स्तन द्वय तटी हारो गभीरस्थिर
सोऽय सन्नुत **नेमिचन्द्र** मुनिपो विभ्राजत भूतले ॥३९॥
भण्डाराधिकृत समस्त सचिवाधीशो जगद्विश्रुत—
श्रीहुल्लो **नयकीर्ति** देव मुनि पादाम्भोज युग्मप्रिय ।
कीर्त्ति श्री-निलय परार्त्थ चरितो नित्य विभाति क्षितौ
सोऽय श्रीजिनधर्म्म-रक्षणकर सम्यक्त्व रत्नाकर ॥४०॥
श्रीमच्छ्रीकरणाधिपस्सचिवनाथो विश्व-विद्वन्निधि-
श्चातुर्व्वर्ण्य-महान्नदान करणोत्साही क्षितौ शोभत ।
श्री**नीलो** जिन धर्म्म निर्म्मल मनास्साहित्य विद्याप्रिय
स्सौजन्यैक निधिश्शशाङ्क विशद प्रोद्यद्यश आपति ॥४१॥
आराध्यो जिनपो गुरुश्च **नयकीर्ति** ख्यात योगीश्वरो
जोगाम्बा जननी तु यस्य जनक ( ) श्री**बम्मदेवो** विभु ।
श्रीमत्कामलता सुता पुरपति श्री **मल्लिनाथ**स्सुतो
भात्यस्या भुवि **नागदेव** सचिवश्चण्डाम्बिकावल्लभ ॥४२॥
सुर-गज-शरदिन्दु प्रस्फुरत्कान्ति शुभ्री
भवदखिल दिगन्ता वाग्वधू चित्तकान्त ।
बुध-निधि **नयकीर्ति**-ख्यात योगीन्द्र पादा—
म्बुज युगकृत-सेव शोभते **नागदेव** ॥४३॥
ख्यातश्री**नयकीर्ति** देवमुनिनाथाना पय प्रोल्लस
त्कीर्त्तीना परम परोक्ष विनय कर्तु निषध्यालय ।
भक्त्याकारयदाशशाङ्क दिनकृत्तार स्थिर स्थायिन
श्रीनागस्सचिवोत्तमो निजयशश्रीशुभ्र-दिग्मण्डल ॥४४॥

श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्न वर्ग्गाश्श्रीगौतमाद्या प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥३॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्डकुन्द ।
द्वितीयमासादभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धि ॥४॥
अभूदुमास्वातिमुनीश्वरोऽसावाचार्य्यशब्दोत्तरगृद्ध्रपिञ्छ ।
तदन्वय तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्त्थवेदी ।५।
श्रीगृद्ध्रपिञ्छ-मुनिपस्य बलाकपिंञ्छशिश्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्ति कीर्त्ति ।
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलिमाला-शिलीमुख-विराजित पाद-पद्म ॥६॥
तच्छिष्या गुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर
तर्क्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापति ।
मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुर घटा सङ्घट्ट कण्ठीरवो
भव्याम्भोजद्दिवाकरो विजयता कन्दर्प्प दर्प्पापह ॥७॥
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता
स्तेषूत्कृष्टतमाद्विसप्ततिमिता सिद्धान्तशास्त्रार्त्थक
व्याख्यानेपटवो विचित्र-चरितास्तेषु प्रसिद्धोमुनि
नानानूननयप्रमाणनिपुणोदेवेन्द्रसैद्धान्तिक ॥७॥
अजनिमहिप-चूडा-रत्न राराजिताङ्घ्रिर्व्विजितमकरकतूहण्डदोर्द्दण्डगर्व्व ।

कुनयनिकरभूध्रानीकदम्भोलिदण्ड सजयतु विबुधेन्द्रो
भारती भालपट्ट ॥९॥

(दक्षिणमुख)

तच्छिष्य **कलधौतनन्दि**मुनिप सैद्धान्तचक्रेश्वर
पारावारपरीतधारिणि कुल व्याप्तोरुकीर्त्तीश्वर ।
पञ्चाक्षोन्मदकुम्भि-कुम्भ-दलन प्रोन्मुक्त-मुक्ताफल—
प्राशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभ ॥१०॥

अवर्गो **रविचन्द्र**सिद्धा—
न्तविदसम्पूर्णचन्द्र सिद्धान्त-मुनि ।
प्रवररवरवर्ग्गोशिष्य—
प्रवरश्री**दामनन्दि** सन्मुनि पतिगलु ॥११॥

बोधितभव्यरत्तमदनर्म्मद-नर्ज्जित शुद्ध-मानसर्
श्रीधरदेवरेम्बरवर्गप्रतनूभवरादरायशस्
श्रीधरर्गाद शिष्यरवरोल् नेगल्दर्म्म**लधारि** देवरु ।
श्रीधरदेवरुनतनरेन्द्र किरीट तटार्च्चित क्रमर् ॥१२॥

मलधारिदेवरिन्द
बेलगिदुदु जिनेन्द्रशासन मुन्नि—
र्म्मलमागिमत्तमीगल्
बेलगिदपुदु **चन्द्रकीर्त्ति**भट्टारकरि ॥१३॥

अवर शिष्यर् ॥

परमाप्ताखिल-शास्त्र तत्वनिलय सिद्धान्त-चूडामणि
स्फुरिताचारपर विनेयजनतानन्द गुणानाकसु—

न्दरनेम्बुन्नतिथि समस्त-भुवन प्रस्तुत्यनाद **दिवा—**
करणन्दि-व्रतिनाथनुज्वलयशो विभ्राजिताशातट ॥१४॥
विदितव्याकरणद तर्कद सिद्धान्तद विशेषदि त्रैविद्या—
स्पदरेन्दी-धरेवण्णिपुदु **दिवाकरणन्दि**देवसिद्धान्तिगर।१५।
वरराद्धान्तिकचक्रवर्त्ति दुरितप्रध्वंसि कन्दर्पसि—
न्धुरसिंह वर शील सद्गुण महाम्भोराशि पङ्केजपु
ष्कर देवेभ शशाङ्क सन्निभ यश श्री-रूपनो हो**दिवा**
करणन्दिव्रतिनिर्म्मद निरुपम भूपेन्द्रवृन्दार्च्चित ॥१६॥

(पश्चिममुख)

वर भव्यानन-पद्ममुल्ललरलज्ञानीकनेत्रोत्पल
कोरगलपापतमस्तम परयलेत्त जैनमार्ग्गामला—
म्बरमत्युज्वलमागले बेलगितोभूभागम श्री**दिवा—**
करणन्दिव्रतिवाक्दिवाकरकराकारम्बोलुर्व्वीनुत ॥१७॥
यद्वक्तृचन्द्रविलसद्वचनामृताम्भ पानेनतुष्यतिविनेयचको
रवृन्द ।
जैनेन्द्रशासनसरोवरराजहसो जीयादसौभुवि**दिवाकरण**
न्दिदेव ॥१८॥

अवर शिष्यरु ॥

गण्डविमुक्तदेव-मलधारि मुनीन्द्ररपादपद्मम
कण्डोडसाध्यमे नेनेद भव्यजनकमकोण्डचण्ड —
दण्ड विरोधि दण्ड नृप-दण्ड-पतत्पृथु वज्रदण्ड को—
दण्ड कराल दण्डधर दण्डभय-पेरपिङ्गि पोगवे ॥१९॥

बलयुतर बलल्चुव लतान्तशरङ्गिदिरागितागिस
स्वलिसे पलश्चि तूल्दवननोडिसिमेयू वगयाद दूसरिं ।
कलेयदे निन्द कब्बुनद कर्गिद सिप्पिनमके वेत्त क —
त्तलमेनिसित्तु पुत्तडर्दमेय्य मल मलधारि देवर ॥२०॥
मरेदुमदोम्मे लौकिकद वार्त्तेयनाडद कत्त बागिल
तेरेयद भानुवस्तमितमागिरे पोगद मेय्यनोम्मेयु ।
तुरिसद कुक्कुटासनके सोलद गण्डविमुक्तवृत्तिय
मरेयद घोर-दुश्चर तपश्चरित मलधारिदेवर ॥२१॥

आ चारित्र चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु ॥

पञ्चेन्द्रिय प्रथित सामज कुम्भपीठ निर्ल्लोट लम्पट महाग्र समग्र सिंह ।
सिद्धान्त वारिनिधि पूर्ण्ण निशाधिनाथो वाभाति भूरिभुवन **शुभचन्द्रदेव** ॥२२॥

शुभ्राभ्राभसुरद्विपामरम रित्तारापतिस्प्रस्फुट—
ज्योत्स्ना-कुन्द शशीद्ध कम्बु कमलाभाशा तरङ्गोत्कर ।
प्रख्य प्रज्वल कीर्त्तिमन्वहमिमा गायन्ति देवाङ्गना
दिकन्या **शुभचन्द्रदेव** भवतश्चारित्रभूभामिनि ॥२३॥

शुभचन्द्रमुनीन्द्रयश
स्प्रभेयाल्सरियागलारदिन्तीं चन्द्र ।
प्रभुतेगिदे कन्दि कुन्दिद—
नभव शिरोमणिगदेक कन्दु कुन्दु ॥२४॥

एत्तलु विजयङ्गय्वद—

मत्तले धर्म्मप्रभावमधिकोत्सवदिं ।
वित्तरिपुदेनले पोल्वरे
मत्तिनवरु श्री**शुभेन्दु**सैद्धान्तिगर ॥२४॥
कन्तुमदापहर्स्सकल जीव दयापर जैन मार्ग्ग रा—
द्धान्त-पयोधिगल् विषयवैरिगलुद्धत-कर्म्म-भञ्जनर् ।
स्सन्तत भव्य पद्म दिनकृत्प्रभर **शुभचन्द्र-देव** सि—
द्धान्तमुनीन्द्रर पोगल्वुदम्बुधि वेष्टित-भूरि-भूतल ॥२५॥

(उत्तरमुख)

ख्यातश्री**मलधारिदेव**यमिनश्शिष्योत्तमे स्वर्ग्गते
हा हा श्री **शुभचन्द्र**देवयतिपे सिद्धान्तचूडामणै ।
लोकानुग्रहकारिणि क्षितिनुते कन्दर्प्पदर्प्पान्तक
चारित्रोज्वलदीपिका प्रतिहता वात्सल्यवल्ली गता ॥२६॥
शुभचन्द्रे महस्सान्द्रेऽन्विक्रिते काल राहुणा ।
सान्धकार जगज्जाल जायतेत्त्येति नाद्भुत ॥२७॥
बाणाम्भोधिनभश्शशाङ्कतुलिते जाते शकाब्दे
ततो वर्षे शोभकृताह्वये व्युपनते मासे पुन श्रावणे ।
पक्षे कृष्णविपक्षवर्त्तिनि सिते वारे दशम्या तिथै
स्वर्यात **शुभचन्द्रदेव**गणभृत्सिद्धान्तवाराान्निधि ॥२८॥

श्रीमद्वरगुड्ड ॥

समधिगतपञ्चमहाशब्दमहासामन्ताधिपतिमहाप्रचण्डदण्ड नायक । वैरिभयदायक । गोत्रपवित्र । बुधजनमित्र । स्वामिद्रोहगोधूमघरट्ट । सङ्ग्रामजत्तुट्ट । **विष्णुवर्द्धन पोय्सल**

महाराजराज्यसमुद्धरणकलिगलाभरणश्रीजैनधर्म्मामृताम्बुधिप्रवर्द्धन सुधाकर सम्यक्त—रत्नाकराद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतरप्पश्रीमन्महाप्रधानदण्डनायकगङ्गराज तम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घददेसिय गणद पुस्तकगच्छद **शुभचन्द्र** सिद्धान्तदेवर्ग्गे परोक्षविनयक्के निसिधिगेय निलिसि महापूजेय माडि महादानम गेय्दरु ॥ आमहानुभावनक्तिगे ॥ **शुभचन्द्र**सिद्धान्तदेवर गुड्डि ॥

वरजिनपूजेयनत्या—
दरदिन्द जक्कणब्बे माडिसुवलुस—।
चरिते गुणान्वितेयं—
न्दी धरणीतल मेच्चि पोगलुतिर्प्पुदु निच्च ॥२९॥
दोरेये जक्कणिकब्बेगी भुवनदोल् चारित्रदोल् शीलदोल्
परमश्रीजिनपूजेयोल् सकलदानाश्चर्य्यदोल् सत्यदोल् ।
गुरुपादाम्बुजभक्तियोल् विनयदोल् भव्यर्कल कन्ददा—
दरदिं मन्निसुतिर्प्प पेम्पिनेडेयोल् मत्तन्यकान्ताजनम् ॥ ३०॥
श्रीमत्**प्रभाचन्द्र** सिद्धान्तदेवर गुड्ड हेग्गडेमर्द्दिमय्यबरेद ॥
विरुदरूवारिमुखतिलक **बर्द्धमानाचारि** खडरिसिद
मङ्गल महा ॥ श्री श्री ॥

[इस लेख में पोयसल महाराज गङ्गनरेश विष्णुवर्द्धन द्वारा उनके गुरु शुभचन्द्र देव की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। शुभचन्द्र देव का स्वर्गारोहण शक सं० १०४५, श्रावण कृष्ण १० को हुआ था। इनके गुरु परम्परा वर्णन में मलिधारिदेव और श्रीधरदेव के उल्लेख तक के प्रथम ग्यारह श्लोक वे ही हैं जो उपर्युक्त शिलालेख नं० ४२ (६६) के हैं। इसके पश्चात् चन्द्रकीर्त्ति भट्टारक, दिवाकरनन्दि,

गण्डविमुक्तदेव मलधारि मुनीन्द्र और शुभचन्द्र देव का उल्लेख है। लेख में विष्णुवर्द्धन नरेश की भावज जवकणब्बे की जैन धर्म में भारी श्रद्धा का भी उल्लेख है। यह लेख प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य हेग्गडे मर्दिमय्य द्वारा रचित और वर्द्धमानाचारि द्वारा उत्कीर्ण है।]

४५ (११८)

उसी मण्डप मे द्वितीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०४३)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासन जिनशासन ॥१॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यता प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥

नमस्सिद्धेभ्य ॥

जनताधारनुदारनन्यवनितादूर वचस्सुन्दरी
घनवृत्तस्तनहारनुग्ररणधीर मारनेनेन्दपै ।
जनक तानेने **माकणब्बे** विबुधप्रख्यातधर्म्मप्रयु
क्ते निकामात्त-चरित्रे तायनलिदेनेच महाधन्यनो ॥३॥

कन्द ॥ वित्रस्तमल बुधजनमित्र
द्विजकुलपवित्र**नेच** जगदोलु ।
पात्र रिपुकुलकन्दखनित्र
कौण्डिन्य गोत्रनमलचरित्र ॥४॥

वृ [त्त] ॥ परमजिनेश्वर तनगेदेय्वमलुर्क्केयिनोल्पु-वेत्त **मु**
ल्लुरदुरितक्षयर्क्कनकनन्दिमुनीश्वररुत्तमोत्तम—

गुंरुगलुदात्तवित्तनवदात्तयश नृपकामबोऽसल
पोरेद महीशनेन्दोडेले बणिणपरार्नेगल्देच्चिगाङ्कन ॥५॥

क [द] ॥ मनुचरितनेच्चिगाङ्कन
मनेयोल् मुनिजनसमूहमु बुधजनमु ।
जिनपूजने जिनवन्दने
जिनमहिमेगलावकालमु शोभिसुगु ॥६॥

आमहानुभावनर्द्धाङ्गियेन्तप्पलेन्दोडे ।
उत्तम गुण ततिवनिता—
वृत्तियनोलकोण्डुदेन्दु जगमेल्ल क—।
य्येत्तुविनममलगुणस—
म्पत्तिगे जगदोलगे पोच्चिकब्बेये नोन्तलु ॥७॥
तनुव जिनपतिनुतियि ।
धनम मुनिजनदतृप्तियि सफलमिदि—
न्नेनगेम्बी नम्बुगेयोल्
मनम जगदोलगे पोच्चिकब्बेयेनिरिपलु ॥८॥
जन विनुतनेच्चिगाङ्कन—
मनस्सरोहँसि गङ्गराजचमूना—
थन जननि जननि भुवन—
क्केने नेगल्दल् पोच्चिकब्बे गुणदुन्नतियिं ॥९॥
एनिसिद पोचाम्बिकके परि—
जनमु बुधजनमु मोम्मेंगोम्में मनन्त—
ग्णने तणिदु परसे पुण्यम—

[न] नन्तम नेरपि परपि जसमजगदोलु ॥१०॥

व [चन] ॥ इन्तेनिसिदपोचाम्बिके बेल्गोलद तीर्त्थ मोदलागनेकतीर्त्थगलोलु पलवु चैत्यालयङ्गल माडिसि महादान गेय्दु ॥

वृ [त्त] ॥ अदनिन्नेनेम्बेनानोन्दमल्द सुकृतम नोड रोमाञ्च माद—

पुदु पेल्वुद्योगदिन्द स्मरियिपदेनमो वीतरागाथ गार्ह—
स्थ्यद योषिद् भावदी कालद परिणतियि गेल्दु सल्लेखनास
म्पददिन्द देविपोचाम्बिके सुरपदम लीलेयि सूरेगोण्डल् ॥११॥

सकवर्ष १०४३ नेय सार्व्वरि सवत्सरदाषाढ सुद्ध ५ सोमवारदन्दु सन्यसनम कैकोण्डु एकपार्श्वनियमदिं पञ्च पदमनुचारिसुत्त देवलोकक्के सन्दलु ॥ आ जगज्जननियपुत्र ॥ समधिगतपञ्चमहाशब्द महासामन्ताधिपति महाप्रचण्डदण्ड नायक । वैरिभयदायक । गोत्रपवित्र । बुधजनमित्र । श्रीजैन धर्म्मामृताम्बुधिप्रवर्द्धनसुधाकर । सम्यक्त्वरत्नाकर । आहाराभय भैषज्य शास्त्रदानविनोद । भव्यजनहृदयप्रमोद । **विष्णुवर्द्धन** भूपालहोय्सलमहाराजराज्याभिषेकपूर्णकुम्भ । धर्म्महर्म्योद्ध रणमूलस्तम्भ । नुडिदन्तेगण्डपगेवर बेङ्कोण्ड । द्रोहघरट्टाद्यनेक नामावलीसमालङ्कृतनप्प श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक गङ्गराज तन्नात्माम्बिके पोचलदेवियरु दिवक्के सललु परोक्षविन यक्केन्दी निसिधिगेय निलिसि प्रतिष्ठे गेय्दु महादानपूजार्च्च नाभिषेकङ्गल माडिद मङ्गलमहा श्री श्री ॥

श्री प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवगुड्ड पेर्ग्गडे चावराज बरेद ।। रूवारिहोय्सलाचारियमग **वर्द्धमानाचारि** विरुदरूवारि-मुखतिलक कण्डरिसिद ।।

[इस लेख मे 'मार' और 'माकण बे' के सुपुत्र 'एचि' व 'एचिगाङ्क' की भार्या 'पोचिकब्बे' की धर्मपरायणता और अन्त मे संन्यास विधि से स्वर्गारोहण का उल्लेख है । पोचिकब्बे ने अनेक धार्मिक कार्य किये । उन्होंने बेल्गोल मे अनेक मन्दिर बनवाये । शक सं० १०४३, आषाढ़ सुदि ५ सोमवार को इस धर्मवती महिला का स्वर्गवास हो जाने पर उसके प्रतापी पुत्र महासामान्ताधिपति, महाप्रचण्ड दण्डनायक, विष्णुवर्द्धन महाराज के मन्त्री गङ्गराज ने अपनी माता की स्मारक यह निषद्या निर्माण कराई ।

यह लेख प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देव के गृहस्थ शिष्य चावराज का रचा हुआ और होय्सलाचारि के पुत्र वर्धमानाचारि द्वारा उत्कीर्ण है]

४५ (१२५)

एरडु कट्टे वस्ति के पश्चिम की ओर एक पाषाण पर ।

(लगभग शक स० १०४०)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छन ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ।। १ ।।

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यता प्रतिविधानहेतवे ।

अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ।। २ ।।

स्वस्ति 'समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर द्वारवतीपुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि **मलपरोल्**

गण्डाद्यनेकनामावली समालङ्कृतरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वर **त्रिभु-वनमल्ल** तलकाडुगोण्ड भुज बलवीर गङ्ग **विष्णुवर्द्धन** होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा चन्द्रार्कतार मलुत्तइरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारनन्यवनितादूर वचस्सुन्दरी–
घनवृत्त स्तन-हारनुग्ररणधीर मारनेनेन्दपै ।
जनक तानेने **माकणब्बे** विबुधप्रख्यातधर्म्मप्रयु
क्ते निकामात्तचरित्रे तायेनलिदेनेच महाधन्यनो ॥ ३ ॥

कन्द ॥ वित्रस्तमल बुधजन—
मित्र द्विजकुलपवित्रनेचम् जगदोलु ।
पात्रम् रिपुकुलकन्दघनित्र
कौण्डिन्यगोत्रन मलचरित्र ॥ ४ ॥
मनुचरितनेचिगाङ्कन
मनेयोलुमुनिजनसमूहमु बुधजनमु ।
जिनपूजनेजिनवन्दने
जिनमहिमेगलाव कालमु शोभिसुगु ॥ ५ ॥
उत्तमगुणततिवनिता-
वृत्तियनोलकोण्डुदेन्दु जगमेल्ल कै
य्येत्तुविनममलगुणस
म्पत्तिगे जगदोलगे पोचिकब्बेयेनोन्तलु ॥ ६ ॥

अन्तेनिसिदेचिराजन पोचिकब्बेय पुत्रनखिल-तीर्थकर-परम-देव-परम चरिताकर्ण्णनोदीर्ण्ण विपुल-पुलक-परिकलित वार

बाणनुवसम समर रस-रसिक रिपु नृप-कलापावलेप लोप लोलुप-
कृपाणनुवाहाराभय भैषज्य शास्त्रदान विनोदनु सकल लोक
शोकापनोदनु ॥

वृत्त ॥ वज्रं वज्रभृतो हलं हलभृतश्चक्रं तथा चक्रिण-
श्शक्तिश्शक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डीव कोदण्डिनः ।
यस्तद्वत् वितनोति विष्णुनृपतेष्कार्य्यं कथं मादृशै-
र्गङ्गो गाङ्ग तरङ्गरञ्जित यशो-राशिस्सवर्ण्णो भवेत् ॥ ७ ॥

इन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक द्रोहघरट्टगङ्गराज
चालुक्यचक्रवर्त्ति त्रिभुवनमल्ल पेर्म्माडिदेवनदल पन्निर्व्वर्
स्सामन्तर्व्वेरसुकण्णेगालबीडिनलुबिट्टिरे ॥

कन्द ॥ तेगेवारुवम हारुव
बगेय तनगिरुल बवरवेनुत सवङ्ग ।
बुगुवकटकिगरनलिर
पुगिसिदुदु भुजासि गङ्गदण्डाधिपन ॥ ८ ॥

वचन ॥ एम्बिनमवस्कन्दकेलियिन्दमनिबरु सामन्तरुम भङ्गिसि
तदीयवस्तु वाहनसमूहम निजस्वामिगे तन्दु कोट्टुनिज-
भुजावष्टम्भकेमेच्चि मेच्चिदें बेडिकोल्लेने ॥

कन्द । परमप्रसादम पडेदु
राज्यम धनमनेनुम बेडदन-
स्वरमागे बेडिकोण्ड
परमननिदनर्हदर्च्चनाञ्चितचित्त ॥ ९ ॥

अन्तुबेडिकोण्डु ॥

वृत्त ॥ पसरिसेकीर्त्तन जननिपोचल देवियरत्थिवट्टु मा
डिसिदजिनालयक्कमोसेदात्म मनोरमे लच्चिदेविमा ।
डिसिद जिनालयक्कमिदुपूजनेयोजितमेन्दुकोट्टुस-
न्तोसमनजस्रमाम्पनेनेगङ्गचमूपनिदेनुदात्तनो ॥ १० ॥

अक्कर ॥ आदियागिप्पुंदार्हत समयक्के मूलसङ्घ कोण्डकुन्दान्वय
बादुवेडद बलयिपुदल्लिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद ।
बोध-विभवद कुक्कुटासनमलधारिदेवर शिष्यरेनिप पेम्पिङ्ग
आदमेसेदिर्प्पशुभचन्द्र सिद्धान्त-देवरगुड्डगङ्ग चमूपति ११।
गङ्गवाडिय बसदिगळेनितोलवनितुमम्तानेय्दे पोसयिसिद
गङ्गवाडिय गोम्मटदेवर्गे सुत्तालयमनेय्दे माडिसिद ।
गङ्गवाडिय तिगुलर बेङ्कोण्डु वीरगङ्गङ्ग निमिर्चिकोट्ट
गङ्गराजना मुन्निन गङ्गररायङ्ग नूर्म्मडिधन्यनल्ते ॥ १२ ॥

[यह लेख शिलालेख न० ४९ (७३) के प्रथम पैंतीस पद्यों का उद्धरण मात्र है। देखो न० ४९]

४६ (१२६)

एरडु कट्टे बस्तिके पश्चिम की ओर मण्डप मे पहले स्तम्भ पर

(शक स० १०३७)

(उत्तरमुख)

भद्रमस्तु जिनशासनस्य ॥

जयतु दुरितदूर क्षीरकुपारहार
प्रथितपृथुलकीर्तिश् श्री शुभेन्द्रव्रतीश ।

गुणमणिगणसिन्धु शिशष्टलोकैकबन्धु
विबुधमधुपफुल्ल फुल्लबाणादिसल्ल ॥१ ॥
श्रीवधुचन्द्रलेख सुरभूरुहदुद्भवदिं पयाधिवे-
लावधु पेम्पुवेत्तवाल निन्दिते नागले चारुरूपली ।
लावति दण्डनायकिति लक्कणेदेमति बूचिराजन-
म्बीविभु पुट्टे पेम्पु वडेदाज्जिर्जसिदलु पिरिदप्प कीर्त्तिय ॥ २ ॥
आवयब्बेय मगनेन्तप्पनन्दडे ॥

स्वस्ति समस्तभुवनभवनविख्यातख्यातिकान्तानिकामकमनी-
यमुखकमलपरागपरभागसुभगीकृतात्मीयनत्तनु । स्वकीयकायका
न्तिपरिहसितकुसुमचापगात्रनु । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदान-
विनोदनु । सकललोकशोकामनोदनु । निखिलगुणगणाभरणनु ।
जिनचरणशरणनुमेनिसिद बूचण ।

वृत्त ॥ विनयद सीमे सत्यद तवर्म्मने शौचद जन्मभूमि ये—
न्दनवरत पोगल्वुदु जन विबुधोत्करकैरवप्रबो-
धनहिमरोचिय नगई बूचियनुद्धपरार्त्थसद्गुण
भिनवदधोचिय सुभटभीकरविक्रमसव्यसाचिय ॥ ३ ॥

आ यण्ण **सकवर्ष १०३७** नेय **विजयसंवत्सरद वैशाखसुद्ध १० आदित्यवार** दन्दु सर्व्वसङ्गपरित्यागपूर्व्वक मुडिपिद ॥

(पश्चिममुख)

पद्य ॥ त्यागसर्व्वगुणाधिक तदनुज शौर्य्य च तद्बान्धव
धैर्य्य गर्व्वगुणातिदारुणरिपु ज्ञान मनोऽन्यं सतां ।

• शेषाशेषगुण गुणैकशरण श्रीबूचणोऽत्याहित
सत्य सत्यगुणीकरोति कुरुते किं वा न चातुर्य्यभाक् ॥ ४ ॥
यो वीर्य्ये गजवैरिभूयमतुले दानक्रमे बूचणो
यस्साचात्सुरभूजभूयमवनौ गम्भीरताया विधौ ।
यो रत्नाकरभूयमुन्नति-गुणे यो मेरुभूय गत-
स्सोऽन्तं सान्तमना मनीषिलषित गीर्व्वाणभूयगत ॥ ५ ॥
माराकारइति प्रसिद्धतरइत्यत्यूर्जित श्रीरिति
प्राप्तखग्गपतिप्रभुत्वगुणइत्युच्चैर्म्मनीषीति च ।
श्रीमद्गङ्गचमूपते प्रियतमा लक्ष्मीसदृचा शिला—
स्तम्भ स्थापयतिस्म बूचणगुणप्रख्यातिवृद्धि प्रति ॥ ६ ॥
धरे लघुवाय्तु विश्रुतविनेयनिकायमनाथमाय्तुवाक्
तरुणियुमीगली जगदोलागर्मनादरणीयेयादले—
न्दिरदे विषादमादमोदवुत्तिरे भव्यजनान्त [रङ्ग] दोलु
निरुपमनेय्दिद नेगर्द बूचियण दिविजन्द्रलोकम ॥७॥

श्री मूलसङ्घद देसिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्रसिद्धान्त-देवर गुड्ड बूचणन निशिधिगे ॥

[इस लेख मे 'नागले' माता के सुपुत्र 'बूचिराज व बूचण के सौन्दय, शौर्य और सद्गुणों का उल्लेख है। यह तेजस्वी और धर्मिष्ठ पुरुष शक सं० १०३७ वैशाख सुदि १० रविवार को सर्व परिग्रह का त्यागकर स्वर्गगामी हुआ। उनके स्मरणार्थ सेनापति गङ्ग ने एक पाषाण स्तम्भ आरोपित कराया।

बूचिराज के गुरु मूल संघ देशीगण पुस्तक गच्छ के शुभचन्द्र सिद्धान्त देव थे।]

४७ (१२७)

उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०३७)

(दक्षिणमुख)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थ ध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ १ ॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमलजिनवरानीकसौधोरुवार्द्धि
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय प्रचय विषय कैवल्यबोधोरु वेदि ।
शस्तस्यात्कारमुद्राशबलितजनतानन्दनादोरुघोष
स्थेयादाचन्द्रतार परमसुखमहावीर्य्यवीचीनिकाय ॥ २ ॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गा श्रीगौतमाद्या प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ **नन्दि**गण बभूव ॥३॥
श्री**पद्मनन्दी**त्यनवद्यनामाह्याचार्य्यशब्दोत्तर**कोण्डकुन्द** ।
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धि ॥४॥
अभूदु**मास्वाति**मुनीश्वरोऽसावाचार्य्यशब्दोत्तरगृद्धपिञ्छ ।
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ॥५॥
श्रीगृद्धपिञ्छमुनिपस्य**बलाकपिञ्छ**
शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्ति ।
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलि
मालाशिलीमुखविराजितपादपद्म ॥६॥
तच्छिष्यो**गुणनन्दि**पण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर-
स्तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापति ।

मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्प्पदर्प्पापहः ॥७॥
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता
स्तेषूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्तशास्त्रार्त्थक-
व्याख्याने पटवो विचित्रचरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनि
र्नानानूननयप्रमाणनिपुणो **देवेन्द्र**सैद्धान्तिकः ॥८॥
अजनि महिपचूडारत्नराराजिताङ्घ्रि -
र्व्विजितमकरकेतूद्दण्डदोर्द्दण्डगर्व्वः ।
कुनयनिकरभूध्रानीकदम्भोलिदण्ड
स्सजयतु **विबुधेन्द्रो** भारतीभालपट्टः ॥९॥
तच्छिष्यः **कलधौतनन्दि**मुनिपस्सैद्धान्तचक्रेश्वरः
पारावारपरीतधारिणिकुलव्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः ।
पञ्चास्त्रोन्मदकुम्भिकुम्भदलनप्रोन्मुक्तमुक्ताफल—
प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥१०॥
तत्पुत्रको **महेन्द्रादिकीर्त्ति**र्म्मदनशङ्करः ।
यस्य वाग्देवता शक्ता श्रौतीं मालामयूयुजत् ॥११॥
तच्छिष्यो**वीरणन्दी**कवि गमक महावादि वाग्मित्वयुक्तो
यस्य श्रीनाकसिन्धुत्रिदशपतिगजाकाशसङ्काशकीर्त्तिं ।
गायन्त्युच्चैर्द्दिगन्ते त्रिदशयुवतयः प्रीतिरागानुबन्धात्
सोऽयं जीयात्प्रमादप्रकरमहिधराभीलदम्भोलिदण्डः ॥१२॥
श्री**गोल्लाचार्य्य**नामा समजनि मुनिपश्शुद्धरत्नत्रयात्मा
सिद्धात्माद्यर्त्थ सार्त्थ प्रकटनपटु सिद्धान्त शास्त्राब्धि-वीची—

सङ्घातच्चालिताह प्रमदमदकलालीढबुद्धिप्रभाव
जीयाद्भूपाल मौलि द्युमणि-विदलिताङ्घ्रयब्जलक्ष्मीविलास ॥
पेर्ग्गडे चावराज बरेदमङ्गल ॥

(पश्चिममुख)

वीरणन्दि विबुधेन्द्रसन्ततौ नूत्नचन्दिलनरेन्द्रवंशचू-
डामणि प्रथितगोल्लदेशभूपालक किमपि कारणेन स ॥१४॥
श्रीमत्**त्रैकाल्ययोगी** समजनि महिकाकायलग्नातनुत्र
यस्याभूद्वृष्टिधारा निशित शर गणा ग्रीष्ममार्त्तण्डबिम्ब ।
चक्रसद्वृत्तचापाकलितयतिवरस्य।घशत्रून्विजेतु
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्सजयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दु ॥१५॥
तपस्सामर्थ्यतो यस्य छात्रोऽभूद्ब्रह्मराक्षस ।
यस्य स्मरणमात्रेण मुञ्चन्ति च महाग्रहा ॥१६॥
प्राज्याज्यता गत लोके करञ्जस्य हि तैलक ।
तपस्सामर्थ्यतस्तस्य तप कि वर्ण्णितु क्षम ॥१७॥
त्रैकाल्य योगि यतिपाग्र-विनेयरत्न
स्सिद्धान्तवार्द्धिपरिवर्द्धनपूर्णचन्द्र ।
दिग्नागकुम्भलिखितोज्ज्वलकीर्त्तिकान्तो
जीयादसाव**भयनन्दि**मुनिर्ज्जगत्यां ॥१८॥
येनाशेषपरीषहादिरिपवस्सम्यग्जिता प्रोद्धता
येनाप्ता दशलक्षणोत्तममहाधर्म्मारियकल्पद्रुमा ।
येनाशेष भवोपताप हननस्वाध्यात्मसवेदन
प्राप्त स्यादभयादिनन्दिमुनिपस्सोऽय कृतार्थो भुवि ॥१९॥

तच्छिष्यस्सकलागमार्थनिपुणो लोकज्ञतासयुत
स्सच्चारित्रविचित्रचारुचरितस्सौजन्यकन्दाङ्कुर ।
मिथ्यात्वाब्जवनप्रतापहननश्रीसोमदेवप्रभु-
र्जीयात्स **सकलेन्दु**नाममुनिप कामाटवीपावक ॥२०॥
अपिच **सकलचन्द्रो** विश्वविश्वम्भरेश
प्रणुतपदपयोज कुन्दहारेन्दुरोचि ।
त्रिदशगजसुवज्रव्योमसिन्धुप्रकाश
प्रतिमविशदकीर्त्तिर्व्वाग्वधूकर्ण्णपूर ॥२१॥
शिष्यस्तस्य दृढव्रतश्शमनिधिस्सत्सयमाम्भोनिधि
शीलाना विपुलालयस्समितिभिर्युक्तिस्त्रिगुप्तिश्रित ।
नानासद्गुणरत्नरोहणगिरि प्रोद्यत्तपो जन्मभू
प्रख्यातो भुवि **मेघचन्द्र**मुनिपस्त्रैविद्यचक्राधिप ॥ २२ ॥
त्रैविद्ययोगीश्वर-मेघचन्द्रस्याभूत्**प्रभाचन्द्र**मुनिस्सुशिष्य ।
शुम्भद्व्रताम्भोनिधिपूर्ण्णचन्द्रो निर्द्धूतदण्डत्रितयो विशल्य २३
पुष्पास्त्रानून दानोत्कट कट करटिच्छेद दृप्यन्मृगेन्द्र
नानाभव्याब्जषण्डप्रतति विकसन श्रीविधानैकभानु ।
ससाराम्भोधिमध्योत्तरणकरणनौयानरत्नत्रयेश
सम्यग्जैनागमार्त्थान्वित विमलमति श्री **प्रभाचन्द्र**
योगी ॥ २४ ॥

(उत्तरमुख)

श्रीभूपालकमौलिलालितपदस्सज्ञानलक्ष्मीपति—
श्चारित्रोत्करवाहनश्शितयशश्शुभ्रातपत्राञ्चित ।

त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयस्स द्धर्म्मचक्राधिप
पृथ्वीसस्तवतूर्य्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वर ॥ २५ ॥
शाब्दौघस्य शिरोमणि प्रविलसत्तर्क्काब्जचूडामणि
सैद्धान्तेद्धशिरोमणि प्रशमवद्व्रातस्य चूडामणि ।
प्रोद्यत्सयमिना शिरामणिरुदश्चद्भव्यरत्नामणि-
र्जीयात्सन्नुतमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूडामणि ॥ २६ ॥
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिन पत्युर्म्ममासि प्रिया
वाग्देवी दिसहावहित्थहृदया तद्वश्यकर्म्मार्त्थिनी ।
कीर्त्तिर्व्वारिधिदिक्कुलाचलकुले स्वादात्मा प्रष्टुम-
प्यन्वेष्टु मणिमन्त्रतन्त्रनिचय सा सम्भ्रमाभ्राम्यति ॥२७॥
तर्क्कन्यायसुवज्रवेदिरमलाहत्सूक्तितन्मौक्तिक
शब्दग्रन्थविशुद्धशङ्खकलितस्स्याद्वादसद्विद्रुम ।
व्याख्यानोर्ज्जितघोषणर् प्रविपुलप्रज्ञोद्धवीचीचया
जीयाद्विश्रुत**मेघचन्द्र** मुनिपस्त्रैविद्य रत्नाकर ॥ २८ ॥

श्री**मूल**सङ्घकृत **पुस्तक**-गच्छ-**दे**शी
योद्यद्गणाधिपसुतार्क्किकचक्रवर्त्ती ।
सैद्धान्तिकेश्वरशिखामणि**मेघचन्द्र**
स्त्रैविद्यदेव इति सद्बुधा( ) स्तुवन्ति ॥ २९ ॥

सिद्धान्ते जिन **वीरसेन**-सदृश शास्त्राब्ज भा भास्कर
षट्तर्क्केष्वकल**ङ्कदेव**विबुध साक्षादय भूतले ।
सर्व्व व्याकरणे विपश्चिदधिप श्री**पूज्यपाद**स्स्वय
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चानन ॥ ३० ॥

७ रुद्राणीशस्य कण्ठ धवलयति हिमज्योतिषोजातमङ्क
पीत सौवर्ण्णशैल शिशुदिनपतनु राहुदेः नितान्त ।
श्रीकान्तावल्लभाङ्ग कमलभववपुर्म्मेघचन्द्रव्रतीन्द्र—
त्रैविद्यस्याखिलाशावलयनिलयसत्कीर्त्तिचन्द्रातपोऽसौ ॥३१॥
मुनिनाथ दशधर्म्मधारि दृढषट्-त्रिंशद्गुण दिव्य वा
णनिधान निनगिल्लुचापमलिनीज्यासूत्रमोरोन्दे पू-
विन बाणङ्गलुमयदे हीननधिकङ्गाचेपममाप्पुदा-
व नय दर्प्पक **मेघचन्द्र** मुनियाल् माणिन्नदोर्द्दर्प्पम ॥३२॥
मृदुरेखाविलास **चावराज** बलहदल्बरेदुद विरुद रूवा
रिमुख तिलकगङ्गाचारि कण्डरिसिद **शुभचन्द्र** सिद्धान्त
देवरगुड्ड ।

(पूर्वमुख)

श्रवणीय शब्दविद्यापरिणति महनीय महातर्क्कविद्या—
प्रवणत्व श्लाघनीय जिननिगदित सच्छुद्धसिद्धान्तविद्या
प्रवणप्रागल्भ्यमेन्देन्दुपचितपुलक कीर्त्तिसल् कूर्त्तु-विद्व-
न्निवह त्रैविद्यनाम प्रविदितनेसेद **मेघचन्द्र** व्रतीन्द्र ॥३३॥
चमेगीगल् जैवन तीविदुदतुलतप श्रीगे लावण्यमीगल्
समसन्दिर्द्दत्तु तन्नि श्रुतवधुगधिकप्रौढियाय्तीगलेन्द
न्दे महाविख्यातिय ताल्दिदनमलचरित्रोत्तम भव्यचेतो-
रमण त्रैविद्यविद्योदितविशदयश मेघचन्द्रव्रतीन्द्र ॥३४॥
इदे हसीवृन्दमीण्टल् बगेदपुदु चकोरीचय चञ्चुविन्द
कदुकल् सार्द्दप्पुदीश जडेयोलिरिसलेन्दिर्द्दप सेज्जेगेरल् ।

पदेदप्प कृष्णनेम्बन्तेसेदु बिस लसत्कन्दलीकन्दकान्त
पुदिदत्ती मेघचन्द्रव्रतितिलकजगद्वर्त्तिकीर्त्तिप्रकाश ॥३५॥
पूजितविदग्धविबुधस-
माज त्रैविद्य-मेघचन्द्र व्रति रा
राजिसिद विनमितमुनि
राज वृषभगणभगणताराराज ॥३६॥

सक वर्ष १०३७ नेय मन्मथसंवत्सरद मार्ग्ग-सिर सुद्ध १४ बृहवार धनुलग्नद पूर्व्वाह्णदारुघलिगेयप्पागलु श्रीमूलसङ्घद देसिगगणद पुस्तकगच्छद श्रीमेघचन्द्रत्रैविद्यदवर्त्तम्मवशानकालमनरिदु पल्यङ्काशनदोलिद्दु आत्मभावनय भाविसुत्तु देवलोकक्के सन्दराभावनेयेन्तप्पुदेन्दोडे ॥

अनन्त बोधात्मकमात्मतत्त्व निधाय चेतस्यपहाय हेय ।
त्रैविद्यनामा मुनिमेघचन्द्रो दिव गतोबोधनिधिर्व्विशिष्टाम् ॥

अवरग्रशिष्यरशेष पद पदार्त्थ तत्त्व-विदरु सकलशास्त्रपारावारपारगरु गुरुकुलसमुद्धरणरुमप्प श्री प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देवर्त्तम्म गुरुगलगे परोक्षविनेय कारणमागि श्रीकब्बप्पु तीर्त्थदलू तम्म गुड्ड ॥

समधिगतपञ्चमहाशब्द महासामन्ताधिपति महाप्रचण्ड दण्डनायक वैरिभयदायक गोत्रपवित्र बुधजनमित्र स्वामिद्रोह-गोधूमघरट्ट सङ्ग्रामजत्तलट्ट विष्णुवर्द्धनभूपालहोय्सलमहाराज-राज्य समुद्धरण कलिगलाभरण श्रीजैनधर्म्मामृताम्बुधि प्रवर्द्धन-सुधाकर सम्यक्त्वरत्नाकर श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायकगङ्गराजनु

मत्तिन मनस्सरोवरराजहंसे भव्यजनप्रसंसे गोत्र निधाने रुक्मिणी समाने **लक्ष्मीमति**दण्डनायकितियुमन्तवरिन्दमतिशयमहा विभूतियि सुभलग्नदोलु प्रतिष्ठेय माडिसिदर् आमुनीन्द्रोत्तमर् ईनिसिधिगेयन् अवर तप प्रभावमेन्तप्पुदेन्दोडे ॥

समदोद्यन्मार गन्ध-द्विरद दलन १ कण्ठीरव क्रोध लोभ-
द्रुम-मूलच्छेदन दुर्द्धरविषयशिलाभेद वज्र प्रताप ।
कमनीय श्रीजिनेन्द्रागमजलनिधिपार **प्रभाचन्द्र**-सिद्धान्तमु
नीन्द्र मोहविध्वसनकरनेसेद धात्रियोल् यागिनाथ ॥ ३८ ॥

चावराज बरेद ॥

मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्णजिनाश्रयकोटिय क्रम
बेत्तिरे मुन्निनन्तिरनितूर्गलोल नेरे माडिसुत्तम—
स्युत्तमपात्रदानदोदव मेरेवुत्तिरे गङ्गवाडितो—
म्बत्तरु सासिर कोपणमादुदु गङ्गणदण्डनाथनि ॥ ३९ ॥

सोभेयनें कैकोण्डुदो
सौभाग्यद कणियेनिप्प **लक्ष्मीमति**यि-
न्दीभुवनतलदोला हा-
राभयभैसज्यशास्त्र दान विधान ॥४०॥

[यह लेख मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव की प्रशस्ति है। प्रथम श्लोक को छोड आदि के नव पद वे ही हैं जो शिलालेख न० ४२ (६६) में भी पाये जाते हैं। उनमें कुन्दकुन्दाचार्य, उमास्वाति गृद्ध पिच्छ, बलाक पिच्छ, गुणनन्दि, देवेन्द्र सैद्धान्तिक और कलधौतनन्दि मुनि का उल्लेख है।

---

१ द्विरदन बल

कलधौतनन्दि के पुत्र महेन्द्रकीर्त्ति हुए जिनकी आचार्य परम्पर मे क्रम स वीरनन्दि, गोल्लाचार्य, त्रैकाल्ययोगी, अभयनन्दि और सकलचन्द्र मुनि हुए। लेख मे इन आचार्यो के तप और प्रभाव का अच्छा वर्णन है। त्रैकाल्ययोगी के विषय मे कहा गया है कि तप के प्रभाव स एक ब्रह्मराक्षस उनका शिष्य होगया था। उनके स्मरणमात्र से बड बड भूत भागते थे उनके प्रताप से करञ्ज का तैल घृत में परिवर्तित होगया था। सकलचन्द्रमुनि के शिष्य मेघचन्द्र त्रैविद्य हुए जो सिद्धान्त म वीरसन, तर्क में अकलङ्क और व्याकरण मे पूज्यपाद के समान विद्वान् थे।

शक सं० १०३७ मागसिर सुदि १४ बृहस्पतिवार को उन्होंने सद्ध्यानसहित शरीर त्याग किया। उनके प्रमुख शिष्य प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देव ने महाप्रधान दण्डनायक गङ्गराज द्वारा उनकी निषद्या निर्माण कराई।

लेख चावराज का लिखा हुआ हे।]

४८ (१२८)

उसी मण्डप में तृतीय स्तम्भ पर

(शक स० १०४४)

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छन।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन॥ १॥
जयतु दुरितदूर क्षीरकूपारहार
प्रथितपृथुलकीर्त्तिश्रीशुभेन्दुव्रतीश।
गुणमणिगणसिन्धु शिष्टलोकैकबन्धु
विबुध-मधुप फुल्ल फुल्लबाणादि-सल्ल॥ २॥

अरर गुड्डि ॥

परमपदार्त्थनिर्न्नयमनान्त विदग्धते दुर्न्नयङ्गलोल्
परिचयमेन्दुमिल्लदतिमुग्धते तन्निनियङ्गे चित्तदोल् ।
पिरिदनुरागम पडेव रूपु विनेयजनान्तरङ्गदोल्
निरुपमभक्तिय पडेव पेम्पिवु लक्ष्मलेगेन्दुमन्वित ॥ ३ ॥

चतुरतेयोल् लावण्य दो–
लतिशयमेने नेगल्द देवभक्तियोलिन्ती
क्षितियोलगे गङ्गराजन
सति लक्ष्म्यम्बिक्कयोलितरसतियर्द्दोरेये ॥ ४ ॥

सौभाग्यदोलमर्द्दद
सोभास्पदमादरूपिनोल्पि प्रत्य–
क्षीभूत लक्ष्मियेन्दपु–
दी भूतलमिनितुमेय्दे लक्ष्मीमतिय ॥ ५ ॥

शोभेयनें कय्कोण्डुदो
सौभाग्यद कणियेनिप्प लक्ष्मीमतिथि–
न्दी भुवन तलदोलाहा–
राभय भैश(ष)ज्यशास्त्रदानविधान ॥ ६ ॥

वितरणगुणमदे वनिता–
कृतिय कय्कोण्डुदेनिप महिमेय लक्ष्मी–
मतियेलवो देवताधि–
ष्टितेयल्लदे केवल मनुष्याङ्गनेये ॥ ७ ॥

इभगमने हरिणलोचने

शुभलक्षणे गङ्गराजनर्द्धाङ्गने ता-
नभिनवरुग्मिणियेनली
त्रिभुवनदोल् पोल्वरोलरे लक्ष्मीमतिय ॥ ८ ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद श्रीमत् शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्डि दण्डनायकिति लक्कव्वे **सक वर्ष १०४४ नेय प्लवसम्वत्सरद शुद ११ शुक्रवारदन्दु** सन्यसन गेय्दु समाधिवेरसि मुडिपि देवलोकक्के सन्दल् ॥

परोक्षविनेयक्के निषिधिगेय श्रीमद्दण्डनायक गङ्गराज निलिसि प्रतिष्ठेमाडि महादानमहापुजेगल माडिदरु मङ्गल महा श्री श्री ॥

[इस लेख में दण्डनायक गङ्गराज की धर्मपत्नी लक्ष्मीमति के गुण, शील और दान की प्रशंसा की गई है। इस धर्मपरायण साध्वी महिला ने शक सं० १०४४ में संन्यास विधि से शरीर त्याग किया। वह मूलसंघ पुस्तक गच्छ देशीगण के शुभचन्द्राचार्य की शिष्या थी। अपनी साध्वी स्त्री की स्मृति में दण्डनायक गङ्गराज ने यह निषद्या निर्माण कराई।]

४८ (१२८)

उसी मण्डप में चतुर्थ स्तम्भ पर

(शक सं० १०४२)

(उत्तरमुख)

भद्रमस्तु जिनशासनस्य ॥

जयतु दुरितदूर क्षीरकूपारहार

• प्रथितपृथुलकीर्त्तिश्श्री **शुभेन्द्र** व्रतीश ।
गुणमणिगणसिन्धु शिष्ट लोकैकबन्धु
विबुधमधुपफुल्ल फुल्लबाणादिसल्ल ॥ १ ॥

श्रीवधुचन्द्रलेखे सुरभूरुहदुद्भवदि पयोधि-वे-
लावधु पेम्पु वेत्तवोलनिन्दिते नागले चारुरूपली-
लावति दण्डनायकिति **लक्कले देमति बूचि**राजने
म्बा विभु पुट्टे पेम्पु वडेदार्जिसिदल् पिरिदप्पकीर्त्तिय ॥२॥

वचन ॥ श्रा यब्बेय मगलेन्तप्पलेन्दडे । स्वस्ति निस्तुषाति
जितवृजिन भाग भगवदर्हदर्हणीयचारुचरणारविन्दद्वन्द्वानन्दव
न्दनवेलाविलोकनीयाद्मायमाण–लक्ष्मीविलासेयु । अपहसनी
यस्वीयजीवितेशजीवितान्तजीवनविनोदानारतरतरतिविलासेयु ।
कालेयकालराक्षसरक्षाविकलसकलवाणिजत्राणतिप्रचण्डचा-
मुण्डातिश्रेष्ठराजश्रेष्ठिमानसराजमानराजहंसवनिताकल्पेयु ।
परमजिनमतपरित्राणकरणकारणीभूत –जिनशासनदेवताकारा
कल्पेयु । अभिरामगुणगणवशीकरणीयतानुकरणीयधरणीसुतेयु ।
श्रीसाहित्यसत्यापितक्षीरोदसुतेयु । सद्धर्म्मानुरागमतियुएनिसि
ददेमियक्क ॥

पद्य ॥ श्रीचामुण्डमनोमनोरथरथव्यापारणैकक्रिया
श्रीचामुण्डमनस्सरोजरजसाराजद्द्विरेफाङ्गना ।
श्रीचामुण्डगृहाङ्गणोद्गतमहाश्रीकल्पवल्ली स्वय
श्रीचामुण्डमन प्रिया विजयतांश्रीदेमवत्यङ्गना ॥ ३ ॥

(पश्चिममुख)

आहार त्रिजगज्जनाय विभय भीताय दिव्यौषध
व्याधिव्यापदुपेतदीनमुखिने श्रोत्रे च शास्त्रागम ।
एव देवमतिस्सदैव ददती प्रप्रचये स्वायुषा--
मर्हद्देवमतिंविधाय विधिना दिव्या वधू प्रोदभू ।। ४ ।।
आसीत्परक्षोभकरप्रतापाशेषावनीपालकृतादरस्य ।
चामुण्डनाम्नो वणिज प्रियास्त्री मुख्यामती या भुविदे-
मतीति ।। ५ ।।

भूलोक-चैत्यालय चैत्य पूजा व्यापार कृत्यादरताऽवतीर्णा
स्वर्गात्सुरस्त्रीतिविलोक्यमाना पुण्येनलावण्यगुणेनयात्र ।।६।।
आहारशास्त्राभयभेषजाना दायिन्यलवर्णाचतुष्टयाय ।
पश्चात्समाधिक्रियययायुरन्ते स्वस्थानवत्स्व प्रविवेशयोच्चै ।।७।।
सद्धर्म्मशत्रु कलिकालराज जित्वा व्यवस्थापितधर्म्मवृत्या ।
तस्याजयस्तम्भनिभशिलाया स्तम्भव्यवस्थापयतिस्म लक्ष्मी ।८।

श्रीमूलसङ्घद देशिगगणद पुस्तकगच्छद **शुभचन्द्र** सिद्धान्तदेवर गुड्डि **सकवर्ष १०४२** नेय **विकारिसवत्सर-दफाल्गुणब ११ बृहवारदन्दु** सन्यासन विधियि देमियक्क मुडिपिदलु ।।

[इस लेख में चामुण्ड नाम के किसी प्रतिष्ठित और राजसम्मानित वणिक् की धर्मवती भार्या 'देमति' व 'देवमति' की प्रशसा है । इस महिला की माता का नाम 'नागले' व उसके एक भाई और बहिन के नाम क्रमश बूचिराज और लक्कले थे । दान पुण्य के कार्यों में जीवन

व्यतीत कर इस महिला ने शक सं० १०४२, फाल्गुण वदि ११ बृहस्पति वार को संन्यास विधि से शरीर त्याग किया। यह महिला शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या थी।]

५० (१४०)

गन्धवारण बस्ती के प्रथम मण्डप मे एक स्तम्भ पर

(शक स० १०६८)

(पूर्वमुख)

भद्र भूयाज्जिनेन्द्राणा शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्त्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ १ ॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमलजिनवरानीकसौधोरुवार्द्धि
प्रध्वस्ताघप्रमेयप्रचयविषयकैवल्यबोधोरुवेदि ।
शस्तस्यात्कारमुद्राशबलितजनतानन्दनादोरुघोष
स्थेयादाचन्द्रतार परमसुखमहावीर्य्यवीचीनिकाय ॥ २ ॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्ग्गा श्रीगौतमाद्या प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौसप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौनन्दिगणे बभूव ॥ ३ ॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामाह्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्डकुन्द ।
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसजातसुचारणर्द्धि ॥ ४ ॥
अभूदुमास्वाति मुनीश्वरोऽसावाचार्य्यशब्दोत्तरगृद्ध
पिञ्छ ।
तदन्वयतत्सदृशोऽस्तिनान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्त्थवेदी ॥५॥
श्रीगृद्धपिञ्छमुनिपस्यबलाकपिञ्छ
शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्ति ।

चारित्रचञ्चुरखिलावनिपालमौलि
मालाशिलीमुखविराजितपादपद्म ॥ ६ ॥
तच्छिष्यो **गुणनन्दि** पण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर
स्तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापति ।
मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्प्पदर्प्पापह ॥ ७ ॥
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता
स्तेषूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्तशास्त्रार्त्थक
व्याख्याने पटवो विचित्रचरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनि
नानानूननयप्रमाणनिपुणो **देवेन्द्र**सैद्धान्तिक ॥ ८ ॥
अजनि महिपचूडारत्नराराजिताङ्घ्रि -
र्व्विजितमकरकेतूद्दण्डदोर्द्दण्डगर्व्व ।
कुनयनिकरभूध्रानीकदम्भोलिदण्ड
स्सजयतु **विबुधेन्द्रो** भारतीभालपट्ट ॥ ९ ॥
तच्छिष्य **कलधौतनन्दि**मुनिपस्सैद्धान्तचक्रेश्वर -
पारावारपरीतधारिणिकुलव्याप्तोरुकीर्त्तीश्वर ।
पञ्चाक्षोन्मदकुम्भिकुम्भदलनप्रोन्मुक्तमुक्ताफल —
प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभ ॥ १० ॥
तत्पुत्रको **महेन्द्रादिकीर्त्ति**र्म्मदनशङ्कर ।
यस्य वाग्देवता शक्ता श्रौती मालामयूयुजत् ॥ ११ ॥
तच्छिष्यो **वीरणन्दी** कवि गमक महावादि वाग्मित्वयुक्तो
यस्य श्रीनाकसिन्धुत्रिदशपतिगजाकाशसङ्काशकीर्त्ति ।

• गायन्त्युच्चैर्दिगन्ते त्रिदशयुवतय प्रीतिरागानुबन्धात्
सोऽय जीयात्प्रमादप्रकरमहिधराभीलदम्भोलिदण्ड ॥१२॥
श्री**गोल्लाचार्य्य**नामा समजनि मुनिपश्शुद्धरत्नत्रयात्मा
सिद्धात्माद्यर्त्थ-सार्त्थ प्रकटनपटु-सिद्धान्त शास्त्राब्धि वीची-
सङ्घातक्षालिताह प्रमदमदकलालीढबुद्धिप्रभाव
जीयाद्भूपाल-मौलि द्युमणि विदलिताङ्घ्रि रब्जलक्ष्मी
विलास ॥ १३ ॥

वीरणन्दिविबुधेन्द्रसन्ततौ नूत्नचन्दिलनरेन्द्रवंशचू
डामणि प्रथितगोल्लदेशभूपालक किमपि कारणेन स ॥१४॥
श्रीमत्**त्रैकाल्ययोगी** समजनि महिकाकायलग्नातनुत्र
यस्याभूद्वृष्टिधारा निशित शर गणा ग्रीष्ममार्त्तण्डबिम्ब ।
चक्रसद्वृत्तचापाकलितयतिवरस्याघशत्रून्विजेतु
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्सजयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दु ॥ १५॥
गङ्गण्णन लिखित

(दक्षिणमुख)

तपस्सामर्त्थ्यतो यस्य छात्रोऽभूद्ब्रह्मराक्षस ।
यस्य स्मरणमात्रेण मुञ्चन्ति च महाग्रहा ॥ १६ ॥
प्राज्याज्यतां गत लोके करञ्जस्य हि तैलक ।
तपस्सामर्त्थ्यतस्तस्य तप किं वर्ण्णितुक्षम ॥ १७ ॥
त्रैकाल्य योगि यतिपाग्र विनेयरत्न
स्सिद्धान्तवार्द्धिपरिवर्द्धनपूर्णचन्द्र ।
दिग्नागकुम्भलिखितोज्ज्वलकीर्त्तिकान्तो

जीयादसावभयनन्दिमुनिर्ज्जगत्या ॥ १८ ॥

येनाशेषपरीषहादिरिपवस्सम्यग्जिता प्रोद्धता
येनाप्ता दशलक्षणोत्तममहाधर्म्माख्यकल्पद्रुमा ।
येनाशेष भवोपताप हनन स्वाध्यात्मसवेदन
प्राप्त स्यादभयादिनन्दिमुनिपस्सोऽथ कृतार्त्थो भुवि ॥ १९ ॥

तच्छिष्यस्सकलागमार्त्थनिपुणो लोकज्ञतासयुत-
स्सच्चारित्रविचित्रचारुचरितस्सौजन्य कन्दाङ्कुर ।
मिथ्यात्वाब्जवनप्रतापहननश्श्रीसोमदेवप्रभु-
र्ज्जीयात्सत्सकलेन्दु नाममुनिप कामाटवीपावक ॥ २० ॥

अपिच सकलचन्द्रो विश्वविश्वम्भरेश
प्रणुतपदपयोज कुन्दहारेन्दुरोचि ।
त्रिदशगजसुवज्रव्योमसिन्धुप्रकाश
प्रतिमविशदकीर्त्तिर्व्वागवधूकर्ण्णपूर ॥ २१ ॥

शिष्यस्तस्य दृढव्रतशमनिधिस्सत्सयमाम्भोनिधि
शीलानां विपुलालयस्समितिभिर्य्युक्तस्त्रिगुप्तिश्रित ।
नानासद्गुणरत्नरोहणगिरि प्रोद्यत्तपोजन्मभू
प्रख्यातो भुवि मेघचन्द्र मुनिपस्त्रैविद्यचक्राधिप ॥२२॥

श्रीभूपालकमौलिलालितपदस्सज्ञानलक्ष्मीपति–
श्चारित्रोत्करवाहनश्शितयशश्शुभ्रातपत्राञ्चित ।
त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयस्सद्धर्म्मचक्राधिप
पृथ्वीसस्तवतूर्य्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वर ॥ २३ ॥

• शाब्दौघस्य शिरोमणि प्रविलसत्तर्कज्ञचूडामणि
सैद्धान्तेषुशिरोमणि प्रशमवद्व्रात्तस्य चूडामणि ।
प्रोद्यत्सयमिना शिरोमणिरुदञ्चद्भव्यरत्नामणि—
र्जीयात्सन्नुतमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूडामणि ॥ २४ ॥
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिन पत्युर्म्ममासि प्रिया
वाग्देवा दिसहावहित्थहृदया तद्वश्यकर्म्मार्त्थिनी ।
कीर्त्तिर्व्वारिधि दिक्कुलाचलकुलस्वादात्म [ ] प्रष्टुम-
प्यन्वेष्टु मणिमन्त्रतन्त्रनिचय सा सम्भ्रमाभ्राम्यति ॥२५॥
तर्कन्यायसुवज्रवेदिरमलार्हत्सूक्तितन्मौक्तिक
शब्दग्रन्थविशुद्धशङ्खकलितस्स्याद्वादसद्विद्रुम ।
व्याख्यानोर्ज्जितघोषण प्रविपुलप्रज्ञोद्भवीचीचया
जीयाद्विश्रुत**मेघचन्द्र** मुनिपस्त्रैविद्य रत्नाकर ॥ २६ ॥
श्री**मूल**सङ्घकृत पुस्तक गच्छ **देशी**
योद्यद्गणाधिपसुताकिकचक्रवर्त्ती ।
सैद्धान्तिकेश्वरशिखामणि**मेघचन्द्र**—
स्त्रैविद्यदेव इति सद्विबुधा ( ) स्तुवन्ति ॥ २७ ॥
सिद्धान्ते जिन**वीरसेन**-सदृशश्शास्त्याब्ज-भा-भास्कर
षट्तर्केष्व**कलङ्कदेव**विबुधस्साक्षादय भूतले ।
सर्व्व व्याकरणे विपश्चिदधिप श्री**पूज्यपाद**स्स्वय
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चानन ॥ २८ ॥
लिखिता मनोहर परनारीसहोदरनप्प गङ्गणान लिखित

(पश्चिममुख)

रुद्राणीशस्य कण्ठ धवलयति हिमज्योतिषांजातमङ्क
पीत सौवर्ण्णशैल शिशुदिनपतनु राहुदेह नित
श्रीकान्तावक्षभाङ्ग कमलभववपुर्म्मेघचन्द्रव्रतीन्द्र-
त्रैविद्यस्याखिलाशावलयनिलयसत्कीर्त्तिच द्रातपोऽसौ ॥२९॥

मूवत्तारु गुणदिं
भावजन कट्टि पेट्ट वेन्नेदर् वृषदि ।
भाविपडे मेघचन्द्र-
त्रैविद्यरदेन्तो शान्तरसम तलेदर् ॥ ३० ॥

मुनिनाथ दशधर्म्मधारिदृढषट्त्रिंशद्गुण दिव्यबा
ण-निधान निनगिल्लु चापमलिनीज्यासूत्रमोरेन्देपू—
विन बाणङ्गलुमयूदे हीननधिकङ्गाचेपम माल्पुदा—
त्र नय दर्प्पक मेघचन्द्रमुनियोल् माणिन्नदोद्दर्प्पम ॥३१॥
श्रवणीय शब्दविद्यापरिणतिमहनीय महातर्क्कविद्या—
प्रवणत्व श्लाघनीय जिननिगदितसशुद्धसिद्धान्तविद्या—
प्रवणप्रागल्भ्यमेन्दंन्दुपचितपुलक कीर्त्तिसल् कूर्त्तु विद्व-
न्निवह त्रैविद्यनामप्रविदितनेसेद मेघचन्द्रव्रतीन्द्र ॥ ३२ ॥
च्चमेगीगल् जैावन तीविदुदतुलतप श्रीगे लावण्यमीगल्
समेसन्दिर्द्दत्तु तन्नि श्रुतवधुगधिकप्रौढियाय्ती गलेन्द
न्दे महाविख्यातिय तालिददनमलचरित्रोत्तम भव्यचेता—
रमण त्रैविद्यविद्योदितविशदयश मेघचन्द्र व्रतीन्द्र ॥३३॥
इदे हसीवृन्दमीण्टल् बगेदपुदु चकोरीचय चञ्चुविन्द
कदुकल् सार्द्दप्पुदीश जडेयोलिगिरिसलेन्दिर्द्दपसेज्जेगेरल् ।

* पदेदप्प कृष्णनेम्बन्तेसेदु बिसलसत्कन्दलीकन्दकान्त
पुदिदत्ती **मेघचन्द्र**व्रतितिलकजगद्वर्त्तिकीर्त्तिप्रकाश ॥३४॥
पूजितविदग्धविबुध स—
माज त्रैविद्यमेघचन्द्रव्रतिरा—
राजिसिद विनमितमुनि—
राज वृषभगणभगणतारारराज ॥ ३५ ॥
स्तब्धात्मरनतनुशर—
लुब्धरने वोगल्वे पोगले जिनशासन दु—
ग्धाब्धिसुधांशुवनखिल क—
कुद्धवलिमकीर्ति **मेघचन्द्र**व्रतिय ॥ ३६ ॥

तत्सधर्म्मरु ॥
श्री**बालचन्द्र**मुनिराजपवित्रपुत्र
प्रोद्दप्रवादिजनमानलतालवित्र ।
जीयादय जितमनोजभुजप्रताप
स्याद्वादसूक्तिशुभगश्**शुभकीर्ति**देव ॥ ३७ ॥
किंवापस्मृतिविस्मृत किमुफणिग्रस्त किमुग्रग्रह
व्यग्रोऽस्मिन्नवदश्रुगद्गदवचोम्लानानन दृश्यते ।
तज्जाने**शुभकीर्ति**देवविदुषा विद्वेषिभाषाविष
ज्वालाजाङ्गुलिकेन जिह्मितमतिर्व्वादीवराकस्स्वय ॥ ३८ ॥
घनदर्प्पोन्नद्धबौद्ध क्षितिधरपवियीबन्दनी बन्दनी बन्—
दनेसन्नैयायिकोद्यत्तिमिरतरणियी बन्दनी बन्दनी बन्
दनेसन्मीमांसकोद्यत्करि करिरिपु यी बन्दनी बन्दनी बन्

दने पो पो वादि पोगेन्दुलिवुदु शुभकीर्त्तिद्धकीर्त्तिप्रघोष॥३९॥

वितथोक्तियल्तजपशु—

पतिसाङ्गि येनिप्प मूवरु शुभकीर्त्ति—

व्रतिसन्निधियोल् नामो—

च्चितचरितरेतोडर्ईडितरवादिगललवे ॥ ४० ॥

सिङ्गद सरम कल्द म—

तङ्गजदन्तलुकि बलुकललदे सभेयोल् ।

पोङ्गि **शुभकीर्ति** मुनिपनो—

लेङ्गल नुडियल्के वादिगल्गोन्तेलदेय ॥ ४१ ॥

पो साल्वुदु वादि वृथा—

यास विबुधोपहासमनुमनोप—

न्यास निन्नीतेथे—

वास सदपुदे वादिवज्राङ्कुशनोल् ॥ ४२ ॥

गङ्गण्णन लिखित ॥ सेवणुबल्लरदेव रूवारिरामोजन मग दासोज कण्डरिसिद ॥

(उत्तरमुख)

त्रैविद्ययोगीश्वरमेघचन्द्रस्याभूत्प्रभाचन्द्र

मुनिस्सुशिष्य ।

शुम्भद्व्रताम्भोनिधिपूर्णचन्द्रो निर्द्धूतदण्डत्रितयो विशल्य ।४३।

त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रसुतप पीयूषवारासिज

सम्पूर्णाक्षयवृत्तनिर्म्मलतनु पुष्यद्बुधानन्दन ।

त्रैलोक्यप्रसरद्यश शुचिरुचि य प्रार्त्थपोषागम

• सिद्धान्ताम्बुधिवर्द्धनो विजयतेऽपूर्व्वप्रभाचन्द्रमा ॥४४॥
संसाराम्भोधिमध्योत्तरणकरणयानरत्नत्रयेश ।
सम्यग्जैनागमार्त्थान्वितविमलमति श्रीप्रभाचन्द्रयोगी ॥४५॥
सकलजनविनूत चारुबोधत्रिनेत्र
सुकरकविनिवास भारतीनृत्यरङ्गम् ।
प्रकटितनिजकीर्ति दिव्यकान्तामनोज
सकलगुणगणेन्द्र श्रीप्रभाचन्द्रदेव ॥ ४६ ॥
तत्सधर्म्मर् ॥
गणधरर श्रुतदोल् चा-
रण रिषयरनमलचरितदोल् योगिजना-
ग्रणिगणयेन्नदे मिक्कर-
नेणयेम्बुदे वीरणन्दिसैद्धान्तिकराल् ॥ ४७ ॥
हरिहर हिरण्यगर्ब्भर-
नुरवणियिं गेल्द कामन दीप्ततपो-
भरदिन्दुरिपिदरेने बि-
त्तरिसदरार्व्वीरणन्दिसैद्धान्तिकर ॥ ४८ ॥
यन्मूर्त्तिर्ज्जगता जनस्य नयने कर्प्पूरपूरायते ।
यत्कीर्त्ति कुकुभा श्रिय कचभरे मल्लीलतान्तायते ॥
।
जेजीयाद्भुविवीरणन्दिमुनिपो राद्धान्तचक्राधिप ॥४९॥
वैदग्धश्रीवधूटीपतिरलगुणालङ्कृतिर्म्मेघचन्द्र-
त्रैविद्यस्यात्मजातो मदनमहिभृतो भेदने वज्रपात ।

पश्चात् लेख में मेघचन्द्र के गुरुभाई बालचन्द्र मुनिराज का उल्लेख है। तत्पश्चात् शुभकीर्ति आचार्य का उल्लेख है जिनके सम्मुख वाद में बौद्ध, मीमांसकादि कोई भी नहीं ठहर सकता था। इसके पश्चात् लेख में मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव के शिष्य प्रभाचन्द्र और वीरनन्दि का उल्लेख है। प्रभाचन्द्र आगम के अच्छे ज्ञाता और वीरनन्दि भारी सैद्धान्तिक थे। लेख के अन्तिम भाग मे विष्णुवर्द्धन नरेश की पटराज्ञी शान्तलदेवी की धर्मपरायणता का भी उल्लेख है। वे प्रभाचन्द्र की शिष्या थीं। प्रभाचन्द्रदेव का स्वर्गवास शक सं० १०६८ आसोज सुदि १० बृहस्पति वार को हुआ। यह लेख उन्हीं का स्मारक है।]

५१ (१४१)

उसी स्थान के द्वितीय मण्डप मे प्रथम स्तम्भ पर

(शक स० १०४१)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥
सकल-जन-विनूत चारु बोध त्रिनेत्र
सुकरकविनिवास भारतीनृत्यरङ्ग ।
प्रकटितनिजकीर्त्तिर्दि व्यकान्तामनोज
सकलगुणगणेन्द्र श्री**प्रभाचन्द्र**देव ॥ २ ॥

अवर गुड्डुनेन्तप्पनेन्दडे ॥

स्वस्ति समस्तभुवनजनवन्द्यमानभगवदर्हत्सुरभिगन्धि गन्धोदककणव्यक्तमुक्तावलीकृतोत्तशहस सुजनमन कमलिनी-राजहस महाप्रचण्डदण्डनायक। शत्रुभयदायक। पतिहित

प्रकारन् । एकाङ्गवीर । सङ्ग्रामराम । साहसभीम । मुनिजन-विनयजनबुधजनमनस्सरोवरराजहंसननूनदानाभिनवश्रेयास । जिनमतानुप्रेक्षाविचक्षण । कृतधर्म्मरक्षण । दयारसभरितभृङ्गार । जिनवचनचन्द्रिकाचकोरनुमप्प श्रीमतु बलदेवदण्डनायकनन्ने नेगर्द ॥

पलरु मुन्निन पुण्यदेन्दोदविनि भाग्यके पक्कादोड
चलदि तेजदिनोल्पिनि गुणदिनादैादार्य्यदिं धैर्य्यदि ।
ललनाचित्तहरोपचारविधियि गाभीर्य्यदिं सैार्य्यदि
बलदेवङ्ग समानमप्परोलरे मत्तन्यदण्डाधिपरु ॥ ३ ॥

बलदेवदण्डनायक-
नलङ्घ्यभुजबलपराक्रम मनुचरित ।
जलनिधिवेष्टितधात्री-
तलदोळु समनारा मन्त्रिचूडामणियोळु ॥ ४ ॥

आ महानुभावनर्द्धाङ्गलक्ष्मियन्तप्पलेन्दड ॥

सतिरूपमल्तु नोर्प्पडे
क्षितियोळ् सैाभाग्यवतियनुन्नतमतिय ।
पतिहितेय गुणवतिय
सततकीर्त्तिपुदु बाचिकब्बेय भुवनजन ॥ ५ ॥

अवर्गो सुपुत्रर्प्पुट्टिद—
रवनितळ पोगळे रामलक्ष्मीधर र-
न्तवरिर्व्वर्ग्गुणगणदिं
रवितेज नागदेवनु सिङ्गणनु ॥ ६ ॥

(पश्चिम मुख)

अवरोलगे ॥

दोरेयारी भुवनङ्गलोलु दिटक्के केलु सम्यक्त्वदोलु सत्यदोलु
परमश्रीजिनपूजेयोलु विनयदोलु सौजन्यदोलु पेम्पिनोलु ।
परमोत्साहदे मार्प्पदानदेडेयोलु सौचव्रताचारदोलु
निरुत नोर्प्पडे **नागदेव**ने वल धन्यपेरद्रन्यरे ॥ ७ ॥

धन्तेनिप **नागदेवन**
कान्ते मनोरमणसकलगुणगणधरणी—
कान्तगवधिक नोर्प्पडे
कोन्तिय दोरेयेनिसि नागियक्क नेगर्दलु ॥ ८ ॥

अन्तवरिर्व्वर तनय
मन्ततमखिलोर्व्वियोलग जसवेसेविनेग ।
चिन्तितवस्तुवनीयलु
चिन्तामणिकामधेनुवेनिप बल्ल ॥ ९ ॥

एन्तेन्तु नोर्प्पड गुण—
वन्त कलिशुचिदयापर सत्यविद ।
आन्तेनेनुत बुधर—
आन्त कीर्त्तिपुदु धात्रियोलु बल्लणन ॥ १० ॥

आतननुजाते भुवन—
ख्यातियनेरे तालिद दानगुणदुन्नतियि ।
सीतादेविगवधिक
भूतलदोलगेच्चियक्कनेनेमेचदरारु ॥ ११ ॥

आजगज्जननि योडवुट्टिद ॥

भाविसिपञ्चपदङ्गल—
नोवदे परिदिक्कि मोहपासद तोडर।
देव गुरु सन्निधानद-
ला विभु बलदेवनमरगतिय पडेद ॥ १२ ॥

सकवर्ष १०४१नेय **सिद्धार्थि संवत्सरद मार्ग्गशिर-शुद्धपाडिव** सोमवारदन्दु मोरिङ्गेरेय तीर्त्थदलु सन्यसनवि-धियिं मुडिपिद ॥

आतन जननि नागियक्कनु एचियक्कनु परोक्षविनयके कब्ब-प्पुनाडोल् ओम्मालिगेय हललुपट्टसालेय माडिसि तम्म गुरुगल् प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर काल कर्च्चिधारापूर्व्वक माडिकोट्टरु आरेयकेरेयुम आ केरेय मूडण देसेयलु खण्डुग बेद्दले ॥

[इस लेख मे किसी बल्ल व बल्लण नामक धमवान् पुरुष के संन्यास विधि से शरीर त्याग करने पर उसकी माता और भगिनी द्वारा उसकी स्मृति मे एक पट्टशाला (वाचनालय) स्थापित करने और उसके चलाव के लिए कुछ जमीन दान करने का उल्लेख है। बल्लण के वंश का यह परिचय दिया गया है कि वह एक बडे पराक्रमी दण्डनायक बलदेव और उनकी पत्नी बाचिकबे का पौत्र और धर्मवान् नागदेव और उसकी स्त्री नागियक्क का पुत्र था। उसकी भगिनी का नाम एचियक्के था। बल्लण ने शक सं १०४१ मगसिर सुदि १ सोमवार को शरीर त्याग किया। इस के पश्चात् उक्त दान दिया गया और यह लेख लिखा गया। लेख के द्वितीय पद्य मे प्रभाचन्द्रदेव का उल्लेख है।]

---

१ सिद्धार्थ।

* लेख में यह सम्वत् सिद्धार्थि सम्वत्सर कहा गया है पर मिलान करने से शक स० १०४१ विकारी और शक सं० १०६१ सिद्धार्थी पाया जाता है। लेख में सम्वत की भूल है।

५२ (१४२)

उसी मण्डप मे द्वितीय स्तम्भ पर

(शक स० १०४१)

(पूर्व्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥

स्वस्त्यनवरतप्रबलरिपुबलविषमरावनीमहामहारिसहारक रणकारणप्रचण्डदण्डनायकमुग्दर्प्पणकर्णोजपकुभृत्कुलिश जिन-धर्म्महर्म्यमाणिक्यकलश मलयजमिलितकास्मीरकालागरुधूपधूम-ध्यामलीकृतजिनार्च्चनागार । निर्व्विकार मदनमनोहराकार । जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्ग वीरलक्ष्मीभुजङ्गनाहाराभयभैष ज्यशास्त्रदानविनोद जिनधर्म्मकथाकथनप्रमोदनुमप्प श्रीमतुबल-देवदण्डनायकनेनेनेगर्दे ॥

स्थिरने बाप्पमराद्रियिन्दवधिक गम्भीरने बाप्पु सा
गरदिन्दग्गलमेन्तु दानिय सुरोर्व्वीजक्के मारण्डलम् ।
सुरराजङ्गणे येन्दु कीर्त्तिपुदुकय्कोण्डकरिं सन्तत
धरेयेल्लबलदेवमात्यननिलालोकैकविख्यातन ॥ २ ॥

बलदेव दण्डनायक—

नलडग्यभुजबलपराक्रम मनुचरित ।

जलनिधिवेष्टितधात्री—
तलदोलु समनारो मन्त्रिचूडामणियोलु ॥ ३ ॥
पलरु मुन्निन पुण्यदोन्दोदविनिभाग्यक्केपक्कादोड
चलदिं तेजदिनोलिपिनि गुणदिनादौदार्य्यदिधैर्य्यदिं ।
ललनाचित्तहरोपचारविधियिं गाम्भीर्य्यदिं सौर्य्यदिं
बलदेवङ्गे समानमप्परोलरे मत्तन्यदण्डाधिपरु ॥ ४ ॥
आ बलदेवङ्ग मृग—
शाबेक्षणेयेनिप बाचिकब्बे गवखिलो—
र्व्वीबन्धु पुट्टिद गुण—
लोबरनदटलेव सिङ्गिमय्यनुदार ॥ ५ ॥
जिनधर्म्माम्बरतिग्मराचिसुचरित्र भव्यवशोत्तम
सिष्टिनिधान मन्त्रिचूडामणि बुधविनुत गोत्रवशाम्बरार्क्क ।
वनिताचित्तप्रिय निर्म्मलननुपमनत्युत्तम कूरे कूप्प
विनयाम्भोराशि विद्यानिधिगुणनिलय धात्रियोलिमङ्गि
मय्य ॥ ६ ॥

(पश्चिममुख)

जिनपदभक्तनिष्टजनवत्सलनाश्रितकल्पभूरुह
मुनिचरणाम्बुजातयुगभृङ्गनुदारननूनदानि म—
त्तिन पुरुषर्गे पोलिपुददार्द्दोरेयम्बिनेग नेगद्दनी—
मनुजनिधानननेन्दु पोगल्गु धरे पेर्ग्गडे सिङ्गिमय्यन ॥ ७ ॥
एने नेगल्द सिङ्गिमय्यन
वनिते मनोरथन लक्ष्मिमयेनिपलु रूपिं ।

जनविनुते सिरिय देविय—
ननुनयदि पोगल्वुदखिल भूतलवेल्ल ॥ ८ ॥
वचन ॥ श्रा महानुभावनवसानकालदोलु ॥
परमश्री जिनपादपङ्करुहम सद्भक्तियि तालिद नि—
र्भ्भरदिं पञ्चपदङ्गल नेनेयुत दुर्म्मोहसन्दोहम ।
त्वरित खण्डिसुत समाधिविधियिं भव्याब्जिनीभास्कर
निरुत पेर्ग्गडे सिङ्गिमय्यनमरेन्द्रावासम पार्दिद ॥ ९ ॥
स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाकल्याणाष्ट महाप्रातिहार्य्य-चतुस्त्रिंशदतिशयविराजमान भगवदर्हत्परमेश्वर परमभट्टारक मुखकमलविनिर्ग्गतसदसदादिवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवण-राद्धान्तादिसकलशास्त्रपारावारगपरमतपश्चरणनिरतरुमप्प श्रामन्मण्डलाचार्य्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डि नागियक्क सिरियव्वेयु सकवर्ष १०४१ नेय सिद्धार्त्थसम्वत्सरद कार्त्तिक सुद्ध द्वादस सोमवारदन्दु महापूजेय माडिनिशिधिय निरिसिदल् ॥

[महाधर्मवान् कीर्त्तिवान् और बलवान् दण्डनायक बलदेव और उसकी धर्मपत्नी बाचिक बे का पुत्र सिङ्गिमय हुआ जो उदारचरित और गुणवान् था। उसकी धर्मपत्नी का नाम सिरिय देवी था। सिङ्गिमय ने समाधिमरण कर स्वर्गलोक प्राप्त किया। मण्डलाचार्य प्रभाचन्द्र के शिष्य सिरियब्बे और नागियक्क ने सिङ्गिमय्य की स्मृति मे शक स० १०४१ कार्त्तिक सुदि १२ सोमवार को यह निषद्या निर्माण कराई]

[नाट—जैसा कि लेख न० ५१ के नोट में कहा जा चुका है शक स० १०४१ सिद्धार्थी नहीं था जैसा कि इस लेख म भी भूल से कहा गया है]

५३ (१४३)

उसी मडप मे तृतीय स्तम्भ पर—

(शक स० १०५०)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥ १ ॥

श्रीमद् यादववशमण्डनमणि क्षोणीशरक्षामणि
र्लक्ष्मीहारमणि नरेश्वरशिर प्रोत्तुङ्गशुम्भन्मणि ।
जीयान्नातिपथेक्षदर्प्पणमणि लोकैकचूडामणि
श्श्रीविष्णुर्व्विनयाच्चितो गुणमणि सम्यक्त्वचूडामणि ॥ २ ॥

एरेदमनुजङ्गे सुर भू-
मिरुह शरणेन्दवङ्गे कुलिशागार ।
परवनितेगनिलतनय ।
धुरदोलु पोणर्दङ्गे मृत्तु विनेयादित्य ॥ ३ ॥

एने तानु केरे देगुलङ्गलेनितानु जैनगेहङ्गल
न्तेनेतु नार्क्कलनूर्गल प्रजेगल सन्तोषदि माडिद ।
विनयादित्यनृपालपोय्सलने सन्दिर्द्दा बलिन्द्रङ्गे मे-
लेने पम्प पोगलवन्नानानो महागम्भीरन धीरनं ॥ ४ ॥

इट्टिगेगेन्दगलद कुलिगलक्केरेयादवु कल्लुगे गोण्ड पेर्
व्वेट्टु धरातलक्के सरियादवु सुण्णद भण्डि बन्द पे-

* र्व्वेट्टेये पञ्चमादुवेने माडिसिद जिनराजगेहम
नेट्टने पोय्सलसेनेने बण्णि परार्म्मले राजराजन ॥ ५ ॥
कन्द ॥ आ पोय्सल भूपङ्गे म-
हीपाल कुमारनिकरचूडारत्न ।
श्रीपति-निज भुज विजय म-
हीपति जनियिसिदनदटनेरेयङ्गनृप ॥ ६ ॥
वृत्त ॥ विनयादित्यनृपालनात्मजनिलालोकैककल्पद्रुम
मनुमार्ग्गं जगदेकवीरनेरेयङ्गोर्व्वीश्वर मिक्कना-
तनपु रिपुभूमिपालकमदस्सम्मर्दन **विष्णुव-**
र्द्धन भूप नेगल्द धरावलेयदोल् आराजकण्ठीरव ॥ ७ ॥
कन्द ॥ आ नेगल्देरेयङ्ग नृपा—
लन सूनुवृहद्वैरिमर्दन सकलधरि—
त्री नाथनर्त्थि जनता—
भानुसुत विष्णुभूपनुदय गेय्द ॥ ८ ॥
अरिनरपसिरास्फालन—
करनुद्धतवैरिमण्डलेश्वरमदस—
हरण निजान्वयैका—
भरण श्री बिट्टि देवनी वरदेव ॥ ९ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर । द्वारावतीपुरवराधीश्वर । यादवकुलाम्बरद्युमणि । सम्यक्तचूडामणि । मलपरोलगण्ड । चलकेबलु गण्डन् । आलिंमुन्निरिव । सौर्य्यम मेगे व । तलकाडुगोण्ड । गण्डप्रचण्ड । पट्टिपेरुमाल

निजराज्याभ्युदयैकरक्षणदक्षक । अविनयनरपालकजनशिक्षकं । चक्रगोट्ट वनदावानलन् । अहितमण्डलिककालानल । ताण्ड मण्डलिकमण्डलप्रचण्डदोर्व्वानल । प्रबलरिपुबलसहरणकारण । विद्विष्टमण्डलिकमदनिवारणकरण । नोलम्बराडिगोण्ड । प्रतिपक्षनरपाललक्ष्मियनिकुलिगोण्ड । तप्प तप्पुव । जय श्रीकान्तेयनप्पुव । कूरेकूर्प्प सौर्य्यम तोर्प्प । वीराङ्गना लिङ्गितदक्षिणदोर्द्दण्ड । नुडिदन्ते गण्ड । अदियमनहृदय शूल । वीराङ्गनालिङ्गित लोल । उद्धताराति कुञ्जवनकुञ्जर । सरणागतवज्रपञ्जर । महजकीर्त्तिध्वज । सङ्ग्रामविजयध्वज । चेङ्गिरेय मनोभङ्ग । वीरप्रसङ्ग । **नरसिङ्गवर्म्म**निर्म्मूलन । कल-पालकालानल । हानुङ्गलु गण्ड । चतुर्म्मुख गण्ड । चतुरचतु र्म्मुखन् । आहवषण्मुख । सरस्वतीकर्णावतंसन् । उन्नतविष्णुवस । रिपुहृदयसेल्ल । भीतरकोल्ल । दानविनोद । चम्पकामोद । चतुस्समयसमुद्धरण । गण्डराभरण । विवेकनारायण । वीरपारा-यण । साहित्यविद्याधर । समरधुरन्धर । पोय्सलान्वयभानु । कविजनकामधेनु । कलियुगपार्त्थ । दुष्टर्ग्गधूर्त्त । सङ्ग्रामराम । साहसभीम । हयवत्सराज । कान्तामनोज । मत्तगजभगदत्तन् । अभिनवचारुदत्त । नीलगिरिसमुद्धरण । गण्डराभरण । कोङ्ग-रमारि । रिपुकुलनलप्रहारि । तेरेयुरनलेव । कोयतूरतुलिव । हेञ्जेरुदिसापट्ट । मङ्ग्रामजत्तलट्ट । पाण्ड्यनबेङ्कोण्ड । उच्चङ्गि गोण्ड । एकाङ्गवीर । सङ्ग्रामधीर । पोम्बुचनिर्ल्लोटण । साविमले निर्ल्लोटण । वैरिकालानलन् । अहितदावानल । शत्रुनरपाल

दिशापट्ट मित्रनरपाललाटपट्ट । घट्टवललिव । तुलुवर सेलेव । गोयिन्दवाडिभयङ्करन् । अहितबलसङ्कर । रोद्दवतु-लिव । सितगर पिडिव । रायरायपुरसूरेकार । वैरिभङ्गार । वीरनारायण । सौर्य्यपारायण । श्रीमतुकेशवदेवपादाराधक । रिपुमण्डलिकसाधकाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतनु गिरिदुर्ग-वनदुर्गजलदुर्गाद्यनेकदुर्गङ्गलनश्रमदि कोण्ड चण्डप्रतापदि गङ्गवाडितोम्भत्तरु सासिरमुम लोक्किगुण्डिवर मुण्डिगे साध्य म्माडि । मत्त ॥

वृत्त—एलेयोलदुष्टरनुद्धतारिगल नाटन्दोत्ति बेङ्कोण्डुदो-
ब्बेलदिं देशमनावग तनगे साध्य माडिरलु गङ्गम—
ण्डलमेन्दोलेग तेत्तु मित्तु बेसन पूण्दिर्प्पिन विष्णु पो—
य्सलनिर्द सुखदिन्दे राज्यदोदविन्द सन्ततोत्साहदि ॥१०॥
एत्तिद नेत्तलत्तलिदिराद नृपालकरल्कि बल्कि क—
ण्डित्तु समस्तवस्तुगलनालुतनमसलेपुण्दु सन्तत ।
सुत्तलुमोलगिप्परेने मुन्निनवर्गमनेकरादव—
र्गत्तलग पोगर्त्तेगेने बण्णिपनावनो विष्णुभूपन ॥ ११॥

अन्तु त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-वर्द्धन पोय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा चन्द्रार्कतार बर सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि पिरियरसि पट्ट-महादेवि सान्तलदेवी ॥

(दक्षिणमुख)

स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणाभ्युदयसहस्रफलभोगभागिनि

द्वितीयलक्ष्मीलक्षणसमानेयु। सकलगुणगणानूनेयु। अभिनव रुगुमिणीदेवियु। पतिहितसत्यभावेयु। विवेकैकबृहस्पतियु। प्रत्युत्पन्नवाचस्पतियु। मुनिजनविनेयजनविनीतेयु। चतुस्समय समुद्धरणेयु। व्रतगुणशीलचारित्रान्त करणेयु। लोकैक विख्यातेयु। पतिव्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयु। सकलवन्दिजन-चिन्तामणियु। सम्यक्तचूडामणियु। उद्वृत्तसवतिगन्ध-वारणेयु। पुण्योपार्ज्जनकरणकारणेयु। मनोजराजविजेयपताकेयु। निजकुलाभ्युदयदीपिकेयु। गीतवाद्यसूत्रधारेयु। जिनसमयसमु-दितप्राकारेयु। जिनधर्म्मकथाकथनप्रमोदेयु। आहाराभयभैषज्य-शास्त्रदानविनोदेयु। जिनधर्म्मनिर्म्मलेयु। भव्यजनवत्सलेयु। जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गेयुमप्प॥

कन्द॥ आ नेगद्द विष्णुनृपन म—
नो नयन प्रिये चलालनीलालकि च—
न्द्रानने कामन रतियलु
तानेणे तोणे सरिसमाने शान्तलदेवी॥ १२॥

वृत्त। धुरदोलु विष्णुनृपालकङ्गे विजयश्रीवक्षदोलु सन्तत
परमानन्ददिनोतु निल्व विपुलश्रीतेजदुद्दानिय।
वरदिग्भित्तियनेय्दिसलूनेरेव कीर्तिश्रीयेनुतिप्पुदी
धरेयोलु शान्तलदेविय नेरेये बण्णिप्पण्णनेवण्णिप॥ १३॥

कलिकाल विष्णुवक्ष—
स्थलदोलुकलिकाललक्ष्मि नेलसिदलेने शा—

• न्तलदेविय सौभाग्यम—
नेल गलबण्णि सुवेनेम्बनेवण्णिसुव ॥ १४ ॥
शान्तलदेविगे मद्दु ण—
मन्तेगे सौभाग्यभाग्यवतिगे वच श्री—
कान्तेयुमगजयुमच्युत—
कान्तेयुमेणेयल्लदुलिद सतियर्दोरेये ॥ १५ ॥

अक्कर ॥ गुरुगलु प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवरे पेत्ततायि गुणनिधि-
माचिकब्बे
पिरियपेर्ग्गडे मारसिङ्गय्य तन्दे मावनु पेर्ग्गडे सिङ्गिमय्य ।
अरस विष्णुवर्द्धननृप वल्लभ जिननाथतनगेन्दु मिष्टदेय्व
अरसि शान्तलदेविय महिमेयबण्णिसल्लुबक्कुमेभूतलदोलु॥१६॥

सकवर्ष १०५० मूरेनेय विरोधिकृत्सम्वत्सरद चैत्र शुद्धपञ्चमी सोमवारदन्दु सिवगङ्गेय तीर्थदलु मुडिपि स्वर्ग्गतेयादलु॥

वृत्त ॥ ई कलिकालदोल् मनुबृहस्पतिवन्दि जनाश्रय जग—
व्यापितकामधेनुवभिमानि महाप्रभुपण्डिताश्रय ।
लोकजनस्तुत गुणगणाभरण जगदेकदानिय—
व्याकुलमन्त्रियेन्दुपोगल्गु धरे पेर्ग्गडे मारसिङ्गन ॥ १७ ॥
दोरेयेपेर्ग्गडे मारसिङ्ग विभुविङ्गी कालदोलु [ ]
पुरुषार्थङ्गलोलत्युदारतेयोल धर्म्मानुरागङ्गलोलु ।
हरपादाम्बुजभक्तियोलु नियमदोलु शीलङ्गलोलु तानेनलु
सुरलोकक्के मनोमुदवेरसु पोद भूतल कीर्त्तिसल्लु ॥ १८ ॥

कन्द ॥ अनुपम शान्तल देवियु—

मनुनयदि तन्दे मारसिङ्गय्यनुमि

बिने जननि माचिकब्बेयु—

मिनिबरु मोडनोडने मुडिपि स्वर्ग्गतरादरु ॥ १९ ॥

लेखक बोकिमय्य ।

(पश्चिममुख)

अरसि सुरगतियनेय्दिद—

लिरलागेनगेन्दु बन्दु बेलुगोलदलु दु—

र्द्धर-सन्यासनदि [न्द]

परिणते तायि माचिकब्बे तानु तोरेदलु ॥ २० ॥

वृत्त ॥ अरेमगुल्दिर्द्दकण्मलर्ग्गलोदुव पञ्चपद जिनेन्द्रन

स्मरियिसुवोजे बन्धुजनम बिडिपुन्नति सन्यसक्केव

न्दिरलो सेदोन्दुतिङ्गलुपवासदोलिम्बिनेमाचिकब्बे ता।

सुरगतिगेय्दिदलु सकलभव्यरसन्निधियोलु समाधियिं ॥२१॥

कन्द ॥ आ मारसिङ्ग मय्यन

कामिनिजिनचरणभक्ते गुणसयुत ब—

द्दाम-पतिव्रते एन्दी—

भूमिजन पोगले माचिकब्बेये नेगल्दलु ॥ २२ ॥

जिनपदभक्ते बन्धुजनपूजितेयाश्रितकामधेनुका—

मन सतिग महासतिगुणाग्रणि दानविनोदे सन्तत ।

मुनिजनपादपङ्करुहभक्ते जनस्तुतं मारसिङ्गम—

य्यन सति माचिकब्बे येने कीर्त्तिंसुगु धरे मेच्चिनिच्चलु ॥२३॥

ʼ जिननाथ तनगाप्तनागे बलदेव तन्दे पत्तब्बे स—
द्वनिताग्रेसरे बाचिकब्बे येने तम्म सिङ्गण सन्दमान्—
तनदिन्दग्गद माचिकब्बे सुर लोकक्कोदलेन्देन्दुमे—
दिनियेल्ल पोगलुत्तमिप्पुदेने बण्णिप्पण्णनेवण्णिप ॥ २४ ॥

कन्द ॥ पेण्डिरस्सन्यासन गोण्डवरोलगिनितबल्लरारेम्बिन कै
कोण्डागलुघोरवीरव्रतपरिणतेय मेच्चि सन्तोषदिन्द ।
पाण्डित्य चित्तदोलु तलितरे जिनचरणाम्भोजम भाविसुत्त
कोण्डाडलुधात्रितन्न सुरगतिवडेदलुलीलेयिं माचिकब्बे ॥२५॥

दानमननूनम क
केनात्थीं येन्दु कोट्टु जिनन मनदोलु ।
ध्यानिसुत मुडिपिदलि—
न्नेनेम्बुदो माचिकब्बयोन्दुन्नतिय ॥२६॥

इन्तु तम्म गुरुगलु **प्रभाचन्द्र**सिद्धान्तदेवर **वर्द्धमान**देवर **रविचन्द्र**देवर समस्तभव्यजनङ्गल सन्निधियोलु सन्यसनम कैकोण्डवर पेल्व समाधिय केलुत्त मुडिपिदलु ॥

पण्डितमरणदिनी भू—
मण्डलदोलु माचिकब्बेयन्तेवोलार्कैं—
कोण्डिन्तु नेगल्दलरिगल—
खण्डितम घोर वीर सन्यासनम ॥ २७ ॥

अवर वशावतारमेन्तेन्दडे ॥

कन्द ॥ जिनधर्म्मनिर्म्मल भ—
व्य निधान गुणगणाश्रय मनुचरित ।

मुनिचरण कमल भृङ्ग
जन विनुत **नागवर्म्म**दण्डाधीश ॥ २८ ॥

वृत्त ॥ अनुपम नागवर्म्मनकुलाङ्गने पेम्पिन चन्दिकब्बे स—
ज्जननुते मानिदानिगुणिमिक्कपतिव्रते सीलदिन्दे मे—
दिनिसुतेग मिगिलुपोगललानरियें गुणदङ्ककातिय
जिनपदभक्तेय भुवनसस्तुतय जगदेकदानिय ॥२९॥

अवर्गों सुपुत्र बुधजन —
निवहक्कार्त्तीव कामधेनु वेनुत्त ।
भुवनजन पोगललु मि—
क्कवनुदय गयदनुत्तम **बलदेव** ॥३०॥

वृत्त ॥ सकलकलाश्रय गुणगणाभरण प्रभु पण्डिताश्रय
सुकविजनस्तुत जिनपदाब्जभृङ्गननूनदानिलौ—
किकपरमार्त्थमेम्बेरडुमन्नेरे बल्लनेनुत्ते दण्डना—
यक बलदेवन पोगल्वुदम्बुधि-वेष्टित भूरि भूतल ॥३१॥

मुनिनिवहक्के भव्यनिकरक्के जिनेश्वर पूजेगलगे मि—
क्कनुपमदानधर्म्मदोदविङ्ग निरन्तरमोन्दे मार्ग्गदिं ।
मनेयोलनाकुल मडुवेयन्दद पाङ्गिनोलुण्बुदेन्दडि
मनुजनिधानन पोगल्वने वोगल्व **बलदेव**मार्त्यन ॥३२॥

स्थिरने मेरु गिरीन्द्रदिन्दे मिगिले गम्भीरने बाप्पु सा-
गरदिन्दग्गल मेन्तु दानिये सुरोर्व्वीजक्केमेलु भागिये ।
सुरराजङ्गणे येन्दु कीर्त्तिपुदु कय्कोण्डल्करिं सन्तत
धरेयाल् श्रीबलदेवमात्यननिलालोकैकविख्यातन ॥३३॥

कन्दं ॥ **बलदेव**-दण्डनायक—

नलङ्घ्य-भुजबल पराक्रम मनुचरित ।

जलनिधिवेष्टितधात्री—

तलदोलु समनारो मन्त्रिचूडामणियोलु ॥३४॥

श्रीमत् **चारुकीर्त्तिदेवर** गुड्डु लेखक**बोकिमय्य** वरद विरुदरूवारि मुखतिलक गङ्गाचारिय तम्म कावाचारि कण्डरिसिद॥

(उत्तर मुख)

स्वस्त्यनवरतप्रबलरिपुबलविषमसमरावनिमहामहारिसंहार-करणकारण । प्रचण्डदण्डनायकमुखदर्प्पण । कथकमागध पुण्यपाठककविगमकिवादिवाग्मिजनतादारिद्रसन्तर्प्पण । जिन समयमहागगनशोभाकरदिवाकर । सकलमुनिजननिरन्तरदान गुणाश्रयश्रेयांस । सरस्वतीकर्ण्णावतंस । गोत्रपवित्र । पराङ्ग-नापुत्र । बन्धुजनमनोरञ्जन । दुरितप्रभञ्जन । क्रोधलोभानृत-भयमानमदविदूर । गुत्तचारुदत्तजीमूतवाहनसमानपरोपका रोदार । पापविदूर । जिनधर्म्मनिर्म्मल । भव्यजनवत्सल । जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गन् । अनुपमगुणगणोत्तुङ्ग । मुनिचरणसरसिरुहभृङ्ग । पण्डितमण्डलीपुण्डरीकवनप्रसङ्ग । जिनधर्म्मकथाकथनप्रमोदनु । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनो दनुमप्प श्रीमत् **बलदेव** दण्डनायकनेने नेगल्द ॥

आ बलदेवङ्ग मृग—

शावेक्षणे यनिप बाचिकब्बेगव खिलो—

र्व्वी बन्धु पुट्टिद गुणि—

लोबरनदटलेव सिङ्गिमय्यनुदार ॥३५॥

वृत्त ॥ जिनपतिभक्तनिष्टजनवत्सलनाश्रितकल्पभूरुह
मुनिचरणाम्बुजातयुगभृङ्गनुदारननूनदानि म—
त्तिन पुरुषर्ग्गे पोलिसुवडाद़ोरेयेम्बिनेग नेगल्दनी
मनुज निधाननेन्दु पोगल्गु धरे पेग्गडे सिङ्गिमय्यन ॥३६॥
जिनधर्म्माम्बरतिग्मरोचि सुचरित्र भव्यवशोत्तम सि—
ष्टनिधान मन्त्रिचिन्तामणि बुधविनुत गोत्रवशाम्बरार्क्क ।
वनिताचित्तप्रिय निर्म्मलननुपमनत्युत्तम कूरे कूर्प्पं
विनयाम्भोराशि विद्यानिधि गुणनिलय धात्रियोलिस ङ्गिमय्य ॥
॥ ३७ ॥

कन्द ॥ श्रीयादेवि गुणाग्रणि—
यी युगदोलु दानधर्म्मचिन्तामणि भू—
देविय कोन्ती देविय
दोरेयन्न सिङ्गिमय्यन वधुव ॥ ३८ ॥

स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणाभ्युदयसतसहस्रफलभोगभागिनि द्वितीयलक्ष्मीसमानेयु । सकलकलागमानूनेयु विवेकैकबृहस्पतियु मुनिजनविनेयजनविनीतेयु पतिव्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयु सम्यक्त चूडामणियु उद्वृत्तसवतिगन्धवारणेयु आहाराभयभैषज्यशास्त्र दानविनोदेयु अप्प श्रीमद्विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेवर पिरियरसिपट्ट-महादेवि शान्तलदेवियश्रीबेल्गोलतीर्थदोल् सवतिगन्धवारण जिनालयम माडिसियिदक्केदेवतापूजेग रिषिसमुदायक्काहारदानक्क जीर्णोद्धारक्क कल्कणिनाड मोट्टेनविलेयुम गङ्गसमुद्रद नडुवयल-

लयंय्वत्तुकोलगगर्द्देय तोण्टमुम नाल्वत्तुगद्याणपोन्ननिक्कि कट्टिसि चारुगिङ्ग विलसनकट्टमुम श्रीमद्विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेवर बेडि कोण्डु सकवर्ष सायिरद नाल्वत्तयूदेनेय **शोभकृत्सम्वत्सरद** चैत्रशुद्धपडिवबृहस्पतिवारदन्दु तम्म गुरुगलु श्री**मूल**सङ्घद **दे**शियगणद **पोस्त**कगच्छद श्रीम**न्मेघचन्द्र**त्रैविद्यदेवरशिष्यरप्प **प्रभाचन्द्र**सिद्धान्तदेवर्गे पादप्रक्षालन माडि सर्व्वबाधापरिहार-वागि बिट्टदत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषर्गायु महाश्रीयुम—
केयिद कायदे काय्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु बाणरा
सियोलेक्कोटिमुनीन्द्रर कविलेय वेदाढ्यर कोन्दुदो
न्दयश सार्ग्गुमिदेन्दु सारिदपुवी शैलाक्षर सन्तत ॥३६॥

श्लोक ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेति वसुन्धरा ।
षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टाया जायते क्रमि ॥४०॥

[यह लेख तीन भागों में विभक्त है । आदि से उन्नीसवें पद्य तक इसमें द्वारावती के यादव वंशीय पोय्सल नरेश विनयादित्य व उनके पुत्र और उत्तराधिकारी एरेयङ्ग व उनके पुत्र और उत्तराधिकारी विष्णु वर्द्धन का वर्णन है । विष्णुवर्द्धन बड़ा प्रतापी नरेश हुआ । इसने अनेक माण्डलिक राजाओं को जीतकर अपना राज्य विस्तार बढ़ाया । इसकी पटरानी शान्तलदेवी जैनधर्मावलम्बिनी, धर्मपरायणा और प्रभा चन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या थी । इसने शक सं १०५० चैत्र सुदि ५ सोमवार को शिवगङ्गे नामक स्थान पर शरीर त्याग किया । शान्तलदेवी के पिता का नाम मारसिङ्गय्य और माता का नाम माचिकब्बे था । इन्होंने शान्तलदेवी के पश्चात् शरीरत्याग किया ।

लेख के दूसरे भाग में, जो पद्य २० से ३४ तक जाता है, शान्तल देवी की माता माचिकब्बे का बेल्गोल में आकर एक मास के अनशन व्रत के पश्चात् सन्यास विधि से देहत्याग करने का वर्णन है और पश्चात् उसके कुल का वर्णन है। दण्डाधीश नागवर्म और उनकी भार्या चन्दिकब्बे के पुत्र प्रतापी बलदेव दण्डनायक और उनकी भार्या बाचिकब्बे से ही माचिकब्बे की उत्पत्ति हुई थी। माचिकब्बे ने अपने गुरु प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव, वर्धमानदेव और रविचन्द्रदेव की साक्षी से संन्यास ग्रहण किया था।

लेख के अन्तिम भाग मे बलदेव दण्डनायक और उनके पुत्र सिङ्गिमय्य की प्रशस्ति के पश्चात् शान्तलदेवी द्वारा सवति गन्धवारण नामक जिन मन्दिर निर्माण कराये जाने और उसकी आजीविका आदि के लिये विष्णुवर्द्धन नरेश की अनुमति से कुछ भूमि का दान दिये जाने का उल्लेख है। यह दान मूलसंघ देशिय गण, पुस्तक गच्छ के मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव के शिष्य प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को दिया गया था।]

[नोट—लेख में शक सं० १०५० विरोधिकृत् कहा गया है। पर ज्योतिष गणना के अनुसार शक सं० १०५० कीलक व सं० १०५३ विरोधिकृत् सिद्ध होता है। आगे का लेख (५४) शक १०५० कीलक संवत्सर का ही है। दान शोभकृत् (शुभकृत्) संवत् मे दिया गया था जो विरोधिकृत् से आठ वर्ष पूर्व (शक सं० १०४४) में पड़ता है।]

५४ (६७)

पार्श्वनाथ बस्ति में एक स्तम्भ पर

(शक सं० '१०५०)

(उत्तरमुख)

श्रीमन्नाथकुलेन्दुरिन्द्र परिषद्वन्द्यश्श्रुत श्री सुधा—
धारा धौत-जगत्तमोऽपह-मह पिण्ड प्रकाण्ड महत् ।
यस्मान्निर्म्मल धर्म्म वार्द्धि विपुलश्रीर्व्वर्द्धमाना सतां
भर्त्तुर्भव्य चकोर चक्रमवतु श्रीवर्द्धमानो जिन ॥१॥

जीयादर्त्थयुतेन्द्रभूतिविदिताभिख्यो गणी गौतम—
स्वामी सप्तमहर्द्धिभिस्त्रिजगतीमापादयन्पादयो ।
यद्बोधाम्बुधिमेत्य वीर-हिमवत्कुत्कीलकण्ठाद्बुधा—
म्भोदात्ता भुवन पुनाति वचन स्वच्छन्द मन्दाकिनी ॥२॥

तीर्थेश दर्शनभवन्नय हक्सहस्र बिस्रब्ध-बोध वपुषश्श्रु-
तकेवलीन्द्रा ।
निर्भिन्दता विबुध-वृन्द शिरोभिवन्द्यास्फूर्ज्जद्वच -कुलिशत.
कुमताद्रिमुद्रा ॥३॥

वर्ण्यं कथन्नु महिमा भण भद्रबाहो
र्म्मोहोरु मल्ल मद मर्द्दन-वृत्तबाहो ।
यच्छिष्यताप्तसुकृतेन स चन्द्रगुप्त
श्शुश्रूष्यतेस्म सुचिर वन देवताभि ॥ ४ ॥

वन्द्योविभुर्भुवि न कैरिह **कौण्डकुन्द**
कुन्द प्रभा प्रणयि कीर्त्ति विभूषिताश ।
यश्चारु चारण कराम्बुजचञ्चरीक
श्चक्रे श्रुतस्य भरते प्रयत प्रतिष्ठाम् ॥ ५ ॥

वन्द्योभस्मक भस्म सात्कृति पटु पद्मावती-देवता-
दत्तोदात्त पदस्व मन्त्र वचन व्याहूत चन्द्रप्रभ ।
आचार्य्यस्स **समन्तभद्र**गणभृद्येनेह काले कलौ
जैन वर्त्म समन्तभद्रमभवद्भद्र समन्तान्मुहु ॥ ६ ॥

चूर्णि ॥ यस्यैवविधा वादारम्भसरम्भविजृम्भिताभिव्यक्तय-
स्सूक्तय ॥

वृत्त ॥ पूर्व्वं पाटलिपुत्र मध्य नगरे भेरी मया ताडिता
पश्चान्**मा**लव-**सि**न्धु **ठ**क्क विषये **का**ञ्चीपुरे **वै**दिशे ।
प्राप्तोऽह **कर**हाटक बहु भट विद्योत्कट सङ्कट
वादार्त्थी विचराम्यहन्नरपते शार्द्दूल विक्रीडित ॥ ७ ॥

अवटु तटमटतिझटिति स्फुट पटु-वाचाटधूर्ज्जटेरपिजिह्वा ।
वादिनि समन्तभद्रे स्थितवति तव सदसि भूप कास्था-
न्येषां ॥ ८ ॥

योऽसौ घाति-मल द्विषद्बल शिला स्तम्भावली-खण्डन —
ध्यानासि पटुरर्हतो भगवतस्सोऽस्य प्रसादीकृत ।
छात्रस्यापि स **सिंहनन्दि** मुनिना नोचेत्कथ वा शिला–
स्तम्भोराज्य रमागमाध्व-परिघस्तेनासिखण्डो घन ॥ ९ ॥

वक्रग्रीव महामुने र्दश शत ग्रीवोऽप्यहीन्द्रो यथा—
जात स्तोतुमल वचोबलमसौ किं भग्न-वाग्मि व्रज ।
योऽसौ शासन देवता बहुमतो ह्री वक्त्र वादि ग्रह—
ग्रीवोऽस्मिन्नथ शब्द वाच्यमवदद् मासान्समासेन षट् ॥१०॥

नवस्तोत्र तत्र प्रसरति कवीन्द्रा कथमपि
प्रणाम वज्रादौ रचयत **परन्नन्दि**नि मुनौ ।
नवस्तोत्र येन व्यरचि सकलार्हत्प्रवचन-
प्रपञ्चान्तर्भाव प्रवण वर-सन्दर्भ सुभग ॥ ११ ॥

महिमा स **पात्रकेसरि**गुरों पर भवति यस्य भक्त्यासीत्
पद्मावती सहाया त्रिलक्षण कदर्थन कर्त्तु ॥ १२ ॥

सुमति-देवममु स्तुतयेन वस्सुमति सप्तकमाप्ततयाकृत ।
परिहृतापथ तत्त्व पथार्थिनांसुमति-कोटि विवर्त्ति भवार्त्ति
हृत् ॥ १३ ॥

उदेत्य सम्यग्दिशि दक्षिणस्या **कुमारसेनो** मुनिरस्तमापत् ।
तत्रैव चित्र जगदेक भानोस्तिष्ठत्यसौ तस्य तथा प्रकाश ॥१४॥

धर्म्मार्थकामपरिनिर्वृ तिचारुचिन्तश्चिन्तामणि प्रतिनिकेतम-
कारियेन ।
स स्तूयते सरससौख्यभुजा-सुजात**श्चिन्तामणि**र्मुनिवृषा
न कथ जनेन ॥१५॥

चूडामणि कवीनां चूडामणि-नाम सेव्य काव्य कवि ।
श्रीवर्द्धदेव एव हि कृतपुण्य कीर्त्तिमाहर्त्तु ॥१६॥

चूर्णि ॥ य एवमुपश्लोकितो **दण्डिना** ॥

जह्नो कन्या जटाग्रेण बभार परमेश्वर ।
श्रीवर्द्धदेव सन्धत्से जिह्वाग्रेण सरस्वती ॥१७॥

पुष्पास्त्रस्य जयो गणस्य चरणम्भूभृच्छिखा घट्टन
पद्भ्यामस्तु **महेश्वर**स्तदपिन प्राप्तु तुलामीश्वर ।
यस्याखण्ड कलावतोऽष्ट विलसद्दिकपाल मौलि स्खलत्—
कीर्त्तिस्वस्सरितो **महेश्वर** इह स्तुत्य स्स कैस्स्यान्मुनि
॥ १८ ॥

यस्सप्तति महा वादान् जिगायान्यानथामितान् ।
ब्रह्मरक्षोऽर्च्चितस्सोऽर्च्यो **महेश्वर**-मुनीश्वर ॥ १९॥

तारा येन विनिर्ज्जिता घट-कुटी गूढावतारा समं
बौद्धैर्य्यो धृत पीठ पीडित कुदृग्देवात्त सेवाञ्जलि ।
प्रायश्चित्तमिवाङ्घ्रि वारिज रज स्नान च यस्याचरत्
दोषाणा सुगतस्स कस्य विषयो **देवाकलङ्क** कृती ॥२०॥

चूर्णि ॥ यस्येदमात्मनोऽनन्य सामान्य निरवद्य विद्या-विभवोप
वर्णनमाकर्ण्यते ॥

राजन्**साहसतुङ्ग** सन्ति वहव श्वेतातपत्रा नृपा
किन्तुत्वत्सदृशा रणे विजयिनस्त्यागोन्नता दुर्ल्लभा ।
त्वद्वत्सन्ति बुधा न सन्ति कवयो वादीश्वरा वाग्मिनो
नाना शास्त्र विचारचातुरधिय काले कलौ मद्विधा ॥२१॥
नमो **मल्लिषेण** मलधारि देवाय ॥

(पूर्वमुख)

राजन्सर्व्वारि दर्प्प प्रविदलन पटुस्त्व यथात्र प्रसिद्ध—
स्तद्वत्ख्यातोऽहमस्या भुवि निखिल मदोत्पाटन पण्डितानां।
नाचेदेषोऽहमेते तव सदसि सदा सन्ति सन्तो महान्तो
वक्तु यस्यास्ति शक्ति स वदतु विदिताशेष-शास्त्रो यदि स्यात्॥
॥ २२ ॥

नाहङ्कार वशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवल
नैरात्म्य प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्य बुद्धया मया।
राज्ञ श्री**हिमशीतल**स्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनो
बौद्धौघान्सकलान्विजित्य सुगत पादेन विस्फोटित ॥२३॥

श्री**पुष्पसेन** मुनिरेव पदम्महिम्नो
देवस्स यस्य समभूत्स भवान्सधर्म्मा।
श्रीविभ्रमस्य भवनन्नतु पद्ममेव
पुष्पेषुमित्रमिह यस्य सहस्रधामा ॥२४॥

विमलचन्द्र मुनीन्द्र गुरोर्ग्गुरु प्रशमिताखिल वादिमद पद।
यदि यथावदवैष्यत पण्डितैर्न्ननुतदान्ववदिष्यतवाग्विभो
॥ २५ ॥

चूर्णि ॥ तथाहि। यस्यायमापादित परवादि हृदय शोक पत्रा-
लम्बन श्लोक ॥

पत्र शत्रु भयङ्करोरु भवन द्वारे सदा सञ्चरन्—
नाना राज करीन्द्र वृन्द-तुरग व्राताकुले स्थापितम्।
शैवान्पाशुपतास्तथागतसुतान्कापालिकान्कापिला—

नुद्दिश्योद्धत चेतसा **विमलचन्द्रा**शाम्बरेणादरात् ॥२६॥

दुरित-ग्रह-निग्रहाद्भय यदि भो भूरि नरेन्द्र वन्दितम् ।

ननु तेन हि भव्यदेहिनो भजतश्श्रीमुनिमि**न्द्रनन्दिनम्**

॥ २७ ॥

घट वाद-घटा कोटि कोविद कोविदा प्रवाक् ।

परवादिमल्ल देवो देव एव न सशय ॥२८॥

चूर्णि ॥ येनेयमात्म नामधेय निरुक्तिरुक्तानाम पृष्टवन्त **कृष्ण-राज** प्रति ॥

गृहीत-पक्षादितर परस्स्यात्तद्वादिनस्ते परवादिनस्स्यु ।

तषा हि मल्ल **परवादिमल्ल**स्तन्नाममन्नाम वदन्तिसन्त

॥ २९ ॥

आचार्य्यवर्य्यो यति**रार्य्यदेवो** राद्धान्त कर्त्ता

ध्रियतां स मूर्ध्नि ।

यस्स्वर्ग्गं यानोत्सव सीम्नि कायोत्सर्गस्थित

कायमुदुत्मसर्ज्ज ॥३०॥

श्रवण कृत तृणाऽसौ सयम ज्ञातु कामै

शयन विहित-वेला सुप्त लुप्तावधान ।

श्रुतिमरभसवृत्योन्मृज्य पिच्छेन शिश्ये

किल मृदु परिवृत्या दत्त तत्कोट वर्त्मा ॥३१॥

विश्व यश्श्रुत बिन्दुनावरुरुधे भाव कुशाग्रीयया

बुध्येवाति-महीयसा प्रवचसा बद्ध गणाधीश्वरै ।

शिष्यान्प्रत्यनुकम्पया कृशमतीनैद युगीनान्सुगी-

स्त वाचाच्चेत **चन्द्रकीर्त्ति** गणिन चन्द्राभ-कीर्त्ति बुधा ॥३२॥

सद्धर्म्म कर्म्म प्रकृति प्रणामाद्यस्योग्र-कर्म्म प्रकृति प्रमोच्च ।
तन्नाम्नि **कर्म्म** प्रकृतिन्नमामो भट्टारक दृष्ट-कृतान्त पारम् ॥ ३३ ॥

अपि स्व वाग्व्यस्त-समस्त विद्यस्त्रैविद्य शब्देऽप्यनुमन्यमान ।
श्रीपालदेव प्रतिपालनीयस्सता यतस्तत्व-विवेचनी धी ॥ ४ ॥

तीर्त्थं श्री**मतिसागरो** गुरुरिला चक्र चकार स्फुर-
ज्ज्योति पीत-तमर्पय -प्रविततिं पूत प्रभूताशय ।
यस्माद्भूरि परार्द्ध्य पावन गुण श्रीवर्द्धमानोल्लस
द्रत्नोत्पत्तिरिला तलाधिप शिरश्शृङ्गारकारिण्यभूत् ॥३५॥

यत्राभियोक्तरि लघुर्ल्लघु धाम-सोम-सौम्याङ्गभृत्स च भवत्यपि भूति भूमि ।
विद्या धनञ्जय पद विशदद्दधानो जिष्णु स एव हि महा-मुनि**हेमसेन** ॥३६॥

चूर्ण्णि ॥ यस्यायमवनिपति परिषदि निग्रह मही निपात भीति दुस्थ दुग्गर्व्व-पर्व्वतारूढ प्रतिवादिलोक प्रतिज्ञाश्लोक ॥

तर्क्के व्याकरणे कृत श्रमतया धीमत्तयाप्युद्धते
मध्यस्थेषु मनीषिषु क्षितिभृतामग्रे मया स्पर्द्धया ।
य कश्चित्प्रतिवक्ति तस्य विदुषो वाग्मेय-भङ्ग पर
कुर्व्वेऽवश्यमिति प्रतीहि नृपतेहे **हेमसेन** मत ॥३७॥

हितैषिणा यस्य नृणामुदात्त-वाचा, निबद्धा हित रूप-सिद्धि ।
वन्द्यो **दयापाल** मुनि स वाचा सिद्धस्सताम्मूर्द्धनि य
प्रभावै ॥ ३८ ॥

यस्य श्री**मतिसागरो** गुरुरसौ चञ्चद्यशश्चन्द्रसू
श्रीमान्यस्य स **वादिराज** गणभृत्स ब्रह्मचारी विभो ।
एकोऽतीव कृती स एव हि **दयापाल**व्रती यन्मन—
स्यास्तामन्य-परिग्रह-ग्रह कथा स्वे विग्रहे विग्रह ॥३९॥
त्रैलोक्य-दीपिका वाणी द्वाभ्यामेवोदगादिह ।
जिनराजत एकस्मादेकस्मा **द्वादिराजत** ॥४०॥
आरुह्याम्बरमिन्दु बिम्ब-रचितौत्सुक्य सदा यद्यश
श्छत्र वाक्चमरीज-राजि रुचयोऽभ्यर्णं च यत्कर्णयो ।
सेव्य सिहसमच्चर्य्य पीठ विभव सर्व्व प्रवादि प्रजा
दत्तोच्चैर्जयकार सार महिमाश्री**वादिराजो** विदां ॥४१॥
चूर्णि ॥ यदीय गुण गोचरोऽय वचन विलास-प्रसर कवीनां ।
नमोऽर्हते ॥
(दक्षिणमुख)

श्रीमच्चालुक्य चक्रेश्वर जयकटके वाग्वधू जन्म भूमौ
निष्काण्डण्डिण्डिम पर्य्यटति पटु रटो **वादिराज**स्य
जिष्णो ।

जह्यु यद्वाद-दर्प्पो जहिहि गमकता गर्व्व भूमा जहाहि
व्याहारेर्ष्यो जहीहि स्फुट-मृदु-मधुर श्रव्य-काव्यावलेप
॥ ४२ ॥

पाताले व्याल-राजो वसति सुविदित यस्य जिह्वा-सहस्र
निर्ग्गन्ता स्वर्गतोऽसौ न भवति धिषणो वज्रभृद्यस्यशिष्य ।
जीवेतान्तावदेतौ निलय बल वशाद्वादिन केऽत्रनान्ये
गर्व्वं निर्म्मुच्य सर्व्वं जयिनमिन सभे **वादिराज** नमन्ति
॥ ४३ ॥

वाग्देवी सुचिरप्रयोग सुदृढ प्रेमाणमप्यादरा
दादत्ते मम पार्श्वतोऽयमधुना श्री**वादिराजो** मुनि ।
भो भो पश्यत पश्यतैष यमिना किं धर्म्म इत्युच्चकै
रब्रह्मण्य परा पुरातनमुनेर्व्वाग्वृत्तय पान्तु व ॥४४॥
गङ्गावनिश्वर शिरो मणि-बद्ध सन्ध्या रागोल्लसच्चरण चारु-
नखेन्दु-लक्ष्मी ।
श्रीशब्द पूर्व्व विजयान्त विनूत नामा धीमानमानुष-गुणोऽ
स्ततम प्रमाणु ॥४५॥

चूर्णि ॥ स्तुतो हि स भवानेष श्री**वादिराज** देवेन ॥
यद्विद्या तपसो प्रशस्तमुभय श्री**हेमसेने** मुनौ
प्रागासीत्सुचिराभियोग-बलतो नीत परामुन्नतिं ।
प्राय श्रीविजये तदेतदखिल तत्पीठिकाया स्थिते
सङ्क्रान्त कथमन्यथानतिचिराद्विद्येदृगीदृक् तप ॥४६॥
विद्योदयोऽस्ति न मदोऽस्ति तपोऽस्ति भास्व-
न्नोग्रत्वमस्ति विभुतास्ति न चास्ति मान ।
यस्यश्रये **कमलभद्र**-मुनीश्वरन्त
य ख्यातिमापदिह शाम्यदघैर्ग्गुणौघै ॥४७॥

स्मरण-मात्र पवित्रतम मनो भवति यस्य सतामिह तीर्त्थिनां ।
तमतिनिर्म्मलमात्म विशुद्धये **कमलभद्र**सरोवरमाश्रये
॥ ४८ ॥

सर्व्वाङ्गैर्व्यमिहालिलिङ्ग सुमहाभाग कलौ भारती
भास्वन्त गुण रत्न भूषण गणैरप्यग्रिम योगिना ।
त सन्तस्तुवतामलङ्कृत **दयापाला**भिधान महा
सूरिं भूरिधियोऽत्र पण्डित पद यत्रैव युक्त स्मृता ॥४९॥

विजित मदन दर्प्पे श्री**दयापाल**देवो
विदित सकल-शास्त्रो निर्ज्जिताशेषवादी ।
विमलतर-यशोभिर्व्याप्त-दिक् चक्रवालो
जयति नत-महीभृन्मौलि-रत्नारुणांघ्रि ॥५०॥

यस्योपास्य पवित्र पाद-कमल-द्वन्द्वन्नृप **पोय्सलो**
लक्ष्मीं सन्निधिमानयत्स **विनयादित्य** कृताज्ञाभुव ।
कस्तस्यार्हति **शान्तिदेव** यमिनस्सामर्त्थ्यमित्थ तथे-
त्याख्यातु विरला खलु स्फुरदुरु-ज्योतिर्दृशा स्तादृशा ॥५१॥

स्वामीति **पाण्ड्य** पृथिवी-पतिना निसृष्ट
नामाप्त दृष्टि-विभवेन निज-प्रसादात् ।
धन्यस्स एव मुनिराहवमल्लभूभु—
गास्थायिका-प्रथित-शब्द-**चतुर्म्मुखाख्य** ॥५२॥

श्री**मुल्लू**र-विडूर-सारवसुधा रत्न स नाथो गुणो
नाच्चूणेन महीक्षितामुरु-मह पिण्डशिरो-मण्डन ।

• आराध्यो गुणसेन पण्डित पतिस्स स्वास्थ्यकामैर्ज्जना
यत्सूक्तागद-गन्धतोऽपि गलित ग्लानिं गति लम्भिता ॥५३॥

वन्दे वन्दितमादरादहरहस्स्याद्वाद-विद्या विदा
स्वान्त ध्वान्त वितान धूनन विधौ भास्वन्तमन्य भुवि ।
भक्त्या त्वाजितसेन मानतिकृतां यत्सन्नियोगान्मन —
पद्म सद्म भवेद्विकास-विभवस्योन्मुक्त निद्रा-भर ॥५४॥

मिथ्या-भाषण भूषण परिहरेतौद्धत्य . न्मुञ्चत
स्याद्वाद वदतानमेत विनयाद्वादीभ-कण्ठीरव ।
नो चेत्तद्गु गर्ज्जित श्रुति भय-भ्रान्ता स्थ यूय यत-
स्तूर्ण्ण निग्रह जीर्ण्णकूप-कुहरे वादि द्विपा पातिन ॥५५॥

गुणा कुन्द स्पन्दोड्डुमर समरा वगमृत वा —
प्लुव प्राय प्रेय प्रसर सरसा कीर्त्तिरिव सा ।
नखेन्दु ज्योत्स्नाङ्घ्रेन्नृ॑प चय चकोर प्रणयिनी
न कासा श्लाघाना पदमजितसेन व्रतिपति ॥५६॥

सकल भुवनपालानम्र मूर्द्धावबद्ध—
स्फुरित-मुकुट चूडालीढ पादारविन्द ।
मदवदखिल वादीभेन्द्र-कुम्भ प्रभेदी
गणभृदजितसेनो भाति वादीभसिंह ॥५७॥

चूर्ण्णि ॥ यस्य ससार वैराग्य वैभवमेवविधास्स्ववाच स्सूचयन्ति ।

प्राप्त श्रीजिनशासन त्रिभुवने यद्दुर्ल्लभ प्राणिना
यत्ससार-समुद्र-मग्न जनता हस्तावलम्बायित ।

यत्प्राप्ता परनिर्व्यपेक्ष सकल ज्ञान-श्रियालङ्कृता-
स्तस्मात्कि गहन कुतो भयवश कावात्र देहे रति ॥५८॥
आत्मैश्वर्य्यं विदितमधुनानन्त-बोधादि रूप
तत्सम्प्राप्त्यै तदनु ममय वर्त्ततेऽत्रैव चेत ।
त्यक्तान्यस्मिन्सुरपति-सुखे चक्रि सौख्ये च तृष्णा
तत्तुच्छात्थैरलमलमधी-ज्ञोभनैर्ल्लोकवृत्तै ॥५९॥
अजानन्नात्मान सकल विषय ज्ञान वपुष
सदा शान्त स्वान्त करणमपि तत्साधनतया ।
बही रागद्वेषै कलुषितमना कोऽपि यतता
कथ जानन्नेन क्षणमपि ततोऽन्यत्र यतते ॥६०॥

(पश्चिममुख)

चूर्ण्णि ॥ यस्य च शिष्ययो **कविताकान्त वादिकोला हला**परनामधेययो **शान्तिनाथपद्मनाभ** पण्डितयोरखण्ड-पाण्डित्य गुणोपवर्ण्णनमिदमसम्पूर्ण्ण ॥

त्वामासाद्य महाधिय परिगता या विश्व विद्वज्जन
ज्येष्ठाराध्य गुणाच्चिरेण सरसा वैदग्ध्य मम्पद्गिरा ।
कृत्स्नाशान्त-निरन्तरोदित यशश्रीकान्त शान्ते न ता
वक्तु सापि सरस्वती प्रभवति ब्रूम कथन्तद्वय ॥६१॥
व्यावृत्त-भूरि मद पन्तति विस्मृतेर्ष्या-
पारुष्यमात्त-करुणारुति-कान्दिशीक ।
धावन्ति हन्त परवादिगजास्त्रसन्त
श्री**पद्मनाभ**-बुध-गन्ध-गजस्य गन्धात् ॥६२॥

दीक्षा च शिक्षा च यतो यतीना जैनतपस्तापहरन्दधानात्
कुमारसेनोऽवतु यच्चरित्र श्रेय पथोदाहरण पवित्र ॥६३॥
जगद्दरिम-घस्मर-स्मर-मदान्ध गन्ध-द्विप-
द्विधाकरण केसरी चरण भूष्य भूभृच्छिख ।
द्वि-षड्-गुण-त्रपुस्तपश्चरण-चण्ड-धामोदयो
दयेत मम **मल्लिषेण मलधारिदेवो** गुरु ॥६४॥
वन्दे त **मलधारिण** मुनिपति मोह-द्विषद् व्याहति-
व्यापार-व्यवसाय सार-हृदय सत्सयमोरु श्रिय ।
यत्कायोपचयीभवन्मलमपि प्रव्यक्त भक्ति-क्रमा
नम्राकम्र मनो मिलन्मल मषि प्रक्षालनैकक्षम ॥६५॥
अतुच्छ तिमिर च्छटा-जटिल जन्म-जीर्णाटवी
दवानल-तुला जुषा पृथु तप प्रभाव त्विषां ।
पद पद पयोरुह भ्रमित भव्य भृङ्गावलि
र्म्ममोल्लसतु **मल्लिषेण** मुनिराण्मनो मन्दिरे ॥६६॥
नैर्म्मल्याय मलाविलाङ्गमखिल-त्रैलोक्य राज्यश्रिये
नैष्किञ्चन्यमतुच्छ-तापहृदयेन्यश्चद्धुताशन्तप ।
यस्यासौ गुण-रत्न रोहण-गिरि श्री **मल्लिषेणो** गुरु-
र्व्वन्द्यो येन विचित्र चारु चरितै र्द्धात्री-पवित्री कृता ॥६७॥
यस्मिन्नप्रतिमा क्षमाभिरमते यस्मिन्दया निर्द्दया
श्लेषो यत्र समत्वधी प्रणयिनी यत्रास्पृहा सस्पृहा ।
काम निर्वृत्ति-कामुकम्स्वयमथाप्यग्रेसरो योगिना
माश्चर्य्याय कथन्ननाम चरितैश्श्री**मल्लिषेणो** मुनि ॥६८॥

य पूज्य पृथिवीतले यमनिश सन्तस्स्तुवन्त्यादरात्
येनानङ्ग धनु र्ज्जित मुनिजना यस्मै नमस्कुर्व्वते।
यस्मादागम निर्णयोयमभृतां यस्यास्ति जीवेदया
यस्मिन्श्री**मलधारिणि**व्रतिपतौ धर्म्मोऽस्ति तस्मै नम ॥६९॥
धवल-सरस तीर्त्थे सैष सन्यास धन्या
परिणतिमनुतिष्ठ नन्दिमां निष्ठितात्मा ।
व्यसृजदनिजमङ्ग भङ्गमङ्गोद्भवस्य
प्रथितुमिव समूल भावयन्भावनाभि ॥७०॥

चूर्णि ॥ तेन श्रीमद **जितसेन** पण्डित देव-दिव्य श्री पाद-कमल मधुकरी भूत भावेन महानुभावेन जैनागमप्रसिद्धसल्लेखना विधि विसृज्यमान-देहेन समाधि विधि-विलोकनोचित करण कुतूहल मिलित सकल-सङ्घ सन्तोष निमित्तमात्मान्त करण परिणति-प्रकाशनाय निरवद्य पद्यमिदमाशु विरचित ॥

आराध्यरत्न त्रयमागमोक्त विधाय निश्शल्यमशेषजन्तो
क्षमां च कृत्वा जिनपादमूले देह परित्यज्य दिवविशाम ॥७१॥
शाके शून्य शराम्बरावनिमिते सवत्सरे कीलके
मासेफाल्गुनके तृतीय-दिवसेवारेसितेभास्करे।
स्वातौ श्वेत सरोवरे सुरपुर यातो यतीना पति
र्म्मध्याह्ने दिवसत्रयानशनत श्री **मल्लिषेणो** मुनि ॥७२॥

श्रीमन्मलधारि देवरगुड्डविरुद लेखक-**मदनमहेश्वर मल्लिनार्थं** बरेद विरुद-रूवारि मुख तिलक गङ्गाचारि कण्डरिसिद ॥

५५ (६९)

कत्तिले बस्ती के द्वारे से दक्षिण की ओर एक स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० १०२२)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यता प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादि मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ २ ॥

श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्री **कोण्डकुन्द** नामाभू-मूलसङ्घाग्रणी गणी ॥ ३ ॥
तस्यान्वयेऽजनि ख्याते देशिके गणे ।
गुणी देवेन्द्रसैद्धान्त देवो देवेन्द्र वन्दित ॥ ४ ॥

तच्छिष्यरु ॥

जयति **चतुर्म्मुख-देवो** योगीश्वर हृदय वनज-वन-दिननाथ ।
मदन-मद-कुम्भि कुम्भस्थल-दलनोल्वण-पटिष्ठ-निष्ठुर-सिंह ॥ ५ ॥

योन्दोन्दु दिग्विभागदो—
लोन्दोन्दष्टोपवासदि कायोत्स
र्गन्दलेने नेगल्दु त्रिज्गलू—
सन्दडे पारिसि चतुर्म्मुखरेयेनाल्दरु ॥ ६ ॥

अवर्गलिग शिष्यराद-
प्रविमल-गुणरमल कीर्त्ति-कान्ता पतिगल्।
कवि-गमकि वादि-वाग्मि—
प्रवर-नुतच्चतुरसीति-सङ्ख्येयनुल्लर् ॥ ७ ॥

अवरोलगे **गोपणन्दि** —
प्रवर-गुणरदिष्ट-मुद्रराघातयश
कविता पितामहर्त्त—
कें त्ररिष्ठव्र्वक्रगच्छदोल् पेसर्व्वडेदर् ॥ ८ ॥

जयति भुवि **गोपनन्दी** जिनमतलसदमृतजलधितुहिनकर
देशीयगणाग्रगण्यो भव्याम्बुज-षण्ड चण्डकर ॥ ९ ॥

वृत्त ॥ तुङ्गयशोभिराममनभिमान सुवर्ण-धराधर तपो
मङ्गल-लक्ष्मि वल्लभनिलातलनन्दितगोपनन्दिया—
वङ्गमसाध्यमप्प पलकालदनिन्द-जिनेन्द्र धर्म्मम
गङ्गनृपालरन्दिन विभूतिय रुढियनेय्दे माडिद ॥ १० ॥

जिनपादाम्भोज भृङ्ग मदन-मद-हर कर्म्म निर्म्मूलन वाग्-
वनिता-चित्त-प्रिय वादि-कुल कुधर-वज्रायुध चारु-विद्व
ज्जन-पात्र भव्य-चिन्तामणि सकल-कला कोविद काव्यकथा-
सननेन्दानन्ददिन्द पोगले नेगलदनी **गोपणन्दि** व्रतीन्द्र
॥ ११ ॥

मलेयदे **शाङ्ख्य** मट्टविरु **भौ**तिक पोङ्गि कडङ्गि वागदि-
र्चोलतालबुद्ध **बौद्ध** तले-दोरदे वैष्णवडङ्गडङ्गु वाग्—

बलद पोडप्पुं वेड गड **चार्व्वक** चार्व्वक निम्म दर्प्पम
सलिपने **गोपणन्दि**-मुनिपुङ्गवनेम्ब मदान्ध-सिन्धुर ॥१२॥

(दक्षिण मुख)

तगयल् **जैमिनि** तिप्पिकोण्डु परियल् **वैशेषिक** पोगदु-
प्पिडगेयोत्तल् सुगत कडङ्गि बले-गोयल्क**ऽक्षपाद**म्बिडल्—
पुगे **लोकायत**नेय्दे शाङ्ख्य नडसल्कम्मम्म षट्तर्क्क-वी
थिगलोल्तूल्दितु**गोपणन्दि** दिगिभ-प्रोद्भासि-गन्धद्विप ॥
॥ १३ ॥

दिटनुडिवन्यवादि मुख मुद्रितनुद्धतवादिवाग्बलो-
द्भट जय-काल दण्डनपशब्द मदान्ध कुवादि दैत्य-**धू
र्ज्जटि** कुटिल प्रमेय मद वादि भयङ्करनेन्दु दण्डुल
स्फुट पट्ट घोषदिक् तटमनेय्दितु वाकु पट्ट-**गोपनन्दिय**
॥१४ ॥

परम-तपो निधान वसुधैक कुटुम्ब जैनशासना-
म्बर परिपूर्णचन्द्र सकलागम तत्त्व-पदार्थ-शास्त्र-वि-
स्तर वचनाभिराम गुण रत्न विभूषण **गोपणन्दि** नि-
न्नोरेगिनिसप्पड दोरेगलिल्लेणे गाणेनिला [तला] अदोल्
॥ १५ ॥

कन्द ॥ एननेननेले पेल्वेनण्ण स
न्मान दानिय गुण व्रतङ्गल ।
दान-शक्त्यभिमान-शक्ति वि
ज्ञान शक्ति सले **गोपणन्दिय** ॥१६॥

अवर सधर्म्मरु ॥

जैनेन्द्रे **पूज्य [पाद.]** सकल-समय तर्के च **भट्टाकलङ्क**
साहित्ये **भार**विस्स्यात्कवि-गमक महावाद-वाग्मित्व-रुन्द्र ।
गीते वाद्ये च नृत्ये दिशि विदिशि च सवर्त्ति सत्कीर्त्ति-
मूर्त्ति
स्थेयाश्श्रीयोगिवृन्दार्च्चितपद**जिनचन्द्रो** वितन्द्रो
मुनीन्द्र ॥ २३ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

(पश्चिममुख)

बङ्कापुर-मुनीन्द्रोऽभूद् **देवेन्द्रो** रुन्द्र सद्गुण ।
सिद्धान्ताद्यागमार्त्थज्ञो सज्ञानादि गुणान्वित ॥ २४ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

बासवचन्द्र-मुनीन्द्रो रुन्द्र स्याद्वाद तर्क-कर्कश धिषण ।
चालुक्य कटक मध्ये **बाल-सरस्वति**रितिप्रसिद्धिप्राप्त
॥२५॥

इवर्ग्गे सहोदर-सधर्म्मरु ॥

श्रीमान्यश **कीर्त्ति** विशालकीर्त्तिस्स्याद्वाद तर्काब्ज-
विबोधनार्क ।
बौद्धादि वादि द्विप कुम्भ भेदी श्री**सिं**हलाधीश-कृतार्घ्य
पाद्य ॥२६॥

अवर सधर्म्मरु ॥

मुष्टि त्रय प्रमिताशन-तुष्ट शिष्ट प्रिय-**त्रिमुष्टि** मुनीन्द्र ।

दुष्टपरवादि मल्लोत्कृष्टश्री**गोपनन्दि** यतिपतिशिष्य ॥२७॥

अवर सधर्म्मरु ॥

मलदा [धा] रि **हेमचन्द्रो गण्डविमुक्तश्च गौल-**
मुनिनामा ।

श्री **गोपनन्दि** यति पति शिष्योऽभूच्छुद्ध दर्शनज्ञानाद्या ॥
॥ २८ ॥

कन्द ॥ धारिणियोल् मनसिजस—

हारिगल नेनेयलुग्रपाप किडुगु ।

सूरिगलनमल-गुण-स

न्धारिगल **गौल देव मल**धारिगल ॥ २९ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

श्री **मूलसङ्घ**गतदोषमेघे **देशीगणे** सच्चरितादिमद्गुणे ।

भारत्यतुच्छे वर**वक्र**गच्छे जात सुभाव **शुभकीर्त्ति** देव ॥
॥ ३० ॥

आजिरगे कीर्ति नर्त्तकिगाजिर भूगोलवाग **शुभकीर्ति**
बुध ।

राजावलि-पूजितनें राजिसिदनो **वक्रगच्छ देशीयगण**
॥ ३१ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

श्री **माघनन्दि**सिद्धान्तामृत-निधि जात **मेघचन्द्रस्य**

श्रीसोदरस्य भुवन ख्याताभय**चन्द्रिका** सुता जाता
॥ ३२ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

कल्याणकीर्ति नामाभूद्भव्य कल्याण कारक ।
शाकिन्यादि ग्रहाणां च निर्द्धाटन दुर्द्धर ॥ ३३ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

सिद्धान्तामृत वार्द्धि सूत सुवचो लक्ष्मी ललाटेक्षण
शब्द व्याहृति नायिकाम्ब(क)चकोरानन्दचन्द्रोदय ।
साहित्य-प्रमदाकटाक्ष विशिख व्यापार शिक्षागुरु
स्थेयाद्विश्रुत बालचन्द्रमुनिप श्रीवक्रगच्छाधिप ॥३४॥
श्रीमूलसङ्घ कमलाकर राजहसो
देशीय सद्गण-गुण-प्रवरावतस ।
जीयाज्जिनागम सुधार्णव पूर्णचन्द्र
श्रीवक्रगच्छ तिलको मुनिबालचन्द्र ॥३५॥
सिद्धान्ताद्यखिलागमार्त्थ-निपुण-व्याख्यानसशुद्धियि
शुद्धाध्यात्मक तत्वनिर्णय-वचो विन्यासदि प्रौढिस-
बद्ध-व्याकरणार्त्थ शास्त्र भरतालङ्कार-साहित्यदिं
राद्धान्तोत्तम बालचन्द्र मुनियन्तार्यातरी लोकदोल्
॥ ३६ ॥

विश्वाशा-भरित स्व शीतलकर-प्रभ्राजितस्सागर-
प्रोद्भूतस्सकलानत कुवलयानन्दस्सतामीश्वर ।
काम ध्वसन भूषित क्षितितले जातो यथार्त्थाह्वय-
स्सोऽय विश्रुत बालचन्द्र मुनिपस्सिद्धान्त-चक्राधिप
॥ ३७ ॥

(उत्तरमुख)

श्रीमूलसङ्घद देशीयगणद वक्रगच्छद कोण्डकुन्दान्वयद परियलिय **वड्डदेवर** बलिय। **देवेन्द्र**सिद्धान्तदेवरु। अवर शिष्यरु **वृषभनन्द्या**चार्य्यरेम्ब **चतुर्म्मुख**देवर। अवर शिष्यरु **गोपनन्दि** पण्डितदेवरु। अवर सधर्म्मरु **महेन्द्र-चन्द्र**-पण्डित देवरु। देवेन्द्र सिद्धान्तदेवरु। **शुभकीर्त्ति**-पण्डित देवरु **माघनन्दि**-सिद्धान्त-देवरु। **जिनचन्द्र** पण्डित-देवरु। **गुणचन्द्र**-मलधारि देवरु। अवरोलग**माघनन्दि** सिद्धान्त-देवरशिष्यरु। **त्रिरत्ननन्दि**-भट्टारक देवरु। अवर सधर्म्मरु **कल्याणकीर्त्ति**भट्टारकदेवरु। **मेघचन्द्र**-पण्डित देवरु। **बालचन्द्र**-सिद्धान्त देवरु। आ **गोपनन्दि**पण्डित-देवर शिष्यरु **जसकीर्त्ति** पण्डित देवरु। **वासवचन्द्र**-पण्डित-देवरु। **चन्दनन्दि**पण्डितदेवरु। **हेमचन्द्र** मलधारि गण्डविमुक्तरेम्ब **गौल**देवरु **त्रिमुष्टि** देवरु।

[यह लेख कुछ आचार्यों की प्रशस्तिमात्र है। लेख के अन्तिम भाग में उपरिवर्णित आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति है। ये सब आचार्य मूलसंघ देशिय गण और वक्र गच्छ के देवेन्द्र सिद्धान्तदेव के समकालीन शिष्य थे। चतुमुखदेव इसलिए कहलाये क्योंकि उन्होंने चारों दिशाओं की ओर प्रस्तुत मुख होकर आठ आठ दिन के उपवास किये थे। गोपनन्दि अद्वितीय कवि और नैयायिक थे जिनके सम्मुख कोई वादी नहीं ठहरते थे। प्रभाचन्द्र धाराधीश भोजदेव द्वारा सम्मानित हुए थे। माघनन्दि, और जिनचन्द्र भारी कवि, नैयायिक और

वैयाकरण थे। देवेन्द्र वङ्कापुर के आचार्यों के नायक थे। वासवचन्द्र ने अपने वाद पराक्रम से चालुक्य राजधानी मे बालसरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी। यश कीर्त्ति सैद्धान्तिक सिंहल द्वीप के नरेश द्वारा सम्मानित हुए थे। त्रिमुष्टि मुनीन्द्र बड़े सैद्धान्तिक थे और तीन मुष्टि अन्न का ही आहार करते थे। मलधारि हेमचन्द्र और शुभकीर्त्तिदेव बड़े सदाचारी आचार्य थे। कल्याणकीर्त्ति शाकिनी आदि भूत प्रेतो को भगाने की विद्या में निपुण थे। बालचन्द्र आगम और सिद्धान्त के अच्छे ज्ञाता थे।]

५६ (१३२)

गन्धवारण बस्ति के पूर्व की ओर

(शक सं० १०४५)

त्रैविद्योत्तम**मेघचन्द्र**सुतप पीयूषवाराशिज
सम्पूर्णाक्षयवृत्तनिर्म्मलतनु घुष्यद्बुधानन्दन ।
त्रैलोक्य प्रसरद्यशश्शुचिरुचिर्य्यप्रास्तदोषागम
सिद्धान्ताम्बुधिवर्द्धना विजयते पूर्व्वं प्रभाचन्द्रमा ॥ १ ॥

श्रीसोदराम्बुजभवादुदितोऽत्रिरत्रि
जातेन्दुपुत्र बुधपुत्र पुरूरवस्त ।
आयुस्ततश्च नहुषो नहुषाद्ययाति
तस्माद्यदुर्यदुकुले बहवो बभूवु ॥ २ ॥

ख्यातषु तेषु नृपति कथित कदाचित्
कश्चिद्वने मुनिवरेभ्य(ष्व) चल कराल ।

शार्दूलक प्रतिह **पोयसल** इत्यतोऽभू-
त्तस्याभिधा मुनिवचोऽपि चमूरलक्ष्म ॥ ३ ॥
ततो द्वारवतीनाथा **पोयसला** द्वीपिलाञ्छना ।
जाताश्शशपुरे तेषु **विनयादित्य**भूपति ॥ ४ ॥
स श्रीवृद्धिकर जगज्जनहित कृत्वा धरा पालयन्
श्वेतच्छत्रसहस्रपत्रकमले लक्ष्मी चिर वासयन् ।
दोर्द्दण्डे रिपुखण्डनैकचतुरे वीरश्रिय नाटयन्
चिक्षेपाखिलदिक्षु शिक्षितरिपुस्तेज प्रशस्तोदय ॥ ५ ॥
श्रीमद्या**दववश**मण्डनमणि क्षोणीशरक्षामणि
र्लक्ष्मीहारमणि नरेश्वरशिर प्रोत्तुङ्गशुम्भन्मणि ।
जीयान्नीतिपथेक्षदर्प्पणमणिर्लोकैकचूडामणि
श्श्रीविष्णुर्व्विनयार्जितो गुणमणिस्सम्यक्त्वचूडामणि ॥ ६ ॥
कन्द ॥ एरेद मनुजङ्गे सुरभू—
मिरुह शरणेन्दवङ्गे कुलिशागार ।
परवनितेगनिलतनय
धुरदोल् पोणर्दङ्गे मृत्यु **विनयादित्य** ॥ ७ ॥
बलिदडे मलेदडे मलपर—
तलेयोल् बलिडुवनुदितभयरसवसदि ।
बलियद मलेयद मलेपर—
तलेयोल् कैयिडुवनोडने विनयादित्य ॥ ८ ॥
श्रा पोयसल भूपङ्गे म—
हीपाल-कुमार-निकर-चूडारत्न ।

श्रीपतिनिज-भुजविनयम—
हीपति जनियिसिदनदटनेरेयङ्गनृप ॥ ९ ॥
वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति मूरेनेय मारुति नालकनेयुग्रवह्नियय्
देनेयसमुद्रमारेनेय पूगणेयेलनेयुर्ब्बरेषने
ण्टेनेय कुलाद्रियोम्भतनेयुद्वसमेतहस्तिप—
त्तेनेय निधानमूर्त्तियेने पोल्ववरारेरेयङ्गदेवन ॥ १० ॥
अरिपुरदोल्धगद्धगिल्दन्धगिलेम्बुदरातिभूमिपा
लरशिरदोल्गरिल्गरिगरीगरिलेम्बुदु वैरिभूतले
शर करुलोल् चिमिल्चिमि चिमीचिमिलेम्बुदुकोपवह्निदु-
र्द्धरतरमेन्दोडल्कुरदे कादुवरारेरेयङ्गदेवन ॥ ११ ॥
कन्द ॥ आ नेगल्द् **एरेग** नृपालन
सूनु बृहद्वैरिमर्द्दन सकलधरि
त्री नाथनर्त्थिजनता
भानुसुत जिष्णु **विष्णुवर्द्धन**नेसेद ॥ १२ ॥
उदेय गेयलोडनोडन
न्तुदितोदितमागे सकलराज्याभ्युदय ।
मदवदराति नृपालक
पदविदलननमम **विष्णुवर्द्धन** भूप ॥१३॥
वृत्त ॥ केलर किर्त्तिकि बेर बिदुर्द्दुकेलरनत्युग्रसङ्ग्रामदोलुबा—
ल्दले गोण्डाक्षेपदिन्द केलर तलेगल मेट्टि मिन्दुप्रकोप ।
मलेवत्युद्वृत्तरतोत्तलदुलिदु निजप्राज्यसाम्राज्यम तो
लूवलर्दिं निष्कण्टक माडिदनधिकबल विष्णु जिष्णुप्रताप॥१४॥

दुर्व्वारारिधराधरेन्द्रकुलिश श्रीविष्णुभूपालना-
र्द्देब्बट्टिलु सेडेदोडि पोगि भयदिन्दाबन्दनीबन्दनेन्द् ।
उर्व्वीपालर कङ्गे लोकमनितु तद्रूपमागिर्प्पिन
सर्व्वं विष्णुमय जगत्तेनिपिदे प्रत्यक्षमागिर्द्दो ॥१५॥

वचन ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वर द्वारावती-
पुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्तचूडामणि मल
परोलगण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृततनु । मत्त चक्रगा
**तलकाडु नीलगिरि कोङ्गु नङ्गलि कोलाल तेरयूरु कोय-
तूरु कोङ्गलियु उच्चङ्गि तलेयूरु पोम्बुर्च्चेवन्धासुरचौक**
बलेयवट्टण येन्दिवु मोदलागनेक दुर्ग्गं त्रयङ्गलनश्रमदि काण्डु
चण्ड-प्रतापदि गङ्गावाडि तोम्भत्तरु सासिरमुमनुण्डिगे साध्य
माडिसुखदि राज्य गेय्युत्तमिर्द्द श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभु
वनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग **विष्णुवर्द्धन पोय्**
सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्क-
तार बर सलुत्तमिरे ॥

कन्द ॥ आ नेगर्द्द विष्णुनृपन म—
नो नयनप्रिये चलालनीलालकि च
न्द्रानने कामन रतियलु ।
तानेणे तोणे सरि समाने **शान्तल देवि** ॥ १६ ॥

वृत्त ॥ अगगद **मारसिङ्ग** न मनोनयनप्रिय माचिकब्बेय
न्तगगदकीर्त्ति वेत्तेसेवरप्रतनूभवे **विष्णुवर्द्धन**ङ्ग-
गाद चित्तवल्लभयेनल्कभिवर्ण्णिपरारो **लक्ष्मि**ग-

न्तगगलमप्प मान्तनद **शान्तलदेविय** पुण्यवृद्धिय ॥१७॥

घुरदोल् विष्णुनृपालकङ्ग विजयश्रीवच्चदोल्सन्तत
परमानन्ददिनोतु निल्व विपुलश्रीतेजदुद्दानिय ।
वर दिग्भित्तियनेय्दिसलनेरेवकीर्त्तिश्रीयेनुत्तिप्पुदा
दरेयोल् **शान्तलदेविय** नेरेये बण्णिप्पातने वण्णिप ॥ १८ ॥

कन्द ॥ **शान्तल देविय** गुणम
शान्तलदेवियसमस्तदानोन्नतिय ।
शान्तलदेवियशीलम
चिन्त्य भुवनैकदानचिन्तामणिय ॥ १९ ॥

वचन ॥ स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणाभ्युदयशतसहस्रफलभोगभागिनी द्वितीयलक्ष्मी समानेयु । सकलकलागमानूनेयु । अभिनवरुग्मिणीदेवियु । पतिहितसत्यभावेयु । विवेकैकबृहस्पतियु । प्रत्युत्पन्नवाचस्पतियु । मुनिजनविनेयजनविनीतेयु । पतिव्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयु । सकलवन्दिजनचिन्तामणियु । सम्यक्तचूडामणियु । उद्वृत्तसवतिगन्धवारणेयु । चतु समयसमुद्धरकरणकारणेयु । मनोजराजविजयपताकेयु । निजकुलाभ्युदय दीपकेयु । गीतवाद्यनृत्यसूत्रधारेयु । जिनसमय समुदितप्राकारेयु । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदान-विनोदेयुमप्प **विष्णुवर्द्धन**पोय्सलदेवर पिरियरसि पट्टमहादेवी **शान्तलदेवि शकवर्ष सासिर** ४० य्देनेय **शोभकृतु** सवत्सरद चैत्रसुद्धपाडिवबृहस्पतिवारदन्दु श्री बेल्गोलद तीर्थदोल् सवतिगन्धवारणजिना-

लयम माडिसि देवता पूजेगर्षिसमुदायकाहारदानक कल्कणिनाड मोट्टेनविलेय तम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घद **देसियगणद पुस्तकगच्छद** श्रीम-**मेघचन्द्र** त्रैविद्यदेवर शिष्यर् **प्रभाचन्द्र** सिद्धान्त देवर्ग्गे पादप्रचालन माडि सर्व्वबाधापरिहारवागि बिट्ट दत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेयूदे कावपुरुषर्ग्गायु महाश्रीयु म-
केयिद कायदे काव्व पापिगे कुरुत्तेत्रोर्व्वियोल् बाणरा-
सियोलेर्क्कोटिमुनीन्द्ररं कविलेय वेदाढ्यर कोन्दुदो-
न्दयस साग्गुमिदेन्दु सारिदपुवी शैलाचरसन्तत ॥ २० ॥

श्लोक ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरति वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रमि ॥ २१ ॥

एलसनकट्टव केरेयागि कट्टिसि **सवतिगन्धहस्तिबसदिग** सरुगिगे देवियरु जिनालयक्के बिट्टरु ॥ श्रीमत् पिरियरसि पट्टमहादेवि **शान्तलदेवियरु** तावु माडिसिद सवतिगन्धवारणद बसदिगे श्रीम**द्विष्णुवर्द्धन** पोय्सल देवर बेडिकोण्डु **गङ्गस**मुद्रद केलगण नडुवयलयूवत्तु कोलग गर्द्दे तोटव श्रीमत्**प्रभाचन्द्र** सिद्धान्तदेवर काल कर्च्चि धारापूर्व्वक माडि बिट्ट दत्ति इदनलिदव **गङ्गेय** तडियोले हदिनेण्टु कोटि कविलेय कोन्द महापातक ॥ मङ्गलमहा श्री श्री ॥

(दक्षिण पार्श्वपर) श्रीमत्प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु **महेन्द्रकीर्त्ति** देवरु मुन्नूरहदिमूरु कच्चिन होलविगेय **शान्तलदेविय** बसदियं माडिसि कोट्टरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

[यह लेख शान्तलदेवी के दान का स्मारक है। लेख में यादवकुल की उत्पत्ति ब्रह्मा और चन्द्र से बतलाई है। इस कुल में 'सल' नामक एक राजा हुआ। एक बार वन में किसी साधु ने एक व्याघ्र की ओर संकेत कर इस राजा से कहा 'पोय्सल' (हे सल, इसे मारो)। तभी से इस राजा का नाम पोय्सल पड गया और उसने सिंह का चिह्न अपने मुकुट पर धारण किया। तब से इस वंश का नाम पोय्सल पड़ गया। लेख में इस वंश के विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन नरेशो के प्रताप का वर्णन है। विष्णुवर्द्धन की पटरानी शान्तलदेवी, जो शांति व्रत, धर्मपरायणता और भक्ति में रुक्मिणी, सत्यभामा, सीता जैसी देवियो के समान थी, ने सवति गन्धवारणबस्ति निर्माण कराकर अभिषेक के लिए एक तालाब बनवाया और उसके साथ एक ग्राम का दान मंदिर के लिए प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को कर दिया।]

[नोट—लेख की ठीक तारीख 'सासिरद नल्वत्तयदनेय' है, परन्तु खोदनेवाले की भूल से जब 'नल्वत्त' छूट गया और 'सासिरदयदनेय' खुद गया तब उसने 'सासिरद, के 'द' को ४० में बदलकर जितना अच्छा उससे हो सका उसे शुद्ध कर दिया। यद्यपि पढते समय इससे ठीक अर्थ निकल आता है परन्तु देखने मे यह बडा विचित्र मालूम होता है।]

५७ (१३३)

गन्धवारण वस्ति के उत्तर की ओर स्तम्भ पर।

(शक सं० ६०४)

(उत्तर मुख)

संसारवनमध्येऽस्मिन्नृजूस्तद्वान् जनद्रुमान्।
आलोक्यालोक्य सद्वृत्तान्छिनत्ति यमतक्षक ॥ १ ॥

श्रीराजत्कृष्णराजेन्द्रन मगन मग सत्यशौचद्वयाल-
ङ्कार श्रीगङ्गगाङ्गेयन मगल मग वीरलक्ष्मीविलासा
गार श्रीराजचूडामणियलियनिर्दें पेम्पो पेलेन्दलम्पि
भूरिक्ष्माचक्रमुबण्णिसे सले नेगल्द रट्टकन्दार्पदेव ॥ २ ॥
परभूमीश्वरभीकरकरनिशातोग्रासि शत्रुक्षिती
श्वरविध्वसपर पराक्रमगुणाटोप विपक्षावनी—
श्वरपक्षक्षयकारण रणजयोद्योग द्विषन्मेदिनी
श्वरसहारहविर्भुज भुजबल श्रीराजमार्त्तण्डन ॥३॥
इरियल्कण्मुबरीयलाररेबर् पुण्डीवरारानुमा-
न्तिरियल्कन्मरदाव गण्डगुणमावौदार्य्य मन्दल्कदा-
न्तिरिवण्मु पिरिदीव पम्पुमेसेदोप्पिपल्दप्पुवाब्बेण्णिसल्
नेरेवब्बीरद चागदुन्नतिकेय श्री राजमार्त्तण्डन ॥४॥
किडद जसक्के ताने गुरियादचल नेरेदर्त्थिगर्त्थम ।
कुडुव चल तोदल्नुडियदिर्प्प चल परवेण्णोलोताद-
बडद चल शरणगे वरेकाव चल परसैन्यम पेर-
ङ्गॅडे गुडदट्टि कोल्व चलमाल्द चल चलदङ्ककार्न ॥५॥
इरु पेरदेननि पोगलुतिल्दपुदीवनेगल्ते कल्पभू
मिरुहदिनग्गल नुडि सुराचलदिन्दचल पराक्रम ।
खरकरतेजदि बिसिदु चागल नन्निय बीरदन्दमी-
दोरेतेने बण्णिसलूनेरेवराख्लव चलदङ्ककारन ॥ ६ ॥
ओगसुग मल्लदुल्लुदने पेल्दपेनेन्दुमतर्क्यविक्रम
मृगपति गल्लदिल्लॆ गड सन्द गभीरते वार्द्धिगल्लदि

ल्लेगडजगत्प्रसिद्धिगेल्ले महोन्नति वे ग
मेल्लमोलवानरिवे ॥७॥

(पूर्वमुख)

दुस्थितेलोककल्पतरुवेम्बुदु वैरिनरेन्द्रकुम्भकु
म्भस्थल पाटन-प्रवण केसरियेम्बुदु कामिनीजनो-
रस्थलहारमेम्बुदु महाकविचित्तसरोरुहाकरा
वस्थितहंसनेम्बुदु समस्तमहीजनमिन्द्रराजन ॥ ८ ॥

पुसिवुदे तक्कु कोट्टलिपि कोरवुदे मन्तणमन्यनारिगा-
टिसुवुदे चित्तमीयदुदे बिन्नणमारुमनेय्दे कुत्तुव
श्चिसुवुदे कलत कलिपयेने मत्तवर पेसर्गोण्डदेन्तु पो-
लिसुवुदो पेलिमीगडिन राजतनूजरोलिन्द्रराजन ॥ ९ ॥

निखिलविनमन्नरेश्वर-
मुखाब्जनेत्रोत्पलालकालोलशिली
मुखनिकर-दिनेसेवुदु पदनख-
कमलाकरविलासमहितर जवन ॥ १० ॥

मन्निसि पिरिदीवतोद-
ल नुडियन्तोडदु माणनलरिन्दमिदे-
नुन्नतिवडेदुदो चागद
नन्निय बीरद नेगल्ते चलदग्गलिया ॥ ११ ॥

शरदमृतकिरणरुचियिं
चराचरव्याप्तियिं जगज्जननुतियि
करमेसेदिल्दपुदेनी

श्वरमूर्त्तिये कीर्त्ति कीर्त्तिनारायणन ॥ १२ ॥
नुडिववींरमनोन्दुगण्डु सेडेवर्चागक्केमुयूवाम्परी-
वडे पलगन्चुवरामे सौचिगलेमेन्दिर्प्पर्प्पेरस्रोयरोल्-
गवण नन्निगे बीगुवर्नुडितोदल् दोसक्के पकादेद
बडगण्डर् कलिकालदोल् कलिगलोल् गण्ड बर गण्डरे ॥१३॥

(दक्षिणमुख)

श्रीगे विजयक्के विहेगे
चागक्कदटिङ्ग जसक्के पेम्पिङ्गि नित—
र्कागरमिदेन्दु कन्दुक
दागमदोले नेगल्गुमल्ते बीरर बीर ॥ १४ ॥
श्रोलग दक्षिण सुकरदुष्करम पोरगण सुकरदुष्करभेदम
श्रोलगे वामद विषममनञ्चिय विषम दुष्करम निन्नदर पोरग-
ण्गलिके येनिपति विषममनदरतिविषम दुष्करमेम्ब दुष्कर्म
एलेयोलोर्व्वने चारिसल्बल्लनाल्कुप्रकरणमुमनिन्द्रिराज
॥ १५ ॥

चारिसे नाल्कु प्रकरण-
चारणे मूनूर मूवतेण्टेनिसिदवा
चारणेगलनमदि
चारिसुगु कोटि तेरदिनेलेबेडेङ्ग ॥ १६ ॥
बलसुवेरुव सुलिवगलिवन्तप्प चारणदोषमल्लदे पोहृव
टूवोगे समनागेगिरिगेय कोल्मुट्टि मिगल्लु मेलल्लुमणमीयदिन्तो-

न्दलवियोल्वरे पोरगोलगेडदोल बलदोल कडुगडुपिन्ने बर्प्पे
वलयन्दप्पदे चारिसुवोजेय रट्टकन्दर्प्पनन्ताव बल्ल ॥१७॥
मेलसिन निलिरिदु गिरिगेय
नलेदोर्ग्गेङ्कोलोलोलगे पोरगणे मेलेवा—
ल्पलवडे चारिप बहलिके-
यलविदुकेवलमे कीर्त्तिनारायणन ॥ १८ ॥
गिरिगे मेलसिन्द किरिदक कालोल्पु नाल्वरललविग-किरिदुमक्क—
तुरग बेट्टदि पिरिदक वलयमु भूवलयदिनत्त पिरिदुमक्के।
गिरिगे कोल्वलि वलयमिन्तिनितुम बगेवोङ्ग करमरि दिन्तिवरोल्-
इरदे पत्तेण्डुवलय चारिसदन्न भोगमिक्कवनल्लनिन्द्रराज ॥ १९ ॥
कडुपुगलुद वलगड
बेडेङ्गुगल बेरे भङ्गिगल ललिगलिदें।
कडुजाणने बदिकय्वर
मडर्दपुलेने विद्मेलेरु मेलेवबेडेङ्ग ॥ २० ॥
नेगल्द मण्डलमाले त्रिमण्डल यामकमण्डलमर्द्धचन्द्रमार्ग्ग
बगेवोडरिदप्प सर्व्वतोभद्रमुद्वल चक्रव्यूह बल्मेगल।
पोगलिसलक पेरवु दुष्करदेलेपङ्गलनश्रमदिनेलेयोल्

जगदोलेलेवबेडेङ्गनोर्व्वने बल्ल न्ताराल मान्तरमे ॥ २१ ॥

(पश्चिम मुख)

उद्दवल मेलेवरेम्बुदे-
बिद्द मुन्नल्लि कडुपिनोल्बन्तु विधदि
न्दुद्दवलमेलेदु मुरिगु ।
बिद्दमेनल्बलल पोरगनेलेवबेडेङ्ग ॥ २२ ॥

एरकमल्लदे पोल्लदागेरगि दोरेकोण्डे कोल्व तेरनल्लदे
नेरेये बरले तक्कदियल्लि बीसुवल्लिये बीसलरिदेयिल्ल ।
परियनादिट्टे मुरिवल्लि कडुपिनोल् मुरिदयिल्लिल्लिय बिन्नणव-
न्नेरेये कलपदे बाररबीरन गिडेगला-भरणन नोडि कल्ला ॥ २३ ॥

आसुवनु कूकुवनु
बीसुवनु गडये नेगल्द तक्कदियोलेनु
त्तासदेयु कुङ्कदेयु
बिसन्देयुबिद्दमेलेगुमेलेवबेडेङ्ग ॥२४॥

एरगलरियदे जिण्टुकम्मगुल्दुबरलणमरियदेतप्पपिन्दु
तेरननरियदे भङ्गमनिक्कियुम्मूरदेगल्लद कट्टाडियु ।
मुरिये पोयिसिदनुरेय कोन्दु धरेगेडे तगर्गेड यिवनेनिसदे
नेरेये कडुजाणननिसल्के बक्कुंमे गेडेगलाभरणन कल्लदभ
॥ २५ ॥

काल्गाल कयूगल तुरगाद
काल्गाल तिणिवुगलोलल्लि बश्चिसुतेलेगुं ।

गेल्गुमेने नेगल्द मार्ग्गदे
गेल्गुमे पिणेदल्लि कीर्त्तिनारायणन ॥२६॥

वनधिनभोनिधिप्रमितसङ्ख्ये शकावनिपाल कालम ।

नेनेयिसे चित्रभानुपरिवर्त्तिसे **चैत्रसितेतराष्टमी**
दिन युत-**भौमवार** दोलनाकुलचित्तदे नोन्तु तल्दिद
जननुत**निन्द्रराज**नखिलामरराजमहाविभूतिय ॥२७॥

[यह लेख राष्ट्रकूट नरेश कृष्णराज (तृतीय) के पौत्र इन्द्रराज की मृत्यु का स्मारक है। इन्द्रराज गङ्गगाङ्गय का दोहितृ और राज चूड़ामणि का दामाद था। 'रट्टक दुपदेव' 'राजमार्त्तण्ड' 'कलिगलोल्गण्ड' 'बीरर बीर' आदि इ द्रराज की प्रताप सूचक उपाधियाँ थीं। १४ वे से लगाकर २६ वे पद्य तक इ द्रराज के एक गेंद के खेल में नैपुण्य का विवरण है। पर अनेक शब्दों का अर्थ अज्ञात होने के कारण इन पद्यों का पूरा पूरा भाव स्पष्ट नहीं हो सका है। सम्भवत यह 'पोलो' के सदृश कोई खेल रहा है। क्योकि उक्त पद्यों में गेंद, घोडों और खेल के दण्डो का उल्लेख है। इ द्रराज की मृत्यु शक स० ६०४ चैत्र सुदि ८ भौमवार को हुई।]

५८ (१३४)

तेरिन बस्ति के पश्चिम की ओर एक स्तम्भ पर

(लगभग शक स० ६०४)

(उत्तर मुख)

वोर वेल्पडिगु दन्ददे पोगलिसेम्बेने

गिय दिसिमा लदो नु मे गदेन ब्ब तेसु
पोदिसुवेल्तेयुरि बीडि नगिसुगुवेम्ब वपेद क्केये
मावन गन्ध हस्तिय ॥

अदिरदिदिच्चिर्चनिन्दरि नेने पायिसि तन्न मिण्डमु
कुदुरेय येम्बिवु बेरसि बीलवदु मेणिदिरे देहु काल् गुदि---
गोले ताने

(पूर्व मुख)

साधिसि पोग निरदे दिब
बेरित न्तलिय ल्दरि लय ल्दन्तवस्त्री
पेनकेल बोलगदोल्तात्रे उनता
यविट्टनेवे अलिपि य ण्डलु—

अलिदु निजाधिप बेससिदेब्बेंसन कुसिदिर्म्मेकेल्दुना-
ल्वलिपननव्यवस्थितननोब्बेंसकल्कुव जोलगल्लर
पलियेदे यिल्लदोलपलेयुतिप्पुदु मावन गन्धहस्तिय ॥
परबलवेय्दि कय्दुवेडेयाडुव ताणदोलल्लि बीरम
परवधु वट्टेलातरडेयाडुवताणदोलल्लि सौचम ।
परिकिसि सन्दरिल्ल पेररोब्बरुवेन्नलिदण्मु सौचमे-
म्बरदरेल ॥

(दक्षिण मुख)

वागदि-

ट्टिगरन वुद दोरेगे वर्क्कुमे मावनगन्धहस्तिय ॥
श्रोडनेय नायकर्क्कुदिदु तागुमे मल्ल वक्कदोड्डुपु-

ण्बडुविनविल्दु सन्दु सवकट्टलिदल्लिगे नूङ्कि बीरम-
ब्रलिविनमामे तल्तिरिदु गेल्देवरातियनेन्दु पोन्नरि
नुडिवलिगण्डर नगुवुदेट्टजि मावनगन्धहस्तिय ॥
अणुगिनोले राजचूडा-
मणिमार्गोडे मल्लनीये गेल्वे लेपद बि-
न्नण

(पश्चिममुख)

ललागे कण पारुवल्लि बित्तरिसुवुदरियेगतियनें
एनेनेगल्द पिट्टुग बीडिनसैाचीरनो प्रचण्डभुजदण्डमावनगन्ध-
हस्ति कविजनविनुत मोनेमुट्टे गण्डनाहवसैाण्ड बरे चित्र
भानुसम्वत्सरमधिकाषाढबहुल दसमीदिनदोल्गुरु-
चरणमूलदोलूसुभपरिणामदे पिट्टनिन्द्रलोकक्कोगद ॥

[यह लेख एक मावन गन्धहस्ति नामक वीर योधा की मृत्यु का स्मारक है। युद्ध में अद्वितीय वीरता के कारण इसे एक राजा राज चूड़ामणि मार्गडेमल्ल ने अपनी सेना का नायक बनाया था। चित्रभानु सम्वत्सर की आषाढ वदि १० को इस वीर का प्राणान्त हुआ। यह लेख बहुत घिस गया है इससे पूरा पूरा नहीं पढ़ा गया। शक सं० ८०४ चित्रभानु संवत्सर था। लेख की लिखावट से भी यह समय ठीक सिद्ध होता है।]

---

५६ (७३)

शासन वस्ति के सामने एक शिला पर।

(शक सं० १०३६)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान हेतवे ।
अन्यवादि मद-हस्ति मस्तक स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमो वीतरागाय नमस्सिद्धेभ्य ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च महाशब्द महामण्डलेश्वर **द्वारवती**-पुरवराधीश्वर **यादव**-कुलाम्बर द्यु मणि सम्यक्त्व चूडामणि मलपरोल्गण्डाद्यनेकनामावली-समालङ्कृतरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वर **त्रिभुवनमल्ल** तलकाडुगोण्ड भुज बल-**वीर गङ्ग**-**विष्णुवर्द्धन होयूसल** देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतार सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारनन्यवनितादूर वचस्सुन्दरी
घन वृत्त-स्तन हारनुग्र-रणधीर **मार**नेनेन्दपै ।
जनक तानेने **माक**णब्बे विबुध-प्रख्यात धर्म्म-प्रयु
क्त-निकामात्त चरित्रे तायेनलिदेनेच महाधन्यनो ॥ ३ ॥
कन्द ॥ वित्रस्तमल बुध जन-मित्र द्विजकुलपवित्रनेच जगदोलु ।
पात्र रिपु कुल कन्द-खनित्र कौण्डिन्य-गोत्रनमलचरित्र ॥४॥
मनुचरितनेन्दिगाङ्कन

मनेयोलु मुनिजन समूहमु बुधजनमु ।
जिनपूजने जिनवन्दने ।
जिनमहिमेगलावकालमु सोभिसुगु ॥ ५ ॥
उत्तम गुण ततिवनिता—
वृत्तियनोलकोण्डुदेन्दु जगमेल्लमुक—
व्यत्तुविनममल गुण स-
म्पत्तिगे जगदोलगे **पोचिकब्बेये** नोन्तलु ॥ ६ ॥

अन्तेनिसिद् **एचिराजन पोचिकब्बेय** पुत्रनखिलतीर्त्थकरपरमदेवपरमचरिताकर्ण्णनोदीर्ण्ण विपुल पुलक-परिकलित वारबाणनुवसम-समर-रस रसिक रिपुनृपकलापावलेप लोप लोलुप कृपाणनुवाहाराभय भैषज्य शास्त्र दान-विनोदनु सकललोक शोकापनोदनु ।

वृत्त ॥ वज्रवज्रभृतो हल हलभृतश्चक्र तथा चक्रिण-
श्शक्तिश्शक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डीवकोदण्डिन ।
यस्तद्वद्वितनोति विष्णुनृपतेष्कार्य्य कथ माहशै
र्गङ्गो गङ्ग-तरङ्ग रञ्जितयशो राशिस्स वर्ण्यो भवेतु ॥ ७ ॥

इन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक द्रोहघरट्ट **गङ्गराज चालुक्य** चक्रवर्त्ति **-त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडि**देवन दल पन्निर्व्वर्स्सामन्तर्व्वेरसु**कण्ण**गाल-बीडिनलु बिट्टिरे ॥

कन्द ॥ तेगे वारुवम हारुव
बगेय तनगिरुलबवरमेनुत सवङ्ग ।
बुगुव कटकिगरनलिर

पुगिसिदुदु भुजासि गङ्ग दण्डाधिपन ॥ ८ ॥

वचन ॥ एम्बिनमवस्कन्दकेलियिन्द मनिवरु सामन्तरुम

भङ्गिसितदीय वस्तुवाहन समूहम निजस्वामिगे तन्दु कोट्टु

निजभुजावष्टम्भक्कमेच्चिमेच्चिदबेदि कोल्लिमेने ॥

कन्द ॥ परम प्रसादम पडे—

दु राज्यम धनमनेनुम बेडदन -

स्वरमागे बेडिकोण्ड

परमननिदनर्हदर्च्चनाञ्चित चित्त ॥ ९ ॥

अन्तु बेडिकोण्डु—

वृत्त ॥ पसरिसे कीर्त्तनजननि **पोचलदेवि**यरर्थिवट्टु मा-

डिसिद जिनालयक्कमोसेदात्म मनोरमे लच्मिदेवि मा

डिसिद जिनायलक्कमिदु पूजन योजितमेन्दु कोट्टु स

न्तोसमनजस्रमाम्पनेने गङ्गचमूपनिदेनुदात्तनो ॥ १० ॥

अक्कर ॥ आदियागिप्पुदार्हत-समयक्के **मूलसङ्घ** **कोण्डकुन्दा-**
न्वय

वादु बेडद बलयिपुदल्लिय **देसिगगणद** **पुस्तकगच्छद** ।

बोधविभवद **कुक्कुटासन** मलधारि देवर शिष्यरेनिप पेम्पि

ङ्गादमेसेदिर्प्प **शुभचन्द्र** सिद्धान्त देवर गुड्ड गङ्गचमूपति ११

गङ्गवाडिय बसदिगलेनितोलवनितवानेय्दे पोसयिसिद

गङ्गवाडिय **गोम्मटदेवर्गं** सुत्तालयमनेय्दे माडिसिद ।

गङ्गवाडिय **तिगुलर** बेङ्कोण्डु वीरगङ्गङ्गे निमिर्च्चिकोट्ट

गङ्गराजना मुन्निन गङ्गरायङ्ग नूर्म्मडिधन्यनल्ले ॥ १२ ॥

एत्तिदनेल्लिगल्लि नेलेवीडने माडिदनेल्लिगल्लि कण्
पत्तिदुदेल्लिगल्लि मनमावेडेयेय्दिदुदेल्लिगल्लि स
म्पत्तिन जैनगेहमने माडिसे देशदोलेल्लिगल्लिगे
त्तेत्तलुमावग पलेय माल्केवोलादुदु गङ्गराजनिं ॥ १३ ॥

जिनधर्म्माग्रणियत्ति मब्बरसिय लोक गुणगोल्वुदे
केने गोदावरि निन्द कारणदिनीगलु गङ्गदण्डाधिना
थनुम कावेरि पेर्च्चि सुत्ति पिरिदु नीरोत्तियु मुट्टिति
ल्लेने सम्यक्त्वद पेम्पनिंनेरेये बण्णिप्पपण्णने वण्णिप ॥१४॥

इन्तेनिप दण्डनायक गङ्गराज सकवर्ष १०३९ नेय हेमण
म्बि सवत्सरद फाल्गुण शुद्ध ५ सोमवार दन्दु तम्म गुरुगलु
शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर कालकर्च्चि परमन कोट्टर् ॥ दण्डनायक
एचिराजनु तनगभिवृद्धियागे सलिसिद । परमन सीमान्तर
मूडलु सल्ल्यद कल्ल हल्लवे गडि । तेङ्कलु कडिद कुम्मरि होर
गागि । हडुवलु बेर्क्कनोलगेरेय माविनकेरेय गद्देयोलगागि ।

बेलुगोलक्के होद बट्टे गडि । बडगलु मेरे । नेरिल-केरेय
मूडण कोडियिं तेङ्कण होसगेरेय च्चुगट्टादुदेल्ल । आ होसगेरेय
बडगण कोडियिन्द मूड होद नीरुवक्केयिन्द । अय्कनकट्टद ।
ताइवल्लदिन्द । तेङ्कलादुदेल्लविनितु परमङ्गे सीमेयागि बिट्ट
दत्ति ॥ ईधर्म्मम प्रतिपालिसिदर्गे महापुण्यमक्कु ॥

वृत्त ॥

प्रियदिन्दिन्तिवनेय्दे काव-पुरुषर्ग्गायु महाश्रीयुम
क्केयिद कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोल् बाणरा-

सियोलेल्कोटि मुनीन्द्रर कविलेय वेदाढ्यर कोन्दुदो
न्दयस साग्गुमिदेन्दु सारिदपु वीशैलाचर सन्तत ॥ १५ ॥

श्लोक ॥

स्वदत्ता परदत्तां वा यो हरेद्वसुन्धरा ।
षष्टिर्व्वर्ष सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमि ॥ १६ ॥
बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभि ।
यानि यानि यथा धर्म्म तानि तानि तथा फल ॥ १७ ॥
बिरुद रूवारि मुखतिलक **वर्द्धमानाचारि** खण्डरिसिद ॥

[यह लेख एक दान का स्मारक है। मार और माकिणब्बे के पुत्र एचिराज हुए। एचिराज और पोचिकब्बे के पुत्र महाप्रतापी गङ्गराज हुए। ये होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन के महादण्डनायक थे। इन्होंने तिगुलों (तैलङ्गों) को परास्त कर गङ्गवाडि देश को बचा लिया तथा चालुक्य नरेश त्रिभुवनमल्ल पेर्माडिदेव की सेना को जीतकर अपने भारी पराक्रम का परिचय दिया। उनकी स्वामि भक्ति तथा विजय शीलता से प्रसन्न होकर विष्णुवर्द्धन नरेश ने उन्हें पारितोषिक माँगने को कहा। उन्होंने 'परम' नामक ग्राम माँगा। इस ग्राम को पाकर उन्होंने उसे अपनी माता पोचल देवी तथा अपनी भार्या लक्ष्मीदेवी द्वारा निर्मापित जिन मन्दिरों की आजीविका के हेतु अर्पण कर दिया। यह लेख इसी दान का स्मारक है। गङ्गराज जैसे पराक्रमी थे वैसे धर्मिष्ठ भी थे। इस दान के अतिरिक्त इन्होंने गङ्गवाडि परगने के समस्त जिन-मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, गोम्मट स्वामी का परकोटा बनवाया तथा अनेक स्थलों पर नये नये जिन मन्दिर निर्माण कराये। लेख में कहा गया है कि इन कृत्यों से क्या गङ्गराज गङ्गराय (चामुण्ड राय गोम्मट स्वामी के प्रतिष्ठाकारक) की अपेक्षा सौ गुणे अधिक धन्य

नहीं कहे जा सक्के ? लेख में परम ग्राम की सीमा दी हुई है जिससे विदित होता है कि यह ग्राम श्रवण बेल्गोल के समीप ही ईशान दिशा में था। उक्त दान शक संवत् १ ३६ फाल्गुण सुदि ५ सोमवार को दिया गया था। गङ्गराज कुन्दकुन्दान्वय देशीगण पुस्तक गच्छ के कुक्कुटासन मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्त देव के शिष्य थे। दान की रक्षा के हेतु लेख में कहा गया है कि जो कोई इस दान द्रव्य में हस्तक्षेप करेगा वह कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड ऋषियों, कपिल गौओं व वेदज्ञ पण्डितो के घात का पापी होगा।]

६० (१३८)

बाहुबलि बस्ति के पूर्व की ओर प्रथम वीरगल् पर

(लगभग शक स० ८६२)

श्रीगाश्रयवेने तेज
कागरवेने नेगल्द गङ्गवज्रन लेङ्क
ब्बोगायूचनेम्बरवरो
ल्बोगेय (बोधिग) माप्पॅडेगोरण्टनण्तन बण्ट ॥ १ ॥

रकसमणिय कोणेयगङ्गन कालेगदोल्तन्न साव निश्चयिस कालेगकिडे रकसमणिय कलिपि तन्न बलमु मार्ब्बलमु तन्नने पोगले।

ओडने कालग बयिसिद घोलयिलप्पॅरपिङ्ग मार्ब्बल
बिडे कडिकय्दा नूङ्कि किडे तन्न बल पेरबागदल्लि ब-
न्दडिगेडदन्दे वजियोाले पायिसि मूलमेल्लम पडल्
वडिसि पोगल्तेय पडेदु णान्तुदु बोथिगनान्तानिच्चट ॥२॥
अदिरि लिक वद्देगन कोणेयगङ्गन मोत्तमेल्लम

बेद्कविन तेरल्चि पलरु तुलिलाल्गलनिकि तन्न बी-
रद लदेल्गेय परबल पोगलल्वडिक मागि बि-
ल्ददटिनलुर्केय मेरेदु सावुदु बोयिगनन्तिलाग्रदोल् ॥३॥
नट्ट-सरल्गलिन्दिदक (कन्वयको) यिकिडि कय्दुबेडिरो
ल्लिट्ट निसान्लहेतुगलिनादमगुर्ब्बिसिबट्टु बीलुवो
ल्तोट्टने नोन्दु बील्वेडेय(ल् नय्य) गाण्डु विमान म ल
मुट्टलुमित्तरिल्ल गल बोयिगन दिविजेन्द्र कान्तेय ॥४॥

[यह एक वीरगल है । इसमे उल्लेख है कि गङ्गवज्र (नरेश) अपर नाम रक्कसमणि के बोयिग नाम के एक वीर योद्धा ने वद्देग' और 'कोणेय गङ्ग के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपन प्राण विसर्जित किये। युद्ध में इसने ऐसी वीरता दिखाई कि जिसकी प्रशसा उसके विपक्षियो ने भी की]

६१ (१३६)

उसी स्थान के द्वितीय वीरगल् पर

(लगभग शक स० ८७२)

श्री युवतिगे निज विजय
श्री युवतिये सवतियनिसे रण मूर्ख नृपा-
ग्रायदोलायद मेय्-गलि
बायिकनेम्ब नेगल्तेय प्रकटिसिदन् ॥१॥
श्री-दयितन बायिकन म-
नो-दयितेगे जभदोलेसेद जाबय्यगे ताम्

आदर्तनयर्पेलल्
मादुवर दोयिलम्मनेम्बर् पसरिं ॥२॥
अवरोड वुट्टिदोलरिविन
तवरेने धर्मददगुन्तियेने नेगल्दल्भू-
भुवनक्के **सावियब्बिगम्**
अवनिजेग दोरेयेनल्के पण्डिरुमोलरे ॥३॥
धोरन तनय विबुधो-
दार धरेगेसेद लोक-विद्याधरनन्त्
आ रमणिगे पतियेने पेरर्
आरुमनासतिय पेम्पिनोल् पोलिपुदे ॥४॥
श्रावक-धर्म्मदोल् दोरेयेनल् पेररिल्लेने सन्द **रेवति**
श्रावकि ताने सज्जनिकेयोल् **जनका**त्मजे ताने रूपिनोल्
देवकि ताने पेम्पिनोल**रुन्धति** ताने जिनेन्द्र-भक्ति-सद्-
भावदे **सावियब्बे** जिन शासन देवते ताने काणिरे ॥५॥
उदयविद्याधरनप्प **सायिब्बेन्द्र**

(उसी पाषाण के शिखर पर)

रियिसिददि मा मा द जन न्दे भूप
रदि लि प मु यनि न प नुडिद-
गिदन्दरागि पसियानिवगानादेनेदल्लि मुनोल् कादि यलि
विल्दवरन जननि **सायिब्बे** कण्ड ढिदरदे केय्यार जि
मालाग्रद करिप लिनेतुमदे नुडियिडे द्रागि नुडिदु

नुव गदलू बगियुरल्लि सत्तलू वेत्त यब्बे सायलेन्दु पेण्डतिये वोन्तण्नलोगले पलरु तोलगिद रायद चल मसल बलगि गन्दिनिप्पण्डतियिन् ।

[यह भी एक वीरगल है जिसम पराक्रमी और प्रसिद्ध बायिक और जावय्ये की पुत्री 'सावियब्बे' का परिचय है । सावियब्बे का पति 'धोर' का पुत्र 'लोक विद्याधर' था । यह स्त्री रेवती, देवकी, सीता, अरुन्धती आदि सदृश रूपवती, पतिव्रता और धर्मप्रिया थी । वह पक्की श्राविका थी । जिन भगवान् म उसकी शासन देवता के सदृश भक्ति थी । उसन 'बगियुर' नामक स्थान पर अपने प्राण विसर्जित किये]

[नोट—लेख का अन्तिम भाग जिसम इस वीराङ्गना के प्राण त्याग का वर्णन है, बहुत घिस गया है इसस स्पष्ट नहीं है । ऐसा कुछ विदित होता है कि यह सती स्त्री अपन पति के साथ युद्ध मे गई थी और वहाँ लडत लडते इसन वीरगति पाई । लेख के ऊपर जो चित्र खुदा है उसमे यह स्त्री घोडे पर सवार हुई हाथ म तलवार लिये हुए एक हाथी पर सवार वीर का सामना करती हुई चित्रित की गई है । हाथी पर चढ़ा हुआ पुरुष इस पर वार करता हुआ दिखाया गया है । 'सायिब्बे सावियब्बे का संक्षेप रूप है]

६२ (१३१)

गन्धवारण वस्ति में शान्तीश्वर की मूर्त्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक स० १०४४)

प्रभाचन्द्र मुनीन्द्रस्य पद पङ्कजषट् पदा ।

शान्तला शान्ति जैनेन्द्र-प्रतिबिम्बमकारयत् ॥१॥

(सिंहपीठ पर)

उक्तौ वक्र गुण दृशोस्तरलतां सद्विभ्रम भ्रूयुगे
काठिण्य कुचयोर्न्नितम्ब-फलके धत्से ऽतिमात्र क्रमम् ।
दोषानेव गुणीकरोषि सुभगे सौभाग्य भाग्य तव
व्यक्त **शान्तल देवि** वक्तुमवनौ शक्नोति को वा
कवि ॥२॥

राजते राज सहीव पार्श्वे **विष्णु**-महीभृत ।
विख्याता **शान्तला**ख्या सा जिनागारमकारयत् ॥३॥

[नोट—गन्धवारण वस्ति का निर्माण शान्तल देवी ने शक सं० १०४१ विरोधिकृत् संवत्सर में व उससे कुछ पूर्व कराया था। देखो लेख नं० ५३ (१४३)]

६३ (१२०)

एरडु कट्टे वस्ति मे आदीश्वर की मूर्त्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक स० १०४०)

शुभचन्द्र मुनीन्द्रस्य सिद्धान्ते **सिद्ध नन्दिन** ।
पद पद्म युगे लक्ष्मीर्लक्ष्मीरिव विराजते ॥१॥

या सीता पतिदेवताव्रतविधौ चान्तौ क्षितिर्य्या पुन-
र्य्या वाचा वचने जिनार्च्चनविधौ या चेलिनी केवलम्
कार्य्ये नीतिवधू रणे जय वधूर्य्या गङ्गसेनापते

सा लक्ष्मीर्व्वसतिं गुणैक-त्रसति व्यातीतनन्नूतनाम् ॥ २ ॥
श्रीमूलसङ्घद देसिग गणद पुस्तकान्वय ॥

६४ (७०)

कत्तले वस्ति की ऊपर की मञ्जिल मे आदीश्वर की मूर्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक स० १०४०)

भद्रमस्तु श्रीमूलसङ्घद देशिकगणद श्रीशुभचन्द्र सिद्धान्त देवर गुड्ड दण्डनायक-ग(ङ्गर)य्यनु तम्म तायि पोचव्वेगे माडिसिदी बसदि मङ्गल ॥

[दण्डनायक गङ्गरय्य (या गङ्गपय्य) शुभचन्द्रसिद्धान्तदेव के शिष्य, ने यह बस्ती अपनी माता पोचव्वे के लिए निर्माण कराई। (आगे का लेख देखो)]

६५ (७४)

शासन वस्ति मे आदीश्वर की मूर्त्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक स० १०४०)

आचार्यश्शुभचन्द्रदेवयतिपो राद्धान्त रत्नाकर
स्तातोऽसौ बुधमित्रनामगदितो माता च पोचाम्बिका ।
यस्यासौ जिनधर्म्मनिर्म्मलरुचिश्श्रीगङ्गसेनापति-
र्ज्जैनं मन्दिरमिन्दिराकुलगृह सद्भक्तितोऽचीकरत् ॥ १ ॥

६६ (१२०)

चामुण्डराय वस्ति में नेमीश्वर की मूर्त्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०६०)

गङ्गसेनापतेस्सूनुर् **एचणो** भारतीचण ।
त्रैलोक्यरञ्जन जैनचैत्यालयमचीकरत् ॥ १ ॥
बुधबन्धुस्सता बन्धुर् **एचण** कमलाचण ।
बोप्पणापरनामाङ्कचैत्यालयमचीकरत् ॥ २ ॥

६७ (१२१)

ऊपर की मञ्जिल मे पार्श्वनाथ की मूर्त्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० ९६२)

जिन गृहम **बेल्गोल**दोल्
जनमेल्ल पोगळे मन्त्रि **चामुण्डन** न-
न्दननोलर्विं माडिसिद
जिन-देवणनजितसेन मुनिवर गुड्ड ॥ १ ॥

[चामुण्ड के पुत्र और अजितसेन मुनि के शिष्य जिनदेवण ने बेल्गोल में जिन मन्दिर निर्माण कराया ।]

६८ (१५६)

काञ्चिन दोणे के एक स्तम्भ पर

(शक स० १०५६)

(उत्तर मुख)

श्रीमत् परम-गम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरप्प श्रीमत् **त्रिभुवनमल्ल** चलदङ्कराव **होय्सल** सेट्टियरु अय्यावलय युण्डिगेय **दम्मि**सेट्टिय मग **मल्लि** सेट्टिगे **चलदङ्कराव** होय्सलसेट्टियू एन्दु पेसरुकोट्टरिन्तु **सकवर्ष १०५८ सौम्यसंवत्सरद** माघ मासद शुक्लपक्षद सङ्कमणदन्दु तन्नवसानमनरिदु तन्न बन्धुगल बिडिसि समचित्तदोलु मुडिपि स्वर्गस्थनाद ॥

(पश्चिम मुख)

आतन सति एन्तप्पलेन्दडे ॥

तुरवम्मरसग मुग्गवेग सुपुत्रि स्वस्ति श्रीजिन गन्धोदकपवित्री कृतोत्तमाङ्ग युरुआहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदेयरप्प **चट्टिकब्बे** तन्न पुरुष **चलदङ्कराव होय्सल** सेट्टिग वनग तन्न मग **बूचणङ्ग** परोक्ष विनेयमागि माडिसिद निसिधिगे ॥

[त्रिभुवनमल्ल चलदङ्करावहोय्सलसेट्टि ने दम्मिसेट्टि के पुत्र मल्लिसेट्टि को चलदङ्करावहोय्सलसेट्टि की उपाधि प्रदान की । मल्लिसेट्टि 'अय्यावले' के एक राज्यकर्मचारी (युण्डिगेय) थे । इनकी पत्नी जैनधर्म परायणा चट्टिकब्बे थी जिसके पिता और माता के नाम

क्रमश तुरवम्मरस और सुग्गब्बे थे। इसी साध्वी स्त्री ने अपने पति की यह निषद्या निर्माण कराई।]

[नोट—अय्यावले सम्भवत बम्बई प्रा त के कलाद्गि जिलान्तगत आधुनिक 'ऐहोले' का ही प्राचीन नाम है। लेख में शक १०५९ सौम्य संवत्सर का उल्लेख है। पर ज्योतिष गणना के अनुसार शक १०५९ पिङ्गल संवत्सर था और सौम्य संवत्सर उससे आठ वष पूर्व शक सं० १०५१ में था। अतएव लेख का ठीक समय शक सं० १०५१ ही प्रतीत होता हे]

६८ (१५८)

काञ्चिन दोणे के प्रवेशद्वार के निकट पडे हुए एक टूटे पाषाण पर*

(लगभग शक स० १०९२)

(प्रथम मुख)

व्यावृत्तविच्छित्तये।

क्र कलिकल्मषत्यनुदिन श्रीबालचन्द्रमुनि
पश्याम श्रुत रत्न रोहणधर धन्यास्तु नान्ये वय ॥१॥
प्रचुर कलान्वितरकुटिलरचञ्चलसुंद पद्म वृत्त
दोषापचय-प्रकाशरेनेबालचन्द्र देवप्रभावमेनच्चरियें ॥२॥
श्री बालचन्द्र

* यह पाषाण अब नहीं मिलता।

(द्वितीय मुख)

भद्रमप्प त्रिलो वरविहितपूर्त्तं नित्य-
कीर्त्ति चित्य समुचितचरितो य र धृत धुविनू यित्वाह
भुजबिम्बचितमणि कर त्व चिरादिमु सम
गतिभिस्स क्षत्रियरुद्र श्रीकवि नथ
श्रीवह

(तृतीय मुख)

राने बभा चित्रतनूभृताम यतेतरा ।
सकल वन्द्य पादारविन्द स ममूर्त्ति सर्व्वसत्वा बक-
दुरित-राशिभव्यद नुविजित मकरकेतु र्त्तित्र
तीन्द्र । भाने सुविक्र चक्रा रे तत्पद् भव

[यह लेख बहुत टूटा हुआ है। इसमें बालचन्द्र मुनि की कीर्ति वर्णित रही है। द्वितीय पद्य पम्परामायण (आश्वास १ पद्य ८) में भी पाया जाता है।]

७० (१५५)

ब्रह्मदेव मन्दिर के निकट पड़े हुए एक टूटे पाषाण पर

(लगभग शक सं० १०६७)

दा न्वयद हन य बलिय श्रीगुणचन्द्रसिद्धान्त
देवरप्रशिष्यरु श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्त चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्री-

दावणन्दित्रैविद्य देवरु भानुकीर्त्तिसिद्धान्तदेवरु श्री अध्या
त्मिबालचन्द्रदेवरु ॥

परमागमवारिधि (हिम-
किर)ण राद्धान्तचक्रि नयकीर्त्तियमी-
श्वरशिष्यन लचित्
परिणतनध्यात्मि बा(लच)न्द्र मुनीन्द्र ॥ १ ॥
बालच

[यह लेख अधूरा ही पढा गया है। इन (सागे) शाखा के गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के प्रमुख शिष्य नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्ति के दाम नन्दि त्रैविद्य देव, भानुकीर्ति सिद्धान्तदेव और अध्यात्मि बालचन्द्र ये तीन शिष्य हुए। बालचन्द्र की प्रशसा का जो पद्य यहाँ है वह उनकी प्राभृतत्रय की टीका के अन्त मे भी पाया जाता है देखो शिलालेख न ४० (२४०) पद्य २२]

७१ (१६६)

भद्रबाहु गुफा के भीतर पश्चिम की ओर चट्टान पर* (नागरी अक्षरों मे)

(लगभग शक स० १०३२)

श्रीभद्रबाहु स्वामिय पादम जिनचन्द्र प्रणमता।

---

* यह लेख अब नहीं मिलता।

७२ (१६७)

भद्रबाहु गुफा के बाहर पश्चिम की ओर चट्टान पर

(शक सं० १७३१)

शालिवाहन शकाब्दा १७३१ नय शुक्लनामसंवत्सरद भाद्रपद ब ४ बुधवारदल्लि । कुन्दकुन्दान्य (न्वय) देसिगणद श्री चारु। शिष्यराद अजितकीर्त्ति देवरु अवर शिष्यरु शान्ति-कीर्त्ति देवर शिष्यराद अजितकीर्त्तिदेवरु मासोपवासव सम्पूर्ण माडि ई गवियल्लि देवगतरादरु ।

[कुन्दकुन्दान्वय देशीगण के चारु (कीर्ति पण्डितदेव) के शिष्य अजितकीतिदेव के शिष्य शान्तकीर्ति देव के शिष्य अजितकीर्ति देव ने एक मास के उपवास के पश्चात् शक सं० १७३१ भाद्रपद वदि ४ बुधवार को स्वर्गगति प्राप्त की ।]

७३ (१७०)

भद्रबाहु गुफा के मार्ग पर चरणचिह्न के पास चट्टान पर

(सम्भवत शक सं० ११३६)

स्वस्ति श्री ईश्वर संवत्सरद मलयाल कोदयु सङ्करनु इल्लिदं एल गदेय हडुवण हुणिसेय मूरुगुण्डिग

[इस स्थान पर खड़े होकर 'मलयाल कोदयु सङ्कर' ने आर्द्र भूमि के पश्चिम की ओर इमली के वृक्ष के समीप की तीन शिलाओं

पर बाण चलाये। लेख मे संवत्सर का नाम ईश्वर दिया हुआ है। शक ११३६ ईश्वर संवत्सर था]

७४ (१६५)

प्राकार के बाहर दक्षिण भागस्थ तालाब के उत्तर की ओर चट्टान पर

(सम्भवत शक स० ११६८)

स्वस्ति श्रीपराभवसवत्सरद मार्ग्गसिर बहुल अष्टमी सुक्रवारदन्दु मलेयाल अध्याडि नायक हिरियबेट्टदि चिक्कबेट्टकेच्च ॥

[मलयाल अध्याडि नायक' ने विन्ध्यगिरि स चन्द्रगिरि का निशाना लगाया। लेख में पराभव सवत्सर का उल्लेख है। शक ११६८ पराभव संवत्सर था]

विन्ध्यगिरि पर्वत पर के शिलालेख

७५ (१७९ १८०)

गोम्मटेश्वर की विशालमूर्त्ति के वामचरण के पास

नागरी अक्षरोमे

श्री चावुण्डे-राजें करवियले ।

(लगभग शक स० ९५०)

श्रीगङ्गराजे सुत्ताले करवियले ।

(लगभग शक स० १०३९)

[चामुण्डराज ने (मूर्ति) प्रतिष्ठित कराई । गङ्गराज ने परकोटा निर्माण कराया ।]

७६ (१७५,१७६,१७७)

दक्षिणचरण के पास

(पूर्वद हले कन्नड अक्षरों मे) श्रीचामुण्डराज माडिसिद ।

(ग्रन्थ और वट्टेलुत्तु,, ,,) श्रीचामुण्डराजन् सेयूव्वित्तान् ।

(कन्नड अक्षरों में) श्रीगङ्गराज सुत्तालयव माडिसिद ।

[तात्पर्य पूर्वोक्त और समय भी पूर्वानुसार]

७७ (१८४)

पद्मासन पर

(लगभग शक सं० १०७२)

स्वस्ति समस्तदैत्यदिविजाधिप किन्नर पन्नगानम-
न्मस्तक रत्ननिर्ग्गत गभस्तिशतावृत पाद ।
प्रास्त समस्त मस्तक-तम -पटल जिनधर्म्मशासनम्
विस्तरमागेनिल्के धरे-वारुधि सूर्य्यशशाङ्करुल्लिन ॥ १ ॥

[जैनशासन सदा जयवन्त हो ।]

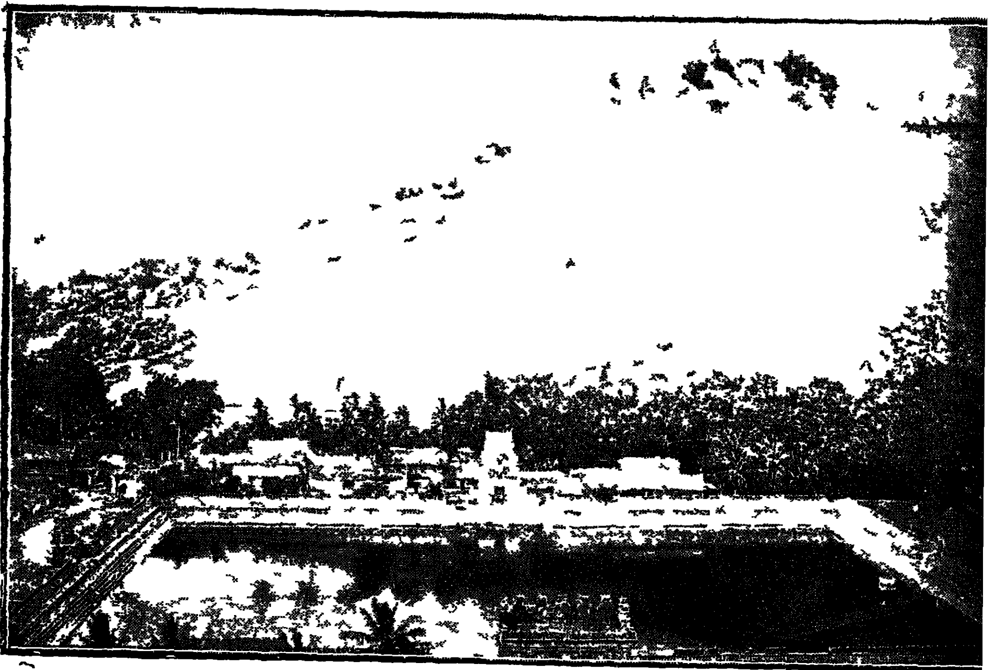
७८ (१८२)

वाम हस्त की ओर बमीठे पर

(लगभग शक सं० ११२२)

श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्ड श्रीबसविसेट्टियरु सुत्तालयद भित्तिय माडिसि चव्वीसतीर्त्थकर माडिसिदरु मत्त श्री बसविसेट्टियर सुपुत्ररु नम्बिदेवसेट्टि बोकिसेट्टि जिन्निसेट्टि बाहुबलि सेट्टि तम्मय्य माडिसिद तीर्त्थकर मुन्दण जालान्दरव माडिसिदरु ॥

[नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति के शिष्य बसविसेट्टि ने परकोटे की दीवाल बनवाई और चौबीस तीर्थकरों को प्रतिष्ठित कराया व उनके पुत्र नम्बिदेव सेट्टि, बोकिसेट्टि, जिन्निसेट्टि और बाहुबलि सेट्टि ने तीर्थंकरो के सन्मुख जालीदार वातायन बनवाया ।]



विन्ध्यगिरि पर्वत।

७९ (१८३)

उपर्युक्त लेख के नीचे जहाँ से मूर्त्ति के अभिषेक के लिए व्यवहार मे लाया हुआ जल बाहर निकलता है

(लगभग शक स० ११२२)

श्रीललित सरोवर

८० (१७८)

दक्षिण हस्त की ओर बमीठे पर

(लगभग शक स० १०८०)

श्रीमन्महामण्डलेश्वर प्रतापहोयूसल **नारसिंहदेवर** कैयलु महाप्रधान हिरियभण्डारि **हुल्लमय्य** गोम्मटदेवर पारिश्वदेवर चतुर्व्विंशतितीर्त्थकर अष्टविधार्च्चनेग रिषियराहारदानक सव णेर बिडिसि कोट्ट दत्ति ।

[महाप्रधान हुल्लमय्य ने अपने स्वामी होय्सल नरेश नारसिंह देव से सवणेरु (नामक ग्राम पारितोषक में) पाकर उसे गोम्मट स्वामी की अष्टविध पूजन और ऋषि मुनि आदि के आहार के हेतु अर्पण कर दिया]

८१ (१८६)

तीर्थकर सुत्तालय मे

(सम्भवत शक स० ११५३)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वी वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सर्वज्ञ चूडामणि मगरराज्यनिर्मूलन चोलराज्य प्रतिष्ठाचार्य्य श्री मत्प्रतापचक्रवर्त्ति होय्सल श्रीवीरनारसिंहदेवरसरु पृथ्वीराज्य गेय्युत्तिरलु तत्पादपद्मोपजीविगु श्रीमन्नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्रीमदध्यात्मबालचन्द्रदेवर गुड्डु स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्ननु जिनगन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गनु सद्धर्म्म कथाप्रसङ्गनु चतुर्व्विधदानविनोदनुमप्प पदुमसेट्टिय मग गोम्मटसेट्टि खरसवत्सरद पुष्य शुद्ध उत्तरायण-सङ्क्रान्ति पाडिदिव बृहवारदन्दु श्रीगोम्मटदेवर चव्वीसतीर्थंकर अष्ट-विधार्च्चनेगे अक्षयभण्डारवागि कोट्ट गद्याण ॥ १२ ॥

[होय्सल नरेश नारसिंह के राज्य मे पदुमसेट्टि के पुत्र व अध्यात्मि बालचन्द्रदेव के शिष्य गोम्मट सट्टि ने गोम्मटेश्वर की पूजार्चन के लिए १२ 'गद्याण' का दान दिया ।]

[नोट—दान 'खर' संवत्सर की उक्त तिथि को दिया गया था । शक स० ११२३ खर सवत्सर था ।]

८२ (२५३)

ब्रह्मदेव मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक स० १३४४)

(दक्षिण मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥
श्रीबुक्करायस्य बभूव मन्त्री श्रीबैचदण्डेश्वरनामधेय ।
नीतिर्यदीया निखिलाभिनन्द्या निश्शेषयामास विपक्ष-
लोकम् ॥ २ ॥
दान चेत्कथयामि लुब्धपदवो गाहेत सन्तानको
वैदग्धि यदि सा बृहस्पतिकथा कुत्रापि सलीयते ।
क्षान्ति चेदनपायिनी जडतया स्पृश्येत सर्व्व सहा
स्तोत्र बैचपदण्डनेतुरवनौ शक्य कवीना कथ ॥ ३ ॥
तस्मादजायन्त जगद्जयन्त पुत्रास्त्रयो भूषितचारुशीला ।
यैर्भूषितोऽजायत मध्यलोको रत्नैस्त्रिभिर्ज्जैन इवापवर्ग्गे ॥ ४ ॥
इरुगपदण्डनाथमथ बुक्कणमप्यनुजौ
स्वमहिमसम्पदाविरचयन् सुतरा प्रथितौ ।
प्रतिभटकामिनीपृथुपयोधरहारहरो
महितगुणोऽभवद् जगति मङ्गपदण्डपति ॥ ५ ॥
दाक्षिण्यप्रथमास्पद सुचरितस्यैकाश्रयस्सत्यवा-
गाधारस्सतत वदान्यपदवीसञ्चारजङ्घालक ।
धर्म्मोपघ्नतरु क्षमाकुलगृह सौजन्यसङ्केतभू
कीर्ति मङ्गपदण्डपोऽयमतनोज्जैनागमानुव्रत ॥ ६ ॥
जानकीत्यभवदस्य गेहिनी चारुशीलगुणभूषणोज्वला ।
जानकीव तनुवृत्त-मध्यमा राघवस्य रमणीयतेजस ॥ ७ ॥
आस्ता तयोरस्तमितारिवर्ग्गौ पुत्रौ पवित्रीकृतधर्म्ममार्गौ ।
जायानभूत्तत्र जगद्विजेता भव्याग्रणी कबैचपदण्डनाथ ॥८॥

इरुगपदण्डाधिपतिस्तस्यावरजस्समस्तगुणशाली ।
यस्य यशश्चन्द्रिकया मीलन्ति दिवाप्यरातिमुखपद्मा ॥ ९ ॥

वृत्त ॥

ब्रह्मन् भाललिपि प्रमार्ज्जय न चेद् ब्रह्मत्वहानिर्भवे-
दन्या कल्पय कालराजनगरी तद्वैरिपृथ्वीभृता ।
वेताल व्रज वर्द्धयोदरतति पानाय नव्यासृजा
युद्धायोद्धतशात्रवैर् इरुगपद्मप प्रकोपोऽभवत् ॥ १० ॥
यात्राया ध्वजिनीपतेरिरुगपद्मापस्य धाटीघटद्
घोटीघोरखुरप्रहारततिभि प्रोद्धूतधूलिव्रजै ।
रुद्धे भानुकरेऽगमद्विपुकराम्भोज च सकोचनम्

(पश्चिम मुख)

प्रापत्कीर्त्तिकुमुद्वती विकसन दीप्र प्रतापानल ॥ ११ ॥
यात्रायामिरुगेश्वरेण सहसा शून्यारिसौधाङ्गण
प्रोल्लासद्विधुकान्तकान्तशकले गच्छद्वनेभाधिप ।
हत्वा स्वप्रतिमा प्रतिद्विपमिति छिन्नैकदन्तस्तदा
त्राहि त्राहि गजाननेति बहुधा वेतालवृन्दैस्स्तुत ॥ १२ ॥
को धात्रा लिखित ललाटफलके वर्ण प्रमाष्टुं क्षमो
वार्त्ता धूर्त्तवचोमयीमिति वय वार्त्तान्न मन्यामहे ।
यद् धात्र्यामिरुगेन्द्रदण्डनृपतौ सञ्जातमात्रे प्रियो
निश्श्रीरप्यधिकश्रियाघटि रिपुस्सश्रीरपश्रीकृत ॥ १३ ॥
यद् बाहाविरुगेन्द्रदण्डनृपतेर्ब्बिभ्रत्यनन्ताधुर
शेषाधीशफणागणो नियमितां सस्वाङ्गनायास्सदा ।

गाढालिङ्गनसान्द्रसम्भवसुखप्रोद्भूतरोमावलि
साहस्रीं रसनामधात्तवगुणान् स्तोतु कृतार्थं फणी ॥ १४॥

आहारसम्पदभयार्प्पणमौषध च
शास्त्र च तस्य समजायतनित्यदानम् ।
हिसानृतान्यवनिताव्यसन स चौर्य्यं
मूर्च्छा च देशवशतोऽस्य बभूव दूरे ॥ १५ ॥

दान चास्य सुपात्र एव करुणा दीनेषु दृष्टिर्जिने
भक्तिर्द्धर्म्मपथे जिनेन्द्रयशसामाकर्णनेषु श्रुती ।
जिह्वा तद्गुणकीर्त्तनेषु वपुषस्सौख्य च तद्वन्दने
घ्राण तच्चरणाब्जसौरभभरे सर्व्व च तत्सेवने ॥ १६ ॥

यिरुगपदण्डनाथयशसा धवले भुवने
मलिनिमसौस्तव परमधीरदृशा चिकुरे ।
वहति च तस्य बाहुपरिघे धरणीवलय
परमितरीतराक्रम-कथापि च तत्कुचयो ॥ १७ ॥

कर्न्नैर्व्विस्मृतकुण्डलैरतिलकासङ्गैर्ल्ललाटस्थलै
राकीर्न्नैरलकै पयोधरतटैरस्पृष्टमुक्तागुणै ।
बिम्बोष्ठैरपि वैरिराजसुदृशस्ताम्बूलरागोज्झितै
र्य्यस्य स्फारतर प्रतापमसकृद् व्याकुर्व्वते सर्व्वत ॥ १८॥

(पूर्वमुख)

यत्कीर्त्तिभिस्सुरधुनीपरिलङ्घिनीभि
धौते चिराय निजबिम्बगते कलङ्के ।

स्वच्छात्मकस्तुहिनदीधितिरङ्गनाना-
मव्याजमाननरुचि कबलीकरोति ॥ १६ ॥

यत्पादाब्जरज कणा प्रसुवते भक्त्या नताना भुव
यत्कारुण्यकटाक्षकान्तिलहरी प्रक्षालयत्याशय ।
मोहाहङ्करण क्षिणोति विमला यद्वैखरीमौखरी
वन्द्य कस्य न माननीयमहिमा श्रीपण्डितार्य्यो यति
॥ २० ॥

मन्दारद्रुममञ्जरीमधुझरीमञ्जुस्फुरन्माधुरी-
प्रौढाहङ्कृतिरूढिपाटवपरीपाटी कुकाटी भट ।
नृत्यद्दुर्द्दुकपद्दंगर्त्तविलुठत्स्वर्ल्लोककल्लोलिनी
सल्लापी खलु पण्डितार्य्ययमिनो व्याख्यानकोलाहल
॥ २१ ॥

कारुण्यप्रथमावतारसरणिश्शान्तेर्न्निशा त स्थिर
वैदुष्यस्य तप फल सुजनतासौभाग्यभाग्योदय ।
कन्दर्पद्विरदेन्द्रपञ्चवदन काव्यामृताना खनि
र्ज्जैनाध्वाम्बरभास्करश्श्रुतमुनिर्ज्जागर्त्ति नम्रार्त्तिजित् ॥ २२ ॥

युक्त्यागमार्ण्णवविलोलनमन्दराद्रि-
श्शब्दागमाम्बुरुहकाननबालसूर्य्य ।
शुद्धाशय प्रतिदिन परमागमेन
सवर्द्धते श्रुतमुनिर्य्यतिसार्व्वभौम ॥ २३ ॥

तत्सन्निधौ बेलुगुले जगदग्रतीर्थे
श्रीमानसाविरुगपाह्वय दण्डनाथ ।

श्रीगुम्मटेश्वरसनातनभोगहेतो-

र्ग्रामोत्तम बेलुगुलाख्यमदत्तधीर ॥ २४ ॥

शुभकृति वत्सरे जयति कार्त्तिकमासि तिथौ ।

मुरमथनस्य पुष्टिमुपजग्मुषि शीतरुचौ ॥२५॥

सदुपवन स्वनिर्म्मितनवीनतटाकयुतम् ।

सचिवकुलाग्रणीरदिततीर्त्थवर मुदित ॥२६ ॥

इरुगपदण्डाधीश्वरविमलयश कलमवर्द्धनक्षेत्र ।

आचन्द्रतारकमिद बेलुगुलतीर्थं प्रकाशतामतुल ॥२७ ॥

दानपालनयार्म्मध्ये दानाच्छ्रेयोऽनुपालन ।

दानात्स्वर्ग्गमवाप्नोति पालनादच्युत पद ॥२८॥

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेच्च वसुन्धरां ।

षष्टिर्व्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ॥२९॥

मङ्गल महा श्री श्री श्रा श्री ॥

८३ (२४९)*

न० ८२ के पश्चिम की ओर मण्डप मे एक स्तम्भ पर

(शक स० १६२१)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥१॥

स्वति श्री विजयाभ्युदय शालिवाहनशकवर्ष १६२१ ने सलुव

प्रोभकृतु सवत्सरद कार्त्तिक ब १३ गुरुवारदल्लु

श्रीमन् महाराजाधिराज राजपरमेश्वर कर्न्नाटकराज्याभिषवद

* लेख के नीचे का नोट देखो ।

परितृप्त परमाह्लाद परममङ्गलीभूत षड्दर्शनसरक्षणविच-क्षणोपाय विद्वद्गरिष्ठदुष्टदुप्तजनमदविभञ्जन **महिशूर** धरा-धिनाथरप्प दोडकृष्णराजवडेयरैयनवरु ॥ मत्त ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारसत्यसदय सत्कीर्त्तिकान्ताजय
विनय धर्म्मसदाश्रय सुखचय तज प्रतापोदय ।
जननाथ वरकृष्णभूवरलसत्प्रख्यातचन्द्रोदय
घनपुण्यान्वितच्चत्रियाण्म पडेद सद्धर्म्मसम्पत्तिय ॥२॥

कन्द ॥ श्रीमद्बल्गुलदचलदि
सोमाकर जरिव देवगोमटजिनपन ।
श्रीमुखववलोकिसलोड
नामोदवु पुट्टि हरुषभाजननुसुर्दे ॥३॥

वचन ॥ पार्त्थिवकुलपवित्रनु कृष्णराजपुङ्गवनु बेलुगुलद जिनधर्म्मक्के बिटन्थ ग्रामाधिग्रामभूमिगल् । श्रार्हनहल्लियु । होसहल्लियु । जिननाथपुर । बस्तियग्रामसु । राचनह-ल्लियु । उत्तनहल्लियु । जिननहल्लियु । कोप्पलुगल् बेरसु कसबे बेलुगुलसमेत । सप्तसमुद्रमुल्लन्नेवर सप्तपरमस्था नाधिपतियप्प गोम्मटस्वामियवर पूजोत्सवङ्गल पुण्यसमृद्धिं सम्प्राप्त्यनिमित्त्यर्त्थवागियु । अब्जाब्जमित्रर—माचिपूर्व्वक सर्व्वमान्यवागि दयपालिसियु मत्त ।

कन्द ॥ चिगदेवराजकल्या-
णिय भागदोलिर्प्प अन्नछत्रादिगलिगे ।

सुगुणियु कबालेग्रामव
जगदेरेयतु कृष्णराजशेखर नित्त ।।४।।

इन्ती बेल्गुलधर्म्मवु
अन्तरिसदे चन्द्रसूर्य्यरुल्लन्नेवर ।
सन्तसदिन्देम्मय भू
कान्तरु रक्षिसलि धर्म्मवृद्धिय बेलेय ।।५।।

यी धर्म्मम परिपालिसिदवर् धर्म्मार्त्थकाममोक्षङ्गल परम्परेयिं पडेयुवर् ।।

वृत्त ।। प्रियदिन्दी जिनधर्म्मम नडेयिपर्गायु महाश्रीयु-
मक्केयिद कायद नीचपापिगे कुरुक्षेत्रोर्वियोल् बाणरा
शियोलेल्कोटि मुनीन्द्रर कपिलेय वेदाढ्यर कोन्दुदो[1]
न्दयस सार्गुमिदेन्दु कृष्णनृपशैलाक्षारगल् नेमिसल् ।।
इतिमङ्गल भवतु ।। श्री श्री श्री ।।

[मैसूर नरेश कृष्णराज ओडेयर न गोम्मटेश्वर भगवान् के दर्शन किये और हर्ष से पुलकित होकर बेल्गोल में जैन धर्म के प्रभावानार्थ सदा के लिए उक्त ग्रामों का दान किया । इन ग्रामों में बेल्गुल भी है]

[नोट—लेख में शक सं० १६२१ शोभकृत् का उल्लेख है । पर शक १६२१ न तो शोभकृत ही था और न उस समय कृष्णराज ओडेयर का ही राज्य था । लेख का ठीक समय शक सं १६४६ है जो शोभकृत् था और जब कृष्णराज ओडेयर् का राज्य था ।]

८४ (२५०)

उसी स्तम्भ की दूसरी बाजू पर

(शक स० १५५६)

श्री शालिवाहन **शकवरुष १५५६ नेय भावसवत्सरद आषाढ शु १३ स्थिरवार** ब्रह्मयोगदलु श्रीमन्महाराजाधिराज राजपरमेश्वर **मैसूर**पट्टनाधीश्वर षड्दरुशन धर्म्मस्थापनाचार्य्यराद **चामराज**वोडेयरु अय्यनवरु **बेलुगुलद** स्थानदवर चेत्रवु बहुदिन अडवु आगिरलागि आचामराजवोडेयरु अय्यनवरु यीचेत्रव अडवहिडिदन्तावरु **होसवोलल केम्पप्पन** मग **चन्नणन बेलुगुलद पायि**सेट्टियर मक्कलु **चिक्कण्न चिग**पायसेट्टि यिवरु मुन्ताद अडवहिडिदन्तावर करसि निम्म अडविन सालवनु तीरिसेनु यन्नलागि **चन्नण्न चिकण्न चिगपायि**सेट्टि **मुद्दण्न अज्जण्णन पदुम**प्पन मग **पण्डेण्न पदुमरस**य्य **दोड्डण्न पञ्च**बाणकविगल मग **बम्मप्प बोम्म**णकवि **बिजेयण्न गुम्मण्न चारु**कीर्त्ति **ना**गप्प **बे**डदय्य **बोम्मिसेट्टि** होसहल्लिय **रायण्न परियण्नगौड बैरसेट्टि बैरण्न बी**रय्य इवरु मुन्ताद समस्तरु तम्म तन्देतायिगलिगे पुण्येवागलियेन्दु **गोम्मटस्वामिय** सन्निधियल्लि तम्म गुरु **चारुकीर्त्ति**पण्डितदेवर मुन्दे धारादत्तवागि यी-अडहिन पत्रसालवनु यी-अडव कोट्ट स्थानदवरिग यी-वर्त्तकरु गौडुगलु यी-सालवनु धारापूर्व्वकवागि कोट्टेवु यी विट्टन्त पत्रसालवनु आवनादरु अलुपिदरे **काशिरामेश्वरद**ल्लि

साहसकपिलेयनु ब्राह्मणरनु कोन्द पापके होगुवरु येन्दु बरेद शिलाशासन ॥ श्री श्री ॥

[बेल्गुल मन्दिर की जमीन आदि बहुत दिनो से रहन थी। उक्त तिथि को महाराज चामराज ओडेयर ने चेलन्न आदि रहनदारों को बुलाकर कहा कि तुम मन्दिरों की भूमि को मुक्त कर दो, हम तुम्हारा रुपया देते हैं। इस पर रहनदारों ने अपने पूर्वजों के पुण्य निमित्त बिना कुछ लिये ही श्रीगोम्मटस्वामी और अपने गुरु चारुकीर्ति पण्डित देव की साक्षी में मन्दिरों की भूमि रहन से मुक्त कर दी और यह शिला लेख लिखाया।

८५ (२३४)

गोम्मटेश्वर द्वार की बाईं ओर एक पाषाण पर

(लगभग शक सं० ११०२)

श्रीगोम्मटजिनन नर-
नागामर-दितिज खचर पति-पूजितन ।
योगाग्निहतस्मरन
योगिध्येयननमेयन स्तुतियिसुवे ॥१॥

क्रमदि मेय्वोणदोरद क्रमदे मात बिट्टु तन्निट्ट च-
क्रमदु नि प्रभमागे सिग्गनोलकोण्डात्माग्रजङ्गोल्पु गे-
य्दुमहीराज्यमनित्तु पोगि तपदि कर्म्मारि विध्वंसिया
द महात्म पुरुसूनुबाहुबलिवोल् मत्तारो मानोन्नतर् ॥२॥

धृतजयबाहुबाहुबलिकेवलिरूपसमानपञ्चवि-

शति समुपेत पञ्चशतचापसमुन्नतियुक्तमप्प तत्
प्रतिकृतिय मनोमुददे माडिसिद भरत जिताखिल
क्षितिपतिचक्रि पौदनपुरान्तिकदोल् पुरुदेवनन्दन ॥३॥
चिरकाल सले तज्जिनान्तिकधरित्रीदेशदोल्लोकभी
करण कुक्कुटसर्प्पसङ्कुलमसङ्ख्य पुट्टे दल् कुक्कुटे
श्वर नामन्तद घारिगादुदु बलिक प्राकृतग्गोय्तगो
चरमन्तामहि मन्त्रतन्त्रनियतक्काणबर्गाडिन्तु पलर् ॥४॥
केलल्कप्पुदु देवदुन्दुभिरव मातेनो दिव्यार्च्चना
जाल काणलुमप्पुदाजिनन पादोद्यन्नखप्रस्फुर
ल्लीलादर्प्पणम निरीक्षिसिदवर्क्काणबर्न्निजातीत ज
न्मालम्बाकृतिय महातिशयमादेवङ्गिलाविश्रुत ॥५॥
जनदि तज्जिनविश्रुतातिशयम तां केल्दु नोलपल्ति चे
तनेयोल् पुट्टिरे पोगलुद्यमिसे दूर दुर्ग्गम तत्पुरा
वनियेन्दार्य्यजन प्रबोधिसिदोडन्तादन्दु तद्देवक-
ल्पनेयि माडिपेनेन्दु माडिसिदनिन्तीदेवन गोमट ॥६॥
श्रुतमु दर्शनशुद्धियु त्रिभवमु सद्वृत्तमु दानमु
धृतियु तन्नोले सन्द गङ्गकुलचन्द्र राचमल्ल जग
न्नुतनाभूमिपनद्वितीयविभव चामुण्डराय मनु
प्रतिम गोम्मटनल्ने माडिसिदनिन्ती देवन यत्नदि ॥७॥
अतितुङ्गाकृतियादोडागददरोल्सौन्दय्यमौन्नत्यमु
न्नुतसौन्दर्य्यमुमागे मत्तशिय तानागदौन्नत्यमु ।
न्नुतसौन्दर्य्यमुमूर्जितातिशयमु तन्नल्लि निन्दिर्द्दुवें

क्षितिसम्पूज्यमो गोम्मटेश्वरजिनश्रीरूपमात्मोपम ॥८॥
प्रतिविद्ध बरेयल् मथ नेरेये नोडल् नाकलोकाधिप
स्तुतिगेय्यल् फणिनायक नेरेयनेन्दन्दन्यरारात्पुरि ।
प्रतिविद्ध बरेयल् समन्तु तवे नोडल् बण्निसल् निस्समा
कृतियदक्षिणकुक्कुटेशतनुव साश्चर्य्यसौन्दर्य्यम ॥९॥
मरेदु पारदु मेले पक्षिनिवह कक्षद्वयोद्देशदोल्
मिरुगुत्तु पोरपोण्मुगु सुरभिकाश्मीरारुणच्छायमी
तेरदाश्चर्य्यमनीत्रिलोकद जन तानेय्दे कण्डिद्दु दा-
न्नेरेवन्नेट्टने गोम्मटेश्वरजिनश्री मूर्त्तिय कीर्त्तिसल् ॥१०॥
नेलगट्टानागलोक तलमवनि दिशाभित्ति भित्तिव्रज ख
स्तलभाग मुच्चण मेगण सुरर विमानोत्कर कूटजाल ।
विलसत् तारौघमन्तर्व्वितत्तमणिवितान समन्तागे नित्य
निलय श्रीगोम्मटेशङ्गे निसिदुदु जिनोक्तावलोक त्रिलोक
॥ ११ ॥

अनुपमरूपने स्मरनुदग्रने निर्ज्जितचाक मक्तु दा-
रने नेरे गेल्दुमित्तनखिलोर्व्वियनत्यभिमानिये तपस्-
स्थनुमेरवर्द्धयित्तनेयोलिर्द्दपुदेम्बननूनबोधने
विनिहतकर्म्मबन्धनेने बाहुबलीशनिदेनुदात्तनो ॥ १२ ॥
अभिमानस्थिरभावम नमगे माल्कत्युद्घमानोन्नत
शुभसौभाग्यमनङ्गज भुजबलावष्टम्भम चक्रव-
र्त्तिभुजादर्प्पविलापि बाहुबलि तृष्णाच्छेदम मुक्तरा-
ज्यभरमुक्तियनाप्तनिर्व्वृत्तिपद श्रीगोम्मटेश जिन ॥१३॥

स्फुरदुद्यत्सितकान्तियिं परिसरत्सौरभ्यदिन्द दिशो
त्करम मुद्रिसुतु नमेरुसुमनोवर्ष स्फुट गोम्मटे
श्वरदेवोत्तमचारुदिव्यशिरदोल् देवर्कलिन्दादुद
धरयेल्ल नेरे कन्डुदामहिमेयादेवङ्गदाश्चर्य्यमे ॥ १४ ॥
एनगाय्तीच्चिशलागदाय्तेनगे काणल्केम्बवोलाय्ते पे
ल्वनिताबालकवृद्धगोपततियु कण्डल्करिन्दाश्विन ।
दिनवोन्दावगमुद्घदिव्यकुसुमासार मह्रीलोकलो
चन सन्तोषदमाय्तु **गोम्मट**जिनाधीशोत्तमाङ्गाग्रदोल् ॥१५।
मिरुगुव तारकप्रकरमीपरमेश्वरपादसेवेगे
न्देरपुदे भक्तियिन्दमेने निर्म्मलिन घनपुष्पवृष्टि ब
न्दरगिदुदभ्रदि धरेगदभ्रतराङ्गु तहर्षकोटि कण्
देरेदिरे सन्द बेल्गुलद **गोम्मट**नाथन पादपद्मदोल् ॥१६॥
भरतननादिचक्रधरन भुजयुद्धदे गेल्द कालदोल्
दुरितमहारिय तविसि केवलबोधमनाल्द कालदोल् ।
सुरतति मुन्ने माडिदुदु पूमलेयीदोरेयकुमेम्बिन
सुरिदुदु पुष्पवृष्टि विभु**बाहुबली**शन मेले लीलेयिं ॥१७॥
केम्मगिदेके नाड पलवन्दद नन्दिद बिन्दिगर्कल
नीं मरुलागि देवरिवरेन्दवर मतिगेट्टु निन्नने
कम्म तोलल्चिदप्पे भवकाननदोल् परमात्मरूपन
गोम्मटदेवन नेनेय नीगुवे जाति जरादिदु खम ॥१८॥
सम्मदवागलाग कोलेयु पुसियु कलवु पराङ्गना
सम्मतियु परिग्रहद काङ्क्षेयुमेम्बिवरिन्दमादोडे

न्दु मनुजङ्गिरत्रेय परत्रेय केडेनुतु मह्योच्चदोल्
गोम्मटदेवनिर्द्दसले सारुववोलेसेदिर्द्दनीच्चिसै ॥ १९ ॥
एम्मुमनीवसन्ततुमनिन्दुवुम ननेविल्लुमम्बुम
केम्मगनाथयूथमने माडि बिसुट्ट तपक्के पूण्दु नि
न्दिम्मिगिलप्पुदें पडेवुदेन्दतिमुग्धयरल्पनादमु
गोम्मटदेवनिन्नकिविगेय्दवे निन्नवोलारो नि कृपर् ॥२०॥
एम्मनिदेके नी बिसुटेयन्देलेयु लतिकाङ्गियर्कलु
तम्मललिन्दे बन्दु बिगियप्पिदरेम्बिनमङ्गदछि पु-
त्तु मुरिदोत्ति तल्त लतिकालियुमोप्पे तपोनियोगदोल्
गोम्मटदेवनिर्द्दिरवहीन्द्रसुरेन्द्रमुनीन्द्रवन्दित ॥ २१ ॥
तम्मनेपोदरेन्ननुजरेल्लरुमेय्दे तपक्के नीनुमि
न्तम्म तपक्के बोदोडेनगीसिरियोप्पदु बेडेनुत्त म
ण्न मनमिल्दुमन्नुमिगेयु बगेगोल्लदे दीक्षेगाण्डे नी
गोम्मटदेव निन्न तरिसन्दलवार्य्यजनक्के गोम्मट ॥ २२ ॥
निम्मडियन्न धात्रियोलगिर्द्दपुवेबिदु वेड धात्रि ता
निम्मदुमेन्नदु बगेवोडल्लदु बेरदु दृष्टिबोधवी-
र्य्य महितात्मधर्म्ममभवोक्तियोलेम्ब निजाग्रजोक्तियि
गोम्मटदेव नी मनद मानकषायमनेय्दे तूल्दिदै ॥ २३ ॥
तम्मतपस्विगलगे कुतपस्थिति वेल्दबलाङ्गसङ्गत
तम्म शरीरमागे नेगल्वन्यतराप्रशस्तवृत्तक ।
कम्मरियोजनन्दमे वल स्वपरात्त्यसौख्यहेतुव
गोम्मटदेव नी तपमनान्तुपदेशकनादुदोप्पदे ॥ २४ ॥

र्नीं मनम निजात्मनोलकम्पितमागिडे मोहनीयमु-
ख्यम्मणिदोडि बीले घनघातिबल बलदकप्रबोधसौ
ख्य महिमान्वित नेगले वर्त्तिसि मत्तमघातिघातदिं
गोम्मटदेवमुक्तिपदम पडेदै निरपायसौख्यम ॥ २५ ॥
कम्मिदवप्प काड पोसपूगलिनर्च्चिसि पादपद्मम
सम्मददिन्दे नोडि भवदाकृतिय बलगोण्डु बल्लपा
ड्डिं मनमोल्दु कीर्त्तिपवरे कृतकृत्यरो शक्रनन्ददिं
गोम्मटदेव निन्ननरिदर्च्चिसुतिर्प्पवरे कृतार्त्थरो ॥ २६ ॥
कुसुमास्त्र कामसाम्राज्यद महिमेयनान्तिर्दोड मुन्ने तन्नोल्
वसुधा साम्राज्ययुक्त **भरत**करविमुक्त रथाङ्गास्त्रमुर्मा-
शु-समन्तन्नुद्घदोर्द्दण्डमनेलसिदोड बिट्टु मुक्तिसाम्रा
ज्यसुखार्त्थं दीक्षेय बाहुबलि तलेदनेम्मन्नरेनेन्दोमाण्बर् ॥२७॥
मनदि नुडियि तनुवि-
न्देनसु मुन्नेरपिदघमनलरिपेनेम्बी
मनदिन्दमोसेदु **गोम्मट-**
जिनन स्तुतियिसिदनिन्तु सुजनोत्तस ॥ २८ ॥
सुजनर्भव्यरे तनगव-
रजस्त्रमुत्तसमप्प पुरुलिं **बोप्प** ।
सुजनोत्तमनेनिप्प
सुजनर्गुत्तसमेम्ब पुरुलिन्देनिस ॥ २९ ॥
ई जिननुतिशासनम
श्रीजिनशासनविद विनिर्म्मिसिद वि

घाजितवृजिन सुकवि स
माजनुत विशदकीर्त्ति सुजनोत्तस ॥ ३० ॥
वरसैद्धान्तिक-चक्रे-
श्वर**नयकीर्त्ति**व्रतीन्द्रशिष्य निजचि
त्परिणतनध्यात्मकला-
धरनुज्वलकीर्ति **बालचन्द्र**मुनीन्द्र ॥ ३१ ॥
तन्मुनिनियोगदिं ॥
पोडविगे सन्द **गोम्मट**जिनेन्द्रगुणस्तवशासनक्के क-
न्नडगविबप्पनेन्देनिप **बोप्पण**पण्डितनोल्दु पेल्दिव ।
कडयिसिद वल कवडमय्यन देवणनल्लियिन्दे बा-
गडेगेय रुद्रनादरदे माडिसिद विलसत्प्रतिष्ठेय ॥ ३२ ॥

[इस लेख में बाहुवलि गोम्मटश्वर की स्तुति है । बाहुवलि पुरु देव के पुत्र तथा भरत के लघुभ्राता थे । इन्होंने भरत को युद्ध में परास्त कर दिया । किन्तु संसार से विरक्त हो राज्य भरत के लिये ही छोड़ उन्होंने जिन दीक्षा धारण कर ली । भरत ने पौदनपुर के समीप ५२५ धनुष । प्रमाण बाहुवलि की मूर्त्ति प्रतिष्ठित कराई । कुछ काल बीतने पर मूर्ति के आसपास की भूमि कुक्कुट सर्पों से व्याप्त और बीहड़ वन से आच्छादित होकर दुर्गम्य हो गई । रामचल्लनृप के मन्त्री चामुण्डराय को बाहुवलि के दर्शन की अभिलाषा हुई पर यात्रा के हेतु जब वे तैयार हुए तब उनके गुरु ने उनसे कहा कि वह स्थान बहुत दूर और अगम्य है । इस पर चामुण्डराय ने स्वयं वैसी मूर्त्ति की प्रतिष्ठा कराने का विचार किया और उन्होंने वैसा कर डाला ।

लेख में चामुण्डराय द्वारा स्थापित गोम्मटेश्वर का बड़ा ही मनोहर वर्णन है । जब मूर्ति बहुत बड़ी होती है तब उसमें सौन्दर्य प्राय

नहीं आता। यदि बड़ी भी हुई और सौन्दय भी हुआ तो उसमें दैवी प्रभाव का अभाव हो सकता है। पर यहाँ इन, तीनों के मिश्रण स गोम्मटेश्वर की छटा अपूर्व हो गई है।' कवि ने एक दैवी घटना का उल्लेख किया है कि एक समय सारे दिन भगवान् की मूत्ति पर आकाश से 'नमेरु' पुष्पो की वर्षा हुई जिसे सभी ने देखा। कभी कोई पक्षी मूत्ति के ऊपर होकर नहीं उडता। भगवान् की भुजाओं के अधोभाग से नित्य सुगन्ध और केशर के समान रक्त ज्योति की आभा निकलती रहती है।

बाहुबलि स्वामी ने किस प्रकार राज्य को त्याग कठिन तपस्या स्वीकार की कैसा घोर तप किया, कर्म शत्रुओं को कैसा दमन किया आदि विषयों का वणन बडा ही चित्तग्राही है।

लेख की कविता बडे ऊँचे दर्जे की है। यह कन्नड कविराज बोप्पण पण्डित अपर नाम सुजनोत्तस' की रचना है। इसे उन्होने नयकीति के शिष्य बालच द्र मुनि के शिष्य कवडमय्य देवन के आग्रह से रचा।]

८६ (२३५)

उसी पाषाण के पश्चिम मुख पर

(लगभग शक स० ११०७)

स्वस्ति श्री बेलुगुलतीर्तद गोम्मटदेवर सुत्तालयदोलु वड्ड व्यवहारि मोसलेय बसविसेट्टियरु तावु माडिसिद चतुर्व्विंस-तितीर्त्थकर अष्टविधार्च्चनेगे मोसलेय नकरङ्गलु वरिसनिब न्धियागि कोडुव पडि नेमिसेट्टि बसविसेट्टि प ४ गङ्गर महदेव च्चिक्कमादि प २ दम्मिसेट्टि प ४ बिट्टिसेट्टि बीच्चिसेट्टि एलगिसेट्टि

प ३ उयमसेट्टि बिदियमसेट्टि प ४ महदेव सेट्टि रट्टे सेट्टि प २ पारिससेट्टि बसविसेट्टि रायिसेट्टि प ४ मारगूलिसेट्टि होय्सल सेट्टि प २ नम्बिदेवसेट्टि प ५ चोकिसेट्टि प ५ जिन्निसेट्टि प ५ बाहुबलिसेट्टि प ५ पट्टणसामि अड्किसेट्टि मालिसेट्टि प ३ महदेव-सेट्टि गोविसेट्टि प २ बम्मिसेट्टि सूकिसेट्टि प २ माराण्डिसेट्टि महदेवसेट्टि प २ बैरिसेट्टि मारिसेट्टि प २ सोविसेट्टि दुद्दिसेट्टि प २ हारुवसेट्टि हरदिसेट्टि प २ बम्माण्डि प २ सान्तेय प १ कूतैय्य प २ मासखिसेट्टि कूलिसेट्टि बसविसेट्टि प ३ चट्टिसेट्टि बसविसेट्टि प १ मल्लिसेट्टि प १ महदेव बयिर प २ बम्मेय मसण प २ कालेय गाडेय प २ गवुडुसामि मदवनिगसेट्टि प २ मालि-सेट्टि पारिससेट्टि प २ होल्लिसेट्टि बोकिसेट्टि प २ गङ्गिसेट्टि आय्तसेट्टि देविसेट्टि (प) २ मालिसेट्टि दम्मिसेट्टि प २ मारि-सेट्टि आय्तमसेट्टि प २ मारज्ज हरियण कालेय प २ मारगौण्डनहल्लिय गुम्मज्ज बैरेय प १ माकिसेट्टि बूविसेट्टि प १ एचिसेट्टि प १ अकवेय महदेवसेट्टि पारिस्ससेट्टि प १ निडियमल्लिसेट्टि प १

[मोसले के वड्ड व्यवहारि बसवसेट्टि द्वारा प्रतिष्ठापित चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविधपूजन के लिए मोसले के महाजनों ने उक्त मासिक चन्दा देने का संकल्प किया।]

८७ (२३६)

उसी पाषाण के पूर्व मुख पर

(लगभग शक सं० ११०७)

श्रीबसविसेट्टियर तीर्त्थकर अष्टविधार्च्चनेगे मोसलेय नकर वरिस निबन्धियागि चवुण्डेय जकण्ण किरिय-चवुण्डेय प २ महदेवसेट्टि कम्बिसेट्टि प १ उयमसेट्टि पारिससेट्टि प १ बोकि सेट्टि बूकिसेट्टि प १ माचिसेट्टि होन्निसेट्टि सुग्गि सेट्टि प १ सूकिसेट्टि प १ रामिसेट्टि हाविसेट्टि (प) १ मच्चिसेट्टि बसविसेट्टि प १ मल्लिसेट्टि गुड्डिसेट्टि चिकमल्लिसेट्टि(प)२ मसणिसेट्टि माचि सेट्टि अम्माण्डिसेट्टि प २ अलियमारिसेट्टि सुद्दिसेट्टि प २ करि-किसेट्टि चिकमादि प २ करिय बम्मिसेट्टि मारिसेट्टि प १ मल्लि-सट्टि अयिविसेट्टि कालिसेट्टि प २ मणिगार माचिसेट्टि सेट्टियण प १ तेरणिय चौण्डेय हेग्गडे बसवण्ण चन्देय रामेय हुल्लेय जकण प २ मालगौण्ड सेट्टियण माचय मारेय चिकण गोलेय प १ मादि-गौण्ड गौण्डेय माचेय बम्मेय होन्नय जक्कौण्ड प १

[तात्पर्य्य पूर्वोक्तानुसार ही है]

८८ (२३७)

पूर्वोक्त लेख के नीचे

(सम्भवत शक सं० १११८)

नल संवत्सरद उत्तरायण सङ्क्रान्तियल्लु श्रीमन्महापसा-यित विजयण्णनवरलिय चिकमदुकण्ण श्रीगोम्मटदेवर

नित्यार्च्चनेगे २० बासिग हूविङ्गे श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु **चन्द्रप्रभदेवर** कैयलु मारुगोण्डु गङ्गसमुद्रदलु गद्दे स १ बेद्दलु क २०० नूरनु कोण्डु कोट्ट दत्ति मङ्गलमहाश्री ।

[उक्त तिथि को महापसायित विजयण्ण के दामाद चिक्क मदुकण्ण ने गङ्गसमुद्र की कुछ भूमि महामण्डलाचाय चन्द्रप्रभदेव से खरीदकर गोम्मटदेव की प्रतिदिन की पूजन के हेतु बीस पुष्प मालाओं के लिए अर्पण की ।]

[नोट—लेख मे नल संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० १११८ नल था]

८९ (२३८)

पूर्वोक्त लेख के नीचे

(सभवत शक स० ११२०)

कालयुक्तिसंवत्सरद कार्त्तिक सु १ आ श्रीगोम्मटदेवर यर्च्चनेगे हुविन पडिगे श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु हिरिय **नयकीर्त्तिदेवर** शिष्यरु **चन्दप्रभदेवर** कयलु यगलियद **कबि** सेट्टिय **सोमेय**नु गद्दे **पडवलगेरेय** गद्दे को १० **गङ्गसमुद्रदल्लि** कोम्म तगलि को १० आर्व्वदलु गुलेय केयमेगे गद्याण ओन्दुहैान बेदलु भकलुन सीमे ।

[उक्त तिथि को कविसट्टि के (पुत्र) सोमेय ने उक्त भूमि का दान गोम्मटदेव की पुष्प पूजन के हेतु हिरियनयकीर्ति देव के शिष्य महामण्डलाचाय चन्द्रप्रभदेव को कर दिया ।]

[नोट—लेख में कालयुक्त संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० ११२० कालयुक्त था ।]

८० (२४०)

गोम्मटेश्वर द्वार के दाहिनी तरफ़ एक पाषाण पर

(लगभग शक सं० ११००)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥१॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यता प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमोऽस्तु ॥
जगत्त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने ।
नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥३॥
नमो जिनाय ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वर । **द्वारवती** पुरवराधीश्वर । **यादव** कुलाम्बर-द्युमणि । सम्यक्त्वचूडामणि । मलपरोल् गण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वर । **त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड** भुजबल**वीर गङ्ग बिष्णु वर्द्धन** होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतार सलुत्तमिरे तत्पाद पद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनता धारनुदारनन्यवनितादूर वचस्सुन्दरी
घनवृत्तस्तनहारनुग्ररणधीर मारनेनेन्दपै ।
जनक तानेने माकणब्बे विबुधप्रख्यातधर्म्मप्रयु-
क्तनिकामात्तचरित्रे तायेनलिदेनेच महाधन्यनो ॥४॥

कन्द ॥ वित्रस्तमल बुधजन-
मित्र द्विजकुलपवित्रनेच जगदोळ् ।
पात्र रिपुकुलकन्द-ख
नित्र कौण्डिन्यगोत्रनमलचरित्र ॥५॥
मनुचरितनेचिगाङ्कन
मनेयोळ् मुनिजनसमूहमु बुधजनमु ।
जिनपूजने जिनवन्दने
जिनमहिमेगलावकालमु शोभिसुगु ॥६॥
उत्तमगुणततिवनिता-
वृत्तियनोल्कोण्डुदेन्दु जगमेल्ल क-
य्येत्तुविनममलगुणस-
म्पत्तिगे जगदोलग पोचिकब्बेये नोन्तल् ॥७॥

वचन ॥ अन्तेनिसिद् एचिराजन पोचिकब्बेय पुत्रनखिलतीर्त्थकरपरमदेव - परमचरिताकर्णनोदीर्ण्ण विपुलपुलकपरिकलितबारबाणनुमसमसमररसरसिक रिपुनृपकलापावलेपलोलुपकृपाणनुवाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदनु सकललोक शोकापनोदनु ॥

वृत्त ॥ वज्र वज्रभृतो हल हलभृतश्चक्र तथा चक्रिण-
श्शक्तिश्शक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्ग्गाण्डीवकोदण्डिन ।
यस्तद्वद्वितनोति विष्णुनृपते कार्य्य कथ मादृशै-
र्ग्गङ्गो गङ्गतरङ्गरञ्जितयशोराशिस्स वर्ण्यो भवेत् ॥८॥

वचन ॥ अन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक द्रोहघरट्ट

गङ्गराज चोलन सामन्तनदियम घट्टदिं मेलाद गङ्गवा-
डिनाड गडिय तलकाड वीडिनोल् पडियिप्पन्तिट्ट चोल
कोट्ट नाड कोडदे कादि कोल्लिमेने विजिगीषुवृत्तियिन्द
मेत्ति बलमेरडु साच्चिर्चेदल्लि ॥

वृत्त ॥ इत्तण भूमिभागदोलधन्यरदेके भवत्प्रतापस-
म्पत्तिय वर्ण्णनाविधिगे गङ्गचमूप जिगीषुवृत्तियि
न्देत्तिद निन्न कय्य निशितासिय तैामोने बेन्न बारने
त्तुत्तिरे पोगि कञ्चि गुरियप्पिनमोडिद दामनेय्दने ॥९॥
कदनदोलन्दु निन्न तरवारिय बारिगे मेय्यनोड्डला
रदे नलिदिन्नुवन्तदने जानिसि जानिसि गङ्ग तन्न न-
म्बिद सुदतीकदम्बदेर्दे पैावने वोगिरे पुल्ले वेच्चु वे
च्चिदपनहर्न्निशं तिगुलदामनरण्यशरण्यवृत्तियि ॥१०॥
एनितानु बवरङ्गलोल्पलबर बेङ्कोण्ड गण्डिन्दमो
वेनिसुत्त तलकाडोलिन्तवरमिर्द्दीगलकर गङ्गरा-
जन खल्गाहतिगल्कि युद्धविधियोल्बेन्नित्तु नायुण्नदो
डिनलुण्डिर्द्दपनत्त शैावशमिवोल्सामन्तदामोदर ॥११॥

वचन ॥ एम्बिनमोन्दे मेय्योलवयवदिनेय्दि मूदलिसि धृतिगिडिसि
बेङ्कोण्डु मत्त नरसिङ्गवर्म्म मोदलागे घट्टदि मेलाद चोलन
सामन्तरेल्लर बेङ्कोण्डु नाडादुदेल्लमनेकच्छत्रदुण्डिगेसाध्य
माडि कुडे कृतज्ञ विष्णुनृपति मेच्चि मेच्चिदें बेडिकोल्लिमेने

कन्द ॥ अवनिपनेनगित्तपने-
न्दवरिवरवोलुलिद वस्तुव बेडदे भू-

भुवन बण्णिसे **गोवि**
न्दवाडिय बेडिद जिनार्च्चन लुब्ध ॥१२॥
गोम्मटमेने मुनिसमुदा-
य मनदोलमेच्चि मेच्चि बिच्चलिसुत्तु ।
गोम्मटदेवर पूजेग-
द मुददिं बिट्टनल्ते धीरोदात्त ॥१३॥

म्भक्कर ॥ आदियागिप्पुदार्हतसमयक्के **मूलसङ्घ कोण्डकु-**
दान्वय
बादु वेडद बलेयिपुदल्लिय **देसिगगणद पुस्तकगच्छद** ।
बोधविभवद **कुक्कुटासनमलधारि** देवर शिष्यरेनिप पेम्पि-
ङ्गादमेसेदिर्प्प **शुभचन्द्र**सिद्धान्तदेवर गुड्ड **गङ्ग**चमूपति
॥ १४ ॥

गङ्गवाडिय वसदिगलेनितोलवनितुम ताने्व्दे पोसयिसिद
गङ्गवाडिय गोम्मटदेवग्गे सुत्तालयमनेव्दे माडिसिद ।
गङ्गवाडिय तिगुलर बेङ्कोण्डु वीरगङ्गङ्गे निमिर्च्चि कोट्ट
गङ्गराजनामुन्निन गङ्गर रायङ्ग नूर्म्मडि धन्यनल्ते ॥ १५ ॥
धर्म्मस्यैव बलाल्लोको जयत्यखिलविद्विष ।
आरोपयतु तत्रैव सर्व्वोऽपि गुणमुत्तम ॥१६॥
श्रीमज्जैनवचोऽब्धिवर्द्धनविधु साहित्यविद्यानिधि-
स्सर्प्पद्दर्पकहस्तिमस्तकलुठत्प्रोत्कण्ठकण्ठीरव ।
स श्रीमान् **गुणचन्द्र**देवतनयस्सौजन्यजन्यावनि
स्स्थेयात् श्री**नयकीर्त्ति**देवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वर ॥१७॥

कृतदिग्जैत्रविद वरुत्ते **नरसिंह**चोणिप कण्डु स-
न्मतियिं **गोम्मटपार्श्वनाथ**जिनर मत्तीचतुर्व्विंशति-
प्रतिमागेहमनिन्तिवर्क्के विनुत प्रोत्साहदिं बिट्टन
प्रतिमल्ल **सवणेरबेक्क**गेरेयुम कल्पान्तर सल्विन ॥१८॥

नरसिंहहिमाद्रितदुद्धृतकलशहृदकहुल्लकरजिह्विकेया-
नतधारागङ्गाम्बुनि **नयकीर्त्ति** मुनीशपादसरसीमध्ये ॥१९॥

ललनालीलेगे मुन्नवेन्तु कुसुमास्त्र पुट्टिदों विष्णुग
ललितश्रीवधुविङ्गवन्ते **नरसिंह**चोणिपालङ्गवे-
चलदेवीवधुग परार्थचरित पुण्याधिक पुट्टिदों
बलवद्वैरिकुलान्तक जयभुज **बल्लाल**भूपालक ॥२०॥

चिरकाल रिपुगलगसाध्यमेनिसिर्द्दुचङ्गिय मुत्ति
दुद्धरतेजोनिधि धूलिगोटेयने कोण्डाकामदेवावनी-
श्वरन सन्दोडेयक्षितीश्वरननाभण्डारम स्त्रीयर
तुरगव्रातमुम समन्दु पिडिद **बल्लाल**भूपालक ॥२१॥

स्वस्ति श्रीमन्नयकिर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्ड श्रीमन्म-
हाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लय्यङ्गलु श्रीमत्प्रताप
चक्रवर्त्ति **वीरबल्लालदेवर** कय्यलु **गोम्मटदेवर पार्श्वदेवर**
चतुर्व्विंशति तीर्त्थकरर अष्टविधार्च्चनेग रिषियराहारदानक
बेडिकोण्डु **सवणेरबेक्क**गेरेय बिट्ट दत्ति ॥

परमागमवारिधिहिम-
किरण राद्धान्तचक्रि**नयकीर्त्ति**यमी-

श्वरशिष्यनमलनिजचित्-
परिणतनध्यात्मि**बालचन्द्र**मुनीन्द्र ॥ २२ ॥
कन्तुकुलान्तकालयमनूर्ज्जितशासनम निशिधिका-
सन्ततिय तटाक सरसीकुलम **नयकीर्त्ति**देवसै
द्धान्तिकरोल्परोत्तविनयङ्गलनीतेरदिन्द मालपरा-
रिन्तिरे नोन्तरारेनिसिद **नयकीर्त्ति**निलाविभागदोल् ॥२३॥

[यह लेख आदि स आठवे पद्य तक लेख न० ५६ (७३) के पूर्वभाग के समान ही है। केवल इसमें तीसरा पद्य अधिक है। इस लेख में भी विष्णु नरेश के महादण्डनायक गङ्गराज के पराक्रम का अच्छा वर्णन है। उन्होंने तलकाडु पर घेरा डालनेवाले चोल सामन्त अदियम नरसिंह वर्मा, दामोदर व तिगुलदाम को भारी पराजय दी। इस पर विष्णुवर्द्धन ने प्रसन्न होकर उनसे पारितोषक माँगने को कहा। उन्होंने गोम्मटेश्वर की पूजन निमित्त गोविन्द वाडि' का दान मागा। इसे नरेश ने सहर्ष स्वीकार किया।

गङ्गराज कुन्दकुन्दान्वय के कुक्कुटासन मलधारिदेव के शिष्य शुभ चन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। उनके तिगुलों को हराकर गङ्गवाडि की रक्षा करने, गङ्गवाडि के गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाने व अनेक जैन बस्तियों का जीर्णोद्धार करने का लेख न० ५६ के सदृश यहाँ भी उल्लेख है और यहाँ भी वे चामुण्डराय से सौगुणे अधिक धन्य कहे गये है।

पद्य १७ और १८ में गुणचन्द्र देव के तनय नयकीर्ति देव का उल्लेख करके कहा गया है कि नरसिंह नरेश ने दिग्विजय से लौटते हुए गोम्मटेश्वर के दर्शन किये और सदा के लिए पूजनार्थ तीन ग्रामो का दान दिया। इसके पश्चात् नरसिंह नरेश और एचल देवी से उत्पन्न होनेवाले बल्लाल नृप का कामदेव और ओडेय राजाओं को जीतने, उच्चङ्गि

का किला विजय करने तथा अपने प्रधान कोषाध्यक्ष नयकीति देव के शिष्य हुल्लय' द्वारा उक्त तीनो ग्रामो के दान को पूरा करने का उल्लेख है ।

अन्त में नयकीर्ति देव के शिष्य अध्यात्मि बालचन्द्र के अपने गुरु के स्मारक अनेक शासन रचने व तालाब आदि निर्माण करवाने का उल्लेख है ।]

[नोट—पद्य १७ से ऐसा विदित होता है कि उसके लिखे जाने के समय ,नयकीर्त्ति जीवित थे। किन्तु अन्तिम पद्य से स्पष्ट होता है कि उनके लिखे जाने के समय नयकीति का स्वगवास हो चुका था। सम्भव है कि लेख का पूव भाग (पद्य २१ तक) नयकीर्ति के जीवन काल में ही लिखा गया हो और शेष भाग पीछे से जोडा गया हो ।]

८१ (२४१)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक स० ११००)

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरप्प श्रीबेलुगुलतीर्थद समस्त माणिक्य नखरङ्गलु श्रीगोम्मटदेवर पारिश्वदेवरिगे वर्षनिबन्धि-यागि हूविनपडिगे जातिहवलके तोलेगे ता १ करिदके वीस १ यिद आचन्द्रार्कतार बर सलिसुवरु ॥ मङ्गल महा श्री श्री ॥

[बेल्गुल के समस्त जौहरियो ने गोम्मट देव और पार्श्वदेव की पुष्प पूजन के लिए अपने माणिक्यों पर उक्त वार्षिक चन्दा देने का सकल्प किया ।]

८२ (२४२)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११००)

स्वस्ति श्री बेलुगुलतीर्थद गुम्मिसेट्टिय दसैय बिक्कैवेय केतय्य कोषान मरिसेट्टिय मग लखण्न लोकेयसहखिय मगलु सोमौवे मेलमेलद समस्तनखरङ्गलु गोम्मटदेवर हुविन पडगे गङ्गसमुद्रद हिन्दे गदे स १ आगोम्मटपुरद भूमियोलगे ओन्दुहोन्न बेद्दले गुलयकेय्य समुदायङ्गल कय्यलु मारुगोण्डु मा (म) लेगारगे आचन्द्राकतारबर सलुवन्तागि बरदुकोट्ट शासन ॥

[बेल्गुल के गुम्मिसेट्टि आदि समस्त व्यापारियों ने गङ्गसमुद्र और गोम्मटपुर की कुछ भूमि खरीद कर उसे गोम्मटदेव की पूजा के निमित्त पुष्प देने के लिऐ एक माली को सदा के लिए प्रदान कर दी ।]

८३ (२४३)

उसी पाषाण की दूसरी बाजू पर

(सम्भवत शक सं० ११९७)

स्वस्ति श्रीभावसवत्सरद भाद्रपद शुक्रवारदन्दु श्री गोम्मटदेवरिगेवु तीर्थकरिगेवु हूविन पडिगे चन्निसेट्टिय मग चन्द्रकीर्त्ति भट्टारकदेवर गुड्ड कल्लय्यनु अक्षयभण्डारवागि कोट्ट ग १ प २¾ यि मरियादेयलु कुन्ददे ६ बासिग-हुव्वनि-कुवरु मङ्गलमहा श्री श्री ॥

[चेन्निसट्टि के पुत्र व चन्द्रकीति भट्टारक देव के शिष्य कल्लय्य ने कम से कम ६ पुष्प मालाएँ नित्य चढाये जाने के हेतु उक्त तिथि को उक्त दान दिया ।]

[नोट—लेख में भाव संवत्सर का उल्लेख है शक सं० ११८७ भाव संवत्सर था ।]

९४ (२४४)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवत शक स० ११८७)

स्वस्ति श्रीभावस बत्सरद पुष्य सुद्ध ५ ब्रि (बृ) श्रीगोम्मट देवर नित्याभिषेकके श्रीप्रभाचन्द्रभट्टारकदेवर गुड्ड बारकनूर मेधाविसेट्टिग परोक्षविनेयक्के अक्षयभण्डारक्के कोट्ट गद्याण नाल्कु यहोम्बिड्ड अमृतपडिगे आचन्द्रार्क्क नित्यपाडि ३ य मान हाल नडसुवदु यि धर्म्मव माणिक-नकरङ्गलु एलयिगलु आरैवरु मङ्गलमहा श्री श्री ॥

[प्रभाचन्द्र भट्टारक देव के शिष्य बारकनूर के मेधावि सेट्टि की स्मृति में गोम्मट देव के अभिषेकार्थ ३ मान' दुग्ध प्रति दिवस देने के लिए उक्त तिथि को ४ गद्याण' का दान दिया गया ।]

[नोट—लेख में भाव संवत्सर का उल्लेख होने से समय उपर्युक्त ।]

९५ (२४५)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक स० ११८७)

हलसूर सोयिसेटिय मग केतिसेटियरु गोम्मट देवरिगे

नित्यपडि मूरुमान हालनु अभिषेकक्के कोट्ट ग ३ क्क होन्न बडिगे हाल नडयिसुवरु माणिकनखर नडेयिसुवरु आचन्द्रार्क्क-वुल्लनक मङ्गलमहा श्री ॥

[गोम्मट देव के नित्याभिषक के हेतु सोमि सेटि के पुत्र हलसूर निवासी केति सेटि ने ३ 'मान' दूध के लिए ३ ग का दान दिया जिसके व्याज से दूध लिया जावे ।]

८६ (२४६)

उसी पाषाण की दायी बाजू पर

(शक स० ११८६)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥

श्रीमत्प्रतापचक्रवर्त्ति होय्सल श्रीवीर**नारसि** हदेवरसरु श्रीमद्राजधानि**दो**रसमुद्रदलु सुखसङ्कथा विनोददि राज्य गेय्वुत्त-मिरे **शकवरुष ११८६** नेय **श्रीमुखस वत्सरद श्रावण सु १५ आदिवार**दलु श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु **नयकीर्ति** देवर शिष्यरु **चन्द्रप्रभ**देवर कय्यलु **होन्न**चगेरेय **मादय्यन मग सम्भु-**देवनु **सङ्गि**सेट्टियर मग **बोम्मण्ण** अग्गप्पसेट्टियर मक्कलु **दोरय** **चवुडय्यन**वरु श्री**गोम्मटदेवर** अमृतपडिगे मत्तियकेरेय नट्टकल्ल सीमामर्य्यादेयोलगाद गद्द सुत्तालयद चतुर्व्विंशतितीर्त्थकर अमृतपडिगे कोट्ट मोदलेरिय गद्दे सलगे वोन्दु-सहित सर्व्वबा-धापरिहारवागि धारापूर्व्वक माडिकोण्डु आचन्द्रार्क्कतार वर सल्वन्तागि कोट्ट दत्ति । मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[होय्सल नरेश श्री वीर नारसिंह के समय में उक्त तिथि को होन्न चगेरे के मादय्य के पुत्र सम्भुदेव ने महामण्डलाचार्य नयकीर्ति देव के शिष्य चन्द्रप्रभदेव से माच्चिय केरे की उक्त भूमि खरीदकर उसे गोम्मट देव और चतुर्विंशति तीर्थंकर के दुग्ध पूजन के लिये प्रदान कर दी।]

८७ (२४७)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवत शक सं० ११९७)

स्वस्ति श्रीभावस वत्सरद भाद्रपद सुद्ध ५ आदिवार दलु श्रीगोम्मटदेवर नित्याभिषेकक्के अमृतपडिगे श्रीप्रभाचन्द्र-भट्टारकदेवरगुड्ड गेरसप्पेय गोविन्दसेट्टिय मग आदियण्न अक्षयभण्डारवागि इरिसिद गद्याण नाल्कु तिङ्गलिङ्गे होङ्गे हाग बड्डि आवडियलि नित्याभिषेकक्के वब्बल हाल नडसुवरु ई-होन्निङ्गे माणिक्यनकर एलमं ओडेयरु। आचन्द्रार्क्कतार बर सल्व-न्तागि नडसुवरु। मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[उक्त तिथि को गेरसप्पे के गोविन्द सेट्टि के पुत्र व प्रभाचन्द्र भट्टारक देव के शिष्य आदियण्ण ने गोम्मटदेव के नित्याभिषेक के लिए ४ गद्याण का दान किया। इस रकम के एक 'होन' पर एक 'हाग' मासिक व्याज की दर से एक 'बल्ल' दुग्ध प्रति दिन दिया जाना चाहिए।]

---

६८ (२२३)

अष्टदिक्पालक मण्डप मे एक स्तम्भ पर

(शक स० १७४८)

(पूर्व मुख)

श्री स्वस्ति श्रीविजयाभ्युदय शालिवाहन **शख वरुष १७४८** ने सन्द वर्त्तमानक्के सलुव **व्ययनामसवत्सरद फाल्गुण ब५ भानुवारद**ल्लु कास्यपगोत्र अहनियसूत्र वृषभप्रवरे प्रथमानुयोगशाखाया श्री**चावुण्डराज** वशस्थराद **बिलिकेरे अनन्त-राजै** अरसिनवर प्रपौत्र **तोटद्देवराजै** अरसिनवर पौत्र **सत्यमङ्गलद चलुवै**-अरसिनवर पुत्र श्रीमन्म**हिसूरपुरवराधीश श्रीकृष्णराज**-बडेयरवर सम्मुखदल्लि भारिगाट्टु कन्दाचार सवारकचेरि—

(उत्तर मुख)

यिलाखे भक्ति **देवराजै** अरसिनवरु श्री**गो**मटेश्वरस्वामियवर मस्तकाभिषेकपूजोत्सवदिवस स्वर्गस्थराद्दक्के श्रीमठदिन्द वर्षप्रति वर्षदल्लु श्रीगोमटेश्वरस्वामिय वरिगे पादपूजे मुन्ताद सेवार्त्थ नडेयुवहागे यिवर पुत्रराद पुट्टदेवराजै अरसिनवरु १०० वरह हाकिरुव पुदुवट्टिन सेवेगे भद्र भूयाद्वर्द्धता जिनशासन । श्री ।

[काश्यप गोत्र, अहनिय सत्र वृषभ प्रवर और प्रथमानुयोग शाखा मे चावुण्डराज के व शज बिलिकेरे अन तराजै अरसु के प्रपौत्र, तोटदेवराजै अरसु के पौत्र व सत्यमङ्गल के चलुवै अरसु के पुत्र मसूर नरेश श्री कृष्णराज बडयर के प्रधान अङ्गरक्षक (भक्ति) देवराजै अरसु की मृत्यु गोम्मटेश्वर के मस्ताकाभिषेक के दिवस हुई। अतएव उनके

पुत्र पुट्ट देवराजै अरसु ने गोम्मट स्वामी की वार्षिक पाद पूजा के लिए उक्त तिथि को १०० 'वरह' का दान किया ।]

८८ (२२४)

उसी मण्डप में एक द्वितीय स्तम्भ के पश्चिम मुख पर

(शक स० १४५८)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥

सखवर्ष साविरद १४५८ तनेय **विलम्बि** सवत्सरद **माघ शुद्ध ५** यलु **गेरसोप्पेय चवुडिसटिरु** अगणिबोम्मय्यन मग **कम्भय्यनु** तन्न चेत्र अडहागिरलागि **चवुडिसटिरु** अडनु बिडिसि कोट्टुदक्के बेन्दु तण्डक्के आहारदान **त्यागद** ब्रह्मन मुन्दण हूविन तोट बेन्दु पडि अक्कि अक्षतेपुञ्ज इट्टनु आचन्द्रार्कस्थायियागि नावु नडसि बहेनु मङ्गलम श्री श्री श्री श्री श्री ॥

[गेरसोप्पे के चवुडि सट्टि ने मेरी भूमि रहन से मुक्त कर दी है इसलिए मैं अगणि बोम्मय्य का पुत्र कम्भिय्य सदैव निम्नलिखित दान का पालन करूँगा—एक संघ (तण्ड) को आहार त्यागद ब्रह्म के सामने के बाग (की देख रेख) व अक्षत पुञ्ज के लिए एक 'पडि तण्डुल ।]

१०२ (२२७)

उसी स्तम्भ के पूर्व मुख पर

(शक स० १४५६)

इ मोदल तत्सवत्सरदलु गेरसोप्पेय चवुडिसट्टिरिगे हूविन चेन्नय्यनु कोट धर्मसाधनद सम्बन्ध नन्न चेत्रवु अड हाकिरलागि नीवु आचेत्रवनु बिडिसि को ॥

[चनय्य माली (हूविन) ने चवुडि सेट्टि को यह 'धर्म साधन' दिया कि 'आपने मेरी जमीन रहन स मुक्त की है इसलिए मैं ।]

१०३ (२२८)

उसी मण्डप मे तृतीय स्तम्भ के पूर्व मुख पर

(शक स० १४३२)

सखवरुष१४३२ डनेय शुक्लसवत्सरद बैशाख़ ब० १०लू मण्डलेश्वरकुलो ुङ्ग चङ्गाल्वमहदेवमहीपालन प्रधानसिरोमणि केशव नाथ वर पुत्र कुल पवित्र जिनधर्म्मसहायप्रतिपालकरह बोम्यणमन्त्रिसहोदररह सम्यक्तचूडामणि चेन्नबोम्मरसन नञ्जरायपट्टणद श्रावकभव्यजनङ्गल गाष्टिसहाय श्री गुम्मटस्वामिय बलिवाडव जीर्ण्णोद्धारव माडिसिदरु श्री ॥

[मण्डलेश्वर कुलोत्तुग चङ्गाल्व महदेव महीपाल के प्रधान मन्त्री केशवनाथ के पुत्र, बोम्यण मन्त्री के भ्राता चन्न बोम्मरस व नञ्जराय पट्टण के श्रावको ने गोम्मट स्वामी के 'बलिवाड' (? ऊपर की मञ्जिल) का जीर्णोद्धार कराया ।]

१०४ (१८५)

गोम्मटेश्वर के दक्षिण की ओर कूष्माण्डिनी के पादपीठ पर

(लगभग शक स० ११००)

श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्रीबालचन्द्रदेवर गुड्ड केतिसेट्टिय मग बम्मिसेट्टि माडिसिद यक्षदेवते।।

[नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति के शिष्य बालचन्द्र देव के शिष्य बम्मि सेट्टि, केटि सट्टि के पुत्र, न यह यक्ष देवता प्रतिष्ठित कराया ।]

१०५ (२५४)

सिद्धरबस्ती मे उत्तर की ओर एक स्तम्भपर

(शक स० १३२०)

(पश्चिम मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ।। १ ।।
श्रीनाभेयोऽजित शम्भव नमिविमलास्सुव्रतानन्तधर्म्मा-
श्चन्द्राङ्कश्शान्तिकुन्थू ससुमतिसुविधिश्शीतलो वासुपूज्य ।
मल्लिश्श्रेयस्सुपार्श्वौ जलजरुचिररोनन्दन पार्श्वनेमी
श्रीवीरश्चेति देवा भुवि ददतु चतुर्व्विंशतिर्म्मङ्गलानि ।। २ ।।
वीरो विशिष्टां विनताय रातीमितित्रैलोकैरभिवर्ण्यते य
निरस्तकर्म्मा निखिलार्त्थवेदी
पायादसौ पश्चिमतीर्त्थनाथ ।।३।।

तस्याभवन् सदसि वीरजिनस्य सिद्ध

सप्तर्द्धयो गणधरा किल रुद्रसङ्ख्या ।

ये धारयन्ति शुभदर्शनबोधवृत्ते

मिथ्यात्रयादपि गणान् विनिवर्त्त्य विश्वान् ॥४॥

इन्द्राग्नि भूती अपि वायुभूतिरकम्पनो मौर्य सुधर्म्मपुत्रा ।

मैत्रेयमौण्ड्यौ पुनरन्धवेल प्रभासकश्चेति तदीय सञ्ज्ञा ॥५॥

पूर्व्वज्ञानिह वादिनोऽवधिजुषो धीपर्य्ययज्ञानिन

सेवे वैक्रियकाश्च शिक्षकयतीन्कैवल्यभाजोऽप्यमून् ।

इत्यग्न्यम्बुनिधित्रयोत्तरनिशानाथास्तिकायैश्शतै

रुद्रोनैकशताचलैरपि मितान्सप्तैव नित्य गणान् ॥६॥

सिद्धिं गते वीरजिनेऽनुबद्ध-केवल्यभिख्यास्त्रयएव जाता ।

श्री**गौतमस्तौ** च **सुधर्म्मजम्बू** यै केवली वै तदिहानुबद्ध ॥७॥

जानन्ति **विष्णुरपराजितनन्दिमित्रौ**

गोवर्द्धनेन गुरुणा सह **भद्रबाहुः** ।

ये पञ्चकेवलिवदप्यखिल श्रुतेन ,

शुद्धा ततोऽस्तु मम धी श्रुतकेवलिभ्य ॥८॥

विद्यानुवादपठने स्वयमागताभि-

र्व्विद्याभिरात्मचरितादमलादभिन्ना ।

पूर्व्वाणि ये दशपुरूण्यपि धारयन्ति
तान्नौम्यभिन्नदशपूर्व्वधरान् समस्तान् ॥९॥
तेष्वग्रिय प्रोष्ठिल गङ्गदेवौ
जयस्सुधर्म्मा विजयो विशाख ।
श्रीबुद्धिलोऽन्यौ धृतिषेणनागौ
सिद्धार्थकश्चेत्यभिधानभाज ॥१०॥
नक्षत्रपाण्डू जयपालकसा-
चार्य्यावपि श्रीद्रुमषेणकश्च ।
एकादशाङ्गीधरणेन रूढा ये पञ्च तेऽमी हृदि मे वसन्तु ॥११॥
आचार-सञ्ज्ञाङ्ग भृतोऽभवस्ते
लोहस्सुभद्रो जयपूर्व्वभद्र ।
तथा यशोबाहुरमी हि मूल-
स्तम्भा जिनेन्द्रागमरत्नहर्म्म्ये ॥ १२ ॥
श्रीमान्कुम्भो विनीतो
हलधरवसुदेवाचला मेरुधीरः
सर्व्वज्ञ सर्व्वगुप्तो
महिधर धनपालौमहावीरवीरौ ।
इत्याद्यानेक सूरिष्वथ सुपदमुपेतेषु दीव्यत्तपस्या-
शास्त्राधारेषु पुण्यादजनि सजगता
कोण्डकुन्दो यतीन्द्र ॥ १३ ॥
रजोभिरस्पृष्टतमत्वमन्तर्ब्बाह्येऽपि सव्यञ्जयितु यतीश ।

रज पद भूमितल विहाय चचार मन्ये चतुरङ्गुल स ॥१४॥
श्रीमानुमास्वातिरय यतीश
स्तत्वार्त्थसूत्र प्रकटीचकार ।
यन्मुक्तिमार्गाचरणोद्यताना पाथेयमर्घ्यं भवति प्रजानां॥१५॥
तस्यैव शिष्योऽजनि गृद्ध्रपिञ्छ द्वितीयसञ्ज्ञस्य बलाक-
पिञ्छ ।
यत्सूक्तिरत्नानि भवन्ति लोके
मुक्त्यङ्गनामोहनमण्डनानि ॥ १६ ॥
समन्तभद्रस्स चिराय जीयाद्वादीभवज्राङ्कुशसूक्तिजाल ।
यस्य प्रभावात्सकलावनीय वन्ध्यास दुर्व्वादुकवा
र्त्तयापि ॥ १७ ॥

स्यात्कार मुद्रित समस्त पदार्त्थ-पूर्ण्ण
त्रैलोक्य-हर्म्म्यमखिल स खलु व्यनक्ति ।
दुर्व्वादुकोक्तितमसा पिहितान्तराल
सामन्तभद्र-वचन स्फुट रत्नदीप ॥ १८ ॥

तस्यैव शिष्यश्शिवकोटिसूरिस्तपो लतालम्बनदेहयष्टि ।
ससार वाराकर पोतमेतत्तत्वार्त्थसूत्र तदलञ्चकार ॥ १९ ॥
प्रागभ्यधायि गुरुणा किल देवनन्दी
बुद्ध्या पुनर्व्विपुलया स जिनेन्द्रबुद्धि ।
श्रीपूज्यपादइति चैष बुधै प्रचख्ये
यत्पूजित पदयुगे वनदेवताभि ॥ २० ॥
भट्टाकलङ्कोऽकृत सौगतादिदुर्व्वाक्यपङ्कैस्सकलङ्कभूत ।

जगत्स्वनामेव विधातुमुच्चै सार्थं समन्तादकलङ्कमव ॥२१॥

जीयाज्जगत्या **जिनसेनसूरि**र्य्यस्योपदेशोज्ज्वलदर्प्पणेन ।
व्यक्तीकृत सर्व्वमिद विनेया पुण्य पुराण पुरुषा विदन्ति ॥ २२ ॥

विनय भरण-पात्र भव्यलोकैकमित्र
विबुधनुतचरित्र तद्गणेन्द्राग्रपुत्र ।
विहितभुवनभद्र वीतमोहोरुनिद्र
विनमत **गुणभद्र** तीर्ण्णविद्यासमुद्र ॥ २३ ॥

सद्व्यञ्जनस्वरनभस्तनु लक्षणाङ्ग-
च्छिन्नाङ्ग भौम शकुनाङ्ग निमित्तकैय्य ।
कालत्रयेऽपि सुखदु खजयाजयाद्य
तत्साक्षिवत्पुनरवैति समस्तमेव ॥२४ ॥

य **पुष्पदन्ते**न च **भूतबल्या**ख्येनापि शिष्य द्वितयेन रेजे ।
फलप्रदानाय जगज्जनाना प्राप्तोऽङ्कुराभ्यामिव कल्पभूज ॥२५॥

अर्हद्बलि स्सङ्घचतुर्व्विध स श्रीकोण्डकुन्दान्वयमूलसङ्घ ।
कालस्वभावादिह जायमानद्वेषेतराल्पीकरणाय चक्रे ॥२६॥

सिताम्बरादौ विपरीत-रूपे खिले विसङ्घे वितनोतु भेद ।
तत्**सेननन्दि त्रिदिवेशसिह**सङ्घेषु यस्त मनुते कुदृक्स ॥२७॥

सङ्घेषु तत्र गणगच्छ बलि त्रयेण
लोकस्य चक्षुषि भिदाजुषि**नन्दि**सङ्घ

देशीगणे धृतगुणेऽन्वितपुस्तकाच्छ
गच्छेऽङ्गुलेश्वरवलिर्ज्जयति प्रभूता ॥२८॥
तत्रासन्नाग-देवोदय रवि जिन मेघ प्रभा बाल-
चन्द्रा
देवश्रो भानुचन्द्रश्रुतनय गुणधर्म्मोदय कीर्त्तिदेवा।
देश श्रीचन्द्र धर्म्मेन्द्र कुल गुण तपो भूषणास्सुर-
योऽन्ये
विद्या दामेन्द्रपद्मामरवसु गुण-माणिक्कनन्द्या
ह्वयाश्च ॥२९॥

(उत्तर मुख)

विहितदुरितभङ्गा भिन्नवादीभशृङ्गा
वितत विविध मङ्गा विश्वविद्याब्जभृङ्गा ।
विजितजगदनङ्गावेशदूरोज्वलाङ्गा
विशदचरणतुङ्गा विश्रुतास्तेऽस्तसङ्गा ॥३०॥
जीयाच्छ्रीनेमिचन्द्र कुवलयलयकृत् कूटकोटीद्धगोत्रो
नित्योद्यन्दृष्टिबाधाविरचनकुशलस्तत्प्रभाक्तत्प्रताप ।
चन्द्रस्येव प्रदत्तामृत वचन रुचा नीयते यस्य शान्ति
धर्म्मव्याजस्य नेतुस्स्वमभिमतपद यश्च नेमी रथस्य ॥३१॥
श्रीमाघनन्दीविबुधो जगत्यामन्वर्थमेवातनुतात्मनाम ।
समुल्लसत्सवरनिर्ज्जरेण न येन पापान्यभिनन्दितानि ॥३२॥
तुङ्गे तदीये धृत-वादिसिंहे गुरुप्रवाहोन्नतवशगोत्रे ।

अथोदितोऽभून्निजपादसेवाप्रमोदिलोकोऽभयचन्द्रदेव
॥ ३३ ॥

जयति जिततमोऽरिस्त्यक्तदोषानुषङ्ग
पदमखिलकलानांपात्र-मम्भोरुहाया ।
अनुगतजयपक्षश्चात्तमित्रानुकूल्य
स्सततमभयचन्द्रस्स त्सभारत्नदीप ॥३४॥

तदीयतनुजश्श्रुतमुनिर्गणिपदेशस्तपोभरनियन्त्रिततनुस्तु
तजिनेश ।
ततोऽजनि जिनेन्द्रवचनास्तविषयाशस्ततस्वयशसा भृत-
समस्तवसुधाश ॥३५॥

भव विपिनकृशानुर्भव्यपङ्कजभानु
स्स विततनमसोनु स्सम्पदे कामधेनु ।
भुविदुरिततमोऽरिप्रोत्थसन्तापवारि
श्रुतमुनिवरसूरिश्शुद्धशीलोऽस्तनारि ॥३६॥

चण्डोद्दण्डत्रिदण्ड परम सुख-पद पापबीज परागो-
वारागारोरुकार त्रिविधमधिकृता गौरव गारव च ॥
तुल्यभल्लोन शल्य त्रयमतुलवपुश्शर्म्ममर्म्मच्छिद द्दो-
भाषोन्मेषि त्रिदोष श्रुतमुनिमुनिपो निर्म्मुमोचैक एव ॥३७॥

प्रशिष्यभगणेङ्गमहसा भुवितदीये प्रवर्द्धयति पूर्ण्णकलइन्दु-
रिवयस्सम ।
अनादिनिधनादि-परमागम-पयोधिमभूदभिनवश्रुतमुनि-
र्गणिपदे स ॥३८॥

मार्ग्गे दुर्ग्गे निसर्ग्गात्प्रतिभटकटुजल्पेन वादेन वापि
श्रव्ये काव्येऽतिनव्ये मृदुमधुरपदै शर्म्मदैर्न्नर्म्मदैश्च ।
मन्त्रे तन्त्रेऽपि यन्त्रे नुतसकलकलाया च शब्दार्ण्णवे वा
को वान्य कोविदोऽस्ति **श्रुतमुनि**मुनिवद्विश्व विद्या-
विनोद ॥३९॥

शब्दे श्री **पूज्यपाद** सकल विमत-जित्तर्क्कतन्त्रेषु**देव**
सिद्धान्ते सत्यरूपे जिन-विनिगदिते **गौतम कोण्डकुन्द.** ।
अध्यात्मे **वर्द्धमानो** मनसिज-मथने वारिमुग्दु खवन्हा
वित्येव कात्तिं पात्र **श्रुतमुनि**वदभूद्भूत्रये कोऽत्र कश्चित्
॥४०॥

श्रद्धा शुद्धा प्रवृद्धा दधतमधिकृता जैनमार्ग्गे सुसर्ग्गे
सिद्धि बुद्धेर्म्महर्द्धेर्ब्बुध वर-निवहैरद्भुतामर्त्यमाना ।
मित्र चित्र चरित्र भवचय भयद भव्यनव्याम्बुजाना
मर्य्येनोव्यूनमेन **श्रुतमुनि**-मुनिप चन्द्रमाराधयध्व ॥४१॥
श्रीमानितोऽस्याभय **चन्द्रसूरे**स्तस्यानुजात [श्]**श्रुतकीर्त्ति-
देव** ।
अभूज्जिनेन्द्रोदितलक्षणानामापूर्णलक्षीकृत चारु वृत्त ॥४२॥
विदित सकलवेदे वीत चेतो विषादे
विजित निखिल वादे विश्वविद्याविनोदे ।
विततचरितमोदे विस्फुरच्चित-प्रसादे
विनुत-जिनप-पादे विश्वरर्चां प्रपेदे ॥४३॥
स श्रीमास्तत्तनूजस्तदनु गणिपदे सन्न्यधाच्च**चारुकीर्त्तिः**

कीर्त्याकीर्णत्रिलोक्या मुहुरयति विधु काश्यमद्याप्यतुल्य ।

(तृतीय मुख)

यस्या्पन्यास वन्य द्विप पटु-घटयोत्पादिताश्चाटुवाच,
पद्मासद्मात्तमित्रोज्वलतररुचयोऽप्युत्थितानादिपद्मा ॥४४॥
चारुश्रोश्चारुकीर्त्ति पदनतवसुधाधोश्वरोऽधोश्वरोऽय
गर्व्व कुर्व्वन्तमुर्व्वीश्वर सदसि महावादिन वादवन्ध्य ।
चक्रे दिक्कोडदभ्रेसरसरसवचा साधिताशेषसाध्यो
ऽवेद्यावेद्याद्यविद्याव्यपगमविलसद्विश्वविद्याविनोद ॥४५॥
बल्लाल चोणिपाल वलित **बलि**-बल वाजिभिर्व्वे जिताजि
रोगावेगाद्गतासु स्थितिमपि स हसोल्लावतामानिनाय ।
आतीर्थ्यैव स्वय सोऽखिलविद**भयसूरे**स्तथातारयत्त-
न्निस्सीमाशेष-शास्त्राम्बुनिधिम**भयसूरि** पर **सिंहणार्य्य**
॥४६॥

शिष्टो दुष्टाघ पिष्टो करण-निपुण सूत्रस्य तस्यापदेष्टु
शिशष्य पीयूष निष्यन्दन पटु वचन पण्डित खण्डिताघ ।
सूरिस्सूरो विनेयाम्बुरुहविकसने सर्व्वदिग्व्यापिधामा
श्रीमानस्थात्कृतास्थो **बेलुगुल**नगरे तत्र धर्म्माभिवृद्ध्यै ॥४७॥
यस्मिंश्चा**मुण्डराजो** भुजबलिनमिन **गुम्मट** कर्म्मठाङ्ग
भक्त्या शक्त्या च मुक्त्यैजित सुर नगरे स्थापयद्भद्रमद्रौ ।
तद्वत्काल त्रयोत्थोज्वल-तनु जिन बिम्बानि मान्यानि चान्य
कैलासे शीलशाली त्रिभुवन विलसत्कीर्त्ति-चक्रीव चक्रे ॥४८॥
स्थाने तत्स्थालमन्त्रोज्वलतरमतुल पण्डितोऽलङ्करोतु -

श्रीमानेषोऽर्क्ककीर्त्तिर्न्नृप इव विलसत्सालसोपानकाद्यैः ।
चित्रं शीर्षेऽभिषिच्य त्रिभुवनतिलकं तं पुनस्सप्तवारान्
पङ्कोन्मुक्तं विधायाखिलजगदुरुपुण्यैस्तथालञ्चकार ॥४६॥
किंवा क्षीराभिषेकादुतनिजयशसो निर्म्मलाच्छङ्कराद्रीन्
गोत्राद्रीन्स्फाटिकीं च क्षितिममरगजान्दिग्गजानेष धीर ।
क्षीरोदान्सप्तसिन्धूनुदरिजलधरान्शारदान्नागलोकं
शेषाकार्णं विदीर्ण्णामृतकलशमपि स्वर्व्वितेने न विद्म ॥५०॥
मेरौ जन्माभिषेकं सुरपतिरिव तत्तथैवात्र शैले
देवस्यादर्शयन्नो परमखिलजनस्यैष सूरिर्व्विधाय ।
सन्मार्गं चाधुनैनं पिहितमपि चिरं वामदृग्वाक्तमोभि
र्निश्शेषं तानि पूर्व्वं पुरुरिव पुनरत्राकलङ्कोऽपनीय ॥५१॥
रे रे **काणाद** कोण शरणमधिवस क्षुद्रनिद्रानिवास
मैमासच्छामतुच्छां त्यज निजपटुवादेषु कृच्छ्राशुगच्छ ।
बौद्धाबुद्धे विमुग्धोऽस्यपसर सहसा **साङ्ख्य**मारब्ध
सङ्ख्ये
श्रीमान्मथ्नाति वादीन्द्रगजम**भयसूरि** परवादिसिंह ॥५२॥
ऐश्वर्य्यं वहतश्च शाश्वतमुखे धत्तश्च सर्व्वज्ञता
विभ्राते च गिरीशतां शिवतया श्री**चारुकीर्त्ती**श्वरौ ।
तत्राय जिनमार्गसावजिनभाग्धीमानयं मार्ग्गणो
हेमाद्रिं समधत्त मार्ग्गणमुरुस्थेमा स हेमाचले ॥५३॥
स्फूर्ज्जद्धूर्ज्जटि-भाल-लोचन शिखि ज्वालावलीढस्य ते
ह हो मन्मथजीवनौषधिरभूदेषा पुरा शैलजा ।

सर्व्वज्ञोत्तम**चारुकीर्त्ति**सुमुनेस्सम्यक्तपो-वह्निना
निर्द्दग्धस्य चरित्रचण्डमरुतोद्धूतस्य का ते गति ॥५४॥
पितामहपरिष्वङ्गसङ्गतैन प्रशान्तय ।
चारुकीर्त्तिवचोगङ्गालिङ्गिताङ्गी सरस्वती ॥५५॥
आस्य वाणीनिवास्य हृदयमुरुदय स्व चरित्र पवित्र
देह शान्त्यैकगेह सकलसुजनतागण्यमुद्भूत पुण्य ।
श्रव्या भव्या। गुणालिन्नि खिलबुधततेर्य्यस्य सोऽय जगत्यां
अत्यारूढप्रसादो जयतु चिरमय **चारुकीर्त्ति**व्रतीन्द्र ॥५६॥
मूढ प्रौढ दरिद्र धनपतिमधम मानव मानवन्त
दुष्ट शिष्ट च दु खान्वितमपि सुखिन दुर्म्मद धर्म्मशील ।
कुर्व्वन् **सामन्तभद्र** चरितमनुसरन्नत्र सामन्तभद्र ।

(चतुर्थमुख)

तन्वन् श्री**चारुकीर्त्ति**र्ज्जगति विजयते चन्द्रिका चारु
कीर्त्ति ॥५७॥
रे रे **चार्व्वाक** गर्व्व परिहर विरुदालिं पुरैव प्रमुञ्च
साङ्ख्यासङ्ख्येय-राजत्परिकर निकरादाप्तघट्टोऽसि
भट्ट ।
पूर्ण्ण **काणाद** तूर्ण्ण त्यज निजमनिश मानमापन्निदान
हिंसन्पुसोऽभिशस्यो अजतियदपरान्वादिन **सिंहणार्य्य**
॥५८॥
तत्पण्डिताकर्णनुरक्तौ तद्दिशादिनाथौ
सम्यक्त्वबोध-चरणोभयदाननिष्ठौ,

जातावुभौ **हरियणो** हरियाङ्कचारु

र्म्माणिक्कदेवइतिचा**र्जुन**देवकल्प ॥५९॥

धन्या मन्ये न सन्यासपरमविधिना नेतुमेव स्वय स्व

धर्म्मं कर्म्मारिमर्म्मच्छिदमुरुसुखद दुर्ल्लभ वल्लभ च ।

शान्ताश्शान्तेन्नि शान्तीकृत सकल जना सूक्तिपीयूषपूरै-

स्तेऽमी सर्व्वेऽस्तदेहास्सुरपदमगमन्ध्यात-जैनेन्द्र-पादा ॥६०॥

तत्र **त्रयोदशशतैश्च दशद्वयेन**

शाकेऽब्दके परिमितेऽभवदीश्वराख्ये ।

माघे चतुर्द्दशतिथौ सितभाजिवारे

स्वातौ शनेस्सुरपद **पुरु** पण्डितस्य ॥६१॥

आसीदथाभिनव**पण्डितदेव**सूरि-

राशाननाच्छमुकुरीकृत कीर्त्तिरेष ।

शिष्ये निधायनिजधर्म्मधुराग्रभाव

यत्रात्मसस्कृतिपदेऽजनि **पण्डितार्य्य** ॥६२॥

तथ्य मिथ्या कदम्ब सततमपि विधिस्सुर्व्वृथा ताम्यसीद

तत्त्व ताथागतत्व तरलजनशिरोरत्नतावत्प्रधाव ।

जीव भद्राणि पश्यत्युरुजगदुदितात्त्यत्त्ववादाभिलाषो

यस्माद्भस्मीकरोत्यग्निरिव भुवितरून्वादिन **पण्डितार्य्य**

॥६३॥

ससारापारवाराकर घर लहरी तुल्य शल्योत्थ देह

व्यूहे मुह्यज्जनामासमुखजलचरैरर्दि तानाममीषा ।

पोतो नीतो विनीतोऽद्भुततिगतवअन्यभव्याचिं ताङ्घ्रि-
भ्भैंद्रोन्निद्रस्सुमुद्रस्सततम **भिनवो** राजते **पण्डिताय्य** ॥६४॥
अयमथ गुरुभक्त्याकारयत्तन्निषद्या
मपरगणिभिरुच्चैर्गैहिभिस्तैस्सहैव ।
शुभ दिन सुमुहूर्त्ते पूरितोद्घाखिलाश
युगपदखिलवाद्यध्वानरत्नप्रदानै ॥६५॥
इत्यात्मशक्त्या निजमुक्त्यऽर्हं **द्दासो**दित शासनमेतदुर्व्यां ।
शास्त्रौघकर्तृ-त्र्यशसनाङ्गमाचन्द्रतारा रविमेरु जीयात्॥ ६६ ॥

१०६ (२५५)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(शक स० १३३१)

श्रीमत्कर्न्नाटदेशे जयति पुरवर **गङ्गवत्या**रयमेतत्
सद्दृक्दानोपवासव्रतरुचिरभवत्तत्र **माणिक्यदेव**।
बाचायी धर्म्मपत्नी गुणगणवसतिस्तस्य सूनुस्तयोश्च
श्रीमान्**सायण**नामाजनि गुणमणिभाक् **चन्द्रकीर्त्तेश्च**
शिष्य ॥ १ ॥

सम्यक्त्वचूडामणियेनिसिद आभव्योत्तमनु स्वस्ति श्री **शक वरुष १३३१** नेय **विरोधिसंवत्सरद चैत्र ब ५ गु** श्री **गुम्मटनाथन** मध्याह्नद अष्टविधार्च्चना निमित्तवागि **बेलुगुलद गङ्गसमुद्रद** केरेय केलगे दानशालेय गद्दे ख २ गवनू **बेलुगुलद** माणिक्यनखरद हरियगौडन मग गुम्मटदेव **माणिक्यदेवन**

मग बोम्मणननोलगाद[1] गौडुगल समचदलि देवरिग पादपूजेय माडि क्रयवागि कोण्डु कोट्टु असाधारणवहन्त कीर्त्तियन् पुण्य-वनू उपार्ज्जिसि कोण्डनु मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[कर्नाट देश की गङ्गवती नामक नगरी में माणिक्यदेव और उनकी भार्या बाचायि रहते थे। इनके मायण्ण नामक पुत्र हुआ जो चन्द्र कीर्त्ति का शिष्य था। मायण्ण ने उक्त तिथि को बेल्गुल के गङ्गसमुद्र नामक सरोवर की दो खण्डुग भूमि खरीद कर उस गोम्मट स्वामी के अष्टविध पूजन के लिये बेल्गुल के कई पुरुषों के समक्ष दान की।]

१०७ (२५६)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक स० ११०३)

शीलदि चन्द्रमौलिविभुवाचलदेवि निजोद्भवकान्तेया-
लोलमृगाक्षि बेल्गुलद गुम्मटनाथन पादद
र्च्चालिगे बेडे बेक्कन शीमेयनित्तनुदारवीरब-
ल्लाल-नृपालकनुर्व्वियुमब्धियुमुल्लिनमेट्टे मल्लिवन ॥ १ ॥

अन्तु धारापूर्व्वकव माडिकोटन्त ग्रामसीमे। मूड होन्नेनहल्लि तेङ्कु बस्तिहल्लि देवरहल्लि पडुव चोलेनहल्लि हाडोनहल्लि (पूर्व मुख के नीचे)

बडग मञ्चेनहल्लिय बिट्टु काट ग्रामौ आचन्द्रार्कस्थायियागि सलुगे मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[चन्द्रमौलि की पत्नी आचल देवी की प्रार्थना पर वीरबल्लाल नृप ने 'बेक्क' नामक ग्राम का दान गोम्मटनाथ के पूजन के हेतु किया। लेख में ग्राम की सीमा दी हुई है।

नोट—आचल देवी के अन्य अनक दाना का उल्लेख शक स० ११०३ के लेख न० १२४ (३२७) में है। अतएव प्रस्तुत लेख का समय भी शक स० ११०३ के लगभग होना चाहिय। पर आश्चर्य यह है कि यह लेख इसस बहुत पीछे के दा लखो (न० १०५ और १०६) के नीचे खुदा हुआ है। लिपि भी इसकी उतनी पुरानी प्रतीत नहीं होती। सम्भव है कि किसी आधार पर लेख पीछे स ही लिखा गया हो।]

१०८ (२५८)

सिद्धरबस्ती मे दक्षिण ओर एक स्तम्भ पर

(शक स० १३५५)

(प्रथममुख)

श्री जयत्यजय्यमाहात्म्य विशासितकुशासन ।
शासन जैनमुद्भासि मुक्तिलक्ष्म्येकशासन ॥ १ ॥
अपरिमितसुखमनल्पावगममय प्रबलबलहृतातङ्क ।
निखिलावलोकविभव प्रसरतु हृदये पर ज्योति ॥ २ ॥
उद्दीप्ताखिलरत्नमुद्धृतजड नानानयान्तर्गृह
सस्यात्कारसुधाभिलिप्तिजनिभृत्कारुण्यकूपाञ्चित ।
आरोप्य श्रुतयानपात्रममृतद्वीप नयन्त परा-
नेते तीर्थकृतो मदीयहृदये मध्येभवाब्ध्यासता ॥ ३ ॥
तत्राभवत् त्रिभुवनप्रभुरिद्धवृद्धि
श्री**वर्द्धमान**मुनिरन्तिम-तीर्थनाथ ।
यद्दहदीप्तिरपि सन्निहिताखिलाना
पूर्व्वोत्तराश्रितभवान् विशदीचकार ॥ ४ ॥

तस्याभवच्चरमचिज्जगदीश्वरस्य
यो यौव्वराज्यपदमश्रयत प्रभूत ।
श्रीगौतमो गणपतिर्भगवान्वरिष्ठ
श्रेष्ठैरनुष्ठितनुतिर्म्मुनिभिस्स जीयात् ॥ ५ ॥

तदन्वये शुद्धिमति प्रतीते समग्रशीलामलरत्नजाले ।
अभूद्यतीन्द्रो भुवि भद्रबाहु. पय पयोधाविव पूर्ण्न-
चन्द्र ॥ ६ ॥

भद्रबाहुरग्रिम समग्रबुद्धिसम्पदा
शुद्धसिद्धशासन सुशब्द बन्ध-सुन्दर ।
इद्धवृत्तसिद्धिरत्र बद्धकर्म्मभित्तपो-
वृद्धिवर्द्धितप्रकीर्त्तिरुदधे महर्द्धिक ॥ ७ ॥

यो भद्रबाहु श्रुतकेवलीना मुनीश्वराणामिह पश्चिमोऽपि ।
अपश्चिमोऽभूद्विदुषा विनता सर्व्वश्रुतार्त्थप्रतिपादनेन ॥ ८ ॥

तदीय शिष्योऽजनि चन्द्रगुप्त समग्रशीलानतदववृद्ध ।
विवेश यत्तीव्रतप प्रभाव प्रभूत कीर्त्तिर्भुवनान्तराणि ॥ ९ ॥

तदीयवशाकरत प्रसिद्धादभूददोषा यतिरत्नमाला ।
बभौ यदन्तर्म्मणिवन्मुनीन्द्रस्स कुण्डकुन्दोदित-चण्ड
दण्ड ॥ १० ॥

अभूदुमास्वातिमुनि पवित्रे वशे तदीये सकलार्त्थवेदी ।
सुत्रीकृत येन जिनप्रणीत शास्त्रार्त्थजात मुनिपुङ्गवेन ॥११॥
स प्राणिसरक्षणसावधानो बभार योगी किल गृद्धपक्षान् ।

तदा प्रभृत्यव बुधा यमाहुराचार्य्यशब्दोत्तरगृद्ध-
पिञ्छ ॥ १२ ॥

तस्मादभूद्योगिकुलप्रदीपो **बलाकपिञ्छ** स तपो-
महर्द्धि ।

यदङ्गसस्पशनमात्रतोऽपि वायुर्व्विषादीनमृतीचकार ॥ १३ ॥

समन्तभद्रोऽजनि भद्रमूर्त्तिस्तत प्रणेता जिनशासनम्य ।

यदीयवाग्वज्रकठारपातश्चूर्ण्णीचकार प्रतिवादिशैलान् ॥१४॥

श्री **पूज्यपादो** धृतधर्म्मराज्यस्ततो सुराधाश्वर पूज्य
पाद ।

यदायवैदुष्यगुणानिदानीं वदन्ति शास्त्राणि तदुद्धृतानि ॥१५॥

धृतविश्वबुद्धिरयमत्र योगिभि
कृतकृत्यभावमनुबिभ्रदुच्चकै ।

जिनवद्बभूव यदनङ्गचापहृत्
स **जिनेन्द्रबुद्धि**रिति साधुवर्ण्णित ॥ १६ ॥

श्री**पूज्यपाद**मुनिरप्रतिमौषधर्द्धि
र्ज्जीयाद्विदेहजिनदर्शनपूतगात्र ।

यत्पादधौतजलसस्पर्श प्रभावा
त्कालायस किल तदा कनकीचकार ॥ १७ ॥

तत पर शास्त्रविदा मुनीना
मग्रेसरोऽभूद**कलङ्कसूरि** ।

मिथ्यान्धकारस्थगिताखिलार्त्था
प्रकाशिता यस्य वचोमयूखै ॥ १८ ॥

तस्मिन्गते स्वर्ग्गभुव महर्षौ दिव पतीन्भर्त्तुमिव प्रकृष्टान् ।
तदन्वयोद्भूतमुनीश्वराणा बभूवुरित्थ भुवि सङ्घभेदा ॥१६॥

स योगिसङ्घश्चतुर प्रभेदानासाद्य भूयानविरुद्धवृत्तान् ।
बभावय श्रीभगवान्जिनेन्द्रश्चतुर्म्मुखानीव मिथस्समानि ॥२०॥

देव नन्दि सि ह सेन सङ्घभेदवर्त्तिना
दशभेदत प्रबोधभाजि देवयोगिना ।
वृत्ततस्समस्ततोऽविरुद्धधर्म्मसेविना
मध्यत प्रसिद्ध एष **नन्दिसङ्घ** इत्यभूत् ॥ २१ ॥

नन्दिसङ्घ स**देशीय**गणे गच्छे च **पुस्तके** ।
इ गुलेशबलिर्ज्जीयान्मङ्गलीकृतभूतल ॥ २२ ॥

तत्र सर्व्वशरीरिरक्षाकृतमतिर्व्विजितेन्द्रिय
स्सिद्धशासनवर्द्धनप्रतिलब्ध कीर्त्तिकलापक ।
विश्रुत **श्रुतकीर्त्ति** भट्टारकयतिस्समजायत
प्रस्फुरद्वचनामृतांशुविनाशिताखिलहृत्तमा ॥ २३ ॥

कृत्वा विनेयान्कृतकृत्यवृत्तान्निधाय तेषु श्रुतभारमुच्चै ।
स्वदेहभार च भुवि प्रशान्तस्समाधिभेदेन दिव स भेजे ॥२४॥

(द्वितीयमुख)

गते गगनवाससि त्रिदिवमत्र यस्योच्छ्रिता
न वृत्तगुणसहतिर्व्वसति केवल तद्यश ।
अमन्दमदमन्मथप्रणमदुग्रचापोच्चल
त्प्रतापहतिकृत्तपश्चरणभेदलब्ध भुवि ॥ २५ ॥

श्रीचारुकीर्त्तिमुनिरप्रतिमप्रभाव

स्तस्मादभून्निजयशोधवलीकृताश ।

यस्याभवत्तपसि निष्ठुरतोपशान्ति-

श्चित्ते गुणे च गुरुता कृशता शरीरे ।। २६ ।।

यस्तपोवल्लिभिर्व्वेल्लिताघद्रुमो

वर्त्तयामास सारत्रय भूतले ।

युक्तिशास्त्रादिक च प्रकृष्टाशय

श्शब्दविद्याम्बुधेर्वृद्धिकृच्चन्द्रमा ।। २७ ।।

यस्य यागीशिन पादयोस्सर्व्वदा

सङ्गिनीमिन्दिरा पश्यतश्शार्ङ्गिण ।

चिन्तयेवाभवत्कृष्णता वर्ष्मण

सान्यथा नीलता कि भवेत्तत्तनो ।। २८ ।।

यषा शरीराश्रयतोऽपि वातो रुज प्रशान्ति वितवान तेषा ।

बल्लालराजोत्थितरोगशान्तिरासीत्किलैतत्किमु

भेषजेन ।। २६ ।।

मुनिर्म्मनीषा बलतो विचारित समाधिभेद समवाप्य सत्तम ।

विहाय देह विविधापदा पद विवेश दिव्य वपुरिद्ध-

वैभव ।। ३० ।।

अस्तमायाति तस्मिन्कृतिनि यर्व्य

स्मिण नाभविष्यत्तदा **पण्डितयति**

स्सोम वस्तुमिथ्यातमस्तोमपिहित

सर्व्वमुत्तमैरित्यय वक्तृभिरूपायोपि ।। ३१ ।।

विबुधजनपालक कुबुध मत हारक ।
विजितसकलेन्द्रिय भजत तमल बुधा ॥ ३२ ॥

धवल सरोवर-नगर-जिनास्पदमसदृशमाकृततदुरु-
तपोमह ॥ ३३ ॥

यत्पादद्वयमेव भूपतिततिश्चक्रे शिरोभूषण
यद्वाक्यामृतमेव कोविदकुल पीत्वा जिजीवानिश ।
यत्कीर्त्या विमल बभूव भुवन रत्नाकरेणावृत
यद्विद्या विशदीचकार भुवने शास्त्रार्थजात महत् ॥ ३४ ॥

कृत्वा तपस्तीव्रमनल्पमेधास्सम्पाद्य पुण्यान्यनुपप्लुतानि ।
तेषा फलस्यानुभवाय दत्तचेता इवाप त्रिदिवस योगी ॥३५॥

तस्मिन्जातो भूम्नि **सिद्धान्तयोगी**
प्रोद्यद्वाचा वर्द्धयन् सिद्धशास्त्र ।
शुद्धे व्याम्नि द्वादशात्मा करौघै
र्यद्वत्पद्मव्यूहमुन्निद्रयन्स्वै ॥ ३६ ॥

दुर्वाद्युक्त शास्त्रजात विवेकी वाचानेकान्तार्थसम्भूतया य ।
इन्द्रोऽशन्या मेघजालोत्थया भूवृद्धा भूभृत्सहति वा
विभेद ॥ ३७ ॥

यद्वत्पदाम्बुजनतावनिपालमौलि
रत्नाशवोऽनिशममु विदधु सराग ।
तद्वन्न वस्तु न वधून्न च वस्त्रजात
नो यौवन न च बल न च भाग्यमिद्ध ॥ ३८ ।

प्रविश्य शास्त्राम्बुधिमेष धीरो जग्राह पूर्व्वं सकलार्थरत्नं ।
परेऽसमर्थास्तदनुप्रवेशादेकैकमेवात्र न सर्व्वमापु ॥३९॥

सम्पाद्य शिष्यान्स मुनि प्रसिद्धा-
नध्यापयामास कुशाग्रबुद्धीन् ।
जगत्पवित्रीकरणाय धर्म्म-
प्रवर्त्तनायाखिल सविदे च ॥ ४० ॥

कृत्वा भक्ति ते गुरोस्सर्व्वशास्त्र
नीत्वा वत्स कामधेनु पयो वा ।
स्वीकृत्याच्चैस्तत्पिबन्तोऽतिपुष्टा
शक्ति स्वेषां ख्यापयामासुरिद्धा ॥ ४१ ॥

तदीयशिष्येषु विदावरेषु गुणैरनेकैश्श्रु तमुन्यभिख्य ।
रराज शैलेषु समुन्नतेषु स रत्नकूटैरिव मन्दराद्रि ॥ ४२ ॥

कुलेन शीलेन गुणेन मत्या शास्त्रेण रूपेण च योग्य एष ।
विचार्य्य त सूरिपद स नीत्वा कृतक्रिय स्व
गणयाञ्चकार ॥ ४३ ॥

अथैकदा चिन्तयदित्यनेना स्थिति समालोक्य निजायुषोऽल्प ।
समर्प्य चास्मिन् स्वगण समर्थे तपश्चरिष्यामि समाधि-
योग्य ॥ ४४ ॥

विचार्य्य चैव हृदये गणाग्रणीर्न्निवेदयामास विनेयबान्धव ।
मुनि समाहूय गणाग्रवर्त्तिन स्वपुत्रमित्थ श्रुतवृत्त
शालिन ॥ ४५ ॥

(तृतीयमुख)

मदन्वयादेष समागतोऽय गणो गुणानां पदमस्य रक्षा ।
त्वयाङ्ग मद्भक्त्रियतामितीष्ट समर्प्पयामास गणी गण
स्व ॥ ४६ ॥

गुरुविरहसमुद्यद् खदून तदीय
मुखमगुरुवचोभिस्स प्रसन्नोचकार ।
सपदि विमलिताब्द-श्लिष्ट-प्रासु प्रतान
किमधिवसति याषिन्मन्दफूत्कारवातै ॥ ४७ ॥

कृतिततिहितवृत्तस्तत्त्वगुप्तिप्रवृत्तो
जितकुमतविशेषश् शोषिताशेषदोष ।
जितरतिपति सत्वस्तत्त्व विद्या प्रभुत्व
स्सुकृतफल विधय सोऽ गमद्दिव्यभूय ॥ ४८ ॥

गतऽत्र तत्सूरिपदाश्रयोऽय
मुनीश्वरस्सङ्घमवर्द्धयत्तराम् ।
गुणैश्च शास्त्रैश्चरितैरनिन्दितै
प्रचिन्तयन्तद्गुरुपादपङ्कजम् ॥ ४९ ॥

प्रकृत्य कृत्य कृतसङ्घरक्षो विहाय चाकृत्यमनल्पबुद्धि ।
प्रवर्द्धयन् धर्म्ममनिन्दित तद्गुरूपदेशान् सफलीचकार ॥५०॥

अखण्डयदय मुनिर्व्विमलवाग्भिरत्युद्धतान्
अमन्द मद सञ्चरत्कुमत वादिकोलाहलान् ।
भ्रमन्नमरभूमिभृद् भ्रमितवारिधिप्रोच्चलत्
तरङ्ग ततिविभ्रम प्रहण चातुरीभिर्भुवि ॥ ५१ ॥

का त्व कामिनि कथ्यता श्रुतमुने कीर्त्तिं किमागम्यते
ब्रह्मन् मत्प्रियसन्निभो भुवि बुधस्सम्मृग्यते सर्व्वत ।
नेन्द्र कि स च गोत्रभिद् धनपति कि नास्त्यसौ किन्नर
शेष कुत्रगतस्स च द्विरसना रुद्र पशूना पति ॥ ५२ ॥

वाग्देवताहृदय रञ्जन मण्डनानि
मन्दार पुष्प मकरन्दरसोपमानि ।
आनन्दिताखिल-जनान्यमृत वमन्ति
कर्णेषु यस्य वचनानि कवीश्वराणा ॥ ५३ ॥

समन्तभद्रोऽप्यसमन्तभद्र
श्री पूज्यपादोऽपि न पूज्यपाद ।
मयूरपिञ्छोऽप्यमयूरपिञ्छ
श्चित्र विरुद्धोऽप्यविरुद्ध एष ॥ ५४ ॥

एव जिनन्द्रोदितधर्म्ममुच्चै प्रभावयन्त मुनि वश दीपिन ।
अदृश्यवृत्त्या कलिना प्रयुक्तो वधाय रोगस्तमवाप
दूतवत् ॥ ५५ ॥

यथा खल प्राप्य महानुभाव तमेव पश्चात्कवलीकरोति ।
तथा शनैस्सोऽयमनुप्रविश्य वपुर्व्वबाधे प्रतिबद्धवीर्य्य ॥५६॥

अङ्गान्यभूवन् सकृशानि यस्य न च व्रतान्यद्भुत-वृत्त भाज ।
प्रकम्पमापद्वपुरिद्धरोगान्न चित्तमावस्यकमत्यपूर्व्वं ॥ ५७ ॥

स मोक्ष मार्ग रुचिमेष धीरो मुदं च धर्म्मे हृदये प्रशान्ति
समादधे तद्विपरीतकारिण्यस्मिन् प्रसर्प्पत्यधिदेहमुच्चै ५८

अङ्गेषु तस्मिन् प्रविजृम्भमाणे
    निश्चित्य योगी तदसाध्यरूपता ।
ततस्समागत्य निजाग्रजस्य
    प्रणम्य पादाववदत् कृताञ्जलि ॥ ५९ ॥
देव **पण्डितेन्द्र** योगिराज धर्म्मवत्सल
    त्वत्पद-प्रसादतस्समस्तमर्जित मया ।
मद्यश श्रुत व्रत तपश्च पुण्यमक्षय
    किं ममात्र वर्त्तित क्रियस्य कल्प काङ्क्षिण ॥ ६० ॥
देहतो विनात्र कष्टमस्ति किं जगत्त्रये
    तस्य रोग-पीडितस्य वाच्यता न शब्दत ।
देय एव योगतो वपु र्व्विसर्ज्जन क्रम-
    स्साधु वर्ग सर्व्व-कृत्य वेदिना विदावर ॥ ६१ ॥
विज्ञाप्य कार्य्य मुनिरित्थमर्थ्यं
    मुहुर्म्मुहुर्व्वारयतो गणीशात् ।
स्वीकृत्य सल्लेखनमात्मनीन
    समाहितो भावयति स्म भाव्य ॥ ६२ ॥
उन्मद् विपत्-तिमि तिमिङ्गिल नक्र चक्र
    प्रोत्तुङ्ग-मृत्यमृति-भीम तरङ्ग भाजि ।
तीव्राजवञ्जव पयोनिधि मध्य भागे
    क्लिश्नात्यहर्न्निशमय पतितस्स जन्तु ॥ ६३ ॥
इद खलु यदङ्गक गगन-वाससां केवल
    न हेयमसुखास्पद निखिल-देह-भाजामपि ।

अता ऽस्य मुनय पर विगमनाय बद्धाशया
यतन्त इह सन्तत कठिन-काय तापादिभि ॥ ६४ ॥

अय विषयसञ्चयो विषमशेषदोषास्पद
स्पृशज्जनिजुषामहो बहुभवेषु सम्मोहकृत् ।
अत खलु विवेकिनस्तमपहाय सर्व्व सहा
विशन्ति पदमक्षय विविध-कर्म्म-हान्युत्थित ॥ ६५ ।

चतुर्थ मुख)

उद्दीप्त-दु ख शिखि सङ्गतिमङ्गयष्टि
तीव्राजवञ्जव तपातप ताप तप्ता ।
स्रक् चन्दनादि विपयामिष-तैल सिक्ता
को वावलम्ब्य भुवि सञ्चरति प्रबुद्ध ॥ ६६ ॥

स्रष्टु स्त्रीणामेनसा सृष्टित कि
गात्रस्या रोभूमिसृष्ट्या च कि स्यात् ।
पुत्रादाना शत्रु-कार्य्ये किमर्त्थे
सृष्टेरित्थ व्यर्थता धातुरासात् ॥ ६७ ॥

इद हि बाल्य बहु-दु ख बीज-
मिथ वयश्रोर्ग्धन राग दाहा ।
स वृद्धभावोऽमर्षाखशाला
दशेयमङ्गस्य विपत्फला हि ॥ ६८ ॥

लब्ध मया प्राक्तन-जन्म-पुण्यात्
सुजन्म सद्गात्रमपूर्व्वबुद्धि ।

मदाश्रय श्रीजिन धर्म्मसेवा
ततो विना मा च पर कृती क ॥ ६९ ॥
इत्थ विभाव्य सकल भुवन स्वरूप
योगी विनश्वरमिति प्रशम दधान ।
अर्द्धावमीलितदृगस्खलितान्तरङ्ग
पश्यन् स्वरूपमिति सोऽवहित समाऽ॥ ७० ॥
हृदय कमल मध्ये सैद्धमाधाय रूप
प्रमरदमृतकल्पैर्म्मूलमन्त्रै प्रसिञ्चन् ।
मुनि परिषदुदीर्ण्णै स्तोत्र घोषैस्सहैव
श्रुतमुनिरयमङ्ग स्व विहाय प्रशान्त ॥ ७१ ॥
अगमदमृतकल्प कल्पमल्पीकृतैना
विगलितपरिमोहस्तत्र भागाङ्गकेषु ।
विनमदमर-कान्तानन्द बाष्पाम्बु धारा
पतन हृत-रजोऽन्तर्द्धाम सापानरम्य ॥ ७२ ॥
यतौ याते तस्मिन् जगदजनि शून्य जनिभृता
मनो-मोह ध्वान्त गत बलमपूर्यप्रतिहत ।
व्यदीप्युद्यच्छोको नयन जल मुष्ण विरचयन्
वियोग किं कुर्य्यादिह न महता दुस्सहतर ॥ ७३ ॥
पादा यस्य महामुनेरपि न कैर्भूभृच्छिरोभिर्धृता
वृत्त सन्न विदावरस्य हृदय जग्राह कस्यामल ।
सोऽय श्रीमुनि-भानुमान् विधि वशादस्त प्रयातो महान्
यूय तद्विधिमेव हन्त तपसा हन्तु यतध्व बुधा ॥७४॥

यत्र प्रयान्ति परलोकमनिन्द्यवृत्ता-
स्स्थानस्य तस्य परिपूजनमेव तेषा ।
इज्या भवेदिति कृताकृतपुण्यराशे
स्थेयादिय श्रुतमुनेस्सुचिर निषद्या ॥ ७५ ॥
इषु शर शिखि-विधु मित-शक
परिधावि शरद्द्वितीयगाषाढे
सित-नवमि-विधु दिनोदयजुषि
सविशाखे प्रतिष्ठितेयमिह ॥ ७६ ॥
विलीन-सकल क्रिय विगत रोधमत्यूर्ज्जित
विलङ्घित तमस्तुला विरहित विमुक्ताशय ।
अवाङ् मनस-गोचर विजित-मोक शक्त्यग्रिम
मदीय-हृदयेऽनिश वसतु धाम दिव्य महत् ॥ ७७ ॥
प्रबन्ध ध्वनि सम्बन्धात्सद्रागात्पादन क्षमा ।
मङ्गराज कवेर्नाणी **वाणी वीणा**यततरा ॥ ७८ ॥

[**नोट**—मगराज कवि कृत यह श्रुतमुनि की प्रशस्ति ऐतिहासिक उपयोगिता के अतिरिक्त अपने काव्य सौन्दर्य्य में भी अनुपम है ।]

१०६ (२८१)

त्यागदब्रह्मदेवस्तम्भ पर

(लगभग शक स० ६५०)

(उत्तर मुख)

ब्रह्म क्षत्र कुलोदयाचल-शिरोभूषामणिर्भानुमान्
ब्रह्म क्षत्रकुलाब्धि वर्द्धन-यशो रोचिस्सुधा-दीधिति ।

अह्म क्षत्र कुलाकराचल-भव-श्री-हार-वल्लोमणि
अह्म क्षत्र कुलाग्निचण्डपवनश्चावुण्डराजोऽजनि ॥ १ ॥
कल्पान्त क्षुभिताब्धि-भीषण बल **पातालमल्लानुजम्**
जेतु **वज्विलदेव**मुन्नतभुजस्यन्द्र क्षितीन्द्राज्ञया ।
पत्युश्श्री**जगदेकवीर** नृपतेर्जैत्र द्विपस्याग्रतो
धावद्दन्तिनि यत्र भग्नमहितानीक मृगानीकवत् ॥ २ ॥
अस्मिन् दन्तिनि दन्त वज्र दलित द्विट् कुम्भि कुम्भोपले
वीरोत्तस पुरोनिषादिनि रिपु व्यालाङ्कुशे च त्वयि ।
स्यात्कोनाम न गोचरप्रतिनृपो मद्बाण कृष्णारग
ग्रासस्येति **नोलम्बराज**समरे य श्लाघित स्वामिना ॥३॥
खात क्षार पयोधिरस्तु परिधिश्चास्तु **त्रिकूट पुरी**
लङ्कास्तु प्रति नायकोऽस्तु च सुराराति स्तथापि क्षमे ।
त जेतु **जगदेकवीर**-नृपते त्वत्तेजसेतिक्षणान्
निर्व्यूढ **रणसिङ्ग** पार्त्थिव-रणे येनोर्ज्जित गर्ज्जितम् ॥४॥
वीरस्यास्य रणेषु भूरिषु वय कण्ठग्रहोत्कण्ठया
तप्तास्सम्प्रति लब्ध निर्वृतिरसास्त्वत्खड्ग धाराम्भसा।
कल्पान्त **रणरङ्गसिङ्ग** विजयी जावेति नाकाङ्गना
गीर्व्वाणी कृत-राज गन्ध करिणे यस्मै वितीर्णाशिष ॥ ५ ॥
आक्रष्टु भुज विक्रमादभिलषन् **गङ्गा**धिराज्य श्रिय
यनादौ **चलदङ्क** गङ्गनृपतिर्व्यर्त्थाभिलाषीकृत ।
कृत्वा वार-कपाल-रत्न चषके वीर-द्विषश्शोणितम्
पातु कौतुकिनश्च **कोणप गणा** पूर्णाभिलाषीकृता ॥६॥

[**नोट**—कवल यही एक लेख है जिसमें चामुण्डराय मत्री का स्वतन्त्र और विस्तृत रूप से वर्णन पाया जाता है। दुर्भाग्यवश यह लेख का एक खण्ड मात्र है। ज्ञात हाता है कि अपना एक छोटा सा लेख न० ११० (२८२) लिखान के लिये हेगडे कण्णने इस महत्त्वपूर्ण लेख की तीन बाजू घिसवा डाली है। यदि यह लेख पूरा मिल जाता ता सम्भव है कि उसस चामुण्डराय और गोम्मटेश्वर मूर्ति के सम्बन्ध की अनक बाते विदित हा जातीं जिनके विषय मे अब केवल अनेक अनुमान ही लगाये जाते है।]

११० (२८२)

उसी स्तम्भ पर

(लगभग शक स० ११२२)

(दक्षिणमुख)

श्री-**गोम्मट** जिन पाग्रद चागद कम्बक्के यक्षन माडिसिद।
धीगम्भीरगुणाढ्य भोग पुरन्दरनेनिप्प हेग्गडे **कण्ण** ॥

[गम्भीर बुद्धि और गुणवान् हेगडे कण्ण ने गोम्मट जिन के सन्मुख त्यागद स्तम्भ के लिये यक्ष देवता निर्माण कराया।]

१११ (२७४)

अखण्ड बागिलु के पूर्व की ओर चट्टान पर

(शक स० १२९५)

श्रीमत्परम गम्भीर-स्याद्वादामोघ लाञ्छन।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन शासन॥ १ ॥

श्री**मूल**-सङ्घपय पयोधिवर्द्धनसुधाकररा श्री**बलात्कार**गणक-मल-कलिका कलाप विकचन दिवाकररा वनवा **तकीर्त्ति**-

देवा तत्शिष्या राय भुज**सुदाम** आचार्य्य महा वादि वादीश्वर राय वादि पितामह सकल-विद्वज्जन चक्रवर्त्ति **देवेन्द्र-विशाल-कीर्त्ति** देवा तत्शिष्या भट्टारक श्री**शुभकीर्त्ति**देवास्त त्शिष्या कलिकाल सर्व्वज्ञ भट्टारक **धर्म्मभूषणदेवा** तत्शिष्या श्री-**अमरकीर्त्या**चार्य्या तत्शिष्या मालिर्वा ति नृपाणा प्रथ मानल रसित नुत पा यमुल्लासक **देमक** चार्य्यपट्टविपुलायाचला करण-मार्त्तण्ड-मण्डलाना भट्टारक-**धर्म्मभूषण**-देवाना तत्वार्थ-वार्द्धि वर्द्ध मान-हिमाशुना **वर्द्धमान** स्वामिना कारितोऽह आचार्य्याणा स्वस्ति**शक वर्ष १२८५ परिधावि सवत्सर वैशाख शुद्ध ३ बुधवारे** ॥

११२ (२७३)

उसी चट्टान पर

(लगभग शक स० १३२२)

श्री **शान्तिकीर्त्ति**देवर शिष्यरु **हेमचन्द्र कीर्त्ति** देवर निसिद्धि॥ मङ्गलमहाश्री ॥

११३ (२६८)

उसी चट्टान पर

(सम्भवत शक स० १०-६६)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासन जिन शासन ॥ १ ॥

स्वस्ति समधिगत पञ्च-महा शब्द महा मण्डलाचार्य्यादि प्रशस्तय विराजित-चिह्नालङ्कृतरु विसम्बोधावबोधितरु सकल विमल केवल-ज्ञान नेत्र त्रयरु अनन्त ज्ञान दर्शन वीर्य्य सुखात्म करु विदितात्म-सद्धर्म्मोद्धारकरु एकत्व भावना भावितात्मरु उभ नय पमर्त्थिसखरु त्रिदण्ड रहितरु त्रिशल्य निराकृतरु चतु कषा-विनाशकरु चतुर्व्विधवुपमर्ग्गगिरिकन्दरादि दैरेय समन्वितरु पञ्च दस प्रमाद विनास कर्त्तुगलु पञ्चाचार-वीर्य्याचार प्रवीणरु सड्डुदरुशनद भेदाभेदिगलु सड्डु कर्म्म माररु सप्तनयनिरतरु अष्टाङ्ग-निमित्त कुशलरु अष्ट विध ज्ञानाचार सम्पन्नरु नव विध ब्रह्मचरिय विनिर्म्मुक्तरु दश धर्म्म शर्म्म शान्तरु मेकादशश्रावकाचारवुपदेशव्रताचार चारित्ररु द्वादशातप-निरतरु द्वादशाङ्ग श्रुतप्रविधान सुधाकररु त्रयोदशाचार शील-गुण धैर्य्यम सम्पन्नरु एम्बत नाल्कु लच जीव भेद मार्ग्गणरु सर्व्व-जीव दया-पररु श्रीमत्**कोण्डकुन्दा**न्वय गगन-मार्त्तण्डरु विदितोतण्ड कुष्ममाण्डरु **देशि**गण गजेन्द्र-सिन्धूरमदधारावभा-सुररु श्री महा**देशि**-गण **पुस्तक** गच्छ **कोण्ड**-कुन्दान्वय श्रीमत् **त्रिभुवनराज** गुरु-श्री**भानुचन्द्र** सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलु **श्री सोमचन्द्र** सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगलु **चतुर्म्मुख**भट्टारकदेवरु श्री**सिंहनन्दि**भट्टाचार्य्यरु श्री **शान्ति**भट्टारकाचार्य्यरु श्री-**शान्तिकीर्त्ति** र भट्टारकदेवरु श्री**कनकचन्द्र**मल-धारिदेवरु श्री **नेमिचन्द्र** मलधारिदेवरु चतुसङ्घश्रीसकल गण-पाधारण ड देवधामरु कलियुग गणधर-पञ्चासत

मुनीन्द्ररु अवर शिष्यरु **गौरश्री**कन्तियरु **सोमश्री**कन्तियरु **नश्री**कन्तियरु **देवश्री**कन्तियरु **कनक श्री**कन्तियर शिष्य यिप्पत्तु-एण्टुतण्ड-शिष्यरु बेरसु **हेवणन्दि सं वत्सरद फाल्गुणसु** ८ त्रि श्री **गोम्मटदेवर** तीर्थनन्द पञ्च कल्याण

[इस लेख में कुन्दकुन्दान्वय देशी गण, पुस्तकगच्छ के महाप्रभावी आचार्यों—त्रिभुवनराजगुरु भानुचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति, सोमचन्द्र सिद्धान्तचक्रवत्ति, चतुर्मुख भट्टारकदेव सिंहनन्दि भट्टाचार्य, शान्ति भट्टारकाचार्य, शान्तिकीर्त्ति भट्टारकदेव कनकचन्द्र मलधारिदेव, और नेमिचन्द्र मलधारिदेव—के उल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि इन सब आचार्यों व अनेक गणों और संघो के आचार्य कलियुग के गणधर पचांस मुनीन्द्र, व उनकी शिष्यायें गौरश्री, सोमश्री, देवश्री, कनकश्री व शिष्यो के अट्ठाइस संघो ने उक्त तिथि को एकत्रित होकर पञ्चकल्याणोत्सव मनाया।]

नोट—लेख में संवत्सर का नाम हेंबणन्दि दिया हुआ है जिससे सम्भवत हेमलम्ब का तात्पर्य है। शक सं० १०९९ हेमलम्ब था।]

११४ (२६९)

एक शिला पर जो उस चट्टान के सामने खडी है

(सम्भवत शक सं० १२३८)

स्वस्ति श्री**मूलसङ्घदे**शीगण **पु**स्तकगच्छ **को**ण्डकुन्दान्वय श्री**त्रैविद्य देवर** शिष्यरु **पद्मणन्दि**देवरु **नल-सं वत्सरद चैत्र-सु-१ सोमवारदन्दु नाक श्री**मनस्सरोजिनीराजमराळरादरु मङ्गलमहाश्री ॥

[उक्त तिथि को त्रैविद्यदेव के शिष्य पद्मनन्दिदेव ने समाधिमरण किया।]

[नोट—लेख में नल संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १२३८ नल था]

११५ (२६७)

अखण्डबागिलु की शिला पर

(लगभग शक सं० १०८२)

स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान भव्य जन-निधान सेनेयङ्ककार रण रङ्ग नीर श्रीमन्मरियाने दण्डनाथानुज दानभानुजनेनिसिद भरतमय्य-दण्डनायकनी-भरतबाहुबलिकेवलिगल प्रतिमेग-लुमनी - बसदिगलुमातीर्त्थ द्वार पच्च शोभात्थ माडिसिदनी रङ्गद हप्पलिगेयुमनीमहासोपानपङ्क्तियुम रचिसिद श्रीगोम्मटदेवर सुत्तलु रङ्गम हप्पलिगेय बिगियिसिदनन्तुमल्लदेयुमी गङ्गवाडिना डोलल्लिगल्लिगेल्लि नोर्प्पेड ।

कन्द ॥ प्रकट यशो विभुवेण्ब
त्तु कन्ने नसदिगलनोसेदु जीर्ण्णोद्धार
प्रकरमनिन्नूरनलौ
किक धृति माडिसिदनेसेये भरत चमूप ॥ १ ॥
भरत चमूपतिसुते सु
स्थिरे शान्तल-देवि बूचिराजाङ्गने
तद्भरततनेय मरि
नो सदु बरयिसिदनिद ॥ २ ॥

[मरियाणे दण्डनाथ के लघु भ्राता महामंत्री भरतमय्य दण्डनायक ने ये भरत और बाहुबलि केवलि की मूर्तियां व ये बस्तियां इस तीर्थ

स्थान के द्वार की शोभा के लिये निर्माण कराई । उन्होंने रङ्गशाला की हप्पलिगे (कटघर ?) व महासोपान व गोम्मटदेव की रङ्गशाला की हप्पलिगे भी निर्माण कराये तथा गङ्गवाडिभट मे अस्सी नवीन बस्तियाँ बनवाई और दो सौ बस्तियों का जीर्णोद्धार कराया । भरत चमूपति की सुता शान्तल देवी न यह लेख लिखवाया ।]

११६ (३१२)

बोदेगल बस्ति के पश्चिम की ओर चट्टान पर

(शक स॰ १६०२)

श्रीमतु शालिवाहन **शकवरुष १६०२ सिद्धार्त्थि-सव त्सरद माघ-बहुल** १० यल्लु मुनिगुन्दद सीमेय देश कुलकरणि-यर मकलु**बाङ्क होन्नप्पय्यन** अनुज **वेङ्कप्पैय्यन** पुत्र **सिद्दप्पैन** अनुज **नागप्पैय्यन** पुण्यस्त्रीयराद **बनदाम्बिकेयरु** बन्दु दरुशनवादरु भद्र भूयात् श्री ।। **श्रुतसागर** वर्न्निगल समेत यिदे तिथियल्लि **माडिगूर गिडगप्प नागप्पन** पुत्र **दानप्पसेट्टर** पुण्य स्त्री **नागम्मन** मैदुन **भिष्टप्पनु** दरुशनवादरु ।।

[उक्त तिथि को श्रुतसागर गणी के साथ उक्त व्यक्तियो न तीर्थ वंदना की ।]

११७ (२५६)

कञ्चि गुब्बि बागिलु के दक्षिण की ओर चट्टान पर

(सम्भवत शक स० १५३१)

श्री **सौम्यस वत्सरदोलु** विभवद **आश्वयज** ब ७ मियोलु तां श्रीसोमनाथपुरवेनिसिद **कोङ्गनाडिङ्गद** अनादिय ग्राम ।।

आ-ग्रामदलु श्रीमत्**पण्डित देवर** शिष्यरु **काश्यप**-गोत्रद द्विज कुल सम्पन्नरु सेनबोव सायण्ननवरु अवर मदवलिगे **महदेविगल** प्रिय पुत्र **हिरियण्ननू** श्री **गुम्मटनाथ** स्वामिगल दिव्य श्री पदवनू दरुशनवागि परमजिनेश्वर भक्तरु वर गुणिगलु मुक्ति पथव पडदरू ॥ श्री

[कश्यपगोत्रीय ब्राह्मण और पण्डित देव के शिष्य सनबोव सायण्ण के पुत्र जिनभक्त हिरियण्ण ने उक्त तिथि को अनादि ग्राम कोङ्गनाडु की गणना की (?) और उसकी पत्नी महादेवी न गोम्मटनाथ स्वामी के चरणारवि द की वन्दना कर मुक्ति माग प्राप्त किया ।]

[नोट—लेख मे सौम्य संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १५३१ सौम्य था]

११८ (३१३)

चौबीस तीर्थंकर बस्ति मे

(शक स० १५७०)

(नागरी लिपि)

वों नम सिद्धेभ्य **गोमट-स्वामी** आदीश्वर मुल्ल-नाईक चोबीस तीर्थं कर कि परतीमा **चारुकीरती** पण्डित **धरमचन्द्र** बल्लातकार उपदसा **सके १५७०** **सर्वधारी** नाम-स बत्सर **वैशाख वदी २ सुकुरबार** **देहराङ्की** पती स्यहै **गेरवाल्ल** यवरेगोत्र **जीनासा** **धीवा सा** का पुत्र **सदावनसा** व **भाबूसा** व **लामासाका** पुत्र **ताकासा मनासा** कमुलपूरे **सातसा भाससा** वद भोपत रसे राव

११९ (२७७)

अखण्ड बागिलु को जानेवाले मार्ग के पश्चिम की ओर चट्टान पर

(विक्रम स० १७१९)

(नागरी लिपि)

स वत् १७१८ वर्षे वैसाष-सुदि ७ सोमे श्री काष्टा सङ्घे **मण्डितटगच्छे** श्री-**राजकीर्त्ति** । तत्पट्टे भ श्री **लक्ष्मीसेन**स्तत्पट्टे भ श्री **इन्द्रभूषण**तत्पट्टे **शोसू बघेरवाल** जाती **बोरखण्ड**-बाई पुत्र प भा **धनाई** तयो पुत्र प **खाम्फल पूजनाई** तयो पुत्र प वन जन **पडाई** स परिवारे **गोमट** स्वामि चा जात्रा सफल

१२० (३१८)

पहाडी पर चढने के मार्ग के पूर्व की ओर चट्टान पर

(लगभग शक स० ११४०)

अरकेरेय वीर **वीरपल्लव रायन** मक **केदेसङ्कर**-नायक **बेल्लुगोल** प्घ यच्च बेलबडिगर बेटके ॥

१२१ (३२१)

ब्रह्मदेव मण्डप के पीछे चट्टान पर

(सम्भवत शक स० १८०१)

सिद्धार्थि स । **कार्त्तिक सुद्ध २** रलु । श्री **ब्रह्म-देवर** मटपवन्नु **हिरिसालि** गिरिगौडना तम्म **रङ्गैयन** से वे ॥

१२३ (३७५)

चेन्नण्णन के कुञ्ज मे एक चट्टान पर

(लगभग शक स० १५६५)

पुट्टसामि सट्टर श्री **देवीरम्मन** मग **चेन्नण्णन** मण्टप आदि तीर्त्तद कोलविदु हालु गोलनोविदु अमुर्त-गोलनोविदु **गङ्गे** नदियो। **तुङ्गबद्रियो**विदु मङ्गला गौरेयो विदु **वृन्द-बनवो**विदु स्रङ्गार तोटवो। अयि अयियो अयि अयिये वले तीर्त्त वले तीर्त्त जया जया जया जय ॥

[यह पुट्टसामि और देवीरम्म के पुत्र चण्णण का मण्डप और आदितीर्थ है। यह दुग्धकुण्ड है या कि अमृतकुण्ड ? यह गङ्गा नदी है या तुङ्गभद्रा या मङ्गलगौरी ? यह वृन्दावन है कि विहारो पवन ? ओहो! क्या ही उत्तम तीर्थ है ?]

———

श्रवण बेल्गोल नगर मे के शिलालेख

१२४ (३२७)

अक्कन बस्ति मे द्वार के समीप एक पाषाण पर

(शक स० ११०३)

श्रीमत्परम गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासन जिन शासनम् ॥ १ ॥
भद्रम्भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघ नाशिने ।
कुतीर्थ्य ध्वान्त सङ्घात प्रभेद घन-भानवे ॥ २ ॥
स्वस्ति श्री जन्म गह निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दाम तेज
विस्तारान्त कृतोर्व्वी तलममलयशश्चन्द्र सम्भूति धाम ।
वस्तु व्रातोद्भव स्थानकमतिशय सत्वावलम्ब गभीर
प्रस्तुत्य नित्यमम्भोनिधि निभमेसगु **होय्सलोर्व्वीश-
वश** ॥ ३ ॥

अदरोलु कौस्तुभदोन्दनर्घ्य गुणम देवेभदुद्दाम स
त्वदगुर्व्व हिमरश्मियुज्वल कला सम्पत्तिय पारिजा
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्त तालिद तानल्ते पु
ट्टिदनुद्र्वेजित-वीर वैरि-**विनयादित्या**वनीपालक ॥ ४ ॥

क ॥ विनय बुधर रञ्जिसे
घन तेज वैरि-बलमनलरिसे नेगल्द ।

विनयादित्य नृपालक

ननुगत नामार्त्थनमल **कीर्त्ति**-समर्त्थं ॥ ५ ॥

आ **विनयादित्यन** वधु

भावोद्भव मन्त्र देवता सन्निभे सद्-

भाव गुण भवनमखिल क

ला-विलसिते केलेयबरसियेम्बलु पेसरि ॥ ६ ॥

आदम्पतिग तनूभव

नाद शचिग सुराधिपतिग मुन्ने

न्ताद जयन्तनन्ते वि-

षाद विदूरान्तरङ्गनेरे**यङ्ग** नृप ॥ ७ ॥

आत **चालुक्य**-भूपालन बलद भुजा दण्डमुद्दण्ड-भूप-

व्रात-प्रोत्तुङ्ग-भूभृद् विदलन-कुलिश वन्दि सस्यौघ-मेघ ।

श्वेताम्भोजात देव द्विरदन-शरदभ्रेन्दु कुन्दावदात

ख्यात-प्रोद्यद्यशश्री-धवलितभुवन धीरनेकाङ्गवीर ॥ ८ ॥

एरेयनेलेगेनिसि नेगल्दर्द्

एरेयङ्ग नृपाल-तिलकनङ्गने चलुवि

ङ्गेरेवट्टु शील गुणदि

नेरदे**चल**देवियन्तु नोन्तरुमोलरे ॥ ९ ॥

एने नेगल्दवरिब्बर्गं

तनूभवर्न्नेगल्दरल्ते **बल्लाल वि**

ष्णु नृपालकनु**दयादि**-

त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिल वसुधा तलदोल् ॥ १० ॥

अवरोल् मध्यमनागियु भुवनदोलु पूर्व्वापराम्भोधिये-
 य्दुविन कूडे निमिच्चुवोन्दु-निज-बाहा-विक्रम-क्रीडेयु-
ड्ववदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-व्रातैक-धाम धरा-
 धव-चूडामणि **या**दवाब्ज-दिनप श्री **विष्णु**भूपालक
 ॥ ११ ॥

एलेगेसेव **को**यतूत्तत्
 तलवनपुरमन्ते **राय**रायपुर व
ल्वल वलेद **विष्णु**-तेजो
 ज्वलनदे बेन्दवु बलिष्ठ रिपु दुर्ग्गङ्गल् ॥ १२ ॥

इनित दुर्ग्गम-वैरि दुर्ग्ग चयम कोण्ड निजाक्षेपदि
 न्दिनिबर्भूपरनाजियोल् तविसिद तन्नत्र सङ्घातदि-
न्दिनिबर्गानतगित्तनुद्घ-पदम कारुण्यदिन्देन्दुता
 ननित लेकदे पेल्वोडब्ज भवनु विभ्रान्तनप्प वल ॥१३॥

क ॥ **लक्ष्मीदेवि** खगाधिप
 लक्ष्मङ्गसेदिर्द **विष्णु**गेन्तन्ते वल ।
लक्ष्मा-देवि-लसन्मृग—
 लक्ष्मानने विष्णुगग्रसतियेने नेगल्दल् ॥ १४ ॥

अवर्ग्गे मनोजनन्ते सुदती जन चित्तमनील्कोलल्केसा
 ल्ववयव शोभेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना-
निवहमनेच्चु मुख्वनणमानदे बीररनेच्चु युद्धदोल् ।
 तविसुवोनादनात्म-भवनप्रतिम **नरसि ह** भूभुज ॥१५॥

पडे-माते बन्दु कण्डङ्गमृत जलधि ता गर्व्वदिं गण्डवात
नुडिवातङ्गन्ननेम्बै प्रलय-समयदोल् मेरेय मीरि बप्पा
कडलन्न कालनन्न मुलिद कुलिकनन्न युगान्ताग्नियन्न
सिडिलन्न सिंहदन्न पुरहरतुरिगण्णन्ननी **नारसिंह**
॥ १६ ॥

तदर्द्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥
मृदु-पदेये**चलदेवी** —
सुदतिये **नरसिंह** नृपतिगनुपमसौख्य
प्रदे पट्ट महादेवी
पदविगे सले योग्येयागि धरेयोल् नेगल्दल् ॥ १७ ॥

वृत्त ॥ ललना लीलेगे मुन्नवेन्तु कुसुमास्त्र पुट्टिर्दों विष्णुग
ललित-श्री वधु विङ्गवन्ते **नरसिंह**चोणिपालङ्गवे-
चल देवी वधुग परार्त्थ-चरित पुण्याधिक पुट्टिदो
बलवद्वैरि कुलान्तक जय भुज **बल्लाल** भूपालक ॥१८॥
रिपु भूपालेभ सिंह रिपु नृप नलिनानीक राका शशाङ्क
रिपु राजन्यौघ मेघ प्रकर निरसनोद्भूत वात प्रपात ।
रिपु धात्रीशाद्रि वज्र रिपु नृपति तमस्स्तोम-विध्वसनार्क्क
रिपु पृथ्वीपालकालानलनुदयिसिद **वीर-बल्लाल देव**॥१६॥
गत-लील **लाल**नालम्बित-बहल-भयोग्र-ज्वर **गूर्ज्जर** स
न्धृत शूल **गौल**नुच्चै कर धृत विलसत्पल्लव **पल्लव** प्रो
ज्झित चेल **चोल**नाद कदन वदन दोलु भेरिय पोटसेवीरा-
हित भूभृज्जाल-कालानलनतुल बल **वीर बल्लाल देव** ।२०।

भरदिन्द तन्न दोर्ग्गर्ब्वदि **नोडेयरस** काय्दु कादल्कण पू
ण्डिरे **बल्लाल** क्षितीश नडदु बलसियुमुत्तसेना गजेन्द्रो
त्कर दन्ताघात सञ्चूर्णितशिखरदोलुच्चङ्गियाल्मिल्किदभा
सुर कान्ता देश-कोश व्रज-जनक हयौघान्वित **पाण्ड्य**भूप
॥ २१ ॥

चिरकाल रिपुगलगसाध्यमेनिसिर्द्दुच्चङ्गियमुत्तिदु-
र्द्धर तेजो-निधि धूलि गोटेयने कोण्डाकाम देवावनी
श्वरन सन्दो**डेय** क्षितीश्वरननाभण्डारम स्त्रीयर
तुरग व्रातमुम समन्तु पिडिद **बल्लाल**-भूपालक ॥२२॥

स्वस्ति समधिगत पञ्च महा शब्द महा-मण्डलेश्वर **द्वार**
वतीपुरवराधीश्वर **तुलुवबल** जलधि-बडवानल दायाद दावानल
पाण्ड्य कुल कमलवेदण्ड गण्ड भेरुण्ड मण्डलिक बेण्टेकार
चोल कटक सूरेकार। सङ्ग्राम भीम। कलि काल काम। सकल
वन्दि-वृन्द-सन्तर्प्पण समग्र वितरणविनोद। **वासन्तिका देवी**
लब्ध-वर प्रसाद । **यादव** कुलाम्बर द्युमणि । मण्डलिक
मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड **मलपरोलु**गण्ड शनिवारसिद्धि
गिरि दुर्ग्ग-मल्ल नामादि प्रशस्ति-सहित श्रीम**त्त्रिभुवन मल्ल**
तलकाडु कोङ्गु-नङ्गलि-नोलम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गल-गोण्ड
भुज-बल वीर **गङ्ग** प्रताप **होय्सल वीर बल्लाल** देवर्दक्षिण
मण्डलम दुष्ट-निग्रह शिष्ट-प्रतिपालन पूर्व्वक सुखसङ्कथा विनो
ददिं राज्य गेय्युत्तिरे ।
तत्पाद पद्मोपजीवि ॥

तनगाराध्य हर विक्रम भुज-परिघ **वीर-बल्लाल** देवा-
वनिपाल स्वामि विभ्राजितविमल चरित्रोत्कर शम्भु देव ।
जनक शिष्टेष्ट-चिन्तामणि जननि जगत्ख्यातेयक्कब्बेयेन्द-
न्दिनिस श्री-**चन्द्रमौलि**-प्रभुग सममे कालेय मन्त्रीश वर्गं
॥ २३ ॥

पति भक्त वर-मन्त्र शक्ति युतनिन्द्रङ्गेन्तु भास्वद्-बृह-
स्पति मन्त्रीश्वरनादनन्ते विलसद्बल्लाल **देवा**वनी
पतिगी विश्रुत **चन्द्रमौलि** विबुधेश मन्त्रियाद समु-
न्नत तेजो-निलय विरोधि-सचिवोन्मत्तेभ पञ्चानन ॥ २४ ॥

वर-तर्काम्बुज भास्कर भरत शास्त्राम्भोधिचन्द्र समु
द्धुर-साहित्य लतालवालनेसेद नाना कला कोविद ।
स्थिर-मन्त्र द्विज वश शोभितनशेषस्तुत्यनुद्यद्यश
धरेयोल् विश्रुत **चन्द्रमौलि**-सचिव सौजन्य-जन्मालय
॥ २५ ॥

तदर्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥

घन बाहा-बहलोर्म्मि-भासिते मुख-व्याकोश-पङ्कज-म-
ण्डने दृङ्मीन-विलासे नाभिविततावर्त्ताङ्के लावण्य-पा-
वन-वास्सम्भृते **चन्द्रमौलि**जधुवी श्री **आ**चियक्क जग
ज्जन सस्तुत्ये कलङ्क दूरे नुते गङ्गा-देवि तानल्लले ॥ २६ ॥

स्वस्त्यनवरत-विनमदमर-मौलि-माला-मिलित-चलन नलिन-
युगल भगवदर्हत्परमेश्वर-स्नात गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गेयु चतु-

व्विधानून-दान-समुत्तुङ्गेयुमप्प श्रीमतु हिरिय-हेग्गडितियाचल-देवियन्वयवेन्तेन्दोडे ॥

वरकीर्त्ति-धवलिताशा—
द्विरदौघ **मासवाडि**-नाड विनूत ।
परम-श्रावकनमल
धरणियाली-**शिवेय**नायक विभुवेसेद ॥ २७ ॥

आतन सतिगे सीताम्बुज-
शीतांशु शरत्पयोद विशदयशश्री-
धौत-धरातलेगखिल वि-
नीतेगे **चन्दव्वेगव्वेयर्दोरेयुण्टे** ॥ २८ ॥

तत्पुत्र ॥

जिन-पति-पद-सरसीरुह-
विनमद्भृङ्ग समस्त-ललनानङ्ग ।
विनय-निधि-विश्व-धात्रियाल्
अनुपमनी **बम्म देव** हेग्गडे नेगल्द ॥ २९ ॥

तत्सहोदर ॥ गत दुरितनमल-चरित
वितरण सन्तर्प्पिताखिलार्त्थि-प्रकर ।
क्षितियोल्-**बावेय** नायक-
नति-धीर कल्प-वृक्षम गेल्दे वन्द ॥ ३० ॥

तत्सहोदरि ॥

सरसिरुह-वदने घन-कुचे
हरिणाक्षि मदोत्क-कोकिल-स्वने मदव-

त्करि-पति गमने तनूदरि
धरेयोल् **कालब्बे** रूपिनागरमादल् ॥ ३१ ॥

तत्सहोदरि ॥
धरेयोल् रूढिय **मासवाडियरस हेम्माडि** देव गुणा
करना भूपन चित्त-वल्लभे लसत्सौभाग्ये गङ्गानिशा
कर-ताराचल-तार-हार शरदम्भोदस्फुरत्कीर्त्ति भा
सुरेयप्पाचल देवि विश्व-भुवन-प्रख्यातिय तात्दिदल् ॥
॥ ३२ ॥

तत्सहोदर ॥
वर-विद्वज्जन-कल्प भूजनमलाम्भोरासि गम्भीरनु-
द्धु र दर्प्प प्रतिनायक प्रकर-तीव्र ध्वान्त सङ्घात स-
हरणार्क्क शरदभ्रशुभ्रविलसत्कीर्त्यङ्गनावल्लभ
धरेयोल् **सोवण**-नायक नेगल्दनुदध्दैर्य शौर्य्याकर ॥
॥ ३३ ॥

क ॥ गिरिसुतेगे जह्नुकन्नेगे
धरणी-सुतेगत्तिमब्बेगनुपम-गुण-दोल् ।
दोरेयेनलिन्तीसकलो-
र्व्वरेयोल् **बाचब्बे** शीलवति सति नेगल्दल् ॥३४॥

तत्पुत्र ॥
परसैन्याहि विहङ्गनूर्ज्जितयशस्सङ्ग जिनेन्द्रांघ्रि प-
द्म रजो-भृङ्गनुदार तुङ्गनेसेद तन्नोप्पुवीसद्गुणो-

त्करदिं देशिय दण्डनायकनिलाभिष्टार्थसन्दायक
धरयोल् **बम्मेय** नायकनिखिलदीनानाथसन्त्रायक ॥३५॥

तद्वनिते ॥

शतपत्रेक्षणे **मल्लि**सेट्टि-विभुग निश्शेष-चारित्र-भा-
सितेगी **माचवे** सेट्टिकव्वेगवनूनात्मीय-सौन्दर्य्य-नि-
र्ज्जित चित्तोद्भवकान्तेयुद्भविसिदल् **दोचव्वे** सत्कान्ते ता-
र-तुषारांशु-लसद्यशो धवलिताशा चक्रेयीधात्रियोल् ॥
॥ ३६ ॥

बम्मेय-नायकननुज ॥

मार मदनाकार
हार क्षीराब्धि विशद कीर्त्याधार ।
धीर धरेयाल् नेगल्द
दूरीकृत-सकल दुरित-विमलाचार ॥ ३७ ॥

तदनुजे ॥

हरिणी-लोचने पङ्कजानने घनश्रोणिस्तनाभोग भा-
सुरे बिम्बाधरे कोकिल-स्वने सुगन्ध श्वासे चञ्चत्तनू-
दरि भृङ्गावलि नीलकेशे कल हंसीयानेयीकम्बुक-
न्धरेयप्पा**चलदेवि कन्तु** सतिय सौन्दर्य्य दिन्देलिपल् ॥
॥ ३८ ॥

तदनुजे ॥

इन्दु मुखि मृग-विलोचने
मन्दर-गिरि-धैर्य्ये तुङ्ग कुच युगे भृङ्गी-

बृन्द शिति-केश विलसिते
चेन्दव्वे विनूतेयादलखिलोर्व्वरेयाल् ॥ ३९ ॥

तदनुज ॥

हार-हरहास हिम रुचि-
तारगिरि-स्फटिक-शङ्ख-शुभ्राम्बुरुह-
चीर सुर सिन्धु शारद-
नीरद-भासुर यशोऽभिराम **काम** ॥ ४० ॥

सिरिग विष्णुगवेन्तु मुन्नवसमास्त्र पुट्टिदो शम्भुग
गिरिसत्र्जातेगवेन्तु षड्वदननादों पुत्रनन्तीगली-
धरणी-विश्रुत चन्द्रमौलि-विभुग श्रीयाचियक्कङ्गवु-
द्भुर तेजगुणि **सोमनुद्भ**विसिद निस्सीम पुण्योदय ॥४१॥

वर-लक्ष्मी प्रिय-वल्लभ विजयकान्ताकर्ण्णपूर विभा-
सुर वाणी-हृदयाधिप तुहिन-तार-चीर वाराशि-पा-
ण्डुरकीर्त्तीशनुदग्र-दुर्द्धर तुरङ्गारूढ-रेवन्तनु-
द्भुर-कान्ता कमनीयकामनेसेद श्री **सोमनी** धात्रियोल्
॥ ४२ ॥

परमाराध्यननन्त सौख्य निलय श्री मज्जिनाधीश्वर
गुरु सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति **नयकीर्त्ति** ख्यात योगीश्वर ।
धरणी विश्रुत **चन्द्रमौलि**-सचिव हृत्कान्तनेन्दन्दडा-
र्देरियीयाचलदेविगिन्दु विशदोद्यत्कीर्त्तिगी धात्रियोल्॥४३॥

भरदि **बेलुगोल** तार्थ्थ दोल् जिन पति श्री पार्श्व-देवोद्धम-
न्दिरम माडिसिदल् विनूत **नयकीर्त्ति**ख्यात-योगीन्द्रमा-

सुर-शिष्योत्तम **बालचन्द्र**-मुनि पादाम्भोजिनीभक्ते सु-
स्थिरेयप्पा**चलदेवि** कीर्त्ति-विशदाशा चक्रे सद्भक्तियिं।४४।
तद्गुरुकुल श्री**मूलसङ्घ** **देशियगण** **पुस्तकगच्छ** **कोण्ड-
कुन्दान्वय**दोल् ॥
क ॥ विदित **गुणचन्द्र**-सिद्धा-
न्त-देव-सुतनात्म-वेदि परमत भूभृद्
भिदुर **नयकीर्त्ति**-सिद्धा-
न्त-देवनेसेद मुनीन्द्रनपगत-तन्द्र ॥ ४५ ॥
वर-सैद्धान्त पयोधि वर्द्धन-शरत्ताराधिप तार-हा-
र रुचि-भ्राजित कीर्त्ति धौत निखिलोर्व्वी मण्डल दुर्द्धर-
स्मर बाणावलि मेघ जाल पवन भव्याम्बुज त्रात भा
सुरनी श्री**नयकीर्त्ति** देव-मुनिप विख्यातिय तालिददों ४६
तच्छिष्यर् ॥
वर-सैद्धान्तिक **भानुकीर्ति** मुनिपश्री **मत्प्रभाचन्द्र** दे-
वरशेषस्तुत **माघनन्दि** मुनि-राजर्प्प**द्मनन्दि**-व्रती
श्वररुर्व्वी नुत **नेमिचन्द्र** मुनि नाथर्ख्यातरादन्निर-
न्तरवीश्री**नयकीर्ति** देव मुनि पादाम्भोरुहाराधकर् ॥
॥ ४७ ॥
स्मर मातङ्ग-मृगेन्द्रनुद्ध-**नयकीर्ति** रयात योगीन्द्र-भा
सुर पादाम्बुरुहानमन्मधुकर चञ्चत्तपो-लक्ष्मिगी-
श्वरनादो नरपाल मौलि मणि रुण्मालाञ्चितांघ्रि-द्वय
स्थिरनाध्यात्मिक **बालचन्द्र** मुनिप चारित्र-चक्रेश्वर।४८।

गौरि तपङ्गल नेगल्दु ता नेरेदल् गड **चन्द्रमौलियोल्**
नारियगिंन्नदे सोबगु पेल्पलवु भवदोल् निरन्तर ।
सार तपङ्गल पडेदु ता नेरद गड **चन्द्रमौलि** ग-
भीरेयनिप्प तन्ननेनिपाचलेवोल् सोबगिङ्ग नोन्तरार् ॥४६॥

शकवर्षद सायिरद नूर नाल्केनेय **प्रव सवत्सरद पौष्य बहुल-तदिगेसुक्रवारदु**त्तरायण सक्रान्तियन्दु ॥

वृ ॥ शीलधि **चन्द्रमौलि**-विभुवा**चल-देवि** निजोद्ध कान्तेया-
लोल-मृगाक्षि माडिसिद **बेल्गोल** नीर्त्थद पार्श्वदेवर
न्चोलिगे बेडे **बम्मेयन**हल्लियनित्तनुदारि **वीर ब-**
ल्लालनृपालकन्धरेयुमब्धियुमुल्लिनमेय्दे सल्विन ॥५०॥

तद्वनिपनित्त दत्तिय-
नदनाचले **बालचन्द्र** मुनि राजश्री-
पद-युगमं पूजिसि चतु
रुदधि वर निमिरे कीर्त्ति जिनपतिगित्तल् ॥ ५१ ॥

अन्तु धारा-पूर्व्वक माडि कोट्ट तद्ग्राम सीमे । मूड **केम्बरेय** हल्ल । अल्लि तेङ्क **मेट्टरे** । अल्लिँ तेङ्क हिरिय-हेद्दारि । अल्लिं तेङ्क आलद मर । अल्लिंतेङ्क **मे**लियज्जनोब्बे । अल्लि तेङ्कलङ्कदहा-लोब्बे । अल्लि तेङ्क **नागर** कट्टक्के होद हेद्दारि । अल्लिं पडुव **के**न्तट्टिय हल्ल । अल्लि पडुव मर नेल्लिय गुण्डु । अल्लिं पडुव **मेट्टरे** । अल्लि पडुव पिरियरेय कल्लत्ति । अल्लि पडुवल् **कडवद** कोल । अल्लिं पडुव कल्लत्ति । अल्लि पडुव बण्डि दारियोब्बे । अल्लि वडगलोणिय दारि । अल्लि वडग **देवणन** **केरेय**

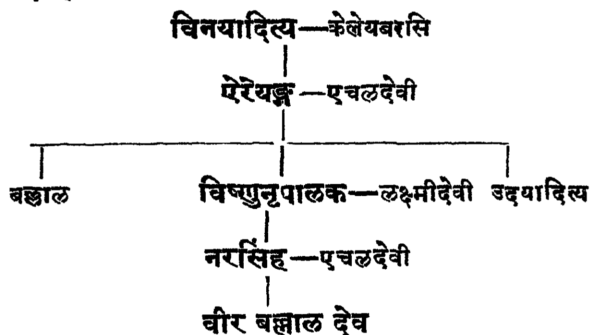
तारवल्ल । अल्लि बडग हुणिसेय गुण्डु । अल्लिं बडगलालद गुण्डु । अल्लिं मूडलोब्बे । अल्लिं मूड नट्ट गुण्डु । अल्लिं मूडल त्तेयलियनगुड्डे । अल्लिं मूडलालद-मर । अल्लिं मूडल् केम्बरय हल्लम सीमे कूडित्तु ॥ स्थल वृत्ति ॥ श्री करणद केशियणन तम्म बाचणन कैयि मार कोण्डु बेक्कन कील्केरेय चामगट्टम बिट्टरदर सीमे । मूड सागर । तेङ्क सागर । पडुव हुल्लगट्ट । बडग नट्ट कल् । हिरिय जक्कियब्बेय केरेय तोट । केतङ्गेरे । गङ्ग-समुद्रद कीलेरिय तोट । बसदिय मुन्दण अङ्गडि इप्पत्तु ॥ नानादेसियु नाडु नगरमु देवरष्ट-बिधार्च्चनेगे बिट्टाय दवसद हेरिङ्गे बल्ल १ अडकेय हेरिङ्गे हाग १ मेलसिन हेरिङ्गे हाग १ अरिसिनद हेरिङ्गे हाग १ हत्तिय मलवेगे हागे १ सीरेय मलवेगे होङ्गे वीस १ एलेय हेरिङ्गे अरुनूरु ॥

दान वा पालन वात्र दानाच्छ्रेयोऽनुपालन ।
दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युत पद ॥ ५२ ॥
बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभि ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल ॥ ५३ ॥
स्व दत्ता पर-दत्ता वा यो हरेति वसुन्धरा ।
षष्टिर्व्वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमि ॥ ५४ ॥

मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[इस लेख में चन्द्रमौलि मन्त्री की भार्या आचलदेवी (अपर नाम आचियक) द्वारा निर्माण कराये हुए जिन मन्दिर (अक्कन बस्ति) को चन्द्रमौलि की प्रार्थना से होयसल नरेश वीर बल्लाल द्वारा बम्मेयन हल्लि नामक ग्राम का दान दिये जाने का उल्लेख है । प्रथम के बाइस

पद्यों में होय्सळ वश के नरेशो का वर्णन है। जिनकी वशावली इस प्रकार दी है—

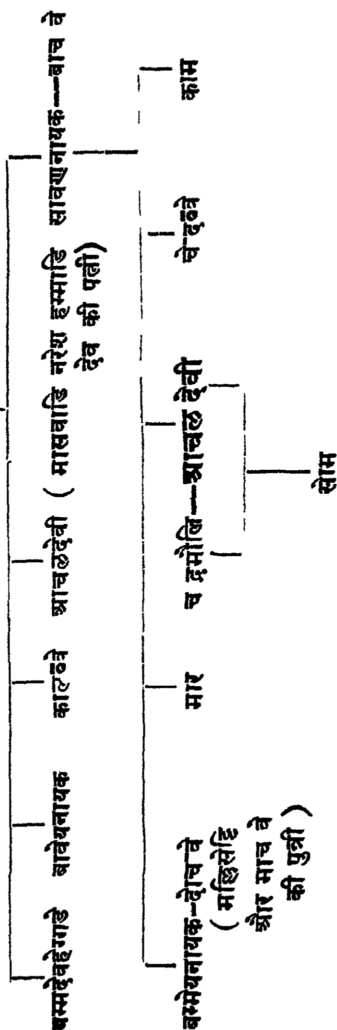


विष्णुनृप की कीर्त्ति में कहा गया है उन्होंने कई युद्ध जीते और अपने शत्रुओं के प्रबल दुग जैसे कि कोयतूर, तलवनपुर व रायरायपुर जला डाले।

वीर बल्लाल देव की युद्ध-दुन्दुभी बजते ही लाड नरेश की शान्ति भङ्ग हो गई, गुर्जर नरेश को भीतिज्वर हो गया गौड नरेश को शूल उठ आया, पल्लव नरेश पल्लवाञ्जलि लेकर खडे हो गये और चोल नरेश के वस्त्र स्खलित हो गये। ओडयरस नरेश ने अभिमान मे आकर युद्ध करने की ठानी पर बल्लाल नरेश ने उच्चङ्गि दुर्ग के शिखरों को चूर्ण कर डाला और पाण्ड्य नरेश को उसकी अङ्गनाओ सहित कैद कर लिया।

पद्य बाइस से आगे इन्हीं द्वारवती के यादव वशी नरेश त्रिभुवन मल्ल वीर बल्लाल देव का परिचय है। लेख में इनकी अनेक प्रताप सूचक पदवियो तथा इनके तलकाडु कोगु नङ्गलि नोलम्बवाडि बनवसे और हानुगल की विजय का उल्लेख है। शम्भुदेव और अक्कब्बे के पुत्र च द्र मोलि इन्हीं त्रिभुवन मल्ल वीरबल्लालदेव के म त्री थे।

पद्य सत्ताइस से चालीस तक आचल देवी के वंश का वर्णन है जो इस प्रकार है—


चन्द्रमौलि की भार्या आचलदेवी की वशावली
(मासवाडिनाडु के श्रावक) शिवेयनायक—च दव्वे
बम्मदेवहेग्गडे
बावेयनायक
कालव्वे
आचलदेवी (मासवाडि नरेश हम्मडि देव की पत्नी)
सावणनायक—बाच वे
बम्मेयनायक-दोच वे (मल्लिसेट्टि और माच वे की पुत्री)
मार
च द्रमौलि—आचल देवी
चे दव्वे
काम
सोम

आचल देवी नयकीर्ति के शिष्य बालचन्द्र की शिष्या थी। नय-कीति सिद्धान्तदेव मूलसघ, देशियगण, पुस्तक गच्छ, कुन्दकुन्दान्वय के गुणचन्द्रसिद्धान्तदेव के शिष्य (सुत) थे। नयकीर्ति के शिष्यों में भानुकीत्ति प्रभाचन्द्र माघनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र थ।]

१२५ (३२८)

अक्कन बस्ति के प्रधान प्रवेश द्वार के सामने की दक्षिणी दीवाल पर

(शक स० १३६८)

क्षयाह्वय कु वत्सरे द्वितय-युक्त-**वैशाखके**
मही तनय-वारके युत बलक्ष पक्षेतरे।
प्रताप निधि-**देवराट्** प्रलयमाप हन्तासमो
चतुर्दश दिने कथ पितृपतेनिवार्या गति ॥

१२६ (३२९)

उसी दीवाल के पूर्व कोण पर

(शक स० १३२६)

तारण सवत्सरद भाद्रपद बहुल - दशमियू सो मवारदलु हरिहररायनु स्वस्थनादनु ॥

१२७ (३३०)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(शक स० १३६८)

क्षयाख्य शक वत्सरे-द्वितय युक्त **वैशाख** के
महीतन [य] वारके यु

१२८ (३३३)

नगर जिनालय के बाहर

(? शक सं० ११२८)

श्रीमत्परम गम्भीर-स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासन जिन शासन ॥ १ ॥
भय लोभ द्वय दूरन मदन-घोर ध्वान्त-तीव्राशुव
नय निक्षेप युत प्रमाण-परिनिर्णीतार्त्थ सन्दोहन ।
नयनानन्दन-शान्त कान्त तनुव सिद्धान्तचक्रेशन
नयकीर्ति व्रति राजन नेनेदोड पापोत्कर पिङ्गुगु ॥ २ ॥

अवर तच्छिष्यर ॥

श्री **दामनन्दि** त्रैविद्य-देवरु श्री **भानुकीर्त्ति** सिद्धान्त देवरु **बालचन्द्र** देवरु **प्रभाचन्द्र** देवरु **माघणन्दि**-भट्टारक-देवरु मन्त्रवादि **पद्मणन्दि** देवरु **नेमिचन्द्र**-पण्डित देवरु इन्तिवर शिष्यरु **नयकीर्ति** देवरु ॥

धरेयोळ् खण्डलि-**मूलभद्र** विलसद् वंशोद्भवर्स्सत्य शौ-
चरतर् स्सिंह पराक्रमान्वितरनेकाम्भोधि वेला-पुरा
न्तर नाना व्यवहार जाल कुशलर् व्विख्यात रत्न-त्रया-
भरणर् **ब्बेल्गुल** तीर्त्थ वासि नगरङ्गळ् रूढिय तालिददरु॥
॥ ३ ॥

श्री**गोम्मटपुरद** समस्त नगरङ्गळ्गे श्रीमतु प्रताप-चक्रवर्त्ति **वीरबल्लाल** देवर कुमार **सोमेश्वर देवन** प्रधान हिरिय-

माणिक्य भण्डारि **रामदेव** नायकर सन्निधियलु श्रीमन्**नय कीर्ति** देवरु कोट्ट शासनपत्थलेय क्रमवेन्तेन्दडे **गोम्मट-पुरद** मनेदेरे **अक्षय-संवत्सर** मोदलागि आचन्द्रार्क-तार बर सलुवन्तागि हणवोन्दर मोदलिङ्ग एन्टुहणव तेत्तु सुखविप्परु **तेलिगर** गाणवोलगागि अरमनेय न्यायवन्यायमलन्रय एनु बन्दड आस्थलदाचार्य्यरु तावे तेत्तु निर्न्नयिसुवरु ओकन्न कारण कथेयिल्ल ई शासन मर्य्यादेय मीरिदवरु धर्म्म स्थलव केडिसिदवरु ई-तीर्त्थद नखरङ्गलोलगे ओब्बरिब्बरु ग्रामिणिगलागि आचार्य्यरिगे कौटिल्य बुद्धिय कलिसि वोन्दकोन्द नेनदु तोलसाटव माडि हाग वेलेयनलिहि बेडिकोल्लियेन्दु आचार्य्यरिगे मनगोट्टडे अवरु समय-द्रोहरु राजद्रोहरु वणिग-पगेयरु नेत्त-गयरु कोलेकवर्त्तेगोडेयरु इदनरिदु नखरङ्गलु उपेक्षिसिदरादडे ई-धर्म्मव नखरङ्गले केडिसिदवरल्लदे आचार्य्यरु दुर्ज्जनरु केडिसिदवरल्ल नखरङ्गल अनुमतविल्लदे ओब्बरिब्बरु ग्रामिणिगलु आचार्य्यर मनेयनके अरमनेयनके होक्कडे समय द्रोहरु मान्य मन्नणेय पूर्व्व मर्य्यादे नडसुवरु ई-मर्य्यादेय किडिसिदवरु गङ्गे तडिय कविलेय ब्राह्मण कोन्द पापद होहरु।

स्व दत्तां पर दत्ता वा यो हरेति वसुन्धरां।
षष्टिर्व्वर्ष सहस्राणि विष्टाया जायते कृमि ॥ ४ ॥

[नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति के शिष्य दामनन्दि, भानुकीर्त्ति, बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, माघनन्दि पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र हुए। इनके शिष्य नयकीर्त्तिदेव हुए। नयकीर्त्तिदेव ने वीरबल्लालदेव के कुमार

सामेश्वरदेव के म त्री रामदेव नायक के समक्ष बल्गोल नगर के व्यापा रियो को यह शासन दिया कि वे सदैव के लिये आठ 'हण' का टेक्स दिया करेंगे जिसका एक हण ब्याज आ सकता है। इसके अतिरिक्त वे और कोई टेक्स नहीं देवे गे। यदि राज्य की ओर से कोई न्याय, अन्याय व मलब्रय टेक्स लगाये जावे गे तो स्वय बल्गोल के आचार्य ही उसका प्रबन्ध करेंगे। यदि कोई व्यापारी आचार्य को छल कपट सिखावे गे तो वे धर्म के और राज्य के द्रोही ठहरे गे। व्यापारियों को अपने अधिकार पूर्ववत् ही रहेंगे। ये व्यापारी खडलि और मूलभद्र के व शज जैनधर्मावलम्बी थे।]

[नोट—श्रवण बेग्गोल पर पूरा अधिकार जैनाचार्य का ही था। वहा के टैक्स आदि का भी वे ही प्रबन्ध करते थे।]

१२८ (३३४)

नगर जिनालय मे दक्षिण की ओर

(शक स० १२०५)

उक्त श्री मूलसङ्घे ऽस्मिन्बलात्कार ग

शास्त्रसाराख्य शास्त्रकृत् ॥ १ ॥

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छन ।

जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासन जिन शासन ॥ २ ॥

नम कुमुदचन्द्राय विद्या विशद मूर्त्तये ।

यस्य वाक्-चन्द्रिका भव्य कुमुदानन्द नन्दिनी ॥ ३ ॥

नमो नम्रजनानन्द स्यन्दिने माघनन्दिने ।

जगत्प्रसिद्ध सिद्धान्त वेदिने चित्प्रमोदिने ॥ ४ ॥

स्वस्ति श्री जन्म गेह निभृत निरुपमौर्व्वानलोद्दामतेज
विस्तारान्त कृतोर्व्वी-तलममल यशश्चन्द्र सम्भूति धाम ।
वस्तु-व्राताेद्भव-स्थानकमतिशय सत्वावलम्ब गभीर
प्रस्तुत्य नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगु **हो**य्सलोर्व्वीश वश ॥ ५ ॥

स्वस्ति श्री-जयाभ्युदय **सकवर्ष** १२०५ नेय **चित्रभानु स वत्सर श्रावण सु १० बृ द**-दु स्वस्ति समस्त प्रशस्ति सहित श्रीमन्महा मण्डलाचार्य्यरुमाचार्य्य वर्य्यरुश्री **मूल** सङ्घदइङ्गलेश्वर **दे**शिय गणाग्रगण्यरुम् राज गुरु-गलुमप्प **नेमिचन्द्र**-पण्डित देवर शिष्यरु **बालचन्द्र** देवर श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरुमाचार्य्य वर्य्यरु **हो**य्सल राय-राज गुरुगलुमप्प श्री **माघनन्दि** सैद्धान्त चक्रवर्त्तिगल प्रिय गुड्डुगलुमप्प श्री **बेलुगुल** तीर्त्थद **ब**लात्कार-गणाग्रगण्यरुमगण्यपुण्यरुमप्प समस्त माणिक्य नगरङ्गलु **नखर** जिनालयद आदि-देवर अमृत पडिगे **रा**चेयनहल्लिय होलबेरेगो लगाद **ए**डवल्लगेरेय केलगे पूर्व्वदत्ति मोदलेरिय तोटमु अमृत पडिय गद्दे आरर भूमिय सेरुवेग आ **बालचन्द्र** देवर कय्यलु समस्त-माणिक्य नगरङ्गलु बिडिसिकोण्ड वलय शासनद क्रमवेन्ते-न्दडे **रा**चेयन हल्लिय **मल्लिकार्जुन**-देवर देव दानद गद्दे होर गागि आ-गद्देयि मूडलु नट्ट कल्लु । अल्लिं तेन्क हासरे गल्लु । अल्लि तेङ्क **गि**डिगनालद गुण्डुगलि मूडण किरु कट्टद गद्दे । नीरोत्तोलगाद चतुस्सीमे । आ-किरु कट्टद पडुवण कोडियलु हुट्टु गुण्डिनलि बरद मुकोडे हसुबे नेट्ट अल्लि तेङ्क हिरिय बेट्टद

तप्पल हासरे-गल्लु। श्राल्ल मूडय देवलङ्गेरेय तेङ्कण कोडिय गुण्डि-नल्लि बरद मुक्कोडे हसुबे नेट्टे श्रा केरे नीरोतिले सीमे। श्राकेरेय बडगण-कोडिय गुण्डि नल्लि बरद मुक्कोडे हसुबे नेट्टे इन्तीकेरेयु किरु कटे वोलगाद चतुस्सीमेय गद्दे॥

[इस लेख मे कुमुदचन्द्र श्रोर माघनन्दि को नमस्कार के पश्चात् होय्सल वंश की कीर्त्ति का उल्लेख है श्रोर फिर कहा गया है कि उक्त तिथि को इगलेश्वर, देशिय गण मूलसंघ के नेमिचन्द्र पण्डितदेव के शिष्य बालचन्द्रदेव श्रौर बेल्गोल के समस्त जौहरियो (माणिक्य नगरङ्गल) ने नगर जिनालय के श्रादिदेव की पूजन के हेतु कुछ भूमि का दान दिया। यह भूमि उन्होंने बालचन्द्रदेव से खरीद की थी। ये जौहरी होय्सलवंश के राजगुरु महामण्डलाचार्य माघनन्दि के शिष्य थे। लेख के प्रथम पद्य में शास्त्रसार नामक किसी शास्त्र के कर्ता का उल्लेख रहा है। यह पद्य घिस जाने से श्राचार्य का नाम नहीं पढ़ा गया]

१३० (३३५)

नगर जिनालय मे उत्तर की श्रोर

(शक सं० १११८)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासनं जिन शासनं॥ १॥
स्वस्ति श्रीजन्म-गेहं निभृत निरुपमौर्व्वानलोद्दामत्तेजं
विस्तारान्त कृतोर्व्वीतलममल यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं।
वस्तु-व्रातोद्भव स्थानकमतिशय-सत्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भो निधि निभमेसगुं होय्सलोर्व्वीश-वंशं
॥ २॥

अदरोल् कौस्तुभदोन्दनर्घ्यगुणम देवेभदुद्दाम-स-
त्वदगुर्व्व हिम रश्मियुज्वल कला-सम्पतिय पारिजा
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्त तालिद तानल्ते पु—
ट्टदनुद्वेजित वीर वैरि **विनयादित्या**वनी पालक ॥ ३ ॥

क ॥ **विनयादित्य** नृपालन
तनु भवनेरेयङ्ग-भूभुज तत्तनय ।
विनुत **विष्णु** नृपाल
जनपति तदपत्यनेसेदनी**नरसिंह** ॥४ ॥

तत्पुत्र ॥
गत लील **लाल**नालम्बित-बहल भयोग्र-ज्वर **गूर्ज्जर** स-
न्धृत शूल **गौल**नुच्चै -कर धृत-विलसत्पल्लव **पल्लव** प्रो-
ज्झित चेल **चोल**नाद कदन-वदनदोल् भेरिय पोय्से वीरा-
हित भूभृज्जाल कालानलनतुलबल **वीर-बल्लाल** देव
॥ ५ ॥

चिरकाल रिपु गलगसाध्यमेनिसिर्द्दुच्चङ्गिय मुत्ति दु
र्द्धर-तेजो निधि धूलिगोटेयने कोण्डाकाम-देवावनी
श्वरन सन्दोडेय चितीश्वरननाभण्डारम स्त्रीयर
तुरग-व्रातमुम समन्तु पिडिद **बल्लाल**-भूपालक ॥६॥

स्वस्ति समधिगत पञ्च महा शब्द-महा मण्डलेश्वर **द्वारवती**-पुरवराधीश्वर । **तुलुव**-बल जलधि बडवानल । दायाद दावानल । **पाण्ड्य** कुल कमल वेदण्ड । गण्ड भेरुण्ड । मण्डलिक - बेटेकार । **चोल** कटक-सूरेकार । सङ्ग्राम-भीम ।

कलि-काल-काम । सकल वन्दि-बृन्द सन्तर्प्पण समग्र-वितरण विनोद । **वासन्तिका** देवी लब्ध वर प्रसाद । **यादव** कुलाम्बर द्युमणि । मण्डलिक मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड **मल**-परोल्-गण्ड नामादिप्रशस्ति सहित श्रीमत्—**त्रिभुवनमल्ल-तलकाडु कोङ्गु नङ्गलि नोणम्बवादि-बनवसे हानुङ्गल् लोकिगुण्डि कुम्मट एरम्बरगेयोल**गाद समस्त दशद नानादुर्ग्गङ्गल लीला-मात्रदि साध्य माडिकाण्ड भुज-बल **वीर गङ्ग** प्रताप-चक्रवर्त्ति **होय्सल वीर बल्लाल**-देवर् समस्त-मही मण्डलम दुष्ट निग्रह शिष्ट प्रतिपालन पूर्व्वक सुखसङ्कथाविना-ददि राज्य गेय्युत्तिरे । तदीय करतल-कलित कराल-करवाल धारा-दलन-निस्सपत्नीकृत-चतुर्पयोधि परिखा-परीत-पृथुल पृथ्वा तलान्तर्व्वर्त्तियु श्रीमद् चित्र **कुक्कुटेश्वर**-जिनाधिनाथ पद-कुशे-शयालङ्कृतमु श्रीमत्कमठ-पार्श्व देवादि-नाना जिनवरागार-मण्डि-तमुमप्प श्रीमद् **बेल्गोल** तीर्त्थद श्रीमन्महा मण्डलाचार्य्यर न्तप्परेन्दड ॥

भय-लोभ द्वय-दूरन मदन-घोर ध्वान्त-तीव्रांशुव
नय-निक्षेप युत-प्रमाण-परि-निर्णीतार्त्थ-सन्दोहन ।
नयनानन्दन-शान्त-कान्त-तनुव सिद्धान्त-चक्रेशन
नयकीर्त्ति व्रति-राजन नेनेदोड पापोत्कर पिङ्गुगु ॥ ७ ॥

तच्छिश्यर् श्री-**दामनन्दि**-त्रैविद्य देवरु । श्री **भानु कीर्त्ति** सिद्धान्त देवरु । श्री **बालचन्द्र** देवरु । श्री-**प्रभाचन्द्र** देवरु । श्री **माघनन्दि** भट्टारक-देवरु । श्री मन्त्रवादि-**पद्म**-

नन्दि देवरु । श्री **नेमिचन्द्र** पण्डित देवरु । श्री-**मूल-सङ्घद** **देशिय-गणद पुस्तक**-गच्छद श्री **कोण्ड** कुन्दान्वय-भूषणरप्प श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर् श्रीम**न्नयकीर्त्ति** सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल गुड्ड ॥

क्षितितलदोल् राजिसिद
धृत-सत्य नेगल्द **नागदेवा**मात्य ।
प्रतिपालित-जिन-चैत्य-
कृत-कृत्य **बोम्मदेव**-सचिवापत्य ॥ ८ ॥

तद्वनिते ॥

मुदर्दि पट्टण सामियेम्ब पेसर् तालिदद् लक्ष्मी-रामा-
स्पदनप्पि गुणि-**मल्लि**-सेट्टि विभुग लोकोत्तमाचार-स-
म्पदेगी-**माचेवे** सेट्टिकव्वेगमनूनोत्साहम तालिद पु-
ट्टिद **चन्दव्वे** रमाग्र गण्ये भुवन-प्रख्यातिय तालिददल् ॥९॥

तत्पुत्र ॥

परमानन्ददिनेन्तु नाकपतिग पौलोमिग पुट्टिदो
वर सौन्दर्य्य-जयन्तनन्ते तुहिन-क्षीरोद कल्लोल-भा-
सुर-कीर्त्तिप्रिय **नागदेव** विभुग **चन्दव्वेग** पुट्टिदो
स्थिरनी-पट्टण-सामि विश्व-विनुत श्री**मल्लि**देवाह्वय ॥१०॥
क्षितियोल् विश्रुत **बम्मदेव** विभुग **जोगव्वेग** प्रोद्भवत्-
सुतनी पट्टणसामिगार्जित यशश्री-**मल्लि** देवङ्गमू
र्जितेगी-**कामलदेवि**ग जनकनम्भोजास्येगुर्व्वीतल
स्तुतेगी-**चन्दले** नारिगीशनेसेद श्री**नागदेवो**त्तम॥ ११ ॥

कारिते **वीरबल्लाल** पत्तन-स्वामिनामुना ।

नागेन पार्श्वदेवाग्रे नृत्य-रङ्गाश्म कुट्टिमे ॥ १२ ॥

श्रीमन्**नयकीर्त्ति** सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलगे परोक्ष विनयार्त्थ-वागिमुडिजमुम निषिधियुम श्रीमत्कमठ पार्श्व-देवर बमदिय मुन्दण कलु-कट्टम नृत्य-रङ्गमुम माडिसिद तदनन्तर ॥

श्री **न**गर जिनालयम

श्री निलयमनमल गुण गणम्माडिसिद ।

श्री**नागदे**वसचिव

श्री-**नयकीर्त्ति** व्रतीश पद युग भक्त ॥ १३ ॥

तज्जिनालय-प्रतिपालकरप्प नगरङ्गल् ॥

धरेयोल् **खण्डलि मूलभद्र** विलसद् वशोद्भवर्स्सत्य शौ

चरतर्स्सिंह पराक्रमान्वितरनेकाम्भाधि वेला पुरा

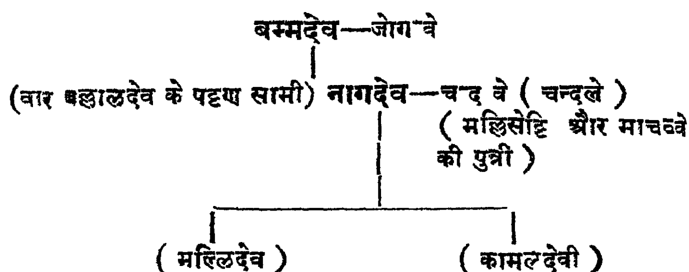
न्तर नाना व्यवहार जाल कुशलर् विख्यात-रत्न त्रया

भरणर् **बेल्गोल** तीर्त्थ वासि-नगरङ्गल् रुढिय तालिददर्

॥ १४ ॥

सकवर्ष ११९८ नेय राक्षससंवत्सरद जेष्ठ सु १ बृहवार दन्दु नगर जिनालयक्के यडवलगेरेय मोदलेरिय तोटमु यारु-सलगे गद्देयु उड्डुकर मनेय मुन्दण केरेय केलगण बेद्दले कोलग १० नगर जिनालयद बडगण **केति**-सेट्टिय केरि आ-तेङ्कण एरडु मने आ अङ्गडि सेडेयकि गाण एरडु मनेगे हण अय्दु ऊरिङ्गे मलबिय हण मूरु ॥

[इस लेख मे नयकीर्त्ति के शिष्य नागदव म त्री द्वारा नगर जिनालय तथा कमठपार्श्वदेव बस्ति के स मुख शिलाकुट्टम आर रङ्गशाला बनवाने व नगर जिनालय को कुछ भूमि का दान दिये जाने का उल्लेख ह। आदि म लेख न० १२४ के समान होय्सल व श का परिचय है। वीरबल्लाल देव के प्रताप का वणन कुछ अश छोडकर अक्षरश वही है। इसके पश्चात् नयकीर्त्तिदेव और उनके शिष्यों दामनन्दि भानुकीर्त्ति, बालच द्र प्रभाचन्द्र, माघनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिच द्र का उल्लेख है। नागदेव के व श का परिचय इस प्रकार है—



खडलि और मूलभद्र के व शज व्यापारियो का भी उल्लेख है। ये ही व्यापारी जिनालय के रक्षक थे।]

१३१ (३३६)

नगर जिनालय के भीतरी द्वार के उत्तर मे

(शक स० १२०१ तथा १२१०)

स्वस्ति श्रीमतु शक वर्ष १२०३ नेय प्रमाथि सवत्सरद मार्ग्गशिर सु (१०) बृ दन्दु श्रीबेलुगुल तीर्त्थद समस्त नखरङ्गलिगे नखर-जिनालयद पूजाकारिगलु श्रीडम्बट्टु बरसिद

सासनद क्रमवेन्तेन्दडे । नखर-जिनालयद आदि-दवर देव दानद गद्दे बेद्लु एल्लि उल्लदनु बेलदकालदलु देवर अष्टविधार्च्चनें अमृत-पडि-सहित श्रीकार्य्यवनु नकरङ्गलु नियामिसि कोट्ट पडियनु कुन्ददे नडसुवेवु आ देव-दानद गद्दे बेद्लनू आधिक्रय हालोते गुतगे एम्म बशवादियागि मक्कलु मक्कलु दप्पदे आरु माडिदड राजद्रोहि समयद्रोहिगलेन्दु वोडम्बट्टु बरसिद शासन इन्तप्पुदक्के अवर वोप्प श्री-गोम्मटनाथ ॥ श्री बेलुगुल तीर्थद नकर-जिनालयद आदिदेवर नित्याभिषेकक्के आ-हुलिगरेय सोवण्न अच्च भण्डार-वागि कोट्ट गद्याण अयिदु-हान्निङ्ग हालु ब १ ॥

सर्व्वधारि सवत्सरद द्वितीय भाद्रपद सु ५ ब्रि। श्री-बेलुगुल तीर्थद जिननाथ पुरद समस्त-माणिक्य नगरङ्गलु तम्मोलोडम्बट्टु वरसिद शासनद क्रमवेन्तन्दोडे । नगर-जिनालयद श्री आदिदेवर जीर्न्नोद्धारवुपकरण श्री कार्य्यक्केवू धारा-पूर्व्वक माडि आचन्द्रार्कतार बर मलुवन्तागि आ येरडु पट्टणद समस्त-नखरङ्गलू स्वदेशि परदेशियिन्द बन्दन्तह हवण गद्याण नूरक्के गद्याण वोन्दरोपादिय दवण आदिदेवरिगे मलुवन्तागि कोट्ट शासन यिदरोले विरहित-गुप्तवनारु माडिदडमवन सन्तान निस्सन्तान अव देव-द्रोहि राज-द्रोहि ममय द्रोहिगलेन्दु वोडम्बट्टु बरसिद समस्तनकरङ्गलोप्प श्री गोम्मट ॥

[यह लेख तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में उल्लेख है कि उक्त तिथि को नगर जिनालय के पुजारियों ने बेल्गोल के व्यापारियों

का यह लिखा पढ़ी कर दी कि जब तक म दिर की देव दान भूमि म धान्य पैदा होता है तब तक वे सदैव विधि अनुसार म दिर की पूजा करे गे ।

दूसरे भाग में उल्लेख है कि नगर जिनालय क आदि देव के नित्या भिषक के लिये हुलिगेरे के सोवण्ण ने पाँच गद्याण का दान दिया जिसके व्याज से प्रति दिन एक बल्ल' दुग्ध लिया जावे ।

तीसरे भाग म उक्त तिथि को बल्गोल के समस्त जौहरियो के एकत्रित होकर नगर जिनालय के जीर्णोद्धार तथा बर्तनों आदि के लिये रकम जोडन का उल्लेख है । उन्होंने सौ गद्याण की आमदनी पर एक गद्याण देने की प्रतिज्ञा की । जा कोई इसमें कपट करे वह निपुत्री तथा देव धर्म और राज का द्रोही होवे ।]

[**नोट**—लेख के प्रथम भाग मे शक स० १२०३ प्रमाथिसंवत्सर का उल्लेख है । पर गणनानुसार शक स० १२०३ वृष तथा शक स० १२०१ प्रमाथी सिद्ध होते है । लेख के तृतीय भाग म सर्वधारि स वत्सर का उल्लेख होने से वह शक सं० १२१० का सिद्ध होता है ।]

१३२ (३४१)

मगायि वस्ति के प्रवेश मार्ग के बायी ओर

(लगभग शक स० १२४७)

स्वस्ति श्री **मूलसङ्घ देशिय**-गण **पुस्तक** गच्छ **कोण्डकुन्दा**न्वयद श्रीमदभिनव **चारुकीर्त्ति**-पण्डिताचार्य्यर शिष्यलु सम्यक्त्वाद्यनेक-गुण गणाभरण भूषिते राय पात्र चूडामणि **बेलु**गुलद **मङ्गायि** माडिसिद **त्रिभुवनचूडामणि**येम्ब चैत्याल-यक्के मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[अभिनव चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य के शिष्य, बेल्गोल के म गायि के निर्माण कराये हुए 'त्रिभुवन चूड़ामणि' चैत्यालय का म गल हो ।]

१३३ (३४०)

उसी बस्ति के प्रवेश-मार्ग के दायी ओर

(लगभग शक स० १४२७)

श्रीमतु पण्डितदेवरुगल गुड्डुगलाद बेलुगुलद नाड-चिन्न गोण्डन मग नाग गोण्ड मुत्तगद होन्नेनहल्लिय कल गोण्डनो लगाद गौडगलु मङ्गायि माडिसिद बस्तिगे कोट्ट दोडनकट्टे गद्दे बेद्दलु यीधर्म्मक्के अलुपिदवरु वारणासियल्लु सहस्र-कपिलेय कोन्द पापक्के होगुवरु मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[पण्डितदेव के शिष्यों—नाग गौण्ड आदि गौडो ने म गायि बस्ति के लिये दोड्डुन कट्टे की कुछ भूमि दान की ।

१३४ (३४२)

मङ्गायि बस्ति की दक्षिण भित्ति पर

(सम्भवत शक स० १३३४)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासन जिन-शासन ॥ १ ॥
तारास्फारालकौघे सुर-कृत सुमनोवृष्टि पुष्पाशयालि-
स्तोमा क्रामन्ति इह जधरपटलीडम्भतो यस्य मूर्ध्नि

सोऽय श्री **गोम्मटेश**स्त्रिभुवन-सरसी रञ्जने राजहसो
भव्य व भानुर्व्वेलुगुल नगरी साधु जेजीयतीर ॥ २ ॥

नन्दन-सवत्सरद पुश्य शु ३ लू **गेरसोप्पेय हिरिय-अाय्यगल** शिष्यरु **गुम्मटण्णगलु गुम्मटनाथन** सन्निधि यल्लि बन्दु चिक बेट्टदल्लि चिक-बस्तिय कल्ल कटिसि जीर्न्नोद्धारि बडग-बागिल वस्ति मूरु **मङ्गायि** बस्ति वोन्दु ह्वागे अयिदु बस्ति जीर्णोद्धार वोन्दु तण्डक्के अहारदान ।

[गुम्मटेश की प्रशस्ति के पश्चात् लेख मे उल्लेख है कि उक्त तिथि को गेरसोप्पे के हिरिय अय्य के शिष्य गुम्मटण्ण ने यहाँ आकर चिक बस्ति के शिला कुट्टम का, उत्तर द्वार की तीन बस्तियो का तथा म गायि बस्ति का—कुल पाँच बस्तियो का—जीर्णोद्धार कराया ।]

[नोट—लेख में न दन स वत्सर का उलेख है । शक स० १३३४ नदन था ।]

१३५ (३४३)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवत शाक स० १३४१)

विकारि स वत्सरद श्रावण शु १ गेरसोप्पेय श्रीमति अव्वेगलु समस्तरु गोष्टिय कोट्ट ग ४ ॥

[उक्त तिथि को गेरसोप्पे की श्रीमती अ व्वे और समस्त गोष्ठी न चार गद्याण का दान दिया ।]

[नोट—लेख में विकारी संवत्सर का उल्लेख है । शक स० १३४१ विकारी था ।]

१३६ (३४४)

भण्डारि बस्ति मे पूर्व की ओर प्रथम स्तम्भ पर

(शक स० १२६०)

स्वस्ति समस्त प्रशस्ति सहित ॥

पाषण्ड सागर महा बडवामुखाग्नि
श्रीरङ्गराजचरणाम्बुज-मूल दास ।
श्री-**विष्णु** लोक-मणि मण्टपमार्गदायी
रामानुजो विजयते यति राज-राज ॥१॥

शक वर्ष १२६० नय **कीलक सवत्सरद भाद्रपद-शु** १० **बृ०** स्वस्ति श्रीमन्महा मण्डलेश्वर अरिराय विभाड भाषेगे तप्पुव रायर गण्ड श्री **वीरबुक्क रायनु** पृथ्वा-राज्यव माडुव कालदल्लि जैनरिगू भक्तरिगू सवाज वादल्लि आनेयगोन्दि **होस** पट्टण **पेनुगुण्डे कल्लेहद**-पट्टण वोल्त-गाद समस्त-नाड भव्य जनङ्गलु आ-**बुक्क रायङ्गे** भक्तरुकमाडुव अन्यायङ्गलनू बिन्नह माडलागि **कोविल् तिरुमल पे** माल-कोविल् **तिरु**नारायणपुरमुख्यवाद सकलाचार्य्यरू सकल समयि गलू सकलसात्विकरू मोष्टिकरु तिरुपणि तिरुविडितण्णीरवरु नालवत्तेन्टु-जनङ्गलु सावन्त बोवकलु तिरिकुल जाम्बुवकुल वोलगाद इदिनेण्टु नाड **श्रीवैष्णवर**कैय्यलु महारायनु **वैष्णव** दर्शनक्के-ऊ **जैन** दर्शनक्के-ऊ भेदविल्लवेन्दु **रायनु** वैष्ण-वर कैय्यलु जैनर कै विडिदु कोट्टु यी जैन-दर्शनक्के पूर्व्वमरियादे

यलु पञ्चमहावाद्यङ्गलू कलशवु सलुवुदु जैनदर्शनक्क भक्तर देसे यिन्द हानि-वृद्धियादरू वैष्णव-हानि-वृद्धियागि पालिसुवरु यी-मर्य्यादेयलु यल्ला राज्य दोलगुल्लन्तह बस्तिगलिग श्री-वैष्णवरु शासनव नट्टु पालिसुवरु चन्द्रार्क्क स्थायियागि वैष्णव समयौ जैन दर्शनव रक्षिसिकाण्डु बहेउ **वैष्णवरू जैनरू** वोन्दुभेदवागि काणलागदु श्रा **तिरुमलेय तात य्यङ्गलु** समस्त राज्यद भव्य जनङ्गल अनुमतदिन्द बेलुगुलद तिर्थदल्लि वैष्णव-अङ्गरक्षेगासुक समस्त राज्यदोलगुल्लन्तह जैनर बागिलुगट्टलेयागि मने मनेग **वर्षक्के १** हण कोट्टु आ-य-त्तिद होन्निङ्ग देवर अङ्ग-रक्षेगेयिप्पत्तालनूमन्तविट्टु मिक्क होन्निङ्ग जीर्ण्न जिनालयङ्गलिगे सोथेयनिकूदु यी मरियादेयलु चन्द्रार्क्करुल्लन्न तप्पलीयदे वर्ष वर्षक्के कोट्ट कीर्त्ति यनू पुण्य वनू उपार्ज्जिसिकोम्बुदु यी माडिद कट्टलयनु आवनोब्बनु मीरि दवनु राज द्रोहिसङ्घ सम्दायक्केद्रोहि तपस्वियागलि ग्रामि-णियागलि यी धर्म्मव केड्सिदरादडे **गङ्गेय** तडियल्लि कपि लेयनू ब्राह्मणनू कोन्द पापदल्लि होहरु ॥

श्लोक ॥ स्वदत्त परदत्त वा या हरति वसुन्धरा ।
षष्टि वर्ष सहस्राणि विष्टाया जायते क्रुमि ॥२॥

(पाछ्र से जोडा हुआ)

कल्लेहद हर्व्वि-सेट्टिय सुपुत्र **बुसुवि** सेट्टि **बुक्क राय**रिगे विन्नहमाडि **तिरुमलेय तातय्यङ्गल** विजय गैसि तरन्दु जीर्न्नोद्धार

व माडिसिदरु उभयसमयवू कूडि बुसुवि सेट्टियरिग सङ्घ-नाय्क पट्टव कट्टिदरु ॥ ,

[वीर बुक्कराय के राज्य काल म जेनियो श्रोर वैष्णवों मे झगड़ा हो गया। तब जैनियो मे स श्रानेयगोण्डि श्रादि नाडुश्रो ने बुक्कराय से प्रार्थना की। राजा ने जैनियो श्रौर वष्णवा के हाथ से हाथ मिला दिये श्रौर कहा कि जैन श्रौर वैष्णव दशनो मे कोई भेद नहीं है। जैन दशन को पूववत् ही पञ्च महा वाद्य श्रार कलश का अधिकार है। यदि जैन दशन को हानि या वृद्धि हुइ तो वष्णवो को इसे अपनी ही हानि या वृद्धि समझना चाहिये। श्रीवेष्णवा को इस विषय के शासन समस्त राज्य की बस्तियों में लगा देना चाहिये। जैन श्रोर वैष्णव एक है, वे कभी दो न समझे जाव ।

श्रवण वेल्गोल में वेष्णव श्रङ्ग रक्षको की नियुक्ति के लिये राज्य भर में जैनियो स प्रत्यक घर के द्वार पीछे प्रतिवर्ष जा एक हण' लिया जाता हे उसम से तिरुमल के तातय्य देव की रक्षा के लिये बीस रक्षक नियुक्त करे गे श्रौर शेष द्रव्य जैन मन्दिरा के जीर्णोद्धार व पुताई श्रादि में खर्च किया जायगा। यह नियम प्रति वर्ष जब तक सूर्य चन्द्र है तब तक रहेगा। जो कोई इसका उल्लघन करे वह राज्य का, संघ का श्रौर समुदाय का द्रोही ठहरेगा। यदि कोई तपस्वी व ग्रामाधिकारी इस धर्म में प्रतिघात करेगा तो वह गगातट पर एक कपिल गौ श्रौर ब्राह्मण की हत्या का भागी होगा।

(पीछे स जोडा हुश्रा)

कल्लेह के हविसेट्टि के पुत्र बुसुवि सट्टि न बुक्कराय का प्रार्थनापत्र देकर तिरुमले के तातय्य को बुलवाया श्रोर उक्त शासन का जीर्णोद्धार कराया। दोनो सङ्घों ने मिलकर बुसुवि सट्टि को सघनायक का पद प्रदान किया।]

१३७ (३४५)

उसी स्थान मे द्वितीय स्तम्भ पर

(लगभग शक स० १०८०)

श्रीमत्परम गम्भीर स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासन जिन शासन ॥ १ ॥

भद्रमस्तु जिन शासनाय ॥

स्वस्ति श्री जन्म गेह निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दाम-तज
विस्तारान्त कृतोर्व्वीतलममल यशश्चन्द्र सम्भूति धाम ।
वस्तु व्राताद्भव स्थानकमतिशय-सत्वावलम्ब गभीर
प्रस्तुत्य नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगु **होय्सलोर्वीश** वश
॥ २ ॥

अदरोलु कौस्तुभदोन्दनर्घ्य गुणम देवेभदुद्दाम-म-
त्वदगुर्व्वं हिम रश्मियुज्वल कला सम्पत्तिय पारिजा
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्त तालिद तानल्त पु
ट्टिदनुद्वेजित वीर वैरि **विनयादित्या**वनीपालक ॥ ३ ॥

क ॥ विनय बुधर रञ्जिसे
घन-तेज वैरि-व्रलमनललिसे नेगल्द ।
विनयादित्य नृपालक
ननुगत नामार्त्थनमल-कान्ति समर्त्थ ॥ ४ ॥
आ-**विनयादित्य**न वधु
भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे स-

द्भाव-गुण-भवनमखिलक-
ला विलसिते,केलयबरसियम्बल पेसरि ॥ ५ ॥
आ दम्पतिगे तनूभव-
नाद शचिग सुराधिपतिग मुन्नें-
न्ताद जयन्तनन्ते वि
षाद विदूरान्तरङ्ग नेरेयङ्ग नृप ॥ ६ ॥
आत चालुक्य भूपालन बलदभुजादण्डमुद्दण्ड-भूप-
व्रात प्रोत्तुङ्ग भूभृद् विदलन कुलिश वन्दि-सस्यौघ-मेघ ।
श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात
ख्यात-प्रोद्यद्यशश्श्री-धवलित-भुवन धीरनेकाङ्ग-नार ॥ ७ ॥
एरेयनन्नेगेनिसि नेगल्द-
द्दे रेयङ्ग-नृपालतिलकनङ्गनचेल्वि
ङ्ग रेवट्ट शील-गुणदि
नेरेदचलदेवियन्तु नान्तरुमालर ॥ ८ ॥
एने नेगल्दवरिर्व्वर्ग्ग
तनू भवर्न्नेगल्दरल्ते बल्लाल वि
ष्णु-नृपालकनुदयादि-
त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिल-वसुधा तलदाल् ॥ ९ ॥
वृत्त ॥ अवरोल् मध्यमनागियु भुवनदोल् पूर्व्वापराम्भोधिय-
ग्दुविन कूडे निमिच्चुवोन्दु निज-बाहा विक्रमक्रीडयु
द्भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम गुण व्रातैक धाम धरा
धव चूडामणि यादवाब्ज-दिनप श्री विष्णु भूपालक ॥ १० ॥

कन्द ॥ एलेगेसेव **कोयतूर्त्**
त्तलवन पुरमन्ते रायरायपुर व
ल्वल बलेद **विष्णु**तेजो
ज्वलनदे बेन्दुवु बलिष्ठ रिपु दुर्ग्गङ्गल् ॥ ११ ॥

वृत्त ॥ इनित दुग्गम वैरि दुर्ग्गचयम कोण्ड निजाक्षेपदि-
न्दिनिबर्भूपरनाजियोल्तविसिद तन्नत्र सद्भावदि-
न्दिनिबर्ग्गानतर्ग्गित्तनुद्ध पदम कारुण्यदिन्देन्दु ता-
ननित लोकदे पेल्वोडञ्ज भवनु विश्रान्तनप्पबल । १२ ॥

कन्द ॥ **लक्ष्मी देवि** खगाधिप
लक्ष्मङ्गे-सेदिर्द विष्णुगेन्तन्ते बल
लक्ष्मा देवि-लसन्मृग
लक्ष्माननॆ विष्णुगग्र सतियेने नेगल्दल् ॥ १३ ॥

अवर्ग्गे मनोजनन्ते सुदती जन चित्तमनील्कालल्के सा-
ल्ववयव शोभेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना-
निवहमनेच्चु सुख्वनणमानदे वीररनेच्चु युद्धदोल्
तविसुवोनादनात्म भवनप्रतिम **नरसिंह**-भूभुज ॥ १४ ॥

पडे माते बन्दु कण्डङ्गमृत जलधि ता गर्व्वदिं गण्ड वात
नुडिवातङ्गन्ननेम्बै प्रलय-समय-दोल् मेरेय मीरिबर्प्पो-
कडलन्न कालनन्न मुलिद कुलिकनन्न युगान्ताग्नियन्न
सिडिलन्न सिंहदन्न पुर हर-नुरिगण्णन्ननी नारसिंह ॥१५॥

रिपु-सर्प्पदर्प्प दावानल-बहल सिखा जाल कालाम्बुवाह
रिपु भूपोद्यत्प्रदीप प्रकर-पटुतर-स्फार झञ्झा-समीर ।

धरय गल्दिद्द् तिण्पुल्लनदुधियननेम्ब गुण्पुल्लन म
न्द्दरम माक्कोल्व पेम्पुल्लननमर महीजातम मिक्क लोक।-
त्तरमप्पाप्पुल्लनपुल्लननेसेव जिनेन्द्राङ्घ्रि पङ्केज पूजो
त्करदाल् तल्पोय्दलम्पुल्लननुकरिसल् मर्त्यनावोंसमर्थे १६
सुमनस्सन्तति-सेवित गुरु-वचो-निर्दिष्ट नीति क्रम
समदाराति-बल-प्रभेदन कर श्री जैन पूजा समा
ज-महोत्साह पर पुरन्दरन पम्प तालिद भण्डारि-हू-
ल्लमदण्डाधिपनिद्दप महियोलुद्यद्वैभव भ्राजित ॥ २० ॥
सतत प्राणि-वध विनोदमनृतालाप वच प्रौढि स
न्ततमन्यार्त्थमनीस्दु कोल्वुदे वल तज पर स्त्रीयरोल् ।
रति सौभाग्यमनून काड्चर्मतियाय्तल्लग्र्गमाप्पोंल्लप
ब्बंतरव प्रकरक्के शील भट रोल्गाहुल्लन **हुल्लन** ॥ २१ ॥
स्थिर जिन-शासनोद्धरणरादियालारेन **राचमल्ल**-भू-
वर-वर-मन्त्रि **रायने** बलिक्क बुध-स्तुतनप्प **विष्णु** भू
वर वर-मन्त्रिगङ्गणने मत्ते बलिक्क **नृसिंह**-देव-भू-
वर वर मन्त्रि **हुल्लने** पेरङ्गिनितुल्लड पेललागद ॥ २२ ॥
जिन गदितागमार्त्थ विदरस्त समस्त बहिर् प्रपञ्चर-
त्यनुपम शुद्ध भाव निरतर्गत मोहरेनिप्प **कुक्कुटा**
सन मलधारि देवरे जगद्गुरुगल् गुरुगल् निज व्रत
केनेगुण-गौरवक्के तोणेयारो चमूपति **हुल्ल** राजना ॥ २३
जिन गहोद्धरणङ्गलि जिन महा पुजा समाजङ्गलि-
जिन योगि व्रज दानदि जिन पद स्तात्र-क्रिया निष्ठेयि

जिन सत्पुण्य पुराण सश्रवणदि सन्तोषम तालिद् भ-

व्यनुत निश्चलुमिन्त पालुगतन श्री हुल्ल दण्डाधिप ॥२४॥

कन्द ॥ निप्पटमे जाण्नमादुद

नुप्पट्टोरन्तन महा जिनेन्द्रालयम ।

निप्पासतु माडिद कर

मोप्पिर हुल्ल मनस्वि बङ्कापुरदाल् ॥ २५ ।

मत्तमल्लिय ॥

वृत ॥ कलितनमु विदत्वमुमनुल्लननादियाल्वार्व्वनुर्व्वियाल्

कलिविटनम्मनातन जिनालयम नर जीर्ण्नमादुद ।

कलि सल दानदाल् परम सौख्य रमारतियाल् विट त्रिनि-

श्चलवे निसिद् हुल्लनदनत्तिसिद रजताद्रि तुङ्गम ॥ २६ ॥

प्रियदिन्द हुल्ल-सेनापति कोपण महा तीर्त्थदोल् धात्रियु वा-

र्द्धियुमुल्लन्न चतुर्व्विंशति जिन मुनि सङ्घक्के निश्चिन्तमाग-

चय दान सलन पाङ्गि बहु कनक मना क्षेत्र-जर्ग्गेत्तु सद्वृ-

त्तियनिन्तीलाकमेल्लम्पोगले विडिसिद पुण्य पुञ्जैकधाम ॥

॥ २७ ॥

आकल्लङ्करेयादि-तीर्त्थमदुमुन्न गङ्गरि निर्म्मित

लोक प्रस्तुतमाय्तु काल वशदि नामावशेष वलि-

का कल्प-स्थिरमाग माडिसिदनी-भास्वज्जिनागारम

श्री-कान्त तलदिन्दमेय्दे कलस श्री हुल्ल-दण्डाधिप ॥ २८ ॥

कन्द ॥ पञ्च महा-वसतिगल

पञ्च सुकल्याण-वाञ्छेयि हुल्ल-चमू-

प चतुर माडिसिद
काञ्चन नग धैर्य्यनेसेव **केल्लङ्गेरेयोल्** । २६ ॥

कन्द ॥ **हुल्ल** चमूपन गुण-गण-
मुल्लनितुमनारो नेरेये पोगलल्ल् नेरेवर्
बल्लदाललेदुदधिय जल-
मुल्लनितुमनारा पवणिमल् नेरेवन्नर् ॥ ३० ॥
सश्रित सद्गुण सकल भव्य-नुत जिन भासितार्थ नि
स्सशय बुद्धि-**हुल्ल** पृतना पति कैरव कुन्द हस-शु
भ्राशु-यश जगन्नुतदोला वर **बेल्गुल** तीर्त्थदोल् चतु-
र्व्विं शति तीर्त्थकृन्निलयम नेरे माडिसिद दलिन्तिद ॥ ३१ ॥

कन्द ॥ **गोम्मटपुर** भूषणमिदु
गोम्मटमाय्तेने समस्त परिकर सहित ।
सम्मददिं **हुल्ल** चमू
प माडिसिद जिनोत्तमालयमनिद ॥ ३२ ॥

वृत्त ॥ परिसूत्र नृत्य-गेह प्रविपुल विलसत्पत्त देशस्थ शैल
स्थिर-जैनावास युग्म विविध सुविध पत्रोल्लसद्-भाव रुपा-
ऽकर-राजद्वार हर्म्य बेरसतुल-चतुर्व्विंश तीर्त्थेशगेह
परिपूर्ण्ण पुण्य-पुञ्ज-प्रतिममेसेदुदीयन्ददिं **हुल्ल**निन्द ॥३३॥

स्वस्ति श्री **मूल-सङ्घद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्ड-कुन्दान्वय**-भूषणरप्प श्री-**गुणचन्द्र**सिद्धान्त-देवर शिष्यरप्प श्री-**नयकीर्त्ति**-सिद्धान्त-देवरेन्तप्परेन्देडे ॥

वृत्त ॥ भय मोह द्वय-दूरन मदन घोर-ध्वान्त-तीव्रांशुव
नय निक्षेप युत प्रमाण परिनिर्णीतार्त्थ सन्दोहन ।
नयनानन्दन शान्त-कान्त-तनुव सिद्धान्त चक्रेशन
नयकीर्त्ति अतिराजन ननेदोड पापोत्कर पिङ्गु ॥३४॥
कृत दिग्जैत्रविधि बरुत्ते **नरसिंह** क्षोणिप कण्डु स-
न्मतियि **गोम्मट-पार्श्वनाथजिनर** मत्तोचतुर्व्विंशति
प्रतिमागेहमनिन्तिवर्क्के विनत प्रोत्साहदि बिट्टन-
प्रतिमल्ल **सवणेरनूरनभय** कल्पान्तर सल्विन ॥ ३५ ॥
अदर्के **नयकीर्त्ति** सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगल महा-मण्डलाचार्य्य
रनाचार्य्यम्माडि ॥
वृत्त ॥ तवदौचित्यदे **नारसिंह**-नृपनि ता पेत्तुद सद्गुणा-
र्ण्णवनी जैन-गृहक्के माडिदनचण्ड **हुल्ल** दण्डाधिप ।
भुवन प्रस्तुतनोप्पुतिर्प्प **स**वणेरम्बूरनम्भोधियु
रवियु चन्द्रनुमुर्व्वरावलयमु निल्वन्नेग सल्विन ॥ ३६ ॥
ग्राम सीमेयेन्तेन्दडे मूडण-देसेयोल् **स**वणेर नेकनेडेय
सीमे करडियरे अल्लि तेङ्क हिरियोब्बेयि पोगलु **बिम्बि** सेट्टिय
केरेय कोडिय कील्-बयलु अल्लि तेङ्क **बरहाल** केरेयच्चुगट्टु मेरे
याग हिरियोब्बेय बसुरिय तेङ्कण केम्बरय हुणिसे तेङ्कण देसे
योलु **बिलत्तिय सवणेर** एडेय एरेय दिण्णेय हुणिसेय कोल-हिरि
याल अल्लि हडुवलु हिरियोब्बेय सेल्ल-मोरडिय हडुवण **बल्लेय**
केरेय तेङ्कण-कोडिय **बलरिय** बन अल्लिन्दत्त **तरिहडिय** **कलिय**
मनकट्टद ताय्वल्ल जन्नवुरद हिरियकेरेय ताय्वल्ल सीमे ॥ हडुवण

देसेयोल् जन्नवुरक्क सवणेरिङ्ग सागरमर्य्यादे जन्नवूर सवणेर केरयेरिय नडुवण हिरिय हुणिसे सीमे बडगणदेसेयोल् कक्किन कोडु अदर मूडण बीरज्जन केरे आ-केरेयालग सवणेर बेडुगन हल्लिय नडुवे बसुरिय दोणे अल्लि मूडलालज्जन कुम्मरि अल्लि-मूड चिल्लदर सीमे ॥

ई स्थलदिन्दाद द्रव्यमनिल्लियाचार्य्यरी स्थानद बसदिगल खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्क देवता पूजेग रङ्गभोगक्क बसदिग बेस केय्व प्रजेगं ऋषि समुदायदाहार दानक्क सलिसुवुदु ॥

इदनाव निज कालदोल् सु विधियि पालिप्प लोकात्तम
विदित निर्म्मल पुण्य कीर्त्तियुगम ता ताल्दुगु मत्तमि-
न्तिदनाव किडिपान्दु कट्ट बगेय तन्दातनाल्दु गभीर
दुरन्ता ॥ ३७ ॥

[म लेख म हायसल व शा नारसिंह नरश क म त्री हुल्लराज द्वारा गुणचन्द्र सिद्धान्तदव के शिष्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेव को सवणेरु ग्राम दान करन का उल्लख है। प्रारम्भ मे होयसल व श का वही वर्णन है जा लख न० १२४ म पाया जाता है। हुल्ल वाजिव शी यक्षराज और लाकाम्बिके क पुत्र थे। वे बडे ही जिनभक्त थे। 'यदि पूछा जाय कि जैन धम क सच्च पोपक कौन हुए ता इसका उत्तर यही है कि प्रारम्भ में राचमल्ल नरेश के मन्त्री राय (चामुण्डराय) हुए, उनके पश्चात् विष्णु नरेश के मन्त्री गङ्गण (गङ्गराज) हुए और अब नरसिंहदेव के म त्री हुल्ल है। हुल्ल म त्री के गुरु कुक्कुटासन मलधारिदेव थे। मन्त्री जी को जैनमन्दिरों का निर्माण व जीर्णोद्धार करान, जैन पुराण सुनने तथा जैन साधुओं को आहारादि दान दन की बड़ी रुचि थी। उन्होंने बकापुर क भारी और प्राचीन दो मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया,

कोपण म नित्यदान के लिये 'वृत्तियो' का प्रबन्ध किया गङ्गनरेशो द्वारा स्थापित प्राचीन केल्लङ्गेरे' म एक विशाल जिन मन्दिर व अन्य पाँच जिन मन्दिर निर्माण कराये व बेल्गुल मे परकोटा रङ्गशाला व दो आश्रमों सहित चतुर्वि शति तीर्थं कर मन्दिर निर्माण कराया। सवणरु ग्राम का दान नारसि ह देव के विजययात्रा से लोटने पर इस मन्दिर की रक्षा के हेतु दिया गया था।]

१३७ (३४६)

उसी पाषाण की दायी बाजू पर

(लगभग शक स० १०८७)

श्रीमत्सुराश्व देव
भू—महित मन्त्रि **हुल्ल** राजङ्ग त
ङ्गामिनि **पद्मावति**ग
चेमायुर्व्विभव वृद्धिय माल्कभव ॥ १ ॥

कमनीयानन हेम-तामरसदिं नेत्रासिताम्भोजदि-
न्दमलाङ्ग द्युति कान्तियि कुच रथाङ्ग द्वन्द्वदि श्रा निवा-
समेनल्कु **पद्मल-देवि** राजिसुतमिर्प्पल्लु **हुल्ल** राजान्तर-
ङ्ग मराल रमियिप्प पद्मिनियवोल्लु नित्यप्रसादास्पद ॥ २ ॥

चल भाव नयनक्के कार्श्यमुदरक्कत्यन्तराग पदो-
ष्ठ-लसत्पाणि तलक्के कर्कशते वक्षोजक्के काष्ण्र्यं कच-
कलमरव गतिगल्लदिल्ल हृदयक्केन्दन्दु **पद्मावती**-
ललना-रत्नद रूप शील-गुणम पोल्वन्नरार्क्कान्तेयर ॥ ३ ॥

उरगेन्द्र-क्षार-नीराकर-रजत गिरिश्री-सित-च्छत्र-गङ्गा-
हर-हासैरावतभ स्फटिक-वृषभ शुभ्राभ्र-नीहार हारा-
मर-राज श्वेत-पङ्कं रुह हलधर-वाकूछङ्कहसेन्दु-कुन्दो-
त्कर-चञ्चत्कीर्त्ति कान्त बुध-जन विनुत **भानुकीर्त्ति**-
व्रतीन्द्र ॥ ४ ॥

श्री **नयकीर्त्ति** मुनीश्वर
सूनु श्री **भानुकीर्त्ति**-यति-पतिगित्त ।
भूनुतनप्पा**हुल्लप**-
सेनापति धारयेरदु **सवणेरु** ॥ ५ ॥

[इस लेख में हुल्लराज मन्त्री की धमपत्नी पद्मावती (पद्मलदेवी) की प्रशसा के पश्चात् उल्लेख है कि हुल्लराज न नयकीत्ति मुनि के शिष्य (सूनु) भानुकीत्ति को धारापूर्वक सवणेरु ग्राम का दान दिया ।]

१३७ (३४७)

उसी पाषाण की बायी बाजू पर

(शक स० १२००)

स्वस्ति श्री जयाभ्युदयश्च शक वरुष १२०० नेय **बहु-धान्य-सवत्सरद चैत्र सु** १ सु भण्डारियय्यन बसदिय श्री **देवरवल्लभ**-देवरिगे नित्याभिषेकक्के अत्तय भण्डारवागि श्रीमतु महा-मण्डलाचारियरु **उदयचन्द्र** देवर शिष्यरु **मुनि-चन्द्र** देवरु गर ग ५ क हालु मान २ श्रीमतु **चन्द्रप्रभ**-देवर

शिष्यरु **पदुमणन्दि**-देवरु काट्ट प ६ ह ½ श्रीमन्महामण्ड-लाचारियरु **नेमिचन्द्र** देवर तम्म **सातण्णनवर** मग **पदु-मण्ननवरु** काट्ट ग १ प २ **मुनिचन्द्र** देवर अलिय **आदि-यण्न** ग १ प २½ **बम्मि** सेट्टियर तम्म **पारिस देव** ग १ प २½ **जन्नवुरद** सनवाव **माद्य्य** ग १ प ७ ¹ आतन तम्म **पारिस** देवय्य **सिंगण्न** प ६½ सेनबोव **पदुमण्नन** मग **चिक्कण्न** ग प १ **भारतियक्कन नेम्मवेयक** प १ अग्गप्पगे -

श्रीमन्महा मण्लाचारियरु राजगुरुगलुमप्प श्रा **मूल**-मङ्ग-द समुदायङ्गल् **दुर्म्मुखि स वत्सरद** आषाढ सु ५ **आ** ॥ श्रीगाम्मट देवर् श्री कमठ पारिश्व देवरु भण्डार्य्येयन बसदिय श्री**देवरवल्लभ**-देवरु मुख्यवाद बसदिगल देव दानद गद्दे बेद्दलु सहित खाण अभ्यागति कटक शेसे बसदि मनत्ततयिवु मुन्तागि येनुवनु कोल्लिवेन्दु बिट्ट श्री-**बेलुगुल** तीर्त्थद समस्त-माणिक्य नगरङ्गलु **कब्बाहु**-नाथ अरुवणद गौडु-प्रजेगलु मुन्तागि श्री**देवरवल्लभ** देवर **हाडुवरहल्लिगे** **सम्भुदेव** अन्यायवागि मलत्रयवागि कोम्ब गद्याण अय्हलु **आदेवरवल्लभ** देवर रङ्ग भोगक्के सलुवुदु आहल्लिय अष्ट-भोग तेज-साम्य किरुकुल येना दोड **आदेवरवल्लभ**-देवर रङ्ग-भोगक्के सलु ॥

[उक्त तिथि को भण्डारियय्य बस्ती के देवर वल्लभदेव के नित्या भिषेक के लिए उदयचन्द्रदेव के शिष्य मुनिचन्द्रदेव आदि ने उक्त चन्दे की रकम एकत्रित की ।]

---

१३८ (३४९)

भण्डारिबस्ति मे पश्चिम की ओर

(शक स० १०८१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥
भद्र भूयाज्जिनेन्द्राणा शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्त्थ ध्वान्त सङ्घात प्रभेद घन भानवे ॥ २ ॥
स्वस्तिहोय्सलवशाय यदुमूलाय यद्भव ।
क्षत्र मौक्तिकसन्तानर् पृथ्वीनायक मण्डन ॥ ३ ॥
श्रीधर्म्माभ्युदयाब्जषण्डतरणिस्सम्यक्तचूडामणि-
र्म्मीतिश्रीसरणिर्प्रतापधरणिर्द्दानार्त्थि-चिन्तामणि ।
वशे यादवनाम्नि मौक्तिक मणिर्ज्जातो जगन्मण्डन
क्षीराब्धाविव कौस्तुभोऽत्र विनयादित्यावनीपालक ॥४॥
अपि च ॥ आ कान्ता-कमनीयकेलिकमलोल्लासात्सुनित्योदया-
द्दर्प्पान्ध-क्षितिपान्धकार हरणाद् भूयर् प्रतापान्वयात् ।
दिक्चक्राक्रमणाद्विशत्कुवलय प्रध्व सनाद्भूतले
ख्यातोऽन्वर्त्थनिजाख्ययैष विनयादित्यावनीपालक ॥५॥
धात्रा त्रिलोकोदर सारभूतैरशैर्म्मुदा स्वस्य विनिर्म्मितेव ।
तस्य प्रिया केलियनामदेवी मनोज राज्य प्रकृतिर्ब्बभूव ॥६॥
तयोरभूद्भूनुतभूरिकीर्त्ति र्पराक्रमाक्रान्तदिगन्तभूमि ।
तनूभव क्षत्रकुलप्रदीप प्रतापतुङ्गोन्वेरेयङ्गभूप ॥ ७ ॥

वितरण-लता वसन्तप्रमदारतिवाद्धि तारकाकान्त ।
माचात्समरकृतान्तो जयति चिरं भूप मकुट मणिरेरेयङ्ग ॥
॥ ८ ॥

अपि च ॥ शरदमृत द्युति कान्तिर्म्मनसिजमूर्त्ति
र्न्निरविकुरुकपिकेतु ।
कलि काल जलधि सेतु
र्ज्जयति चिरं चत्र मौलि मणिरेरेयङ्ग ॥ ६ ॥

अपि च ॥ जयलक्ष्मीकृतसङ्ग कृत रिपु भङ्ग प्रणूत गुण तुङ्ग ।
भूरि-प्रताप रङ्गा जयति चिरं नृप किरीट मणिरेरेयङ्ग ॥१०॥

अपि च ॥ लक्ष्मीप्रेमनिधिर्व्विदग्ध जनता चातुर्य्यचर्चा विधि
र्व्वीरश्री नलिनी विकास मिहिरो गाम्भार्य्य रत्नाकर ।
कीर्त्ति श्री लतिका वसन्त समयस्सौन्दर्य्यलक्ष्मामय-
स्सश्रीमानेरेयङ्ग तुङ्गनृपति कै कैर्न्न सवर्ण्यंत ॥ ११ ॥

अपि च ॥ करशाक्रोदरेरेयङ्गमण्डलपतेर्द्दोर्व्विक्रमक्रोडन
स्तोतु मालव-मण्डलेश्वरपुरी धारामधाचान् चणात् ।
दो कण्डूल कराल चोलकटक द्राक् कान्दिशीक व्यधान्
निर्द्धामाकृतचक्रगोट्टमकरोद् भङ्ग कलिङ्गस्य च ॥ १२ ॥

कान्ता तस्य लतान्तवाणललना लावण्यपुण्यादयै
सौभाग्यस्य च विश्वविस्मयकृतपात्रीधरित्री-भृत ।
पुत्रीवद्विलसत्कलासु सकलास्वम्भोजयोनेर्व्वधू-
रासीदेचल नामपुण्यवनिता राज्ञी यशश्रीसखी ॥ १३ ॥

अपि च ॥ कुन्तल कदली कान्ता पृथु-कुच कुम्भा मदालसा भाति
सदा ।
स्मर समरसज्जविजयमतङ्गोद्भवचारु-मूर्त्तिरेचलदेवी ॥
॥ १४ ॥

अपि च ॥ शचीव शक्र जनकात्मजेव राम गिरीन्द्रस्य सुतेव शम्भु ।
पद्मेव विष्णु मदयत्यजस्र सानङ्गलक्ष्मीररेयङ्ग भूप ॥१५॥
कौसल्यया दशरथो भुवि रामचन्द्र
श्रीदेवकीवनितया वसुदेवभूप ।
कृष्ण शचीप्रमदयेव जयन्तमिन्द्रो
विष्णु तया स नृपतिर्ज्जनयाबभूव ॥१६॥
उदयति विष्णौ तस्मिन्ननेशदरिचक्र कुलमिलाधिपचन्द्रे ।
अधिकतर श्रियमभजत्कुवलय - कुलमश्वदमलधर्म्माम्भोधि ॥
॥ १७ ॥

अपि च ॥ निर्द्दलितकोयतूरो भस्मीकृतकोङ्ग रायरायपुर ।
घट्टित घट्ट-कवाट कम्पितकाञ्चीपुरस्सविष्णुनृपाल ॥१८॥
अपि च ॥ अतुल-निज-बल पदाहति-धूलीकृततद्विराटनरपतिदुर्ग्ग ।
वनवासितवनवासो विष्णुनृपस्सरलितोरु वल्लूर ॥१९॥
अपि च ॥ निज-सेना-पद धूलीकर्द्दमित मलप्रहारिणीवारि ।
कलपाल शोणिताम्बु-निशातीकृत-निजकरासिरवनिप
विष्णु ॥२०॥
अपि च ॥ नरसिंह वर्म्म भूभुज-सहस्रभुज भूजपरशुरामोऽपि ।
चित्र विष्णुनृपालश्शतकृत्वोऽप्याजिनिहित-शत्रु क्षत्र ॥२१॥

प्रदियम पृथुशौर्य्यार्य्यमराहुश्चेङ्गिरि-गिरीन्द्र इति पवि-
दण्ड
तलवनपुरलक्ष्मीं पुनरहरज्जयमिव रिपोस्स विष्णु नृप
॥२२॥

अपि च ॥ चक्रिप्रेषित मालवेश्वरजगद्देवादिसैन्यार्ण्णव
घूर्ण्णन्त सहसापिवत्करतलेनाहत्य मृत्यु-प्रभु ।
प्राक् पश्चादसिनाग्रहीदिह महा तत्कृष्णवेण्यावधि
श्रीविष्णुर्भुजदण्डचूर्णितनितान्तोतुङ्गतुङ्गाचल ॥ २३ ॥

अपि च ॥ इरुङ्गोल चोणी पति मृगमृगारातिरतुल
कदम्ब-चोणीश-चितिरुह कुलच्छेद-परशु ।
निज व्यापारैक प्रकटितलसच्छौर्य्यमहिमा
स विष्णु पृथ्वीशो न भवति वचोगोचरगुण ॥२४॥

साक्षाल्लक्ष्मी र्व्विपदपगमे विश्वलोकस्य नाम्ना
लक्ष्मीदवी विशदयशसा दिग्धदिक्चक्रभित्ति ।
दृप्यद्वैरि-चितिप-दितिजव्रात-विध्व स-विष्णो
विष्णोस्तस्य प्रणय-वसुधासीत्सुधानिर्म्मिताङ्गी ॥ २५ ॥

ब्रह्माण्ड-भाण्ड-भरितामलकीर्त्ति-लक्ष्मी
कान्तस्तयोरजनि सूनुरजातशत्रु ।
पृथ्वीश-पाण्डु पृथयोरिव पुष्पचापो
दैत्य-द्विषत् कमलयारिवनारसिह ॥ २६ ॥

अपि च ॥ गर्व्वं बर्ब्बर मुञ्च काञ्चन-चय चोलाशु राशीकुरु
क्षेम भिक्षय चेर चीवरमुखो दूरेण विज्ञापय ।

स्व **गौडे**ति **नृ**सिंह भूरि नृपतेर्म्मध्ये सदस्सर्व्वदा
दुर्व्वारस्सरति ध्वनि परिजनानिर्घात-निर्घोष जित् ॥२७॥

अपि च ॥ शौर्य्यं नैष हरे परत्र तरणेरन्यत्र तेजस्विता
दानित्व करिण परत्र रथिनामन्यत्र कीर्तिं रदात् ।
राज्य चन्द्रमसर्परत्र विषमाल्लत्व च पुष्पायुधा—
दन्यत्रान्य जने मनाक् च सहत श्री**नारसिंहो** नृप ॥२८॥

अपि च ॥ स भुज बल-वीर गङ्ग प्रताप **हो**य्सलापर-नामा ।
पालयति चतुस्समय मर्य्यादामम्बुनिधिरिवाति प्रीत्या ॥२९॥

चागल देवी-रमणो **यादव** कुल-कमल विमल-मार्त्तण्ड श्री ॥
छित्वा दृप्त विरोधि-व श गहन दिग्जैत्र-यात्रा विधा
वारूद्योदय-भूधर रविरिवाद्रि दीप वर्त्ति श्रिया ।
नत्वा दक्षिण कुक्कुटेश्वर-जिन श्री पाद युग्म निधिं
राज्यस्याभ्युदयाय कल्पितमिद स्वस्यात्मभण्डारिणा ॥ ३० ॥

सर्व्वाधिकारिणा कार्य्य विधौ योगन्धरायणा-
दपि दक्षेण नीतिज्ञगुरुणा च गुरोरपि ॥ ३१ ॥

लोकाम्बिकातनूजेन जक्कि राजस्य सूनुना ।
व्याथसा लोक रक्षैक लक्ष्मणामरयारपि ॥ ३२ ॥

मलधारि स्वामि-पद प्रथित मुदा **वा**जि-व श गगनांशुमता ।
हिम-रुचिना गङ्ग मही निखिल-जिनागार-दान तोयधि-विभवै ॥ ३३ ॥

दूरी-कृत कलि-स्यूत नृ-कलङ्केन भूयसा ।
चरित्र पयसा कीर्ति धवलीकृत-दिशालिना ॥ ३४ ॥
त्रिशक्ति-शक्ति निर्भिन्न मदवद्वैरि-वैरिणा ।
हुल्लपेन जगन्नूत मन्त्रि माणिक्य-मालिना ॥ ३५ ॥
चतुर्विंशति जिनन्द्र-श्री निलय मलयाचल ।
सद्धर्म्म चन्दनाद्भूतौ दृष्ट्वा निर्म्मापित तत ॥ ३६ ॥
द्वितीय यस्य सम्यक्त्व-चूडामणि गुणाख्यया ।
भव्य चूडामणिन्नाम तस्मै प्रीत्या ददात्तत ॥ ३७ ॥
दानार्थं भव्य चूडामणि जिन नमतौ राशिना सन्मुनीनां
भोगार्थं चानुजीर्ण्णोद्धरणमिह जिनेन्द्राष्टविध्यर्च्चनार्थं ।
श्री पार्श्व स्वामिना च त्रिजगदधिपत कुक्कुटेशस्य पत्यु
पुण्यश्री कन्यकाया विरहन विधय मुद्रिकामर्प्पयन्ता ॥३८॥

एकाशीत्युत्तर सहस्र शक वर्षेषु गतेषु प्रमादि संवत्सरस्य पुष्य मास शुद्ध शुक्रवारचतुर्द्दश्यामुत्तरायणसंक्रान्तौ श्री मूल सघदेशियगणपुस्तकगच्छसम्बन्धिन विधाय ॥

नरसिंह हिमाद्रितदुधित-कलश-हृद-क-हुल्ल-कर - जिह्विकया
नत-धारा गङ्गाम्बुनि सचतुर्व्विंशतिजिनेश-पादसरसीमध्ये।
सवणेरुमदाद्भूपतिरगणित-बलि-कर्ण्ण-नृपति-शिवि-खचर-
पति
प्रगुणित कुबरविभवस्त्रिगुणाकृत मिहविक्रमो **नरसिंह** ।३९।

अत पर ग्राम सीमाभिधास्यते ।। तत्र पूर्व्वस्यां दिशि सवणेर-बेक्कन यडेय सीमे करडियरे अल्लि तङ्क हिरियोब्बेयिं पोगलु बिम्बिसेट्टियकेरेय कोडिय किल्वयलु ।। अल्लि तङ्क बरहालकेरेय अच्चुगट्टु मेरेयागि हिरियोब्बेय बसुरिय तङ्कण कोम्बरेय हुणिसे ।। दक्षिणस्या दिशि बिलत्तिय सवणेर यडय एरेय दिणेय हुणिसेय कोल हिरियाल । अल्लि हड्डवलु हिरियोब्बेय सेल्ल मोगडिय हड्डवण बल्लेयकेरेय तेङ्कणकोडिय बलरिय बन ।। अल्लिन्दत्त तरिहलिय कलियमनकट्टद ताय्वल्ल जन्नवुरद हिरिय केरेय ताय्वल्ल सीमे ।। पश्चिमायां दिशि जन्नवुरक्क सवणेरिङ्ग सागरमरियादे जन्नवूर सवणेर केरेयेरिय नडुवण हिरियहुणिसे सीमे ।। उत्तरस्यां दिशि कक्किन कोड्डु अदर मूडण बीरव्वजन केरयाकेरेयोलगे सवणेर बेड्डगनहल्लिय नडुवे बसुरिय दोणे । अल्लि मूडलालव्वजन कुम्मरि अल्लि मूड चिल्लदरे सीमे ।।

सामान्योऽयं धर्म्म सेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भि
सर्व्वानेतान् भाविनपार्त्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते
रामचन्द्र ।। ४० ।।

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टि वर्ष सहस्राणि विष्टाया जायते कृमि ।। ४१ ।।
न विष विषमित्याहुर्द्देवस्व विषमुच्यते ।
विषमेकाकिन हन्ति देवस्व पुत्र पौत्रक ।। ४२ ।।
शरज्ज्योत्स्ना नच्मी वपुषि बहलश्चन्दनरसो
दिशाधीशश्रेणी स्फुरदुरुदुकूलैकवसन ।

त्रिलोकप्रासाद प्रकटित-सुधा-धाम विशद

यशो यस्य श्रीमान् स जयति चिर **हुल्लप** विभु ॥ ४३ ॥

अस्तु स्वस्ति चिराय **हुल्ल** भवत श्रीजैन-चूडामणे

भव्य-व्यूह-सरोज षण्ड तरणे गाम्भार्य्य वारान्निधे ।

भास्वद्विश्व कलाविध जिन-नुत-चोराब्धि वृद्धीन्दवे

स्वोद्यत्कीर्ति सिताम्बुजोदरलसद्वारासि राब्धिन्दवे ॥४४॥

श्री **गोम्मट** पुरद तिप्पेसुङ्कदल्लि श्रडकेय हेरिङ्ग २००

हसुम्बेगे श्रद्यवत्तु उप्पु हे गे बिसिग १ हसुम्बे गाफल ५

मेलसु हेरिङ्गवल्ल १ हसुम्बेग मान १ मरिपन्नायदल्लि एलेय

रेग हाग १ मेलेल्ले २०० गाणदेरे इनितुम तम्म सुङ्कदधि

कारदन्दु चतुर्व्विंशति-तीर्थंकरपू प्रधान सर्व्वा-

धिकारि हिरिय भण्डारि **हुल्लय्यङ्गलु** हेग्गडे **लक्कय्यङ्गलु**

हेग्गडे श्र हाय्सल **नारसि ह देवन**कय्य बेडि-

कोण्डु बिट्टर ॥ इप्पत्त नाल्वर मनदेर प ता

नुडिदुदे सद्गाणि तन्न पेल्दन्ददोलाण्र्नेडदाडद मार्ग्गमन्दढे

नडेदु

शशियिन्दम्बरमब्जदि तिलि गोल नत्रङ्गलि-दानन

पोसमार्वि बनमिन्द्रनि त्रिदिवमासे

कीर्ति-देव-मुनियि सिद्धान्त-चक्रेश-नि-

न्देसंगु श्रीजिन धर्म्ममेन्दड बलिक्केवण्णिप बण्णिप ॥४५॥

तौ लब्ध्वा चमू नायक ॥ श्री **हुल्ल**

स्सवणोहमेवमददादाच त श्रीनय

क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा स्तुति भू म्म

श्री श्री

भव्याम्भोरुह भास्करस्सुरसरिन्नीहाराखु

कृ ति पुरात्थ्यं रत्नाकर ।

सिद्धान्ताम्बुधि वर्द्धनामृतकर कन्दर्पशैलाशनि-

स्सोऽय विश्रुत **भानुकीर्त्ति** मुनि त भूतले ॥४६॥

[इस लेख मे भी होय्सलवशी नारसिंह देव के वश परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करन तथा हुल्ल द्वारा सव णेरु ग्राम का दान करन का उल्लेख है । इस लख म हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का व अमर का भी नाम आया है । नारसिंह दव न उक्त बस्ती का नाम भव्यचूडामणि रक्खा । हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूडामणि थी । लख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है । इसमे हुल्लय्य हेग्गडे, लोकय्य आदि द्वारा नारसिंह देव का प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ टेक्सा का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिए करान का उल्लेख है । अन्त म भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है ।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला मे

(शक स० १०४१)

श्रीमत्परम गम्भीर स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।

जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासन जिन शासन ॥ १ ॥

स्वस्ति श्री वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।

श्री **कोण्डकुन्दनामाभून्चतुरङ्गुलचारण** ॥ २ ॥

तस्यान्वयेऽजनि ख्यात विख्याते देशिके गणे ।
गुणी **देवेन्द्र** सिद्धान्त देवो देवेन्द्र वन्दित ॥ ३ ॥

अवर सन्तानदोल् ॥

वृत्त ॥ पर वादि क्षितिभृन्निशात कुलिश श्री-**मूल**-सङ्घाब्जषट्—
चरण **पुस्तक**-गच्छ **देशिग**-गण प्रख्यात योगीश्वरा—
भरण मन्मथ भञ्जन जगदोलाद रूयातनाद **दिवा-**
करणन्दि व्रतिप जिनागम सुधाम्भोराशि ताराधिप ॥ ४ ॥

अन्तेनलिन्तेनलक्करियेनेव्दे जगत्त्रय-वन्द्यरप्पपे
म्प तलेदिर्देरेम्बुदने बल्लेनदल्लदे सयम चरि
त्र तपमेम्बिवत्तलगमिन्तु **दिवाकरनन्दि देव**-सि-
द्धान्तिगग न्दडोन्दु रसनोत्तियोलानदनेन्तु बण्णिपे ॥ ५ ॥

तच्छिष्यरप्प ॥

नेरय तनुत्रमिक्किदवोलिर्द मलन्तिने मेय्यनोर्म्मेयु
तुरिसुवुदिल्ल निद्दे वर मग्गुलनिक्कुवुदिल्ल बागिल ।
किरु तेरयम्बुदिल्लुगुल्वुदिल्ल मलङ्कुवुदिल्ल**हीन्द्रनु**
नेरेवने बण्णिसल्गुण-गणावलिय **मलधारि** देवर ॥ ६ ॥

अवरशिष्यर् ॥

वृत्त ॥ कन्तुमदापहर्स्सकल जीव-दयापर जैन मार्ग्ग रा-
द्धान्त-पयोधिगलु विषय वैरिगलुद्धत कर्म्म भञ्जन-
र्स्सन्तत भव्य पद्म-दिनकृत्प्रभर **शुभचन्द्र देव** सि
द्धान्त मुनीन्द्रर पोगल्वुदम्बुधि वेष्टित-भूरि-भूतल ॥ ७ ॥

इन्तिवर गुरुगलप्प श्रीमद्दिवाकरणन्दि सिद्धान्त-देवरु ॥

वृत्त ॥ आ मुनि दीक्षेय कुडे मसम्र तपो-निधियागि दान-चि

न्तामणियागि सद्गुण गणाग्रणियागि दया दम क्षमा—

श्री मुख लक्ष्मियागि विनयार्णव चन्द्रिकेयागि सन्तत

श्रीमति गन्तियन्नेगल्दरुर्व्वियोलुर्व्वर कूर्त्त कीर्त्तिमल्लु ॥ ८ ॥

श्रीमति गन्तियर्ज्जित कषायिगलुग्रतपङ्गलिन्दमि

-तीमहियाल् पोगर्त्तेगे नेगर्त्तेगे नोन्तु समाधियि जगत

स्वामियनिप्प पेम्पन जिनेन्द्रन पाद पयोज युग्मम

प्रेमदे चित्तदोल् निलिसि देवनिवास-विभूतिगेय्ददल्लु ॥ ९ ॥

सक वर्षं १०४१ नेय विलम्बि सम्वत्सरद फाल्गुण-

शुद्ध पञ्चमी बुधवार दन्दु सन्न्यसन-विधियि श्रीमति

गन्तियम्मुडिपि देवलोकक्के सन्दर् ॥

अगणितमेने चारु तप

पगुणिने गुण गण-विभूषणालङ्कृतयि

न्तगणित निजगुरुग-निमि

धिगय **साङ्कब्बे** गन्तियम्माडिसिदर् ॥ १० ॥

करुण प्राणि गणङ्गलोल् चतुरनासम्पत्ति सिद्धान्तदोल्

परितोष गुण सेव्य भव्य-जनदोल् निर्म्मत्सरत्व मुनी-

श्वररोल् धीरते घोर वीर-तपदोल् कय्गण्मि पाण्मल् **दिवा-**

करणन्दि-व्रति पेम्पनेँ तलेदनो योगीन्द्र वृन्दङ्गलोल् ॥ ११ ॥

[यह लेख देशिय गण कुन्दकुन्दान्वय के दिवाकर नन्दि और उनकी शिष्या श्रीमती गन्ती का स्मारक है । दिवाकर नन्दि बड़े भारी योगी थे ।

ने देवेन्द्र सिद्धा त देव की शाखा म हुए थे। उनके दो शिष्य मलधारि देव और शुभच न्द्र देव सिद्धा त मुनीन्द्र थे। श्रीमती गन्ती ने उनसे दीक्षा लेकर उक्त तिथि को समाधिमरण किय यह स्मारक माडूब्बे गन्ती ने स्थापित कराया।]

१४० (३५२)

मठ के अधिकार मे एक ताम्र पत्र पर का लेख

(शक स० १५५६)

श्री स्वस्ति श्री शालिवाहन-सक वरुष १५५६ नेय भाव संवत्सरद आषाढ-शुद्ध १३ स्थिरवार ब्रह्मयोगदल्लु श्रीमन्महाराजाधिराजराजपरमेश्वर अरि राय मस्तक-शूल शरणागतवज्रपञ्जर पर-नारी सहोदर सत्य-त्याग पराक्रम-मुद्रा-मुद्रित भुवन-वल्लभ सुवर्ण-कलस स्थापनाचार्य्य षड्धर्म्म-चक्रेश्वरराद मैयिसूर-पट्टण पुरवराधीश्वरराद चामराजु वोडेरैयनवरु देवर बेलुगुलद गुम्मट-नाथ स्वामियवर अर्चन वृत्तिय स्वास्ति-यनु स्तानदवरु तम्म तम्म अनुपत्यढिन्दावर्त्तक गुरुस्तरिगे अडहुबोग्यवियागि कोट्टु अडहुगारर बाहुकाला अनुभविसि बरुत्ता यिरलागि चामराजवोडेयरय्यनवरु विचारिसि अडहु बोग्यावियं अनुभविसि बरुत्ता यिदन्त वर्त्तकगुरुस्तरनु करे यिसि। स्तानदवरिगे नीवु कोटन्थ सालवनु तीरिसि कोडिसिवु येन्दु हेललागि वर्त्तक-गुरुस्तरु आडिद मातु तावु स्तानदवरिग कोटन्थ सालवु तम्म तन्देतायिगलिगे पुण्यवागलियेन्दु धारदत्त

वागि धारेयनु येरदु कोट्टेवु यन्दुसमस्तरु आडलागि। स्तानदवरिगे वर्त्तक-गुरुस्तर कैयल्लु । गुम्मट-नाथ स्वामिय सन्निधियल्लि देवरु-गुरु-साचियागि धारेयनु यरिसि। आचन्द्रार्क-स्ताय-वागि देवतासवेयनु माडिकोण्डु सुकदल्लि यीहरु एन्दु बिडिसि कोट्ट धर्म्म-शासन ॥ मुन्दे बेलुगुलद स्तानदवरु स्वास्तियनु अवानानोब्बनु अडहु हिडिदन्तवरु अडव कोटन्तवरु धरुशन धर्मक्के होरगु स्थान-मान्यक्के कारुणविल्ल। यिष्टक्कु मीरि अडव-कोटन्तवरु अडव हिडिदन्तवरनु ई-राज्यक्के अधिपतियागिद्दन्थ धोरेगलु ई देवर धर्मवनु पूर्व मरेगे नडसलुल्लवरु ॥ ई-मेरेगे नडसलरियदे उपेच्चेय दोरेगलिगे वारणासियल्लि सहस्र कपि-लेयनु ब्राह्मणन्नु को‍द पापक्के होहरु येन्दु बरेसि कोट्ट धर्म्म शासन मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[कुछ विपत्ति के कारण देवर बेल्गुल के स्थानको ने गुम्मटनाथ स्वामी की दान सम्पत्ति महाजनो को रहन कर दी थी। महाजनो ने बहुत समय तक वह सम्पत्ति अपने कब्जे मे रखकर उसका उपभोग किया। मेसूर के धर्मिष्ठ नरेश चामराज वोडेरय्य ने इसकी जाँच पडताल कर रहनदारो को बुलाया और उनसे कहा कि हम तुम्हारा कर्ज अदा करेंगे, तुम मन्दिर की सम्पत्ति को मुक्त कर दो। इस पर रहनदारो ने कहा कि अपने पितरो के कल्याण के हेतु हम स्वय इस सम्पत्ति का दान करते है। तब नरेश ने वह दान करा दिया और आगे के लिये यह शासन निकाल दिया कि जो कोई स्थानक दानसम्पत्ति को रहन करेगा व जो महाजन ऐसी सम्पत्ति पर कर्ज देगा वे दोनो समाज से बहिष्कृत समझे जावेंगे। जिस राजा के समय में ऐसा कार्य हो उसे उसका न्याय करना चाहिये। जो कोई इस शासन का उल्लघन करेगा

वह बनारस में एक सहस्र कपिल गौओं और ब्राह्मणों की हत्या का भागी होगा।]

१४१

मठ में

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥१॥
नाना देश-नृपाल-मौलि-विलसन्माणिक्य रत्नप्रभा
भास्वत्पद्म सरोज युग्म-रुचिर श्रीकृष्णराज-प्रभु ।
श्रीकर्णाटक देश भासुरमहीशूरस्थसिंहासन
श्रीचाम क्षितिपाल-सूनुरवनौ जीयात्सहस्र समा ॥२॥
स्वस्ति श्री-वर्द्धमानाख्ये जिने मुक्ति गते सति ।
वह्नि रन्ध्राब्धिनेत्रैश्च वत्सरेषु मितेषु वै ॥३॥
विक्रमाङ्क समास्विन्दु गज सामज-हस्तिभि ।
सतीषु गणनीयासु गणितज्ञैर्बुधैस्तदा ॥४॥
शालिवाहन वर्षेषु नेत्र-बाण नगेन्दुभि ।
प्रमितेषु विकृत्यब्दे श्रावणे मासि मङ्गले ॥ ५ ॥
कृष्णपक्षे च पञ्चम्या तिथौ चन्द्रस्य वासरे ।
दोर्द्दण्ड-खण्डितारातिः स्व-कीर्ति-व्याप्त-दिक्तट ॥ ६ ॥
सश्रीमान् कृष्ण राजेन्द्रस्यायु श्री सुख-लब्धये ।
एतस्मिन्दक्षिणकाशी नगरे बेल्गुलाह्वय ॥ ७ ॥
विन्ध्याद्रौ भासमानस्य श्रीमतो गोम्मटेशिन ।
श्रीपाद पद्म पूजायै शेषाणा जिन-वेश्मना ॥ ८ ॥

सार्धं हेमाद्रि **पार्श्वेश** चारु श्री-चैत्य वेश्मना ।
द्वात्रिंशत्प्रमितानां श्री-सपर्य्योत्सव हेतवे ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रपञ्चकल्याण श्री रथोत्सव सम्पदे ।
श्री**चारुकीर्त्ति**-योगीन्द्र-मठ-रक्षण-कारणात् ॥१० ॥
आहाराभय भैषज्यशास्त्र दानादि सम्पदे ।
बेल्गुलाख्यमहाग्राम विन्ध्य चन्द्राद्रिभासुर ॥ ११ ॥
भूदेवी-मङ्गलादर्श कल्याण्याख्य सरोऽन्वित ।
जिनालयैस्तु ललितैर्म्मण्डित गोपुरान्वितै ॥ १२ ॥
स तटाक स-चाम्पेय **होस हल्लि**समाह्वय ।
ईशानदिक्स्थित ग्राम शाल्याद्युत्पत्तिभासुर ॥ १३ ॥
उत्तनहल्लीति विख्यात प्रतीच्यां ककुभि स्थित ।
ग्राम **कब्बालु**नामान ग्राम गोपाल-सकुल ॥ १४ ॥
पूर्व्वं **पूर्णार्य्य** सन्दत्त कुमारे नृपतौ सति ।
इति ग्रामान् चतुस्सख्यान् ददौ भक्त्या स्वय मुदा ॥१५ ॥
स्वस्ति श्री-**दिल्लि-हेमाद्रि सुधा-सगीत**-नामसु ।
तथा **श्वेतपुरक्षेमवेणु बेल्गुल** रूढिषु ॥ १६ ॥
सस्थानेषु लसत्सिद्ध-सिंह-पीठ-विभासिना ।
श्रीमतां **चारुकीर्त्ती**ना पण्डिताना सदा वशे ॥ १७ ॥
शासनीकृत्य तान् ग्रामानर्पयामास सादर ।
एष **श्रीकृष्ण**-भूपाल पालिताखिल-मण्डल ॥ १८ ॥

[यह मूल सनद का मठ के गुरु-द्वारा किया हुआ केवल संस्कृत भावानुवाद है । मूल शासन आगे न० (२४४) के लेख में दिया जाता है ।]

१४२ (३६२)

तावरेकेरे के उत्तर की ओर चट्टान पर

श्रीशकवरुष १५६५ नय
श्रीमच्चारुकीर्त्ति पण्डित यति सोभानुसंवत्सरे
मासे पुष्यचतुर्द्दशी तिथिवर कृष्णे सुपक्षे महान् ।
म'याह्ने वर मूलभ च करणे भार्गव्यवारे युवे
याग स्वर्ग पुर जगाम मतिमान् त्रैविद्य चक्रेश्वर ॥ श्री ॥

१४३ (३७७)

नगर से पूर्व्व की ओर बाणावर बसवय्य के खेत में एक शिला पर

(लगभग शक स १०४७)

स्वस्ति श्रीमत्तलकाडु गोण्ड-भुज-बल-वीरगङ्ग पोय्सल-देवरु हिरिय दण्डनायकर राज्य उत्तरोत्तरनागे श्री-गोम्मटेश्वर-देवरबलद दसेय हल्लव कण्डु चल्लदि चलदङ्क-राव हडे-जीय गवरे-सेट्टिय मग बेट्टि-सेट्टिय राववेय मग मच्चि-सेट्टि जक्कि सेट्टि-मक्कलु मड्डिसेट्टि मच्चिसेट्टि मदल्लाद यिवरु तले-होरे उड कित वत्सरद चैत्र द

[इस लेख में भुजबल वीरगङ्ग पोय्सलदेव के राज्य में चलदङ्कराव हडेजीव आदि के कुछ व्रत पालने का उल्लेख है । लेख का अन्तिम भाग घिस गया है इससे पूरा भाव स्पष्ट नहीं हो सका ।]

१४४ (३८४)

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व्व की ओर

(लगभग शक सं० १०५७)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासन जिन शासन ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिन शासनाय सम्पद्यता प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने-पटीयसे ॥२॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक **सत्याश्रय** कुल-तिलक **चालुक्या**भरण श्रीम**त्त्रिभुवनमल्ल**-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि प्रवर्द्धमान माचन्द्रार्क्कतारम्बर सल्लुत्तमिरे ॥

विनयादित्य-नृपाल
जन विनुत **पोय्सला**म्बरान्वयदिनप ।
मनु मार्ग्गनेनिसि नेगल्द
वन निधि परिवृत समस्त-धात्री तलदोल् ॥ ३ ॥

तत्पुत्र ॥

एरेयङ्ग-पोय्सल त
त्तरेयट्टि विरोधि-भूपर धुरदेडेयोल् ।

तरिसन्दु गेल्दु वीर-
करेवट्टागिर्दु सुखदे राज्य गेय्द ।। ४ ।।
आनेगल्द् एरग नृपालन
सूनु वृढ्द्वैरि मर्द्दन सकल-धरि-
त्री नाथनर्थि जनता
कानीन धरेगे नेगल्द बल्लालनृप ।। ५ ।।

आतन तम्म ।।

कोङ्गलु मलयेलुम
नङ्गय् गलवडिसि लोक्किगुण्डिवर दे-
शङ्गलनिल्कुलि-गोण्ड नृ
सिङ्ग श्री विष्णुवर्द्धनोर्व्वीपाल ।। ६ ।।

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर द्वारावती पुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बर-द्युमणि सम्यक्त-चूडामणि मलपरोलगण्ड राज-मार्त्तण्ड तलकाडु कोङ्गु-नङ्गलिकोय-तूर्-त्तेरेयूर्-उच्चङ्गि-तलेयूर्प्पोम्बुच्चमेन्दिवुमोदलागे पलवु-दुर्ग्गगल कोण्डु गङ्गवाडि तोम्भत्तरुसासिरम प्रतिपालिसि सुखदिं राज्य गेय्युत्तिरे तत्पाद-पद्मोपजीविगल ।।

वृत्त ।। जिनधर्म्माग्रणि नागवर्म्मन सुत श्रीमारमय्य जग-
द्विनतु तत्सुतन् एचि-राजनमल कौण्डिन्य सद्गोत्रना-
तनचित्तोत्सवे पोचिकव्वे अवर्गग्तुत्साहदिं पुट्टिदर्
बलम्म-चमूपनेम्बनघट श्रीगङ्गण्डाधिप ।। ७ ।।

अन्तु ॥

अदटाप्पुंन्नति सत्यमाण्मु चलमायु सौचमौदार्य्यम
ण्मु दिट तन्नले निन्दुवेम्ब गुणसर्वातङ्गल तालिदले।
कद वन्दि-प्रकरङ्गल तणिपि क केनार्त्थियन्दित्तु चा-
गद पेम्पिन्दमे गङ्ग राजनेसेद विश्वम्भराभागदोलू ॥ ८ ॥

तलकाड सेलदन्ते कोङ्गनोलकोण्डाब थ तूल्दिदे।
र्व्वलदि चेङ्गिरिय कलल्चि नरसिङ्गङ्गन्तकावासम।
निलय माडि निमिर्च्चिदं विष्णु नृपनान्यामार्ग्गदि गङ्गम
ण्डलम कोण्डनराति-यूथ-मृगसिङ्ग गङ्ग-दण्डाधिप ॥ ९ ॥

आतन-पिरियण्न ॥

व्यापित दिग्वलय-यश
श्री पतिवितरण-विनोद पति धनपति वि
द्यापतियेनिप्प बम्म-च-
मूपति जिनपतिपदाब्जभृङ्गननिन्ध ॥ १० ॥

आतन सति ॥

परम-श्री-जिननाथ
गुरुगलु श्री-भानुकीर्त्ति देवर् लक्ष्मी-
करननिप्प बम्म देवने
पुरुषनेनलु बागणब्बे पडेदले जसम ॥

कन्द ॥ आसतिगे पुण्यवतिगे वि-
लासद कणि सकल-भव्य सेव्य गर्भा-

त्रासदिनुदयिसिद ससि
भासुरतर-कीर्त्ति येच्चदण्डाधीश ॥१२॥

वृत्त ॥ माडिसिद जिनेन्द्रभवनङ्गलना कोपणादि तीर्त्थदल्लु
त्तढियिनेल्गो वेत्तसेन बेल्गोलदलु बहु चित्र-भित्तियि ।
नोडिदर मनङ्गोलिपुवेम्बिनमेच चमूपनर्त्थि कै-
गूडे धरित्रि कोण्डु कोनेदाडे जसम्नलिदाडे लीलेयि ॥१३॥

अन्तु दान-विनादनु जिनधर्म्माभ्युदय-प्रमोदनुमागि पलकाल सुखदलिर्दु बलिक सन्यासन-विधियि शरीरम बिट्टु सुर-लोक निवासियादनित्त ॥

वृत्त ॥ मलवत्युद्धत दश कण्टकरनाटन्दोत्तिवेङ्गाण्डुदो-
र्व्वलदि काङ्गरनात्ति वैरि नृपर बेन्नट्टि तूल्दोविसुत्तन्य म
ण्डलम तत्पतिगेय माडि जगदालु बीरके तानिन्तुगु
न्दलेयार् कलि गङ्गनप्रतनय श्री बोप्प दण्डाधिप ॥१४॥

स्वस्ति समधिगत पञ्च-महा शब्द महा-सामन्ताधिपति महाप्रचण्डदण्डनायक वैरिभय दायक द्रोह-घरट्ट सग्रामजत्तलट्ट । हयवत्सराज । कान्ता मनोज । गात्र-पवित्र । बुधजन-मित्र । श्रीमतु बोप्पदेव दण्डनायक । तम्मण्णनप्प एचि-राज दण्ड-नायकङ्गे परोक्ष-विनय निसिधिगेय निलिसि आतन माडिसिद बसदिगे । खण्ड-स्फुटितक्कवाहार-दानक । गङ्गसमुद्र दलु १० खण्डुग गद्देयु हूविन तोटमु बसदिय मुडण किरु नरेयु । बेक्क-करेय बेद्दलेयु तम्म गुरुगलप्प श्रीमूलसङ्घद देसिग गणद पुस्तक

गच्छद श्रीमतु **शुभचन्द्र**सिद्धान्त-देवर-शिष्यरप्प **माध (व)** **चन्द्र** देवर्गे धारा-पूर्वक माडिकोट्ट दत्ति ॥

श्लोक—स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्ष सहस्राणि विष्टाया जायते कृमि ॥१५॥

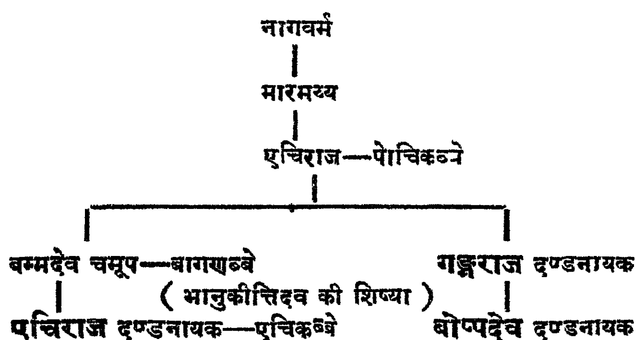
सीता—कान्तिगे रुक्मिणि—
गातत-येशनेविराजनङ्गङ्गनेये
मातोदोरे सरि सम तोणे
भूतलदोलग् **एचिकब्बे** क रूपिं ॥ १६ ॥

दानदोलभिमानदोली-
मानिनिगेणेयिल्ल सतिय
केनार्त्थियेन्दु कुडुवले
दानमन् **एचब्बे**यत्तिमब्बरसियवोल् ॥ १७ ॥

इन्तु परम राज दण्डनायनदण्डनायकिति श्रीमतु **शुभचन्द्र** सिद्धान्त देवर गुड्डि **एचिकब्बे**यु तम्मत्ते **बागणब्बे**यु शासनम निलिसि महापूजेय माडि महादान गेय्दु तेङ्गिन तोण्टव बिट्टर् मङ्गल श्री ॥

[इस लेख में होयसलवंशी नरेश विष्णुवर्द्धन और उनके दण्डनायक प्रसिद्ध गङ्गराज के वंशों का परिचय है। गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता बम्मदेव के पुत्र एच दण्डनायक ने कोपड, बेल्गुल आदि स्थानों में अनेक जिनमन्दिर निर्माण कराये और अन्त में संन्यासविधि से प्राणोत्सर्ग किया। गङ्गराज के पुत्र बोप्पदेव दण्डनायक ने अपने भ्राता एचिराज की निषद्या निर्माण कराई तथा उनकी निर्माण कराई हुई बस्तियों के

लिये गङ्ग समुद्र की कुछ भूमि का दान शुभचन्द्र सिद्धान्त देव के शिष्य माधवच द्र देव को किया। एचिराज की भार्या एचिकब्बे व उसकी श्वश्रू बागणब्बे ने यह लेख लिखाया। एचिकब्बे शुभच न्द्र देव की शिष्या थी। लेख में गङ्गराज की व शावली इस प्रकार पाई जाती है—



श्रवण बेल्गोल और आसपास के ग्रामो के अवशिष्ट लेख

अवशिष्ट शिलालेखो का निम्न प्रकार समय अनुमान किया जाता हे

शक सवत् का छठवी शताब्दि — १५२ १८९

शक सवत् का सातवी शताब्दि — १५३, १५७, १५८ १५९ १६० १६१, १६२ १६३ १९०, १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ २००, २०२, २०३ ०५ २०६, २०७ २०८ २१० २११ २१२ २१३ २१४, २१५ २१७, २१८ २१९ २२० २८४।

शक सवत् का आठवीं शताब्दि — १३७ १४९ १५४ १५५ १७५ १९१ २५३ २५६

शक सवत् की नवमी शताब्दि — १४८ १३८ १५६ १७१ १८०, १८५ १८६ २०१ २०९ २२१ २२७ २३५ २३६ २३७, २५५ २७० २८२ २८७ २९४ २९७, २९८ ३०७ ३१५ ४०९, ४१० ।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि

१४८ १५०, १५१ १६२, १६५ १६६, १६७,
१७२, १७३, १७४, १७७ १७८, १८३ २१६
२२३ २२८ २३९, २५४ २५७ २५८ २५९
२६०, २६१ २६२ २६३ २६४ २६९, २७२,
२७३ २७४, २७७ २७८ २७९ २८० २८१
२८५ २८६ २८८ २८९ २९० २९१ २९२,
२९३ २९५ २९६ २९९ ३०० ३०१ ३०२
३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०८ ३०९ ३१०
३११ ३१२ ३१३ ३१४ ४६९

शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि

१६८ १६९ १७० १७९, १८१, १८२ १८४,
१८८ १९९ २०४ २२२, २२४, २२५ २३०
२३१ २४०, २४१ २४२ २४६, २६५, २६८,
२६७, २७१, २७५ २७६, ३१६ ३५१ ३६०,
३६८ ३६९, ४४५ ४४६ ४४७, ४५४ ४५९
४६० ४७३, ४७८, ४८८, ४८९,

शक संवत् की बारहवीं शताब्दि

१७६ १८७, २२६ २३२ २३३ २३४, २३८
२४३, २४४ २४५, २४९, २५१ २८३ ३१७,
३१८ ३१९ ३२० ३२३ ३२४, ३२५, ३२६,
३२७, ३२८, ३६१ ४०७, ४०८ ४११, ४२६
४३१, ४६१ ४८६ ४७१ ४ ५ ४७६, ४८७
४९०

शक सवत् की तेरहवी शताब्दि	२४८, २५० २५२, २६८, ३३० ४०६, ४१३ ४१४ ४१८, ४२१ ४३०, ४३२ ४४२ ४४३, ४६२ ४६७ ४७७ ४८१ ४८५ ।
शक सवत् की चौदहवीं शताब्दि	२४७ ३५६ ३५७ ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ४२० ४२२ ४२३, ४२४ ४२५ ४२८, ४२९ ।
शक सवत् की पन्द्रहवा शताब्दि	३२१ ३२२ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ४७२, ४८३ ४८४ ।
शक सवत् की सोलहवीं शताब्दि	३३४ ३३५, ३७०, ३७५ ३७६ ३७७ ३८१ ३९८, ३९९, ४०२, ४०३ ४०४, ४१२, ४१६, ४१९ ४४८, ४४९ ४५०, ४५१ ४५२ ४५३ ४६३ ४६४, ४६५ ४८२,
शक सवत् की सत्तरहवीं शताब्दि	३४५, ३४८, ३६७ ३७८ ३७९ ३८० ३९१ ३९४, ३९५ ४२७, ४४४ ।
शक सवत् की अठारहवीं शताब्दि	४१७ ४३८ ४३९ ४४० ।

चन्द्रगिरि पर्वत के अवशिष्ट लेख

पार्श्वनाथवस्ति के दक्षिण की ओर चट्टान पर

१४५ (३) श्रीदेवर पद । वमनि

१४६ (४) मल्लिसेन भटारर गुड्ड चरेङ्गय्य तीर्त्थम बन्दिसिद।

१४७ (१०) श्रीधरन्

१४८ (४०८) नमोऽस्तु   १४९ (४०९) श्रीरत्त

१५० (४१०) सिन्दय्य   १५१ (४११) गिड्ड

कुन्द गङ्गर वण्ट   गद नपट

१५२ (११)

ज्ञिणान्पति ।

आचार्य्य   श्रीमान्शिष्यानेक परिग्रह ॥ १ ॥

विलासस्य निर्व्वाणा   जनि

चलाचलविशेषस्य गुणैर्द्देवी च कम्पिता ॥ २ ॥

दीपैर्द्धूपैश्च गन्धैश्च साकरोदधिम्   सान् ।

तत्र दिण्डिक राजोऽपि साक्षी सन्निहितोऽभवत् ॥ ३ ॥

परित्यज्य गण सर्व्व चातुर्व्वर्ण्ण विशेषित ।

आहारादिशरीर च कटवप्र गिराविह ॥ ४ ॥

आचार्य्योऽरिष्टनेमीश. शुक्लध्यानारू वारण

समारुह्य गतस्सिद्धि सिद्ध विद्याधरार्च्चित ॥ ५ ॥

१५३ (१३)

राग द्वेष तमोऽमाल व्यपगतशशुद्धात्म सयोद्धकर्
वेगूरा परम प्रभाव रिषियर् सर्व्वज्ञ भट्टारकर्
गादेव न डित न्तब्बु लग्रदोल्
श्री कीर्ण्णामल पुष्प र् स्वर्गाग्रमानेरिदार्

[रागद्वेष रूपी अन्धकार से निमुक्त शुद्धात्म योद्धा वेगूरा वासी परम प्रभावी ऋषि, सर्वज्ञ भट्टारक शिखर पर अमल पुष्पों से आच्छादित स्वर्ग के अग्रभाग का आरोहण किया।]

१५४ (१४) अरिष्टनेमिदेवर् कालब्बपु-तीर्थदोलु मुत्त कालम पडेदु मु

१५५ (१५) स्वस्ति श्री महावीर आल्दुर तम्मडिगल सन्यसन दिन् इ तम्मज्जया निसिधिगे।

१५६ (१) पादपमनून स-प्रव

१५७ (१८) स्वस्ति श्री भण्टारक यिट्टगपानदा तम्मडिगल शिष्यर् किन्तेरे यरा निसिधिगे।

१५८ (२१)

दक्षिण भागदामदुरे उय्म् इनिताव शापदे पावु मुदिदोन्
लक्षणवन्तर् एन्तु एनलु् डरग ग ई महा परूतदुल्
अक्षय कीर्त्ति तुन्तकद वार्द्धिय मेल् अदु नोन्तु भक्तियिम्

भक्ति-मणक रम्य सुरलोक सुकक्के भागि आ
पल्लवाचारि लिकि (खि) तम् ।

[दक्षिण भाग की मदुरा (नगरी) स आकर और शाप के कारण सर्प द्वारा सताये जाकर, परीक्षकों के विचार करते ही करते अक्षयकीर्त्ति भक्तिपूर्वक इस शिखर पर व्रता का पालन करते हुए दु ख सागर को पार कर, रमणीक सुरलोक सुख के भागी हुए ।

पल्लवाचारि लिखित]

१५९ (२२)

श्री । बाला मल् सिखि मले सर्प्पद महा दन्ताग्रदुल् सल्ववोल्
सालाम्बाल तपोग्रदिन्तु नडदो नूरेण्ड्-सवत्सर
केलौय् पिन् **कटवप्र** शैलमडर्द् एनम्मा **कलन्तूरन**
बाले पेर्गौरव समाधि नेरदोओ-तेय्दिदैर् स्सिद्धियान् ॥

[इस लेख मे काल तूर के किसी मुनि के कटवप्र पर एक सौ आठ वर्ष तक तप के पश्चात् समाधिमरण की सूचना है ।]

१६० (२३)

नम स्वस्ति ।

दे शास्त्रविदो यन गुणदवाख्य सूरिण
कल्वाप् पर्व्वत विख्यात नम तमाग
द्वादश तपो नुष्ठा
सम्यगाराधन कृत्वा स्वर्गालय.

[शास्त्रवदी गुणदेव सूरि को नमस्कार जिन्होंने कलवाप् पर्वत के शिखर पर द्वादश व्रत धारण कर और सम्यगाराधन का पालन कर स्वर्गलाभ किया]

१६१ (२७)

श्री । मासेनप्परम-प्रभाव रिषियर् कुल्वप्पिना बेट्टदुल्
श्री-सङ्गङ्गल पेल्द सिद्ध-समयन्तप्पादे नोन्तिम्बिनिन्
प्रासादान्तरमान्विचित्र कनक-प्रज्वल्यदिन्मिक्कुदान्
सासिर्व्वर्व्वर-पूजे-दन्दुये अवर् स्वर्गाग्रमानेरिदार् ॥

[इस लेख में परम ऋषि मासेन' के समाधि मरण की सूचना है ।]

१६२ (३६) श्री चिकुरापरविय गुरवर सिष्यर् सर्वणन्दि अवन् श्री बसुदवन् ।

१६३ (३७) श्रीमद् गङ्गान्व ।

१६४ (३८) वीतरासि । १६५ (३९) श्रीचावुण्डय्य ।

१६६ (४०) श्रीकविरल । १६७ (४१) श्रीमद् अङ्कबोय ।

१६८ (४२) श्रीविद्देपय्य । १६९ (४३) श्रीमद् अकलङ्क पण्डितर् ।

१७० (४४) श्री सुब ।

१७१ (४५) लम्बकुलान्तक बीरर बण्ड परिकरन किङ्ग ।

१७२ (४६) स्वस्ति श्री अण्णन कालेय पण्डिग कल्वप्प तीर्थव वन्दि

१७३ (४७) का य भिज्जंग रायन कादगलै नन्तिलि देवर बन्तिसिद ।

१७४ (४९) श्री दवणन्दि बलरर गुड्ड आसु बन्दु तीर्थव बन्दिसिद ।

१७५ (५०) अलस कुमारो महामुनि ।

१७६ (५१) श्री कण्ठय्य ।

१७७ (५२) श्रीवर्म्म चन्द्रगीतय्य देवर बन्दिसिद

१७८ (५३) श्री इसकय्य । १७९ (५४) श्री बिधिय्यम्म ।

१८० (५५) श्री नागणन्दि कित्तय्य देवर बन्दिसिदर् ।

१८१ (५६) स्वस्ति समधिगतपञ्चमहासब्द महासामन्त अग्रगण्य

१८२ (५७) मारमन्द्र केय कोट गलवेय बीर कोट ।

१८३ (५८) मालव अमावर् ।

शान्तीश्वर वस्ति से नैऋत की ओर

१८४ (६०) श्री परेकरमारुग बलर चट्ट सुल बण्टरसुल ।

१८५ (६२) स्वस्ति श्री तेयङ् गुडि न्दि भटारर सिष्य गर-भटारर सिष्य क र मि-भटार अवर सिष्यर् पट्टदेवा सि भटार कुमा ल सिष्य न मले मुनिर्व्वने मन्दि पमुमम्म निसिदिगे ।

पार्श्वनाथ बस्ति मे एक टूटे पाषाण पर

१८६ (६८) श्रीमत् बेट्टदवो न मगल वैजब्बे ल्बप्पु
तीर्थदोलवू नोन्तु सन्यमन ।

१८७ (७१)

चन्द्रगुप्त बस्ति मे पार्श्वनाथ स्वामी के सन्मुख एक छोटी मूर्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक स० ११००)

(अग्रभाग)

श्रीमद्राजतिरीटकोटिघटित पादपद्मद्वयो
देवो जैन रविन्द दिनकृद्वागूदेवतावल्लभ ।
बा त समन्वितो यतिपति त्र रत्नाकर
सोऽय निर्जित तो विजयता श्रीभानुकीर्त्तिर्भूवि॥१॥
श्री बालचन्द्र मुनिपादपयोज
जैनागमाम्बुनिधिवर्द्धन पु
दुग्धाम्बुराशि हर-हा

(पृष्ठभाग)

मलश्रित (बहु) कैवल्यमेम्बम ल्पमिनिते नर्गिरिय
विश्वम रिव महिमेयि वर्द्धमा जिन-पतिगे वर्द्धमान मुनी
सुर नदिय तार हा र सुर दन्तिय रजतगिरिय चन्द्रन

बेलिप पिरिदु वर द्धंमानर परमतपोध रकीर्ति मुरु जगदोलु ॥

च्छिष्यरु ॥

तीत्थीधीश्वर-व

[इस लेख मे भानुकीत्ति बालच द्रमुनि और वर्द्धमान मुनि का उल्लेख है। अधूरा होने के कारण लेख का प्रयोजन ज्ञात नही हो सका।]

[पृष्ठभाग का प्रथम पद्य पम्प रामायण आश्वास १ पद्य १५ से मिलता है।]

१८८ (७२)

चन्द्रगुप्त बस्ति मे पार्श्वनाथ जिनालय के क्षेत्रपाल के पादपीठ पर

(लगभग शक स० १०६७)

जनिष्ट रित्र रखिला माला शिलीमुख वि
राजित पा ॥ १ ॥

तच्छिष्या गुणा त यतिश्चारित्र चक्रेश्वर
तर्क व्या दि-शास्त्र निपु साहित्य-विद्या नि
मिथ्या वादि मदान्ध सिन्धुर घटा सङ्‍ रवो
भव्याम्भोज (यहाँ पाषाण टूट गया है) ॥२॥

(उसी पीठ के बाय पृष्ठ पर)

ज्जिन **शुभकीर्त्ति देव**-विदुषा विद्वेषि भाषा-विष
ज्ज्वाला जाङुलिकेन जिह्मित-मतिर्व्वादी वराकस्त्वय ॥३॥

घन दर्प्पोन्नद्ध **बौद्ध** क्षितिधर पवियी बन्दनी बन्दनी ब
न्दने सन् **नैय्यायिको**द्यत्तिमिर तरणियी बन्दनी बन्दनी ब-
न्दने सन् **मीमासको**द्यत्करि-करिरिपु यीव न्दनी बन्दनी ब-
न्दन पो पो वादि पोगेन्दुलिवुदु **शुभकीर्त्तौ**द्ध-कीर्त्ति-
प्रघोष ॥ ४ ॥

वितथोक्तियल्तज पशुपति शार्ङ्गियेनिप्प मूवरु शुभकीर्त्ति-
व्रति-सन्निधियोलु नामोचित-चरितरे तोडर्द्दडितर वादिग-
ललवे ॥ ५ ॥

सिङ्गद सरम केल्द मतङ्गजदन्तलुकलल्लदे सभेयालु
पोङ्गि **शुभकीर्त्ति**-मुनिपनोलेङ्गल नुडियल्के वादिगलो-
ण्टेल्देये ।

पो खुदु वादि वृथायास विबुधोपहासमनुमानोप-
न्यास निर्न्नी वास सन्दपुदे वादि वज्राङ्कुशनोल् ॥६॥

सत्सधर्म्मिगल् ॥

[यह लेख टूटा हुआ है पर इसके सब पद्य अन्य शिलालेखो से पूरे किये जा सकते हैं। इसके छहो पद्य शिलालेख नं० ५० (१४०) के पद्य ६ ७,३८ ३६,४० और ४२ के समान है।]

१८६ (७५)

कत्तले वस्ति के सन्मुख चट्टान पर ।

(लगभग शक सं० ५७२)

ममास्तूपान्व स कले गद्गुरु ।
ख्यातो **वृषभनन्दी**ति तपो-ज्ञानाब्धि पारग ॥ १ ॥
अन्तेवासी च तस्यासीदुपवास परो गुरु ।
विद्या सलिल निर्धूत शेमुषीको जितेन्द्रिय ॥ २ ॥
स त तपो तपसैर्य्यागि प्रभावोऽस्य तु
वन्द्योऽनाहित कामनो निरुपम ख्याता स ना ।
दृष्टा ज्ञान विलोचनेन महता स्वायुष्यमेव पुन
पृ गृह गुरुरसौ यो स्थित वश ॥ ३ ॥
कटवप्र-शैल शिखरे सन्यस्य शास्त्र क्रमात् ।
ध्यान दा मग्नि मुखे प्रक्षिप्य कर्म्मेन्धन ।
दिव्य-सुख प्रशस्तक धिया सम्प्राप्य सर्व्वेश्वर-
ज्ञान न्तमिद किमत्र तपसा सर्व्व सुख प्राप्यते ॥ ४ ॥

१९० (७७)

(लगभग शक सं० ६२२)

सिद्धम् । श्री ।
गति चेष्टा विरह शुभाङ्गदे घनम्मारिट्टमान्विट्टुवल्
यतिय पेल्द विधानदिन्दु तोरदे **कल्बप्पिना** शैलदुल्

प्रथितात्थॆप्पदॆ नान्त निश्चित यशा स्त्रायु प्रमा यक्
स्थिति देहा कमलोपमङ्ग सुभमुम् स्वर्ल्लोकदि निश्चितम् ॥

[इस लेख म किसी के समाधिमरण की सूचना है ।]

१६१ (७८) सहदेव माणि ।

१६२ (७६)

(लगभग शक स० ६७२)

सुन्दरपेम्पदुग्रतपदोगिद वार्द्धदनिन्द्यमेन्दु पिन्
बन्दनुरागविन्दु बलगा ण्डु महोत्सवदेरि शैलमान् ।
सुन्दरि सौचदार्य्यदेरदे दु विमानमोडिप्पि चित्तदिम्
इन्द्र समानमप्प सुख ण्डदे चणदेय्दिद स्वर्ग्गवा ॥

[सौचदार्य (? शुद्धमुनि) ने आकर हर्ष से पव त की व-दना की और अ-त म यहा ही शरीर त्याग किया ।]

१६३ (८०)

(लगभग शक स० ६२२)

महादेवन्मुनिपुङ्गवन्नदर्प्पि कलु पर्द्दप
महातवन्मरणमप्पे तनगा कमु कण्ड
महागिरि म गलसलिसि सत्या नविन्ता-
महातवदोन्तु मलेमेल्वलवदु दिव पोक्क

[महादेव मुनिपुङ्गव ने मृत्युकाल निकट आया जान पर्वत पर तपश्चरण किया और स्वग गति प्राप्त की ।]

१९४ (८१)

(लगभग शक सं० ६२२)

बोध्यातिरेच्य कैवल्य बोध प्राप्तिं महौजसे ।
ईशानाय नमो यागि-निष्ठायार् **परमेष्ठिने** ॥१॥
रे **कित्तूर** सङ्घस्य गगनस्य महस्पति ।
परिपू चारि ध वाण
ल्यया

१९५ (८२) बलदेवाचार्य्यर पाउग्गमण ।

१९६ (८३) स्वस्ति श्री पद्मनन्दिमुनिप अतुल
दनिमा कृतदेवा अभव देप मा
ल्लव

१९७ (८५) श्री**पुष्पणन्दि**निसिधिगे ।

१९८ (८६) क न तम्म गे ।

१९७ (८७) श्री बाट।

२०० (८९) कनादो ण-वशा कल्नप्पिन्दुग्ग

२०१ (९०) श्री बम्म । २०२ (९१) दुल्लग पेल्दय्यनपाल

२०३ (९२) स्वस्ति **कोलात्तूर** सङ्घदि **विशोकभटारर**
निसिधिगे ।

२०४ (९४) श्रीमद् **गौड** देवर पाद ।

२०५ (९५) ब साधु-म र धीरव्रत-सयता मन्
इन्द्रनन्दि आचार्य्य मे म्मे आमेद न्तूरिदेर्प्प प्रव-

लान्तरि भाव्यमन्वप्पिन् ण्डे दि मोहमगल्द्
इ-वल्-विषयङ्गलनात्म-वश-क्रमविदु कट स्थिता-
राधिता विभु श्वररि नन रेन्द्र-राज्य-
विभूति सास्वतमेय्दिददान् ।

[सयमी इन्द्रनन्दि आचाय न मोह विषयादि को जीतकर कट (वप्र) पर्वत पर समाधि मरण किया ।]

२०६ (६६) स्वस्ति श्री कोलत्तूर सङ्घदा देव खन्ति-
यब्बिसि

२०७ (६७) नमिलूरा सिरिसङ्घद् आजिगणदा राज्ञी-
मती-गन्तियार्

अमलम् नल्तद शीलदि गुणदिना-मिकोत्तमर्म्मीलेदोर् ।
नमगिन्दालितदु एन्दु एरि गिरियान्सन्यासन योगदोल्
नमो चिन्तय्दुसे मन्त्रमण्मरि ग स्वर्गालय एरिदार् ॥

[नमिलूर संघ, आजिगण की साध्वी राज्ञीमती गन्ति ने पर्वत पर संन्यास धारण कर स्वर्ग गति प्राप्त की ।]

२०८ (६६) श्री स्वस्ति
तनगो मृत्यु वरवानरिदे पेर्वाण वशदोन्
कालनिगेकसुदे प्पिन राज्य वीवतिन् ।
धा क मोदसु तो मता कच्चि नि
धानम सुर ग गतियुल् नेले-कोण्डन् ।

[इस लेख में पेर्वाण व श के किसी व्यक्ति के समाधि मरण का उल्लेख है]

२०९ (१००) परवतिमल ।

२१० (१०१) मल-मेल् अच महा बाल

२११ (१०२) जन्नल् नविलूर् अनेकगुणदा आ-
सङ्घ दु
मेनल्तिलक श्रा राचार्य्यर ।
भिमानमय्दे तोरदेन्दा राग सौख्यागति
इदान्दु पञ्चपददे दोष निरास

[नविलूर संघ के किसी आचार्य ने सन्यास धारण कर प्राणोत्सर्ग किया ।]

२१२ (१०३) स्वस्ति श्रीमत् नविलूर् सङ्घद पुष्पसेना-
चारि य निसिधिगे ।

२१३ (१०४) श्री देवाचार्य्य निसिधिगे ।

२१४ (१०७) श्रा

वन्दनुरागदिनेरदु ग्रन्थगल क्रमदरिशैल
वन्दनु मार्ग्गदिन तिमिरा विधिय नविलूर स
चेन्ददे बुद्धिय हारमनि तियु य मावि अब्बेगल
लिध्पि नल् सुरर सौख्यमनिम्मोडगोण्डराट्टमुम् ।

[नविलूर सघ क मावि अब्बे ने समाधि मरण किया ।]

२१५ (१०९) श्रा

मेघनन्दि मुनि तान् नमिलूर्व्वर सङ्घदा

तीर्थदि सिद्धियान्

द्

२१६ (११०) श्रीकण्ठय्य ।

२१७ (१११) श्री

स ना नेगर्तेयगु सेदेणे वडेसि दल्

मुगिव नोन्तुम्मेवोल तपम

नि पौत्र नन्दिमुनिप

माय्य न यु लमालो तल इदरुल् नोन्तु

सिद्धिस्थनाद्दम् ।

[नन्दिमुनि ने यहाँ व्रतपाल सिद्धि प्राप्त की]

२१८ (११२) श्री नविलूर् सङ्घदा गुणमति अव्वेगला निसिधिगे ।

२१९ (१२५) अनेक शील गुणदोप्पिदोरिन्तु लेकिक सुदुम्

नेनेगेन्दोरु मुनियिन्दल् तपच्चले नोन्तु ताम्

तमगे मृत्युवरवानरिद श्री पुत्तिय

[अनेक शील गुण सम्पन्न पूत्तिय ने मृत्यु का आगमन जान]

२२० (११६) ई-पूज्या लमान्सरेति

वरदोरेल् नूर्व्वर लच्यमी

२१

श्रीपुरान्वय गन्धवर्म्मनमित-श्रीसङ्घदा पुण्यदी

सन्पौरा निदे रिवलघ री शिला तल

मान्नेरदुप इ

[इस लेख में श्रीसघ पूरान्वय के पूज्य गन्धवर्मा द्वारा इस शिला पर कुछ किये जाने का उल्लेख रहा है ।]

कत्तले बस्ति के पीछे चट्टान पर

२२१ (४१२) चन्द्रय ।

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे के दक्षिण की शिला पर

२२२ (११९) श्रीमत् लक्खण देवर पाद ।

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे के दोनो बाजू

२२३ (१२२) श्री चामुण्डराज माडिसिद

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे से बायी ओर शिला पर

२२४ (१२३) (नागरी अक्षरो मे) सान्तणन्दि देवर पाद

२२५ (१२४) ” श्रीमतुचन्द्रकीर्त्ति देवर पाद ।

तेरिन बस्ति के बायी ओर एक स्तम्भ पर

२२६ (१२५) स्वस्ति

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनं ॥

तेरिन बस्ति के नवरङ्ग मे एक टूटे पाषाण पर

२२७ (१३६) त, ति कल्बप्पिनल्लि । मलद कुमारणन्दिभटारर सिषित्तियर् सायिव्वे कन्तियर वप्पिदिगल् ।

(एक बाजू मे) विल स सर्व्व

तेरिन बस्ति के सम्मुख

२२८ (४२६) स्वरेद बद्र नरगोद कोल

२२९ (१३७)

तेरिन बस्ति के सम्मुख 'तेरु' के उत्तर मुख के ऊपरी भाग पर

(शाक स० १०३९)

भद्र भूयाज्जिनेन्द्राणा शासनायाघ नाशिने ।
कु-तीर्त्थ ध्वान्त सङ्घात प्रभिन्न घन भानवे ॥ १ ॥
सक वर्षं सायिरदि
प्रकटमेनल्मूवतोम्भतु नडेयुतिरलु
सुकरमेने हेमलम्बियोल्
अकलङ्कद जेष्ट सुद्ध-गुरु तेरसियोलु ॥ २ ॥

वृत्त ॥

धरणी-पालकनप्प पोय्सलन राज-श्रेष्ठिगल्तम्मुति-
र्व्वरेनल् पोय्सल-सेट्टियु गुण-गणाम्भोरासियेम्बोन्दु सु-

न्दर गम्भीरद **नेमि** से [द्दि] युमिव श्रीजैन धर्म्मके ताय-
गरेगल् तामेने सन्द पेम्पसदलम्पर्व्वित्तु भू-भागदोल् ॥३॥

कन्द ॥

अमल-यशरमल-गुण-गण
रमलिन जिन शासन प्रदीप करेने प
म्पमर्द्दिरे **पोच्चल**-सेद्वियु
ममेय गुणि **नेमि** सेद्वियु सुखदिनिरलु ॥ ४ ॥

अवर जननियरेनल्की
भुवनतल पोगले माचिकब्बेयुमुद्यद्-
विविध गुणि **शान्तिकब्बेयु**
मवर्ग्गलु जिन-जननियन्नरुर्वीतलदोल् ॥ ५ ॥

(उसी 'तेरु' के पश्चिम मुख के ऊपरी भाग पर)

जिन गृहम मनो मुददे माडिसि मन्दरम विनिर्म्मिसि-
र्द्दनुपम-**भानुकीर्त्ति** मुनि से दिव्य-पदाब्ज-मूलदोल् ।
मनमोसेदिर्व्वरु परम दीक्षेयनोप्पिरे तालिदद्ज्जग-
ज्जन तति कीर्त्तिसल्क **मरुदेवियु** [मिम्] बिने
सान्तिकब्बेयु ॥ ६ ॥

श्री **मूलसङ्घ**दोल् म
त्ता महिमोन्नतमेनिप्प **देसिग** गणदोलु
तामिर्व्वरुमखिल-गुणो-
द्दामेयरेने नेगर्द्दरिन्तु नोन्तरुमोलरे ॥ ७ ॥

जिन पतिगे पूजेय स
न्मुनि पतिगलुगन्न दानम भक्तियोलि-
म्बिने पोय्सल सेट्टियुमोल्
पिन कशियेने नेमि सेट्टियु माडिसिदर् ॥

[पोय्सल नरेश के प्रसिद्ध सेठी पोय्सलसट्टि और नेमिसेट्टि की माताओं—माचिकब्बे और शान्तिकब्बे—ने जिनमन्दिर और नन्दीश्वर निर्माण कराकर भानुकीर्त्ति मुनि से दीक्षा ली। उक्त सेठियों ने भक्ति पूर्वक जिन पूजन किया और दान दिये।]

गन्धवारण बस्ति के समीप एक टूटे पाषाण पर

२३० (१४४) नमस्सिद्धेभ्य । शासन जिनशासन
भ चन्द्र

गन्धवारण बस्ति की सीढ़ियों के पास

२३१ (४२८) श्रीमतु रविचन्द्र देवर पाद

इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर के मार्ग पर

२३२ (१४६) नेमगन पाद ।
२३३ (१४७) श्रीसिवगय्य ।
२३४ (१४८) श्री कलय्यन् ।

२३५ (१५०)

इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर के द्वार की दक्षिण बाजू पर।

ने सेवल्कुन्द गुबु ट्टिसि पट्टम गुलिय सिगेयिले सले गङ्ग-

राज्य नमदे मन्त्रि **नरसिङ्ग** तङ्गलिय विशेषदि ॥
एरेगङ्ग महामात्य
रद नत गङ्ग-महिगे सफल मतेत्रि
गुलिपालनातनलिय
नेरे नेगल्द **नागवर्म्म**नवनीतलदोल् ॥ १ ॥
आतन पुत्रनब्धि वृत-धातृयोलितने **रामदेव** न्
ईतने **वत्सराज**निलेगीतने ता**भगदत्त**नागिविख्यातयस
तगुल्द कु म तोरेदुन्नरे नोन्तुमेतु

(शेष भाग टूट गया है)

[गङ्गराज्य के मन्त्री नरसिह के जामाता। ऐरेगङ्ग के प्रधान मन्त्री।— जामाता नागवर्म के पुत्र न—जो रामदेव वत्सराज व भगदत्त के समान जगत्प्रसिद्ध थ—वैराग्य धारण कर]

उसी द्वार की बायी बाजू पर

२३६ (१५१) पिडिदुलु मारदा
र्द्धदि टगचोल आके जेगदि विमा माडिसिद

उसी मन्दिर के सन्मुख चट्टान पर

२३७ (१५२) चगभत्तणचक्रवत्ति गोग्गिय साव
नत्य र

२३८ (१५३) (नागरी अक्षरों मे) चन्द्रकीर्त्ति ।

२३९ (१५४) श्रीमतु राचमल्ल देवर जक्किन सेनबोव
सुबकरय्य बन्दिसिद

काञ्चिन दोणे के आस-पास

२४० (१५६) मुडिपिदरवर गुड्डि सायिब्बे
निसिदल पोलब्बेकान्तियर्गे ...गे ।

२४१ (१५७) श्रीमतु गण्डविसिद्धान्तदेवर गुड्ड
श्रीधर गोज ।

२४२ (१६०)

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥
जगत् त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने ।
नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तय ॥ २ ॥
परमश्राजिनधर्म्मनिर्म्मलयश भव्याब्जिनीभास्कर
गुरुपादाम्बुजवृत्तशुद्धचरित विप्रो म मेरुभू
धरधैर्य्य गुणरत्नवार्द्धि विलसत्सम्यक्त्वरत्नाकर
परमोत्साहदे रा म्बिलाभागदोलु ॥ ३ ॥

आ पु माण-गुणगले

२४३ (१६१) श्रीधनकीर्त्तिदेवर मानस्तम्भद कम्भ ।

२४४ (१६२) मानभ आनन्द सवच्छदलिल कट्टि-
सिद दोणेयु ।

२४५ (१६३) तम्मय्यङ्ग परोत्तविनयनिशिधि ओध
रङ्ग परोत्त विनय तम्मवेगे परोत्त
विनयनिशिदि ।

२४६ (१६४) दलि क गो
गल गङ्ग निसिदिगेय निरिसिदन् ॥
ह गमदे गलिय
सगि

भद्रबाहु गुफा के आग्नेय कोन पर

२४७ (१६८) श्रीमतु लक्ष्मीसेन भट्टारकदेवर शिष्यरु
मल्लिसेन देवर निसिधि ।

चन्द्रगिरि की चोटी पर चरण चिह्न के नीचे

२४८ (१६९) श्री भद्रबाहुभलिस्वामिय पाद ।

चन्द्रगिरि के मार्ग पर चरण चिह्न के नीचे

२४९ (१७१) [तामिल अक्षरों में]
कोदइ शङ्करनु मलयशारगलिङ्गु निन्रु
कलनिक्कु मेर्कु निन् पुलिक्कु निरै ।

तोरनगम्ब के वायव्य में जिन मूर्त्ति के पास

२५० (१७२) साम देवरु

चामुण्डराय शिला पर मूर्त्तियो के नीचे

२५१ (१७३) श्रीकनकनन्दि देवरु पसि देवरु मलि
देवरु ।

चन्द्रगिरि की सीढ़ियों के बाईं ओर

२५२ (१७४) श्री नरवर जिनालय करे।
२५३ (४९१) श्री रणधीर

चन्द्रनाथ बस्ति के आस पास

२५४ (४१२) चामुण्डय्य
२५५ (४१३) सेट्टपय्य
२५६ (४१५) सिवमारन बसदि।
२५७ (४१६) बसह

सुपार्श्वनाथ बस्ति के सन्मुख

२५८ (४१७) श्री वैजय्य २५९ (४१८) श्रीजक्कय्य
२६० (४१९) श्री कडुग
२६१ (४२०) चनमा।

चामुण्डराय बस्ति के दक्षिण की ओर

२६२ (४२१) महामण्ड श्व
२६३ (४२२) श्री बास
२६४ (४२३) बसवय्य
२६५ (४२४) श्रीमर
२६६ (४२५) नरणय्य
२६७ (४२६) रसप वम य निषिधिगे

इरुवेब्रह्मदेव मन्दिर के सन्मुख

२६८ (४३१) बबोजनु २६९ (४३२) मेलपय्य

२७० (४३३) श्रा पृथुव

२७१ (४३४) चन्द्रादित (चरणचिह्न)

२७२ (४३५) नागवर्म्म बरद

२७३ (४३६) निगरजेयश तशवत्रगण्ड

२७४ (४३७) पुलियण्न २७५ (४३८) सौलय्य

२७६ (४३९) केसवय्य २७७ (४४०) नमोऽस्तु

२७८ (४४१) श्री ऐचय्य विरोधिनिष्ठुर

२७९ (४४२) बाम

एरडुकट्टे बस्ति के पूर्व मे

२८० (४२७) कगूत्तर

शान्तीश्वर बस्ति के पीछे

२८१ (४३०) श्रीमत् कम्मरचन्द आचिरग

काञ्चिनदोणे के पास

२८२ (४४३) मुरु कल्ल कदम्ब तरिसि

परकोटे के पूर्वी द्वारे के पास

२८३ (४४४) जिनन दोणे

लक्किदोणे की पश्चिमी शिलापर

२८४ (४४५) श्री जिन मार्ग्गनीतिसम्पन्नन्सर्प्पचूड़ामणि।

२८५ (४४६) श्री बिद्दरय्य

२८६ (४४७) श्रीमद् अकचेय

२८७ (४४८) श्री, परवेण्डिरण्णन् ईश्वरय्य

२८८ (४४९) श्री कविरत्न

२८९ (४५०) श्री मचय्य २९० (४५१) श्री चन पौस

२९१ (४५२) श्री नागति आल्दन दण्डे

२९२ (४५३) श्री बासनण्न न दण्डे

२९३ (४५४) श्री राजन चट्ट

२९४ (४५५) श्री बडवर बण्ट

२९५ (४५६) श्री नागवर्म्म

२९६ (४५७) श्री वत्सराज बालादित्य

२९७ (४५८) श्रीमत् मले गोल्लद अरिट्टनेमि पण्डितर् पर समय-ध्वसक ।

२९८ (४५९) श्री बडवर बण्ट

२९९ (४६०) श्री नागय्य

३०० (४६१) श्री देचय्य ३०१ (४६२) श्री सिन्दय्य

३०२ (४६३) श्री गोवणय्या ब्यिल-चतुर्म्मुक

३०३ (४६४) श्री गिवर्म्म बावसि मला ति मार्त्तण्ड

३०४ (४६५)

श्री मलधारिदेवरय्यनप्प श्री नयनन्दिविमुक्तर गुड्ड मधुवय्य देवर बन्दिसिद ॥

विधु-विधुधर हास पयो
म्बुधि फेन-वियच्चराचलोपम यशन-
भ्यधिकतर-भक्तियिन्द
मधुव बन्दिल्लि देवर बन्दिसिद ।।

[मळधारिदेव के पिता नयनन्दि के शिष्य मधुवय्य ने देववन्दना की ।]

३०५ (४६६) कण्नब्बरसिय तम्म चावय्यनु दम्मडय्यनु
नागवर्म्मनु बन्दिल्लि देवर बन्दिसिदर् ।।

३०६ (४६७) श्री सन्द बेल्गोलदले निन्दु डने विट्टु
अन्दमारय्य मनदल् अग्गल देवरेम्बर
काण्व बगेयिन्द । श्री पेर्ग्गॊड रेतय्यन वेड्डे
सङ्कय्य ।

३०७ (४६८) श्रीमत् एरेयप गामुण्डनु मदय्यनु बन्दिल्लि
व्रतकोण्डर

३०८ (४६९) श्री पुलिकलय्य

३०९ (४७०) श्री काच्चय्य

३१० (४७१) श्रीमन् एनग क्रियद देव बसद

३११ (४७२) श्री मारसिङ्गय्य ३१२ (४७३) कत्तय्य

३१३ (४७४) पुलिचोरय्य महध्वजदोज मणि वितान-
दोज तेज

३१४ (४७५) श्री कोपण तीर्त्थद

३१५ (४९२) सासिर गद्याण

विन्ध्यगिरि पर्वत के अवशिष्ट लेख

३१६ (१८१)

गोम्मटेश्वर के बायें चरण के समीप

श्री-बिटि देवन पुत्र प्रताप नारसिंह-देवन कय्यलु
महा प्रधान हिरिय भण्डारि हुल्लमय्य गोमट देवर पा
वरवक्‌ दानक्क सवणेर बिडिसि कोट्टर् ।

[महामन्त्री हुल्लमय्य ने बिटिदेव के पुत्र नारसिंहदेव से (गाँव) प्राप्त कर गोम्मटदेव और दान के हेतु अर्पण किये ।]

३१७ (१८७) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ
कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-
चक्रवर्त्तिगल गुड्ड बसविसेट्टि माडिसिद ॥

३१८ (१८८) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ
कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-
चक्रवर्त्तिगल गुड्ड बसविसेट्टि माडिसिद ॥

३१९ (१८९) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ
कोण्डकुन्दान्वयद श्रीनयकीर्त्ति
सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्ड बल्लेय[द]
ण्डना [य] क माडिसिद ॥

३२० (१९०) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ
कोण्डकुन्दान्वयद श्री नयकीर्त्ति

सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल गुड्ड बल्लेय
दण्डनायक माडिसिद ॥

३२१ (१८१) **दुर्म्मुखि** संवत्सरद पुष्यमासद
शुद्ध बिदिगे मङ्गलवार
कोपणपुरद य-सेट्टि गुम्मटसेट्टि
दनद वादरु

३२२ (१८२) श्रीसवत् १५४६ वर्ष जेष्ट सुदि ३ रवि
[नागरी लिपि मे] वासरि गोम्मट स्वामी की जात्रा कियो
गोमट बहुपालै प्रजौसवालै कदिकबस
ब्रमचारी पुरस्थाने पुरी भ्रातृपुत्रसम

३२३ (१८३) श्री**नयकीर्त्ति** सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल-
शिष्यरु श्री**बालचन्द्र** देवर गुड्ड
आङ्किसेट्टि अभिनन्दन देवर माडिसिद ॥

३२४ (१८४) श्री**मूलसङ्घ** **देसियगण** **पुस्तकगच्छ**
कोण्डकुन्दान्वयद श्री **नयकीर्त्ति**
सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगलगुड्ड **कम्मटद रामि**
सेट्टि माडिसिद ॥

३२५ (१८५) श्री **नयकीर्त्ति** सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल
शिष्यरु श्री**बालचन्द्र** देवर गुड्ड सुङ्कद
भानुदेव हेग्गडे माडिसिद अजित
भट्टारकरु ॥

३२६ (१९६) श्री**नयकीर्त्ति** सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्ड बदियमसेट्टि माडिसिद सुमति भट्टारकरु ॥

३२७ (१९७) श्री मूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय **नयकीर्त्ति** सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल गुड्ड बसविसेट्टि चतुर्व्विं-शतितीर्त्थंकर माडिसिद ॥

३२८ (१९८) श्री**नयकीर्त्ति** सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्री**बालचन्द्र** देवर गुड्डकल्लेय महदेव सेट्टि मल्लिभट्टारकर माडिसिद ॥

३२९ (१९९) शक वर्ष १२०२ नेय प्रमाधि सवत्सरद कार्तिक शुद्ध १० सोमवारदन्दु श्रीमनु महा पसायत तिरुमप्प धिकारि सम्भुदेवण नवर लु मल्लणनवरु-श्रीगोम्मट

मङ्गल महा श्री श्री ॥

३३० (२००) सर्वधारि सवचरद चैत्र सुद्ध-पाड्य बृहवार दन्दु श्रीगोमट देवर नित्या-भिषेकक्के बिटेयन हलिय मेणसिन सोयि सेटिय मग मादिसटि कोट्ट धाण १ पण २ हालु मान ॥

३३१ (२०१) सवत् १६३५ पिमतीच स । फ
[नागरी लिपि में] सुदीय सेनवीरमतजी श्री जगतकरतजी
पदाभट्टोदराजी॥ प्ररसटीवदव ड
मघोपदे श्री रायसोरघजी ।

३३२ (२०२) सवत् १५४८ पराभव स जे सुद ३
[नागरी लिपि मे] मूलसङ्घ अगुषजे श्री जगद् त ज्ञाकपड
ल तडमत् मेदाराजद् सतराब्

३३३ (२०३) सवत् १५४८ वरुषे चैत्र वदि १४ द
[नागरी लिपि में] ने भटारक श्री अभयचन्द्रकस्य शिष्य
ब्रह्मधर्म्मरुचि ब्रह्मगुणसागर प ॥
की का यात्रा सफल ।

३३४ (२०४) गेरसोपेय अप नायकर मग लिङ्गण्णनु
साष्टाङ्गवेरगिदनु

३३५ (२०५) आमाची रकम ठऊ [ठेऊ]
[नागरी लिपि में] [र] तुमची कम घऊ [घेऊ]

[३३६ से ३५० तक के लेख नागरी अक्षरो मे हैं]

३३६ (२०६) श्री गणशाय नम शाओ हरखचन्ददसजी
यवत १८00 मीगशर वीदी १३ गराऊ ।

[श्री गणेशाय नम । साव हरखचन्द्रदासजी संवत् १८०० मगसर वदि १३ गुरौ]

३३७ (२०७) श्री गणसा अ नम साओ कपूरचन्द
मेतीचन्द शतीदी रा सावत १८००
मगशरा वदी १३ गराऊ।

[श्रीगणेशाय नम । साव कपूरच द मोतीचन्द शतीदी रा सवत् १८०० मगसर वदि १३ गुरौ]

३३८ (२०८) सवत १८४२ मह सद ५ अतदस
अगरवल दलवल पनपथय व सट भग-
वनदस जतरक अय।

[संवत् १८४२ माह सुदी ५ अतदास अगरबाला दिल्लीवाला पनपथिया वो सठ भगवानदास जात्रा को आये]

३३९ (२०९) सवत १८०० पोस बद १४ मङ्गराय
बालकीसनजी तेसुवको षण्डेलवाल
बुधलाल गङ्गरामज करणो भोग

३४० (२१०) सवत १८०० मत असड सद १० सन
चरवर सतष रयज बलकसनज अज-
दतज चनरय व दनदयल अबट अज
दतज इक जतर इसथन पठक अगरवल
सरवग पनपथक गयलगत अयथ

[सवत् १८०० मिती आषाढ सुदि १ शनीचरवार सन्तोषरायजी बालकिसनजी अजीतजी चैनराय व दीनदयाल व बेटा अजीतजी एक जातरा स्थान पेठका अगरवाला सरावगी पानीपत का गोयल गोत्री आये थे]

३४१ (२११) सवत १८०० पस वद ६ मगलवर
बनवरलल दनदयल क बट ।

३४२ (२१२) सवत १८१२ बसह सद ११ वर मगल
बलरम रमकसन क बट अ [गरव]
ल सर [वग क] स रय ग [कल]
गढय वसह इ र

[संवत् १८१२ वैसाख सुदि ११ वार मङ्गल बलीराम रामकिसन का बेटा अगरवाला वैसोराय गोकलगढिया वैसाख]

३४३ (२१३) सवत १८४३ मत मह वद ३ लष [म]
ण रयक बट तडर मल नरठनवल नत-
मल गनरम धन पै
दज परप नरक सहनवल

[संवत् १८४३ मिती माह वदि ३ लक्ष्मणराय का बेटा तोडरमल नरठनवाला (?) [नत]थ[मल गनीराम धा]

३४४ (२१४) सवत १८१२ मत वसह वद ८ वर सन
सठ रजरम रमकरसन भगत रयक बट
गयल गत र सरपल सभनथ बट
नय क बट ।

३४५ (२१५) सद मगल वर नय
नरयनज वहड रयथ इ
जहतय रमदनमल कसद बमहय

कसद जैनदरयज वन ग
रलम

३४६ (२१६) कसवराय का बेटा सवत १८१२ वसष
सद ११ वर मगल वर समर मलक बट मज
रम गगनय सडनगड पनपथय अगरवल ।

३४७ (२१७) समत १८०० जट सद ३ करबधक सट
इमणपन थनय यमढ र
र लसराय रयज इसरमज लसनय
हलसरय बलकदस सरवग अगरवल
पनपथ गरगगत बनय सननय ।

३४८ (२१८) उदसग वगवल रतत रजप
प वल ।

३४९ (२१९) सवत १८१२ वसह सद ८ नवलरय
सकरदसक बट अयथ ।

३५० (२२०) सवत १८१२ मत वसष सद ८ सनच
रक दन सतषरय सगनरमक बट जइकर
नक पत सरवग

३५१ (२२१)

अष्ट दिक्पाल मण्डप की छत के मध्य भाग मे गोलाकार

(उत्तर) अरसू-आदित्यङ्कवाचाम्बिके गवोलविनि

पुट्टिदर पम्पराज हरिदेव मन्त्रि यूथाग्रणि
गुणि बल
(पूर्व) देवण्णनेन्दिन्तिवर्म्मूवरुमुर्व्वी-ख्यात कर्णाटिक
कुल तिलकर्म्माचि राजङ्गे मावन्दिरराप्यु
रूचण्ड शक्तर्
(दक्षिण) जिनपति पद भक्तर्म्महाधारयुक्तर ।।
सकल सचिव नाथ साधितारति यूथ ।
परिहृत पर-दारो
(पश्चिम) भारती कण्ठ हार ।
विदित विशद कीर्त्तिर्व्विश्रुतोदार मूर्त्ति
स्स जयतु बलदेव श्री जिनेन्द्राङ्घ्रि सेव ।।

[अरसादित्य (व नृप आदित्य) और आचाम्बिके को सुख देने वाले तीन पुत्र उत्पन्न हुए—पम्पराज हरिदेव और मन्त्रि समूह मे अग्रगण्य, गुणी बलदेव । ये लोक प्रसिद्ध कर्णाटक कुल के तिलक, माचिराज के पितृव्य, शत्रुओं के लिए प्रचण्ड शक्ति, जिन पद भक्त महा साहसी थे । समस्त मन्त्रियो के नाथ, शत्रुओ को वश करनेवाले, परस्त्री त्यागी सरस्वती देवी के कण्ठहार, विशुद्ध कीत्ति, प्रसिद्ध और उदार मूर्त्ति जिनेन्द्र पद सवी बलदेव जयवान् हो ।]

३५२ (२२२) कालायुक्त सवत्सरद माघ ब १२ लु
गुम्मि सेट्टि मग सेट्टि
दर्शनव आदनु ।।
कालायुक्त सवत्सरद माघ ब १२ पुट्टण्न
मग चिकण्ननु दर्शनव आदरु ।।

३५३ (२२६) क-स वत्सर श्रावण सु ५

सि पाल आ ग्रामदल्लि ना
कियना य ग्रामके सलु दलु
रुट्टु डारम्भ नीरारम्भ-सकल-सुवर्णा
दाय सकल-दवसादाय आ गरु
आ ग्राम ग११ वरहगलनु ।

[इस लेख में मय नगद और अनाज की आमदनी के किसी ग्राम के दान का उल्लेख रहा है ।]

३५४ (२३०) कु फाल अनुभ
को य सीमेगे बेक्द कण्डुय
वूलि आ-ग्रामके वनु नीवे
तेत्तुको।ण्डु आ ग्रामदलिन नमगे
सलुव पत्तिगेयनु पौत्रपारम्पर आ चन्द्रार्क
स्थायियागि अनुभविसिकोण्डु बरुवदु यी
क्रय-माधन यी-मर्य्यादि
क्रयसाधन र्य्या
नाग गवुडन द स्थानीक
साच्चिगलुन हलिय बाल
मल्ले देवरु नञ्जेगवुड हिन्दल द

कान्तनगवुड बसट्टर गवुड हलिय
तिर्त्तवन मुयि मर्य्या

[यह किसी ग्राम का बैनामा सा ज्ञात होता है ।]

३५५ (२३१) पण्डित देवरु माडित्तु माहाभिषेकदोलगे
हालु-मोसरोग २ पूजारिगे १ भागि केल
सिगलिगे कलुकुटिगरिगे भागि २ भण्डि
कारङ्गे १तप्पिदवर कै सास्ति चरु हरियाणी

[लेख का भावार्थ कुछ संदिग्ध है । शायद इसमें महाभिषेक के लिए व पुजारियों कारीगरों और मजदूरों को पण्डित देव के दान का उल्लेख है ।]

३५६ (२३२) श्रीमतु व्यय सवत्सरद माग सुद्ध १३ नेय
त्रयोदसियलु करिय कान्तणसेट्टियर मकलु
करिय बिरुमण सेट्टियर तम्म करियगुम्मट
सट्टियरु बिडितियिन्द सङ्घव कुडिकोण्डु
बेलुगुलदलु गुम्मटनाथन पादद मुन्दे रत्नत्र-
यद नोम्पिय उद्यापनेय माडि सङ्घरपूजेय
माडि कीर्त्तिपुण्यवनु उपार्जिसिकोण्डरु श्री ।

[उक्त तिथि को करिय कान्तण सट्टि के पुत्र व करिय बिरुमण सट्टि के भ्राता गुम्मटसटि ने एक संघ सहित बेलुगल की वन्दना की और गोम्मटनाथ के दर्शन कर कीर्त्ति और पुण्य का उपार्जन किया ।]

३५७ (२३३) श्रीमतु करिय बोम्मणगे गुम्मटनाथ ने
गति क ।

३५८ (२३९) सवत १८०० कतसद ६ सवत १८००
(नागरी लिपि में) पहु-स २ पत दव पनपथ दनचद परवल
क बप।

३५९ (२४८) सब १८०० मत पह सद ८ मगलवर
(नागरी लिपि में) कट रइ व गरधर लल वजमल क बट व
मगतरय कट रयक बट बगमल गमट
सम क जत कर।

३६० (२५१) (यह लेख, शिलालेख न० ९० (२४०)
के प्रथम १५ पद्यों की हूबहू कापी मात्र है)

३६१ (२५२) स्वस्ति श्रीमतु वड्डव्यवहारि मोसलेय
वि-सेट्टियरु तावु माडिसिद चवीसतीर्थ
कर अष्टविधार्च्चनेगे वरिषनिबन्धियागि
माणिक्यनकर शस-नकरङ्गलु काट्ट
पडिप गे हाग। व सेट्टि बाचिसेट्टि
चिक बाचिसेट्टि प २ अम्मेलेय केटि
सेट्टि चन्दिसेट्टि गुम्मिसट्टि चिक्तम्म,
प २ आदिसेट्टि चौडिसेट्टि १ बाचिसेट्टि
अयिबिसेट्टि जक्कबेमैदुन बोाद्दिसेट्टि
बाचि सेट्टि मारिसेट्टि वम्मिसट्टि प २
माचि सेट्टि नम्बिसेट्टि मसणिसेट्टि केति
सेट्टि प २ केतिसेट्टि रेविसेट्टि हरियम
सेट्टि कोम्मिसेट्टि आदिसोट्ट चिक-केति

सेट्टि प २ पट्टण स्वामि चन्दसेट्टि सोम-
सेट्टि केतिसेट्टि प २ सोडलिसे सेट्टि
बाकवेचट्टि . कैमिसेट्टि प १
द चिक्क हेग्गडिति पट्टण
स्वामि मलिसेट्टि कामवे प २ बम्मेय
नायक दोचवे नायिकित्ति चिक्क पट्टण
स्वामि प २ बाहुबलिसेट्टि पारिषसेट्टि
बमविसेट्टि बरत बाहुबलि प २ सङ्क
सेट्टि एचिसेट्टि चौडिसेट्टि बाचिसेट्टि
सक्किसेट्टि प २ नागिसेट्टि करियशान्ति
सेट्टि बवणसेट्टि बोप्पसेट्टि प २ मैलि
सेट्टि महदेव सेट्टि हारुवसेट्टि प १
काविसेट्टिय पारिषसेट्टि आदिसेट्टि
प १ ओडेयरुचसेट्टि जक्किसेट्टि प १
तिप्पसेट्टिय बसविसेट्टि चिक्क तिप्पि
सेट्टि प १ य पदुमनसामि
सेट्टि बमच्चिव पदुम प १ देसिसेट्टि
कलिसेट्टि केतिसेट्टि बम्मिसेट्टि प १
यटद राचमल्लसेट्टि यरु पट्टण स्वामि
जकरसरु होय्सलसेट्टि बीबसेट्टि पट्टण
स्वामि मलिसेट्टि चाकिसेट्टि दासिसेट्टि
प ३ नेमिसेट्टियरु प २ नाविसेट्टि देवि-

सेट्टि चट्टिसेट्टि कातवेसेट्टिति प २
पट्टणस्वामि बोप्पिसेट्टि बोकिसेट्टि तम्म
बोप्पिसेट्टि बमविसेट्टि आहुबलिसेट्टि
जकवे अत्तियक प २ अङ्करिक कालि
सेट्टि सोमिसेट्टि चन्दिसेट्टि देविसेट्टि
च्चिक कालिसेट्टि प २ सोविसेट्टि चङ्गिसेट्टि
बम्मिसेट्टि प १ हाञ्निसेट्टि पारिष सेट्टि
कुप्पवे प २ माचिसेट्टि चट्टिसेट्टि गङ्गि
सेट्टि कालिसेट्टि मारिसेट्टि प २ मङ्गि
सेट्टि वर्द्धमानसेट्टि पारिषसेट्टि प २
काविसेट्टि देविसेट्टि बम्मसेट्टि प १
गुम्मिसेट्टि माकिसेट्टि गोम्मटसेट्टि
माचिसेट्टि प १ मसणिसेट्टि लकुमि-
सेट्टि प १ बहणिगेय बम्मवेय केटि-
सेट्टि प १ दनसेट्टिय म वसेट्टि देमि
सेट्टि चामवे प २ बाचिकवेय बम्मि-
सेट्टि पारिषसेट्टि चिक्क पारिषसेट्टि बेलि
सेट्टि सोमसेट्टि गोम्मट सेट्टि केतिसेट्टि प२
सहदेवसेट्टिय चेट्टिसेट्टि रामिसेट्टि चट्टि
सेट्टि प २ पदुमसेट्टि होलनेसेट्टि गोम्मट
सेट्टि लकुमिसेट्टि पोचम्म नाकिसेट्टि
महदेवसेट्टि प २ नागर नविलेय केति

श्रीमतु **चारुकीर्त्ति** पण्डित देवरु गलु
अवर शिष्यरु अभिनव पण्डित देवरुगलु
बेलुगुलद नाड गवुडुगलु माणिक्य नख
रद हलरु पण्डितु स्थानिकरु वैद्यरु
नरु

[यह लेख अधूरा है। इसमें बेलुगुल के चारुकीर्त्ति पण्डितदेव और अभिनव पण्डित देवका उल्लेख है]

३६३ (२६०) **सके १६५५** आश्वीज वदि ७ **खेरा**
(नागरी लिपि में) मासा पुत्र भखीसा श्री
सक बानापोसा
गया सफल श्री।

३६४ (२६१) **सके १६५३** आश्वीज वद ७ **खेरामासा**
(नागरी लिपि में) पुत्र **हीरासाछा** पणेतुयाखा जात्रा सफल।

३६५ (२६२) **सके १६६३** आश्वीज वद ७ खेरामासा
(नागरी लिपि में) पुत्र धरमासाछा पौत्र **जागा**
जात्रा सफल ॥

३६६ (२६३) **सके १६५३** पौस वदि १२ शुक्रवार
(नागरी लिपि) भण्डेवेड कान्ति सहित उघरवल जाती
हीरासाह सुत **हाससा** सुत **चागेवा**
सोनाबाई राजाई गोमाई राधाई मन्नाई
सहित जात्रा सफल करी कारज कर।

३६७ (२६४) वेय नाम सवत्सरद कार्त्तिक सुद्ध अष्टमी
(अखण्डवागिलु के बरामदे में) यि गुरुवार ॥

३६८ (२६५) स्वस्ति श्री मूल सङ्घ देशियगण
(द्वारे के पास भुज बलिस्वामी के पाद पीठ पर) पुस्तकगच्छ श्रीगण्डविमुक्त सैद्धान्तदेवर गुड्डु भरतेश्वर दण्डनायक माडिसिद ॥

३६९ (२६६)

[लेख नं० ३६८ के ही समान]

(द्वारे के पास भरते श्वर के पादपीठ पर)

३७० (२७०) श्रीमतु आस्वैज सुद्ध ९ ल्ल बेगूर गामेय नरसप्पसट्टियर मग बैयणनु स्वामि दरुसनव माडि ई कट्टे कट्टिय अरवटिगे निलिसिदरु ॥

[उक्त तिथि को बेगूर के गामेय नरसप्पसेट्टि के पुत्र बैयण ने स्वामी के दर्शन किये, यह कुण्ड बनवाया और उस पर छप्पर डलवाया ।]

३७१ (२७१) सोमसेन देवर गुड्डु गोपय बैचक

३७२ (२७२) भुवनकीर्त्तिदेवर शिष्य कीर्ति देवर निशिधि ।

३७३ (२७५) वनवासिवस्वा रद रा

३७४ (२७६) सिंहनन्दि आचार्य्यरु ॥

३७५ (२७८) पूताबाई जगदाई पणास जात्रा
(नागरी लिपि में) सफल ॥

३७६ (२७६) पू जनाई पुत्र पण्डि पू

(नागरी लिपि में)

३७७ (२८०) श्रीमतु आस्वै बहुल १ यलु भारगवेय नागप्प सठर मग जिनथनु बेलुगुलद चारुकीर्ति भटार श्री पादव के थिसिदरु श्री ॥

[नं० ३७८ से ४०४ तक के लेख नागरी लिपि में हैं।]

३७८ (२८३) चीतामनस ढवरा माणकर ई कर

३७९ (२८४) सके १६४२ वैसाष वदी १३ बु गडासा धर्मासा कोटूसा सो मानीकसाच नमस्कार (कनाडी लिपि में) माणिकसा

३८० (२८५) सा प्र के १६४२ क वदी १३ मरिवहीरा जात्रा सफल ॥

३८१ (२८६) श्री काष्टसङ्घ ॥

३८२ (२८७) शक १५६७ पार्थिव-नाम सवत्सरे वैशाष मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दशी दिवसे श्री काष्ट सङ्घ वघेरवाल जातीय गोनासा गोत्रे सवदा बाबुसार्या जायनाई तयो पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सन्नोजसार्या यमाई तयो पुत्रा यरु मध्य सीमा सङ्घवी या सङ्घवी ऱ्याजुंनसीत ग्रामे सम्प्रयामति द्वितीय पुत्र सङ्घवी पदजायार्या तानाई तयो पुत्रौ

द्रौ विट्ठभार्य्या कमलाजा पुत्र एशोजा पद्माजी सङ्घवो द्वितीय पुत्र गेसाजीति सम्प्रणमति हीरासा धरमासा माडगडी।

३८३ (२८८) साके १५७४ चैत्र सुधी ५ आल्घा। जगस बाल्वान्त पुसा त्याचे भाऊ गोनसा समसनी धर्म वछ्ल आ॥

३८४ (२८६) सक १५७४ चैत्र वद १० प। जीनासा सुत जीनदास

३८५ (२६०) चैत्र वदी ६ प। सक १५७४ सा। अ लीसा जात्रा सफल॥

३८६ (२६१) श्री काष्टसङ्घ माडवगडी १५७७ मनमथ नाम सवदसरे कार्तीक वदी १५ हीरासा घुमाईछ पुत्र धरमासा ईराई पुत्र सानसा व हीरासा वष्तगडेसा तप दमा काघे जात्रा सफल मातांई चे जात्रा॥

३८७ (२६२) सके १५७७ मनमथ नाम सवत्सर कार तिक वदी पाडिव १ तलीर्ची मारमा कालावा मारमा जीवामा जीवाजी पाही घानथजी वानदाका जामखेडकर साता कातीमा करका जत्रा।

३८८ (२६३) सके १६७४ चै वदी ६ घघाडसा मानीकसा जत्रा सफली॥

३८९ (२९४) १७६४ सुरजन साफल

३९० (२९५) सके १७५४ चैत्र वदी ५ जत्र करी सफल

३९१ (२९६) सुगुजीश नेमाजी सामजी सरत योगोई

३९२ (२९७) सके १६४० फालगुन सुदी १ गु दे
मासा सानीकसा गविल (कनाडी मे)
देमासा रजा

३९३ (२९८) सके १५८४ वैशाष सुदो ७ श्री काष्टा
सङ्घे पीतलागोत्रे लषसा पु हीरासा
रामासा जात्रा सफल।

३९४ (२९९) ब्रह्मरङ्ग सागर प। जसवन्त।

३९५ (३००) प गोविन्दा माथ गङ्गाई

३९६ (३०१) सवत् १७१८ वर्षे वैशाष सुदि ७ चन्द्रे
श्री काष्टासङ्घे पण्डित

३९७ (३०२) सके १५६८ सावछरे फालगुन वदि ६
तदा स पुत्र चौछक
यायसा अगार अ रघु
छा चौछक

३९८ (३०३) आम्बाजी का जन्माजी का तप

३९९ (३०४) माघ सुदि ६ पेडेक त्रा घडे जात्रा
सफल ॥

४०० (३०५) सवत् १५६६ पार्थिव नामं सवत्सरे माघ शुदा पाडिव माचा पुत्र धावर जात्रा सफल ॥

४०१ (३०६) सके १५६६ पार्थी नाम सवत्सरे मेगने-मासा तसे मायी जीवाई भीवभा जेट सुध २

४०२ (३०७) १३५ जीवा सङ्गवी १३५ अङ्ग सङ्गवीचा गोगासा

४०३ (३०८) ब्र । शापसाजी ब्र ॥ रत्नसागर

४०४ (३०९) गुडघटिपुर गोविन्द जीवापेटी सवडी सफली ।

४०५ (३१०) १५६२ श्रीमतु पार्तिव सवत्सरद वैशाख सुद पञ्चमी कमल परद कमवोव्यनिम सुरप नगपन वलभ नम गोत्र मग जिनप सुरप इगवरु चिखणद सेटि

४०६ (३११) हालेजन मसणेय कट्टि विडुवर गण्ड वोडेयर हेण्डतिय गण्ड बोयसेट्टिय मद कोड

४०७ (३१४) जिन वर्म्मन कङ्करिय ध्वनि किविवुग दुर्ज्जनङ्ग भयमु सुजनङ्ग अनुरागमुमुदै सुगु घननाददिनेन्तु हसेग नविलिङ्ग

४०८ (३१५) कोलिपाके माणिक्यदेवन गुड्ड जिन-
वर्म्म जोगि कडूरि जगदाल मोरमूर
आदिनाथ नमोऽस्तु ।

४०९ (३१६) श्रीमत् रूवारि बिदिगइ कम्मटद सुलेरिद
मुट्टिदर मेयिजाथिले पेरगगिन् ।

४१० (३१७) परनारी पुत्रक मण्टर तोल्तु केलेगे कुप्पांत
पिसुणगडसर्प्पतोदलदर बीव बावन बण्ट
गुण्डचक जेडुग

४११ (३१८) स्वस्ति श्री पराभव सवत्सरद मार्ग्गशिर
अष्टमी शुक्रवारदन्दु कोमरच णा अकन
तम्म मले आल-अप्पाडि नायक इल्लिदु
चिक्कबेट्टक्केरूच ॥

४१२ (३२०) गडिब गद्देग क ४०

४१३ (३२२) विजयधवल । ४१४ (३२३) जयधवल

४१५ (३२४) सके १५७५ मास्वा पाण्डव गोकेस्वा
(नागरीलिपि में) सस्नोजीन्वों सफल जत्रा ।

४१६ (३२५) माणि वीरभद्रन पण्डरद नपा कन
बैरव बीरेव हिव न तन

४१७ (४७६) ओं नमो सिद्धेभ्य ॥ श्री गोमटेश प्रसन
धरणप्पासूज ॥ हुब्बल्लि स्मरणार्थ चि ।
मातप्पा अरपण हुब्बल्लि ।

[यह लेख एक ग्रण्टे पर है। धरणप्पासूज की स्मृति में मातप्पा ने अर्पण किया]

४१८ (४७७) श्रीमल्लिसेट्टिय मगलाद र यिगल निसिधि

४१९ (४७८) काल कर ह ल नरुवाद ल्
अमर वगे चले कस य गडे
गौडग नण्टर प न बान रिद
युगल न चन्द प्प केच्चगौड गरु
यड्ड धार या द

४२० (४७९) पण्डितय्य

४२१ (४९५) विरोधिकृतुसवत्सरद जेष्ट शुद्ध १० श्री मूल
सङ्घ देसिगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद
श्रीमद् अभिनव पण्डिताचार्य्यर शिष्य सम्य
क्तचूडामणि एनिसिद आभव्योत्तमनु तलेहद
नागि सेट्टिय सुपुत्र पाइसेटि श्री गुम्मटनाथ
स्वामिय पूजेगे सम्पगेय मरन बलि समर्प्पिसिद
पलदिन्द जिनेश्वरन चरणस्मरणान्त करणनु सुख
समाधियिन्द सुगति प्राप्तनादुदक्के मङ्गल मह्हा
श्री श्री श्री।

४२२ (४९६) स्वस्ति श्रीमतु जिनसेनि भट्टारक पट्टा
चार्य्यरु कोल्लापुरद वरू मड्ड सहवागि
रौद्रि सवत्सरद वैशाख सुद्द १० सक

वार दिन दरुशनव माडिदरु ॥ सि द
कोट्ट

४२३ (४९७) श्री व्यय संवत्सरद माघ सुद्द १३ नेय
त्रयोदशियलु श्रीजकुल लसेट्टि पद्मा
वती वज्र कचा क मप्प नाच अरु
मन्दि के थ दक द

४२४ (४९८) श्री व्यय संवत्सरद माघ सुद१३
नेय त्रयोदसियलु किरिय कालन सिटि
यर अलियिन्दिरु सेट्टि नेमणसेट्टियर मग
सेट्टि ब्रमयसेट्टि गोम्मटनाथन पादद
मुन्दे तसा यनागि कम्बय दिदनु ॥

४२५ (४९९) सुभमस्तु । विक्रम नाम संव
राज्य सक न नमि
र डिचलु लु

श्रवण वेल्गुल नगर के अवशिष्ट लेख

४२६ (३३१)

अक्कन बस्ति में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति पर

श्री मूलसङ्घ देशिगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयके
सिद्धान्त चक्रवर्त्ती **नयकीर्त्ति**-मुनीश्वरो भाति ॥१॥
तच्छिष्योत्तम **बालचन्द्र**-मुनिप श्री पाद पद्म प्रिया
सर्व्वोर्व्वी नुत चन्द्रमौलि सचिवस्याद्धाङ्ग लक्ष्मीरिय ।
आचाम्बा रजताद्रि हार हर हासोद्यशो मञ्जरी
पुञ्जीभूत जगत्रया जिन गृह भक्त्या मुदाकारयत् ॥२॥

४२७ (३३२) तातीराव सुदीपरा पमघदेव

४२८ (३३७) श्रीमत्**पण्डिताचार्य्य** गुड्डि **देवराय** महारायर राणि **भीमादेवि** माडिसिद शान्तिनाथ स्वामि श्री ॥

४२९ (३३८) श्री**पण्डितदेवर** गुड्डि **बसताथि** माडिसिद वर्द्धमान स्वामि श्री ॥

४३० (३३९)

मङ्गायि बस्ति के द्वितीय दरवाजे की चौखट पर

स्वस्ति श्री **मूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दा**-
न्वय श्रीमद्-अभिनव **चारुकीर्त्ति** पण्डिताचार्य्यर शिष्ये

सम्यक्त्वचूडामणि रायपात्र चूडामणि बेलुगुलद मङ्गायि माडिसिद त्रिभुवनचूडामणि येम्ब चैत्यालयके मङ्गल महा श्री श्री श्री ॥

[श्री मूलसङ्घ देशिय गण पुस्तक गच्छ, कोण्डकुन्दा वय के अभिनव चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य के शिष्य बेलुगुलवासी सम्यक्त्व चूडामणि मङ्गायि द्वारा निर्मापित त्रिभुवन चूडामणि नामक चैत्यालय का मङ्गल हो।]

४३१ (३४८) छन शासन परोक्ष

ग्य द्भु नुडि

लान्तरक ल्लायदेवरु तत्सिष्य ज्य

दाता तत्सिष्य

अभेयनन्दि सिद्धान्ति देवरु

देव द्धान्तिदेवरु

वचन्द्र सुरकीर्त्ति त्रैवि

चन्द्र भट्टा गुणचन्द्र

भट्टारक भट्टा-

रकरु कटका व

त कमल प्रह

ध्याह्लकल्पवृक्ष वासु

पू य सिद्धति क श्री

दु योगि तिल

द श्रीमा ' तया

त्मक तत्प्र वे ॥ श्रीकू यव

ताय . रमल मू

अन्वयाभिधान अभिनव स्वार च चतु

चक्रवर्त्ति

कपडि

४३२ (३५०) पिङ्गल-स द्ध ५ लु स

गच्छ पुस्त न्दान्वयद

र्त्ति पण्डिताचा तरकलगु

मदवलिगे कि ङ्किपूर दन

मि सेण्टियर बेलुगुलके व

४३३ (३५३)

पूर्णैया की सनद जो कागज पर लिखी हुई बेल्गुल के मठ मे है

शुक्ल-सवत्सरद फाल्गुन ब ८ बुधवारदलु श्रीमन्तु पूर्णैयनवरु किक्केरि आमील गवुडैयगे बरसि कलुहिस्त कार्य

अदागि³स द कलगण धर्मस्तलदिन्दा **कोमारहेग्गडियवरु** अवण बलगुलक्क देवर दरुशनक्क बन्दु यिद्दु हजूरिगे बन्दु यिद्दु अरिके माडिकोण्डदु पूर्वक्के **कृष्णराज**-वडयरवरु अवणबलगुलदल्लि यिरुव चिक्क देवराय कल्याणि समीपद दान श्यालि धर्मकक्के किक्केरि-तालूक कबालु यम्ब ग्राम वन्नु नडसि-कोण्डु बरुवन्ते सन्नदु बरशि कोट्टद्दु हाजरु यिधे यन्दु तन्दु तोरिशि दरिन्दा कट्ले-माड्सि यिधित्तु यी कबालु ग्रामद हुट्टु-वलि यीग गु ८०-यम्बत्तु वरहायिरु-वदरिन्दा अवण बलगुल-दल्लि यिरुव चिक्क देवराय कल्याणि समीपदल्लि नडव दान श्यालि धर्म्मकक्के गोमटेश्वर पूजिगे अवण बलगुलदल्लि यिरुव मटद सन्न्याशि **चारकीर्ति** पण्डिताचार्यर मटक्के द वेच्चकक्के सह्रा ग्रामवन्नु प्रमोदूत सवत्सरद आरभ्याग्राम यिनर ताबे माड्सि नेम्मदि गूडि नडशि कोण्डु बरुवदू या ग्रामदल्लि पालु-बूमि सागुवलि माड्सिकोण्डु केरे कट्टे कट्टिसि कोण्डु ग्रामक्के राजपत्तु तन्दु येनु जास्ति हुट्टुवलि यिवरु माडि कोण्डाग्यू सदरि बरद मटद वेच्चक्के देवर पूजिगे दान स्यालिगे सह्रा उपयोगा-माडिको-लुवदे होरतु सरकारद तण्टे माड कलस विल्ला सराग गूडि नडसिकाण्डु बरुवदु तारीकु २८ ने माहे **मार्चि साल १८१०** ने यिस वीयल्लु सद्रि बरद मेरिगे नदै-शिकोण्डु बरुदु श्री ताजाकल यी-सन्नदु दप्तरक्के बरशि कोण्डु असल सन्नदुन्ने हिदक्के काडुवदु रुजु श्री पैवस्तकि पाल्गुण ब १० शुक्रवार स्तल दाकलु ।

[धर्मस्थल के कोमार हेग्गडि न आकर कृष्णराज वॅडयर के समय की एक सनद पेश की जिसमें किक्करि तालुका के कबालु नामक ग्राम का बेल्गुळ के चिक्कदेवराय के समीप की दानशाला के हेतु दान दिये जाने का उल्लेख था। इसी सनद के अनुसार उक्त तिथि को पूणय्य ने यह सनद दे दी कि उक्त ग्राम की आय, जो उस समय ८० वराह थी, उक्त दानशाला और बेल्गुळ के मठ के हेतु काम म लायी जाय। भविष्य मे आय में जो वृद्धि हो वह भी इसी हेतु खर्च की जाय यह सनद उक्त तिथि को सरकारी दफ्तर मे नकल कर ली गई।]

४३४ (३५४)

मुम्मडि कृष्णराज ओडेयर की सनद उसी मठ मे कागज पर

श्रीकण्ठाच्युत पद्मजादि द्विषद् वक्रोद्ध तेज छटा
सम्भूतामतिभीषण प्रहरण प्रोद्भासि बाह्राष्टकां।
गर्जत् सैरिभ दैत्य पातित महा शूला त्रिलोकी भय
प्रोन्माथ व्रत दीक्षितां भगवतीं चामुण्डिका भावय ॥१॥

निदान सिद्धाना निखिल जगता मूलमनघ
प्रमाण लोकाना प्रणय पदमप्राकृतगिरा।
पर वस्तु श्रीमत् परम करुणासार भरित
प्रमोदानस्माक दिशतु भवतामप्यविकल ॥ २ ॥

हरेर्लीला वराहस्य दष्ट्रा दण्डस्स पातु न।
हेमाद्रि कलशा यत्र धात्री छत्र श्रिय दधौ ॥ ३ ॥

नमस्तेऽस्तु वराहाय लीलयोद्धरते मही ।
खुर मध्य गतो यस्य मेरु कणकणायते ॥ ४ ॥
पातु श्रीणि जगन्ति सन्ततमकूपाराद्धरामुद्धरन्
क्रीडा क्रोड कलेवरस्स भगवान्यस्यैक दंष्ट्राङ्कुरे ।
कूर्मे कन्दति नालति द्विरसन पत्रन्ति दिग्दन्तिनो
मेरु कोशति मेदिनी जलजति व्योमापि रालम्बति ॥५॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय शालिवाह-**शक** वर्षगलु **१७५२** सन्द वर्तमान **विकृति-नाम-सवत्सरद श्रावण ब० ५ सोमवार**दल्लु आत्रेय सगोत्र आश्वलायन-सूत्र रुकशाखा नुवतिगलाद यिम्मडि कृष्णराज वडयर नर पौत्रराद चामराज वडयरवर पुत्रराद श्रीमत् सुमस्त भूमण्डल मण्डनायमान निखिल देशावतम कर्नाटक जनपद-सम्पदधिष्ठानभूत श्रीमन्महीसूर-महा-सस्थान मध्य देदीप्यमानाविकल-कलानिधि कुल - क्रमागत राज क्षितिपाल प्रमुख निखिल-राजाधिराज-महाराज चक्रवर्त्ति मण्ड-लानुभूत दिव्य रत्न सिंहासनारूढ श्रीमद् राजाधिराज राजी-परमेश्वर प्रौढ प्रतापाप्रतिम वीर नरपति बिरुदे तेम्बर-गण्डलोकैक-वीर यदु कुल पय पारावार कलानिधि शङ्ख-चक्राकुश कुठार मकर-मत्स्य शरभ साल्व गण्ड भेरुण्ड धरणीवराह हनुमद् गरुड-कण्ठीरवाद्यनेक बिरुदाङ्कितराद महीशूर श्री **कृष्णराज**-वडयर-वरु श्रवण बेलगुलद **चारुकीर्त्ति** पण्डिताचार्य मठक्के श्रवण बेलगुलद देवस्थानगल पडितर दीपाराधने बग्गे दागदोजि-केलसद बग्गे सहा बरसि कोट्ट ग्राम दान शासन क्रमवेन्तेन्दरे ।

किक्केरि तालुकु श्रवणबेलगुल दल्लिरुव दोड्ड-देवरु १ अल्लिरुव चिक्करे देवस्थान ७ चिक्कबेट्टद मेले यिरुव देवस्थान १६ ग्राम दल्लिरुव देवस्थान ८ सहा देवस्थान ३२ के सेह पडितर दीपा राधने वग्गे नडेयुव नगदु तस्तीकु १२० शिवायि **चारुकीर्त्ति** पण्डिताचार्य मठक्के नडयुव कब्बालु ग्राम १ यिदरल्लि पडितर-दीपाराधनेग सालुवदिल्लवाद्दरिन्द मठक्के नडेयुव कब्बालु ग्राम १ यिदरल्लि पडितर-दीपाराधनेग सालुव दिल्लवाद्दरिन्द मठक्के नडेयुव कब्बालु ग्राम मात्र काय माडिसि पडितर दीपाराधने नडेयुव बग्ये श्रवण बेलगुल ग्राम १ उत्तेनहल्लि ग्राम १ होम्मह-ल्लि ग्राम १ यी मूरु-ग्रामवन्नु सर्व्व मान्यवागि अप्पणे कोडि सुबेकेन्दु अरमने समुखद लक्ष्मी-पण्डितरु हजूरल्लरिक-माडि-कोण्डद्दरिन्द सह नगदु तस्तीकु मोत्तोप माडिसि बिट्टु यी-मूरु-ग्राम गलन्नु सह सदरि देवस्थानगल पडितर दीपाराधने मुन्ताद बग्ये **चारुकीर्त्ति**-पण्डिताचार्य मठद हवालु माडिकोट्टु ई ग्रामगल बेरीजु पञ्चसालु हुट्टुवलि पटि कलुहिसुवन्ते तालुकु मजकूर आमीलगे निरूपअप्पणे कोट्टिद्द मेरे आमीलन रुजु मोहर दप्तर दाखले नीसि अर्जियल्लि मलफूपागि बन्द पट्टि पराम्बरिसि कट्ले माडिसिरुव विवर बेरीजु (   ) कस्बा श्रवण बेलगाल ग्राम असलि १ दाखले कोप्पलु २ केरे १ कट्टे २ के सहा बेरीजु (   ) पैकि वजा जारि थिना मलि

(यहाँ तीनों ग्रामों की आय का पाँच साल का पूरा ब्योरा दिया है)

यी मैरे यिरुव ग्रामगलु यिदर दाखले ग्राम करे कट्टे मुन्तागि सदरि बेलगुलदल्लिरुव दोड्डु देवरु मुन्तागि ३२ देवस्थान मलयूरु बेट्ट मेले यिरुव देवस्थान १ सहा मूवत्त मूरु-देवस्थानद पडितर दापाराधने रथोत्सव मुन्ताद बग्गे यी-देवस्थान गलिगे वर्षम्प्रति दागदोजि आगतक्कद्दु माडिसतक्क बग्ये सहा आत्रेय सगोत्र आश्वलायन सूत्र ऋक-शाखानुवर्ति गलाद यिम्मडि कृष्णराज वडयरवर पौत्रराद चामराज वडयरवर पुत्रराद श्रीमत्समस्त भूमण्डल मण्डलायमान निखिल-देशावतंस-कर्नाटक जनपद सम्पदधिष्ठानभूत श्रीमन् महीसूर महासंस्थान-मध्य देदीप्यमानाविकल कलानिधि कुल क्रमागत राज क्षिति-पाल प्रमुख निखिल राजाधिराज महाराज चक्रवर्ति-मण्डलानु-भूत दिव्य रत्न सिंहासनारूढ श्रीमद् राजाधिराज राज परमेश्वर प्रौढ प्रतापाप्रतिम वीर-नरपति विरुदेन्तेम्बर गण्ड लोकैक वीर यदु कुल पय पारावार कलानिधि शङ्ख चक्राङ्कुश कुठार मकर-मत्स्य शरभ शाल्व गण्डभेरुण्ड धरणीवराह हनूमद् गरुड-कण्ठीर वाद्यनेक बिरुदाङ्कितराद महीसूर श्री-कृष्णराज वडयरवरु सर्वमान्यवागि अप्पणे-कोडिसि-धेवेयाद-कारण यी-ग्रामगलन्नू यी विकृति संवत्सरदारभ्य मठद हवालु माडिकोट्टु निरुपा-धिक सर्वमान्य वागि नडसिकोण्डु बरुवन्ते तालुकु मजकूर ग्रामीलगे सन्नदु अप्पणे कोडिसिधोतागि सदरि सन्नदिन मेरे या मूरु ग्रामगल यल्ले चतुस्सीमा वलगण गद्दे बेद्दलु मने हण केम्पु नूलु उप्पिन मोले योचलु पैरु पुर वर्ग येरु काणिके नाम

काणिके गुरु काणिके काणिक बेडिके कन्निगाद पॅम्मु आल पोम्मु हट्टि पोम्मु मार्ग करगपडि सुङ्क पोम्मु जाति कूट समया चार हुल्लु हण चरादाय होरादाय सीगे मङ्कि पलङ्ग पोप्पलि गिड गावलु ब्राह्मण निवेशन शूद्र निवेशन सोप्पिन ताट तिप्पे हल्ल श्रीगन्ध होरताद मर वलि फल-वृक्ष मदिक मुन्ताद आ सकल स्वाम्यवन्नु रूढिसि कोल्लुत्ता श्रवण बेलगुल ग्रामदल्लि नेरेयुव मन्ने-सुङ्कद हुट्टु वलियन्नु तेग दुकोल्लुत्ता यी-ऐवजिनल्लि देवर सेवेगे उपयोग माडिकोल्लुत्ता बरुवदु यी ग्रामगलल्लि होसदागि केरे कट्टे काल्वे अणे मुन्तागि कट्टिसि बाजे-बाबु मुन्तागि याव बाबिनल्लि येनु हेच्चु हुट्टु वलि माडि कोण्डागयू सदरि देवर सेवे मुन्ताद्दक्के उपयोग-माडिकोल्लुवदु यम्बदागि श्रवण बेलगुलद चारुकीर्त्ति पण्डिताचार मठक्के आत्रेय सगोत्र आश्वलायन सूत्र ऋक शाखानुवर्त्ति गलाद यिम्मडि कृष्णराज वडयरवर पौत्रराद चामराज वडेयरवर पुत्रराद श्रीमत्समस्त भूमण्डल मण्डनायमान-निखिल देशावतंस कर्नाटक जनपद-सम्पदधिष्ठानभूत श्रीमन्महीशूर महासंस्थान मध्य देदीप्यमानावि कल-कलानिधि कुल क्रमागत राज क्षितिपाल प्रमुख निखिल राजाधिराज महाराज चक्रवर्ति मण्डलानुभूत दिव्य रत्न सिंहा सनारूढ श्रीमद् राजाधिराज राज परमेश्वर प्रौढ प्रतापाप्रतिम-वीर नरपति बिरुदेन्तेम्बरगण्ड लोकैक वीर यदु कुल पय पारा वार कलानिधि शङ्ख चक्राङ्कुश कुठार मकर मत्स्य शरभ साल्व गण्डभेरुण्ड धरणी वराह हनुमद्गरुड कण्ठीरवाद्यनेक-बिरुदाङ्कि-

तराद महीशूर श्रीकृष्णराज वडयर वरु बलगुलद देवस्थान गल पण्डितर दीपाराधने रथोत्सव वर्षम्प्रति आगतकक दाग-दोजि-केलसद वग्ये सहा बरैसि कोट्ट सर्वमान्य ग्राम-साधन सहि ॥

आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च
द्यौर्भूमिरापो हृदय यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये
धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्त ॥ ६ ॥
स्वदत्ताद्विगुणं पुण्य परदत्तानुपालन ।
परदत्तापहारेण स्वदत्त निष्फल भवेत् ॥ ७ ॥
स्वदत्ता पुत्रिका धात्री पितृ दत्ता सहोदरी ।
अन्यदत्ता तु माता स्याद् दत्ता भूमि परित्यजेत् ॥८॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिं वर्ष सहस्राणि विष्टाया जायते कृमि ॥ ९ ॥
मद्वशजा परमहीपतिवशजा वा
ये भूमिपास्सततमुज्ज्वलधर्मचित्ता ।
मद्धर्ममेव सतत परिपालयन्ति
तत्पादपद्मयुगल शिरसा नमामि ॥ १० ॥

व **तारीख ८** न माहे **आगिष्ट सन् १८३०** ने यिसविखत्त अरमने सुबराय मुनशि हजूरु पुरनूरु सदरि अपणे-कोडि-सिरुव मेरिगे असलि-ग्राम मूरु दाखलि ग्राम यरडु केरे वन्दु कटे मूरक्के सह जारि यिनामति सिवायि सालियाना कण्ठि-रायि वम्भैनूरु अरुवतारु वरहालु व्याले बेरीजु उल्ल यी ग्राम-

गलन्नु निम्म हवालु-माडिकोण्डु देवस्थानगल दीपाराधने पडितर बत्सव मुन्तागि निरुपाधिक सर्वमान्यवागि नडसि कोण्डु बरुवदु रुजु श्रीकृष्णा ।

(यहाँ मुहर लगा है)

[इस सनद का भावार्थ लेख नं० ४४१ में गर्भित है ।]

४३५ (३५५)

मठ मे अनन्तनाथ स्वामी की प्रभावलि की पीठ पर

(शक स० १७७८)

(ग्रथ और तामिल)

श्रीमदनन्तनाथाय नम

अष्टासप्तत्यधिकात्सप्तशतोत्तर सहस्रकाद्गुणिते ।
शालिवाहन शक नृप-सवत्सरके समायाते ।। १ ।।
एकान्नविंशतियुतात्पञ्च शत-सहस्र युग्मकाद्गुणिते ।
श्री वर्द्धमान जिनपति मोक्षगताब्दे च सञ्जाते ।। २ ।।
एक न्यून शतार्द्धात्प्रभवादि गताब्दके सङ्गुणिते ।
एव प्रवर्तमाने नल-नामाब्दे समायाते ।। ३ ।।
मीने मासि सिते पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुन ।
अवाक्काशीति विख्यात बेल्गुले नगरे वरे ।। ४ ।।
भण्डार-श्री जैन गेहे श्री विहारोत्सवाय च ।
आजवञ्जव-नाशाय स्व स्वरूपोपलब्धये ।। ५ ।।

श्री चारुकीर्त्ति-गुरुराडन्तेवासित्वमायुषाम् ।
मनारथ-समृद्धर्यै सन्मतिसागर वर्णिना ॥ ६ ॥
धरणेन्द्र शालिणा शुम्भत्कुम्भकोण उपेयुषा ।
अनन्तनाथ बिम्बोऽय स्थापितस्सन्प्रतिष्ठित ॥ ७ ॥
श्री पञ्चगुरुभ्यो नम ।

४३६ (३५६)

उसी मठ मे गोम्मटेश्वर की प्रभावलि की पीठ पर

(शक स० १७८०)

(ग्रन्थ और तामिल)

श्री श्री-गोमटशाय नम

अशीत्यधिक–सप्त–शतोत्तर–सहस्र–सङ्गणित–शालिवाहन शक वर्षे एकविशत्यधिक-पञ्चशतोत्तर द्विसहस्र-प्रमित श्रीमहति महावीर वर्द्धमान-तीर्थङ्कर मोक्षगताब्दे एकपञ्चाशद्गुणित प्रभ-वादि सवत्सरे-मत्ति प्रवर्तमान कालयुक्ति नाम सवत्सरे दक्षिणा-यने ग्रोष्मकाले आषाढ-शुक्ल पूर्णिमायां शुभतिथौ श्री दक्षिण काशी निविशेष-श्रीमद् बेल्गुल भण्डार-श्रीजिनचैत्यालये नित्य-पूजा-श्रीविहारमहोत्सवार्त्थं श्रीमच्चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य्य वर्य्याग्रान्तेवासि श्री सन्मतिसागर-वर्णिना अभीष्ट ससिद्ध्यर्थे श्रीमद् गोमटेश्वर स्वामि-प्रतिकृतिरिय आतञ्जपरीमधिवसद्भ्यां

गोपाल आदिनाथ श्रावकाम्या प्रतिष्ठापूर्वक स्थापित ।। भद्र भूयात् ।।

४३७ (३५७)

नवदेवता मूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

श्री शालीवाहन शकाब्दा १७८० प्रभवादि गताब्दा ५१ ल् शेल्लानिन्र कालयुक्ति नाम सवत्सर आषाढ शुद्ध पूर्णिमा तिथियिल् श्रीमद् बेल्गुलमठत्तिल् श्रीमन् नित्य पूजा निमित्त श्रीमत्पञ्चपरमेष्ठि प्रतिबिम्बमानदु तञ्जनगर पेरुमाल् श्रावकराल् सेय्वित्त उभय ।। वर्द्धता नित्य मङ्गल ।।

[बेल्गुल के मठ में नित्य पूजन के लिए तञ्ज नगर के पेरुमाल श्रावक ने यह पञ्चपरमेष्ठी की मूर्त्ति उक्त तिथि को अर्पित की ।]

४३८ (३५८)

गणधर मूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

वृषभसेन गणधरन् भरतेश्वर चक्रवर्त्ति गौतमगणधरन् श्रेणिक महामण्डलेश्वरन (कन्नड म) कलमदल्लिरुव पदुमैय्यन धर्म्म ।

४३८ (३५८)

पञ्चपरमेष्ठि मूर्त्ति पर

(ग्रन्थ और तामिल)

बेलिगुल मटत्तुक्कु मन्नार्कोविल् सिन्नु मुदलियार् पेण्शादि पद्मावतियम्माल् उभय शुभ ।

[मन्नार्कोविल के सिन्नुमदलियार् की भार्या पद्मावतियम्माल् न बेल्गुल मठ को अर्पित की]

४४० (३६०)

चतुर्विंशति तीर्थङ्करमूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

स्वस्ति श्री बेल्गुलमठस्य तच्चूल-अर्जिकाधर्म

४४१ (३६१)

अनन्ततीर्थंकर प्रभावली के पृष्ठभाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

श्री शालिवाहन शकाब्दाः १७८० श्रीमत् पश्चिमतीर्थंकर मोक्षगताब्द २५२१ प्रभवादिगताब्द ५१ ल् शेल्लानिन्र कालयुक्तिनामसंवत्सर आषाढशुद्धपूर्णिमातिथियिल् श्रीमत्बेल्गुलनगरभण्डारजिनालयत्तिल् अनन्तव्रतोद्यापनानिमित्त श्री

वृषभाद्यनन्ततीर्त्थंकरपर्य्यन्तचतुर्दशजिनप्रतिबिम्बमानदु ' तज्ज नगर शन्तिर अप्पावु श्रावकराल् शोव्निन्त्त उभय वर्द्धता नित्यमङ्गल ॥

[वेङ्गुळ नगर की भण्डार वस्ति में अनन्तव्रत के पूर्ण होने पर उक्त तिथि को तज्ञनगर के शन्तिरम् अप्पाउ श्रावक ने प्रथम चतुर्दश तीथकरो की मूर्त्तियाँ अर्पित कीं ।]

४४२ (३६३) श्री चामुण्डरायन बस्तिय सीमे ।

४४३ (३६४) श्री नगर जिनालयद केरे ।

४४४ (३६५) श्री चिक्कदेवराजेन्द्रमहास्वामियवरकल्याणि

४४५ (३६६) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-वर्द्धन होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क

४४६ (३६७)

जक्किकट्टे के दक्षिण मे एक चट्टान पर जिन मूर्त्ति के नीचे

श्रीमत्परम गम्भीर स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र सिद्धान्त देवर गुड्डि दण्डनायक-गङ्गराजनत्तिगे दण्डनायक-बोप्पदेवन

तायि जक्कैमव्वे मोक्ष-तिलकम नोन्तु नोम्बरे **नयणाद** देवर माडिसि प्रतिष्ठेय माडिसिदरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

४४७ (३६८) स्वस्ति श्रीमत्**सुभचन्द्र**सिद्धान्तिदेवर गुड्ड श्रीमनु महाप्रचण्डदण्डनायक **गङ्ग**-पय्यगलत्तिगे **शुभचन्द्र** देवर गुड्डि **जक्कि**-मव्वे केरेय कट्टिसि **नयणन्द** देवर माडि सिदरु मङ्गलमहा श्री श्री ॥

४४८ (३६९) **पुट्टसामि चेन्नणन** कोलद मार्ग ।

४४९ (३७०) **चेन्नणन** कोलद मार्ग ।

४५० (३७१) **पुटसामि** सट्टर मग **चेन्नणन** हालुगोल ।

४५१ (३७२) **चेन्नणन** अमृतकोल ।

४५२ (३७३) **चेन्नणन गङ्ग** बावनी कोल ।

४५३ (३७४) श्री **पुट्टसामि** सट्टर मकलु **चिकणन** तम्म **चेन्नणन** अदि तर्तद कोल जय जया ।

४५४ (३७६) श्री गोम्मट देवर अष्ट विधार्च्चनेगे हिरिय यिकूल द लजन कयिकन्तिय ज बिट्ट दत्तिय श्रीमन्महा **चार्य्यरु** हिरिय **नयकीर्त्ति** देवरु **चिकनय-कीर्त्ति** देवरु आचन्द्रार्कतारबर सलिसु-त्तिहरु मङ्गलमहा श्री श्री श्री **क्षयसवत्सरद** चैत सुद्ध ७ आ । श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु हिरियनयकीर्त्तिदेवर सिष्यरु **चन्द्रदेवर**

सुतालयद चतुर्व्विंशतीर्थंकरिगे रिय
कथ्यलु सासनद सारिगे

[यह लेख अधूरा है । इसके ऊपर और नीच का भाग बिल्कुल ही घिस गया है । लेख में चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविध पूजन के लिए उक्त तिथि को कुछ भूमि के दान का उल्लेख है । इस दान को ज्येष्ठ नयकीर्त्ति और लघु नयकीर्त्ति आच द्राकेतार नियत रक्खे ।]

४५५ (४८०)

मठ मे वर्द्धमान स्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(ग्रथ और तामिल)

श्रीवर्द्धमानायनम । शालीवाहन शकाब्द १७८० श्रीमत्पश्चिमतीर्थङ्करमोक्षगताब्द २५२१ प्रभवादिगताब्द ५१०ल् शेल्लानिन्र कालयुक्ति नाम सवत्सर आषाढ शुद्ध पूर्णिमा तिथियिल् श्रीमद् बेल्गुमठत्तिल् नित्यपूजा-निमित्तमाग श्री सन्मति सागरवर्णिगलुदैय अभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीवीर-वर्द्धमान स्वामिप्रति बिम्ब कच्चिदश शेण्णियम्बाक्क अप्पासामियाल् सैय्वित्त उभय एधता नित्यमङ्गल ॥

४५६ (४८१)

चन्द्रनाथस्वामी की प्रभावली पर

(ग्रथलिपि में)

(शक सं० १७७८)

श्री चन्द्रनाथाय नम ॥

अष्टा सप्तत्यधिकात्सप्त शतोत्तर-सहस्रकाद्गुणिते ।

शालीवाहन शकनृप सवत्सरके समायाते ॥ १ ॥
एकान्न विंशति युतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।
श्री वर्द्धमान जिनपति मोक्ष गताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एकन्यूनशतार्धात्प्रभवादिगताब्दके च सगुणिते ।
एव प्रवर्त्तमाने नलनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुन ।
अवाक् काशीतिविख्यात-बेलगुले नगरे मठे ॥ ४ ॥
श्री**चारुकीर्त्ति** गुरुराडन्तेवासित्व ईयुषा ।
मनोरथ-समृद्ध्यै **सन्मतिसागर**-वर्णिना ॥ ५ ॥
कुम्भकोण पुरस्था श्री नेक्का श्रावकी शुभा ।
स्थापयामास सद्बिम्ब चन्द्रनाथ जिनेशिन ॥ ६ ॥
प्रतिष्ठा पूर्वकन्नित्य-पूजायै स्वोपलब्धये ।
पञ्च ससार कान्तार दहनाय शिवाय च ॥ ७ ॥

भद्र भूयात् ।

४५७ (४८२)

नेमिनाथस्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ अक्षरों में)

(शक स० १७७८)

श्री नेमिनाथाय नम ।

अष्टासप्तत्यधिकात्सप्तशतोत्तरसहस्रकाद्गुणिते ।
शालीवाहनशकनृपसवत्सरके समायाते ॥ १ ॥

एकान्नविंशतियुतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।
श्रीवर्द्धमानजिनपतिमोक्षगताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एकन्यूनशतार्द्धात्प्रभवादिगताब्दके च सङ्गुणिते ।
एव प्रवर्त्तमाने नलनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पौर्णमास्यान्तिथौ पुन ।
अवाक काशीतिविख्यातबेल्गुले नगरे वरे ॥ ४ ॥
भण्डारश्रीजैनगेहे श्रीविहारोत्सवाय च ।
अनन्तभवदावाग्नोशमनाय शिवाय च ॥ ५ ॥
श्रीचारुकीर्त्तिगुरुराडन्तेवासित्वमीयुषा ।
मनोरथसमृद्धयै सन्मतिसागरवर्णिना ॥ ६ ॥
शान्तण्णश्रेष्ठिना शुम्भत्कुम्भकोणमुपेयुषा ।
श्रीनेमिनाथबिम्बोऽथ स्थापितस्स प्रतिष्ठित ॥ ७ ॥

४५८ (४८३)

पण्डित दौर्बलिशास्त्रि के घर शान्ति-नाथ मूर्त्ति के पृष्ठभाग पर

(नागरी अक्षरों मे)

स १५७६ व० शा० १४४१ प्र० कर प्र० कु० सहित पौ० मासे श्रीउस० ज्ञा० सोनीसीहा भार्या धर्म्माई नाम्ना पुत्र सो सिद्धारीया श्रेयोह । वि मासे० शु० प० ६ सोमे श्री शीतलनाथ बिम्ब कारित । प्र० श्री० बृ० त० पाप । श्रीविलसामुस्कुरिभि ।

४५९ (४८४)

गरगट्टे विजयराज्यय्य के घर जिनमूर्त्ति के पाद पीठ पर

श्रीमद् देवणन्दि भट्टारकर गुड्डि मालब्बे कडसतवादिय तीर्त्थद बसदिगे कोट्टलू

४६० (४८५)

गरगट्टे चन्द्रय्य के घर जिनमूर्त्ति के पादपीठ पर

श्रीमत्कण्नबे कन्तियरु कलसतवादिय तीर्त्थद बसदिगे कोट्टरू

४६१ (४८६) मल्लिषेण । ४६२ (४८७) वीरण्न ।

४६३ (४८८) चिकणन तम्म चेन्नणन कोल ।

४६४ (४८९) पुटसामि चेन्नणन मण्टप कोल तोट ।

४६५ (४९०) चिकणन त चेन्नणन कोल ।

४६६ (४९३) हालोरति ।

४६७ (४९४) श्रीजिननाथ पुरद सीमे ।

४६८ (५००)

मठ के दायी ओर तेरिन मण्डप में रथ पर

शालिवाहन शक १८०२ ने विक्रमनामसंवत्सरद माघ शुद्ध ५ ल्लु वीराजेन्द्रप्याटेयल्लू इरुव रायण्नशेट्र अत्तिगे जिन्नमन शेवर्त्त ।

[वीर राजे द्रप्याटे के रायण्नसट्टि की भावज ने प्रदान किया]

श्रवणबेल्गुल के आसपास के ग्रामो के शिलालेख।

जिननाथपुर के लेख

४६६ (३७८)

शान्तीश्वर बस्ती के द्वार पर

स्वस्ति श्रीजगनज बलिय पुनकालर मग जूनिकबन तम्म चोल पेर्म्मडियर मरुलारद गण्ड सावितरदेव स मुग रि ल लरनडि र कादि कोन्दुजाल न्द्र गङ्गर बीडिन उर कचेयरे भु सेमर सुरिगेल कलगमेनितु रि थिसि जसक्के कबन्दद नि तन्न मोम्मक्कलु गमु सिडिल् त मल् तुलिद गेकान्त गोल् मरि सत्तलेङ्कर अन्द पेक्किनेम्ब सि गिङ्ग र सा र परि गुल् तब्ब क ललबे

गङ्गर प जिनतीर्थद बा ल्तल् अग्रगण्यनु ङ्ग चोल स पडवरिगे ॥ सन्दनाग निलेगजन ल्दत लु यवनल्प चन्दम गु दागि यदि जिन पूजेयनेय्दे माडिद ॥ लगच्चित्र तनग बिद ल स न दि महसन्यसन गय्यनिप्प तन्न दिन बर- नेरय त सनु

अमरिद बेम काम सल रद सन्यासनदि दिरन म प नेट्टन्दवदि सङ्ग नि जर्विल्ले बलेद गाविगलात्म येन्तल् चित्त कुडदेयनिरि मोद तिद्दे

[इस अत्य त टूटे हुए लेख के प्रथम भाग में चोल और गङ्ग के नरेशों के बीच घोर युद्ध का और अन्तिम भाग में किसी के समाधि मरण का उल्लेख है]

४७० (३७६)

उसी बस्ती के रङ्गमण्डप मे एक स्तम्भ पर

श्री शुभमस्तु ।

स्वस्ति सद्भुदय शालिवाहन **सक वरुस १५५३ प्रजो**त्पत्य **सवत्सरद पाल्गुण** सुध ३ लु **कम्ममेन्य लोहित** गोत्रद **नल मलि सेट्टि** मग **पालेद पदुमण्णनु** यि बस्ति प्रतिष्टे जीर्नोदार माडिदरु मङ्गल महा श्री श्री श्री

[उक्त तिथि को कम्ममे य लोहितगोत्र के नलमलिसट्टि के पुत्र पालेद पदुमयण्ण ने इस बस्ति का जीर्णोद्धार कराया ।]

४७१ (३८०)

शान्तीश्वर बस्ति मे शान्तीश्वर की पीठिका पर

स्वस्ति श्री **मूलसङ्घ-देशियगण पोस्तकगच्छद** कोण्डकुन्दान्वय कोल्लापुरद सावन्तन बसदिय प्रतिबद्धद श्री **माघनन्दि** सिद्धान्त देवर शिष्यरु **शुभचन्द्र** त्रैविद्य देवर शिष्यरप्प **सागरणन्दि** सिद्धान्तदेवरिगे वसुधैक बान्धव श्रीकरणद रेचिमय्य दण्डनायकरु शान्तिनाथ देवर प्रतिष्ठेय माडिधारा पूर्व्वक कोट्टरु

४७२ (३८१) **सङ्गम** देवन कोडगिय मने

४७३ (३८२) श्रीमतु **त्रिकालयोगि**गलु मठ मोदलो-

लिर्दरु श्री **मूलसङ्घद** **अभयदेव**रु नाम
दे तम्मुक्तिपदन र इद ॥

४७४ (३८३) स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय शालिवाहन **शक वरुष १८१२** नय **विरोधि** नाम सवत्सरद **वैशाख** बहुल पञ्चमियल्लु श्रीमद् **बेल्गुल** निवासियागिद्द **मेरुगिरि** गोत्रजराद श्री **बुजबलैय्यनवरि**गे निश्रेय सुखाभ्युदय प्राप्त्यर्थ वागि प्रतिष्ठेय माडिसिद ॥

[यह लेख अरगलु बस्ति की प्रतिमा पर है]

४७५ (३८५)

जिननाथपुर में तालाब के निकट एक चट्टान पर

साधारण सवत्सरद श्रावण सु १ । श्री । श्रीमन्महाम ण्डलाचार्य्यरु राज गुरुगलुमप्प हिरिय **नयकीर्त्ति** देवर शिष्यरु **नयकीर्त्ति** देवरु तम्म गुरुगलु **बेक्कन**लु माडिसिद बसदिय चेन्न पारिश्वदेवर अष्ट विधार्च्चनेगे हिरिय-जक्कियवेय करेय हिन्दण नन्दन वनदोलगे गदे सलगे एा २ र्व्वक माडिकोट्टरु मङ्गल महा श्री श्री श्री ॥

[उक्त तिथि को महामण्डलाचार्य्य राजगुरु हिरिय नयकीर्त्तिदेव के शिष्य नयकीर्त्तिदेव ने अपने गुरु नेक्क की बनवाई हुई बस्ति के चेन्न पार्श्वदेव की अष्टविध पूजन के लिए उक्त भूमि का दान दिया ।

४७७ (३८६)

उसी ग्राम मे एक चट्टान पर

सि श्री भन गिरे माडि
दव्रतिय मुनिराजरिन्द विलु भरदिन्द
समाधि मु नाडु प्रभु आतमु ।

नेरेदिन्तल्लरुमिद्दु कोट्टरमलाम्भोराशियु मेरु भू
धरमु चन्द्रनुमर्कनु वसुधेयु निल्वन्नेग सल्विन ॥ १ ॥

इन्तु ई धर्मम किडिसिदवरु गङ्गेय तडियलेक्कोटिमुनीन्द्रर
कविलेयु ब्राह्मणरुम कोन्द ब्रह्मत्तियलु होहरु ।

[इस टूट हुए लेख मे किसी दान का उल्लेख है जिसके विच्छेद स गङ्गा के तीर पर सात करोड ऋषियो, कपिला गौओ और ब्राह्मणों की हत्या का पाप होगा ।]

४७७ (३८७) श्रीमतु **सिङ्ग्यप** नायकर कोमरन निरू- [काले गौड की भूमि में] पदिन्द **बेक्कन गुरुवप सोवपनोलगाद** प्रभुगलु**चामुण्डरायन** बस्तिगे समर्पिसिद
सीमे श्री ।

[सिङ्ग्यप नायक की आज्ञा से बेक्कन के गुरुवप सावप आदि 'प्रभुओं' ने यह भूमि चामुण्डराय बस्ति को अर्पण की ।]

४७८ (३८८) श्री **विष्णुवर्धन** देवर हिरियदण्डनायक
गङ्गपय्य स्वामिद्रोह घरट्ट श्रीबेलुगुलद

तीर्त्तंदलु जिननाथ-पुरवमाडि य । स्तयस
रदलु ह घरट्टनेम्ब कोलग
जगलवाडिद विष्णुवर्द्धन देवर
को परिहार ॥ द्रोह्घरट्ट नेच्च कोलु ।

इस टूटे हुए लेख में विष्णुवर्द्धन नरेश के प्रधान दण्डनायक गङ्गपय्य द्वारा बेल्गुल में जिननाथपुर निर्माण कराये जाने का उल्लेख है]

४७९ (३८९)

जिननाथपुर मे शान्तिनाथ बस्ति से पश्चिमोत्तर की ओर एक खेत मे समाधिमण्डप पर

(शक सं० ११३६)

ओं नम सिद्धेभ्य ।

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु राज-गुरुगळेनिप बेलि-कुम्बद श्री नेमिचन्द्र पडितदेवरेन्तप्परेने ॥

वृत ।

परमजिनेश्वरागम विचार विशारदनात्मसद्गुणो
त्कर-परिपूर्न्ननुन्नत सुखार्त्थि विनेय जनोत्पल प्रिय ।
निरुपम नित्यकीर्त्ति धवलीकृत नेन्दु लोकमा
दरिपुदुसूरि निधिचन्द्रमन मुनि नेमिचन्द्रनु ॥

अवर प्रिय शिष्यरप्प श्रीमद्बालचन्द्र देवर तनयन स्वरूप
निरूप नन्तणान वाग्विलासवार्प्पे

तण्णीन सच्चरित्र गदोलु ॥ जन जिन मणि निहा
क नियवे न रूप यौवन गुणसम्पत्तियिन्दात
वत्तिगु भुवन भूषण बालचन्द्र रुहक ल घ
बहल चदु गजराज तीव्र-ज्वरो कर्कश
प्रतिका रिय सक-वर्षद ११३६ नेय श्रीमुखसवत्स-
रद कार्त्तिक शुद्ध ५सो । प्रभात-समयदोल् सन्यसन
समन्वित ॥

कन्द ।

पञ्च-नमस्कार मन
सञ्चलिसदेन्तोप्पुदु सकल
वदु , गरुह
र दिविज-वधुगे वल्लभनाद ॥

यम्म सादरक
य यल्लरु ॥ अन्तु देवर धि यर दहन स्तानदोल्
परोक्ष निमित्तवागि वैरोजनं माडिसिद बालचन्द्र
देवर मग न शिलाकूट ॥ मात शील-व्रत
गुण द विभव भूतलदोल् कालब्बेये सीतेगे
रुग्मिणिगे रतिगे सरि दोरे सम ,वेनिसिदा महासति
त्तयि स्तानमनरिदे भाव सवत्सरद जेष्ट-
ब । द्वि । निशान्तदोल् सल्लेखन विधियिं समाधिय पडेदु
स्वर्गा-प्राप्तेयादलु ॥ श्रीशान्तिनाथाय ॥

[इस टूटे हुए लेख में बेलिकुम्ब के महामण्डलाचार्य नेमिचन्द्र पण्डित देव के प्रिय शिष्य व बालचन्द्रदेव के तनय के उक्त तिथि को समाधिमरण का उल्लेख है। उनकी श्मशानभूमि पर यह शिलाकूट बनवाया गया। लेख के अन्तिम भाग म साध्वी कालब्बे के समाधिमरण का उल्लेख है।]

जिन्नेनहल्लिग्राम के लेख

४८० (३९०) श्री शकवर्ष १५८६ प्रमादी च संवत्स
रद वैशाख बहुल ११ यल्लि समुद्रादीश्वर
स्वामियवर नित्यसमाराधने नित्योत्सह
कोलतोट मण्टपद सेवेगे पुटसामि सेट्टियर
मग चेन्नणनु बिट्ट जिन्नेयन हल्लिय ग्राम
मङ्गल महा श्री श्री श्री।

[उक्त तिथि को पुटसामि के पुत्र चन्नण ने समुद्रादीश्वर (चन्द्रनाथ) स्वामी के नित्य पूजनोत्सव के व कुण्ड, उपवन और मण्डप की रक्षा के हेतु जिन्नयन हल्लि ग्राम का दान किया]

४८१ (३९१) श्री चामुण्डरायन बस्तिय सीमे ॥ श्री

हालुमत्तिगट्ट ग्राम के लेख

४८२ (३९२) हस   विक   वरु   सङ्कणनग
कोडगि तोट   दा सिला ससन
करण वि कन   सङ्कणनगवू

चिकसङ्कण प्र न बरकोट कोडग
ला ससन मङ्गल महा श्री श्री ।

[इस टूटे हुए लेख में एक उद्यान के दान का उल्लेख है]

४८३ (३६३) दे य नायकन मग मादेय नायक
माडिसिद नन्दि

[मादेय नायक ने नन्दि निर्माण कराई]

कणठीरायपुर ग्राम के लेख

४८४ (३६५) श्रीमतु पणिडतदेवरुगल गुड्डुगलु बेलु-
गुलद नाड चेन्नण-गौण्डन मग नागगोण्ड
मुत्तगदहोन्न लिय कल्लगोण्ड बैर गोण्ड-
नोलगाद गौडुगलु मङ्गायि माडिसिद बस्तिगे
कोट्ट बोड्डुर कट्टेय गद्दे बेद्लु यि-धर्म्मक्के
तपिदवरु वारणासियलु हस्रकपिलेय
कोन्द पापके हाह ल महा श्री श्री श्री।

[पण्डितदेव के उक्त शिष्यों न मङ्गायि की बनवाई हुई बस्ति को चड्डुरकोट्टे की भूमि प्रदान की। जो कोई इस दान का विच्छेद करे उस बनारस में एक हजार कपिला गाओ की हत्या का पाप हो।]

४८५ (३६६) श्री चामुण्डरायन बस्ति सीमे ।

साणेन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३९७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम गम्भीर स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन शासन ॥ १ ॥
भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पद्यताम्प्रतिविधान हेतवे ।
अन्यवादि मद हस्ति मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥

नम सिद्धेभ्य ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरुहन्ताण ॥

स्वस्ति श्री कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य विनिर्म्मित ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ५ स ४० पक्ति तक गङ्गराज का वही वर्णन है जो लेख न ६० (२४) के तीसरे पद्य से आगे १४ वे पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द नूर्म्मडि धन्यनल्ते ॥ १५ ॥

इससे आगे—

अन्तु बेडिकोण्डु श्री पार्श्वदेवर पूजेग कुक्कुटेश्वर देवर्ग्गे बिट्टर सक वर्षं १०४१ नेय विलम्बि सवत्सरद फाल्गुण शुद्ध दसमि ब्रहवारदन्दु शुभचन्द्र-सिद्धान्ति-देवर काल कर्च्चि बिट्ट-दत्तिय गोविन्दवाडिगे मूडण-सीमे ईशान्य दिशेय एरेय को तोण्डिगेरेय निरुह कल्लहनहल्लिग होद बट्टेय

दिब्बेय सीरण हुलुमाडिय गडि तेङ्कलु अर्हंनहल्लियिन्दा मदिपुरक्क हिरिय इवर बेट्टक्क होद हेब्बट्टेये गडि हडुवलु हिरिय हल्ल नञ्जुगेरे बेक्कननिप बडकलु गङ्गसमुद्रक्के चल्यद हडुवण दिण्नेयि पडुवलु गडि यिन्ती चतुस्सीमेय पूर्व्वि बक्कन नु प्रत्यधिवासद पडु गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियरु सेट्टि गण्डनारायण सेट्टियु मुख्यवाद नकर समूहमुमिद्ं माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्मम प्रतिपालिसु-वर्गों महा पुण्य अक्कु ॥

वृत्त ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेयूदे काव पुरुषग्गायु महा-श्रीयुम-
क्केयिद कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-
शियोलेक्कोटि-मुनीन्द्रर कविलेय वेदाढ्यर कोन्दुदो-
न्दयससाग्गुमेनुत्त सारिदपुदी शैलाक्षर सन्तत ॥ १६ ॥

बिरुद रूवारि मुख तिलक गङ्गाचारि खडरिसिद ॥

[इस लेख में लेख नं० ६० (२४०) के समान गङ्गराज के कीर्त्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त तिथि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) रिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्देय

न्नडेत्ति कवि सेटियु मडना बिट गद्दे

सलगे ओन्दु कोलग ।

[इसमें कवि सेट्टि के कुछ भूमि के दान का उल्लख है]

४८८ (३९९) श्री वृषभस्वामि

(खण्डित मूर्त्ति के पादपीठ पर)

४८९ (४००) श्री मूलसङ्घद देशिगणद पोस्तक गच्छद

श्री शुभचन्द्र सिद्धान्त देवर गुड्डि ज

क्कियब्बे दण्डनायकिति साहलि

(देवगे प्रतिष्टेय माडि जक्कियबे

डर मग पयमगद स चुनरेय

दवाडिय यलु सलगे बेद्दले

कालग ५ गोविन्द पडिय कोलग १

बेद्दले कण्डुग ।

[शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या जक्कियब्बे ने मूर्त्ति की स्थापना कराई और गोविन्द वाडि की उक्त भूमि अर्पण की ।]

मुण्डहल्लिग्राम का लेख

४९० (४०७)

सवत्सरद मार्गशिर शु १० ब्रहवार

न्महामण्डलाचार्य्यरु नेमिचन्द्र

पण्डितदेवरु पट्टणस्वामि नागदेव

हेग्गडेवु केम्बगौडनु न मग मार

गौड केरेय कट्टिदनलेयेन्दु आत
हारिसुवुदिल्ल ता तेरुव अय्दु हणविन
दे बेद्दले हडुवण मुत्तेरि सीमे
आतन म पर्य्यन्त सलुवन्तागि
कोट पतले प्रलिहिदव कविलेय कोन्द ॥

[यह लेख कुछ भूमि का पट्टा है। इसमें महामण्डलाचार्य्य नेमिचन्द्र पण्डित देव का उल्लेख करके कहा गया है कि मारगौड ने एक तालाब बनाया इसके लिए नागदेव हेग्गडे और केञ्चगौड ने उसे सदा के लिए उक्त भूमि का पट्टा दे दिया।]

बेक्कग्राम मे बस्ती के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक स० १०९५)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥

श्रीकान्तापीनवक्षोरुहगिरिशिखरोज्जृम्भमान विशाल
लोकोद्यत्तापलोपप्रवणविलसित वीरविद्विड महीपा
नेकव्यामुक्तसञ्जीवनबहुलितोद्यद्गुणस्तोममुक्ता-
नीक निष्कण्टक निश्चलमेनलेमगु होय्सलक्षत्र-
वश ॥ २ ॥

भ्रदरोल्मौक्तिकदन्ते पुट्टिदनिलापालौघचूडामणि
त्वदिनुद्यद्गुणशोभेयि स्वरुचियि सद्वृत्तराराजित-

त्वदिनत्युन्नतजातियिं सममेनल्सङ्ग्रामरङ्गाग्रदोल्
मदवद्वैरिकुलप्रतापि **विनयादित्य** धराधीश्वर ॥३॥

क ॥ **विनयादित्यन** तनय
जननुतन् **एरेयङ्ग**भूभुज तत्तनुज ।
विनुत **विष्णुनृपाल**
मनस्वि तदपत्य नेग **नरसिंह** ॥ ४ ॥

वृ ॥ नतनरपालजालक विशालविजृम्भितबालभासुरो-
द्धततिल गलनाहवरङ्गरामनू
र्ज्जितनिजपुण्यपुञ्जबलसाधितसर्व्व
महोन्नतिकेयिन्देसेद **नरसिंह** भूभुज ॥ ५ ॥

क ॥ आ **नरसिंह**नृपाङ्ग
भूनुतं पट्टमहदेवि तत्सतियादल् ।
मानिनिय् **एचल** देवियें
दानगुणख्यातकल्पलतेवोल् आ ॥ ६ ॥

वृ ॥ ललनालीलेगे मुन्नवेन्तु मदन पुट्टिर्द्दना विष्णुग
विलसच्छ्रीवधुविङ्गवन्ते नरसिंहच्छोणिपालङ्गव् ए
चलदेविप्रियेग परार्त्थचरित पुण्याधिक पुट्टिद
बलवद्वैरिकुलान्तक जयभुज **बल्लाल** भूपालक ॥ ७ ॥
गतलील **लाल**नालम्बितबहलभयोग्रज्वर **गूर्ज्जर**
सन्धृतशूल **गौल**नङ्गीकृतकृशतरसम्पल्लव **पल्लव** ।
प्रोज्झितचोल **चोल**नाद कदनवदनदोल् भेरिय पोय्से वी-
राहितभूभृज्जालकालानलवतुलभुज **वीरबल्लालदेव** ॥८॥

रिपुराजद्राजिसम्पत्सरसिरुह शरत्कालसम्पूर्णचन्द्र
रिपुभूपापारदीपप्रकरपटुतरोद्भूतभूरिप्रवात ।
रिपुराजन्यौघ खलुसौ लोग्रप्रताप
रिपुपृथ्वीपालजाल क्षुभितयमनिव **वीरबल्लालदेव** ॥९॥

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर । **द्वारावती**-पुरवराधीश्वर । तुलुवबलजलदविलयानिल । दायाददुर्ग-दावानल । **पाण्ड्यकुलकुलकुधरकुलिशदण्ड** । गण्डभेरुण्ड । मण्डलिकबेपटेकार । **चोलकटकसूरेकार** । सङ्ग्रामभीम । कलि-कालकाम । सकलवन्दिजनमनस्सन्तर्प्पण प्रवणतरवितरणविनोद । **वासन्तिकादेवी**लब्धवरप्रसाद । यादवकुलाम्बरद्युमणि । मण्डलिकचूडामणि । कदनप्रचण्ड । **मलपरोल्** गण्ड नामादि प्रशस्तिसहित । श्रीमत् **त्रिभुवनमल्ल तलकाडु कोंगु नङ्गलि नोलम्बवाडि बनवसे हानुङ्गलुगण्ड** भुजबलवीरगङ्गप्रताप**हो**य्सलवल्लालदेवरु दक्षिणमहीमण्डलम दुष्टनिग्रह शिष्टप्रतिपालन-पूर्व्वक सुखसङ्कथाविनोददिं **दोरसमुद्रदोल्** राज्य गेय्युत्तिरे ॥ तत्पितामह **विष्णु**भूपालपादपद्मोपजीवि ॥

वृ ॥ नुते **लोकाम्बिके** माते रूढजनक श्रीयक्षराज यशो
न्विते थी **पद्मलदेवि** वल्लभे जगद्विख्यातपुण्याधिप ।
सुतनी श्री **नरसिंह**देवसचिवाधीश जिनाधीशनी
प्सितदैव तनगेन्दोडें विदितनो श्री**हुल्ल**दण्डाधिप ॥ १० ॥

क ॥ जनकतनुजातेयिन्द
वनजोद्भववनितेयिन्दवग्गलवेनिपल ।

जननुत **पद्मलदेविय—**
नून पतिव्रतदिनमलचतुरतेयिन्द ॥ ११ ॥

तत्पुत्र ॥

विनुत **नयकीर्त्ति** मुनिपद
वनरुहभृङ्ग विदग्धवनिताङ्ग ।
कनकाचलगुणतुङ्ग
घनवैरिमदेभसिंहनी **नरसिंह** ॥ १२ ॥

स्वस्ति श्री **मूलसङ्घ**निलयमूलस्तम्भरु निरवद्यविद्यावष्टम्भरु **देशियगण** गजेन्द्रसान्द्रमदधारावभासरु । परसमयसमुत्पादित-सन्त्रासरु । **पुस्तकगच्छ**स्वच्छसरसीसरोजविराजमानरु । **कोण्डकुन्दान्वय**गगनदिवाकररु । गाम्भीर्य्यरत्नाकररु । तपश्रीकन्दरुमप्प **गुणभद्र**सिद्धान्तदेवर शिष्यर् म्महामण्डला चार्य्य **नयकीर्त्ति** सिद्धान्तदेवरेन्तप्परेन्दडे ॥

वृ ॥ स्मरशस्त्राम्बुजदण्डचण्डमदवेतण्ड दयासिन्धु
बन्धुरभूभृद्वरतुङ्गमोहबहलाम्भोरासिकुम्भोद्भव ।
धरयोल्ता नेगल्द भयक्षयकर लोभारिशोभाहर
स्थिरनी श्री **नयकीर्त्ति**देवमुनिप सिद्धान्तचक्रेश्वर ॥१३॥

तच्छिष्यर् ॥

उरगेन्द्रक्षीरनीराकररजतगिरिश्रीसितच्छत्रगङ्गा
हरहासैरावतेभस्फटिकवृषभशुभ्राभ्रनीहारहारा
मरराजश्वेतपङ्केरुहहलधरवाकशङ्खहसेन्दुकुन्दो

त्करचन्द्रचत्कीर्त्तिकान्त बुधजनविनुत **भानुकीर्त्ति** व्रतीन्द्र ॥ १४ ॥

सिद्धान्तोद्धतवार्द्धिवर्द्धनविधौ शुक्लैकपञ्चोद्गत
स्ताराणामधिपो जितस्मरशर पारात्थ्र्यपारङ्गत ।
विख्याता **नयकीर्त्ति** देवमुनिपश्रीपादपद्मप्रिय
स्स श्रीमान्भुवि **भानुकीर्त्ति** मुनिपा जीयादपारान्धि॥१५॥

शक वर्षद १०६५ नेय **विजयसंवत्सरद पौष्यबहुल चौतिमङ्गलवारदन्दु** उत्तरायण सङ्क्रान्तियल्लि **भानुकीर्त्ति** सिद्धान्त देवरनधिपतिगलागि माडि तद्गुरुगलप्प **नयकीर्त्ति** सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगलगेधारापूर्व्वक माडि ॥

वृ ॥ अचलश्रीयुत**गोम्मटेश**विभुग श्रीपार्श्वदेवङ्गवु
द्ध चतुर्व्विंशतितीर्त्थकर्गवेसवी सत्पूजेग भोगक ।
रुचिरान्नोत्करदानक मुददे बिट्ट **बेक**नेम्बूरनु
द्ध चरित्र सले मेरुवुल्लिनेगवी **बल्लाल**भूपोत्तम ॥ १६ ॥

क्रमदिं **गोम्मट**तीर्त्थपूजेगवशेषाहारदानक्कवु
त्तमर मुख्यरनागि माडि विदित श्री भानुकीर्तीश्वर ।
विमदङ्गी **नयकीर्त्ति** देवयतिगाकल्प सलल्**बेक**न
सुमनस्क विभु**हुल्लप** बिडिसिद श्री **वीरबल्लालनि** ॥१७॥

ग्राम सीमे ॥ (यहाँ सीमा का वर्णन है) इदु **बेक्कन** चतुस्सीमे ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा (इत्यादि)

[लेख न० १५४ के समान होयसल वंश के परिचय व वीरबल्लाल देव के प्रतापवर्णन के पश्चात् बल्लाल नरेश के दण्डाधिपति हुल्ल का परिचय है। हुल्ल यक्षराज और लोकाम्बिके के पुत्र थे। उनकी पत्नी का नाम पद्मलदेवी और पुत्र का नरसिंह सचिवाधीश था। हुल्ल जिन पदभक्त थे। इसके पश्चात् कहा गया है कि उक्त तिथि को गुणभद्र के शिष्य नयकीर्त्ति के शिष्य भानुकीर्त्त व्रतीन्द्र को बल्लाल नरेश ने पार्श्व और चतुर्विंशति तीर्थकर के पूजन के हेतु मारुहल्लि ग्राम का दान दिया। इसके कुछ पश्चात् हुल्लप ने बल्लालदेव से बेक्क ग्राम का भी दान दिलवाया।]

४६२

हले बेल्गोल मे ध्वस बस्ती के समीप एक पाषाण पर

(शक स० १०१५)

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यता प्रतिविधानहेतवे।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्री पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरपरमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रिभुवन मल्लदेवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि। समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि

सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोलगण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृत श्रीमत्
त्रिभुवनमल्ल विनयादित्य पोय्सल ॥

श्रीमद्यादववंशमण्डनमणि क्षोणीशरक्षामणि
ल्लक्ष्मीहारमणिर्न्नराश्वरशिर प्रोत्तुङ्गशुम्भन्मणि ।
जीयान्नीतिपथेक्षदर्प्पणमणिर्ल्लोकैकचिन्तामणि
श्री **विष्णु**र्व्विनयान्वितो गुणमणिस्सम्यक्त्वचूडामणि
॥ २ ॥

एरेद मनुजङ्गे सुरभू
मिरुह शरणेन्दवङ्गे कुलिशागार ।
परवनितेगनिलतनेय
धुरदोल्पोणर्देङ्गे मित्तु **विनयादित्य** ॥ ३ ॥

रक्कस **पोय्सल**नेम्बा
रक्करम बरेदु पटमनेत्तिदडिदिरोल् ।
लक्कद समलेक्कदे मरु
वक्क निन्दपुवे समरसङ्घट्टणदोल् ॥ ४ ॥

बलिदडे मलेदडे **म**लपर
तलेयोल्बालिडुवनुदितभयरसवसदि ।
बलियद मलेयद **म**लपर
तलेयोल्कैयिडुवनोडने **विनयादित्य** ॥ ५ ॥

आ **पोय्सल**भूपङ्गे म
हीपालकुमारनिकरचूडारत्न ।

श्रीपति निजभुजविजय म
हीपति जनियिसिदनदटन् एरेयङ्ग नृप ॥ ६ ॥
वृत्त ॥ अनुपमकान्तिं मूरेनय मारुति नाल्कनेयुग्रवह्नियय्-
देनेयसमुद्रमारेनय पूगणेयेलनेयुर्व्वरेशनय्
टनेय कुलाद्रियोम्भतनेयुद्गसमेतहस्ति पत्तेन
य निधानमूर्त्तियेने पोल्ववरार् एरेयङ्गदवन ॥ ७ ॥
अरिपुरदोल्धगद्धगिलु धन्धगिलेम्बुदराति भू
र शिरदोलु ठगिलठ एम्बुदु वरिभूतले
श्वरकरुलोलु चिमिलिचमिचिमिलिचमिलेम्बुदु पलिहि दु
र्द्धरतरमेन्दोडल्कुरदे पोलुवराम्मलेराजराजन ॥ ८ ॥
कन्द ॥ मुररिपुव पिडिव चक्रद
हतिग केसरिगमा फणिध्वसिय वि
स्फुरितनखहतिगमेरेगन
करवालगमिदिन्चिं बर्द्दुङ्कुलार्प्परुमोलरे ॥ ९ ॥
इर्म्मडि दधीचिमुनिगे प
दिर्म्मडि गुत्तगे चारुदत्तगत्तल् ।
नूर्म्मडि रविसूनुगे सा
सिर्म्मडि मेलु दानगुणदिन् एरेयङ्गनृप ॥ १० ॥
आ महामण्डलेश्वरन गुरुगलेन्तप्परेन्दडे ॥
श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्रीकोण्डकुन्दनामाभून्मूलसङ्घाग्रणी [गणी] ॥ ११ ॥
तस्यान्वयऽजनि ख्याते विख्यात देशिके गणे ।

गुणी **देवेन्द्र** सैद्धान्तदेवो देवेन्द्रवन्दित ॥ १२ ॥
जयति **चतुर्म्मुख**देवो योगीश्वरहृदयवनजवनदिननाथ ।
मदनमदकुम्भिकुम्भस्थलदलनोल्बणपटिष्ठनिष्ठुरसिंह ॥१३॥
तच्छिष्यो **गोपनन्द्या**ख्या बभूव भुवनस्तुत ।
वाणीमुखाम्बुजालोकभ्राजिष्णुमणिदर्प्पण ॥ १४ ॥
जयति भुवि **गोपनन्दी** जिनमतलसज्जलधितुहिनकर ।
देशियगणाग्रगण्यो भव्याम्बुजषण्डचण्डकर ॥ १५ ॥

वृत्त ॥ तुङ्गयशोभिराममनभिमानसुवर्ण्णधराधर तपो
मङ्गलदिमवल्लभनिलातलवन्दित **गोपनन्दिया**
वङ्गम साध्यमप्प पलकालदे निन्द जिनेन्द्रधर्म्मम
गङ्गनृपालरन्दिन विभूतिय रूढियनेय्दे माडिद ॥१६॥
जिनपादाम्भोजभृङ्ग मदनमदहर कर्म्मनिर्म्मूलन वा
ग्वनिताचित्तप्रिय वादिकुलकुधरवज्रायुध चारु विद्व
ज्जनपात्र भव्यचिन्तामणि सकलकलाकोविद काव्यकर्त्ता
सननन्तानन्ददिन्द पोगले नेगल्दनी **गोपनन्दि**
व्रतीन्द्र ॥ १७ ॥

मलेयदे **साङ्ख्य** मट्टमिरु **भौ**तिक पोङ्गि कडङ्गि बागदि-
र्तोल तोल बुद्ध **बौद्ध** बलेदोरदे **वैष्णव** डङ्गडङ्कु वा
ग्भरद पोडप्पु वेड गड चार्व्वक **चार्व्वक** निम्म दर्प्पम
सलिपने **गोपनन्दि**मुनि पुङ्गवनेम्ब मदान्धसिन्धुर ॥१८॥
तगेयल् **जैमिनि** तिप्पिकोण्डु परियल् **वैशेषिक** पोगदु-
ण्डिग योत्तल् **सुगत** कडङ्गि बलेगोयल्क् **अक्षपाद** बिडल् ।

पुगे लोकायतनेय्दे साङ्ख्य नऽसल्कम्मम्म षट्तर्कवी
धिगलोल्तूल्दितु गोपनन्दिदिगिभप्रोद्धासिग
न्धद्विप ॥ १९ ॥

दिट नुडिवन्यवादिमुखमुद्रितनुद्धतवादिवाग्बलो
द्भटजयकालदण्डनपशब्दमदान्धकुवादिदैत्यधू
र्ज्जटिकुटिलप्रमेयमदवादिभयङ्करनेन्दु दण्डुल
स्फुटपटुघोष दिक्तटमनेय्दितु वाक्पटु गोपनन्दिय ॥२०॥

परमतपोनिधान वसुधैवकुटुम्बक जैनशासना
म्बरपरिपूर्ण्णचन्द्र सकलागमतत्वपदार्त्थशास्त्र वि-
स्तरवचनाभिराम गुणरत्नविभूषण गोपनन्दि नि
न्नोरगिनिसल्पड दोरेगलिल्लेणे गाणेनिलातलाग्रदोल् ॥२१॥

क ॥ एननेतनेले पल्वेनण्ण स-
न्मानदानिथ गुणव्रतङ्गल ।
दानशक्तियभिमानशक्ति वि
ज्ञानशक्ति सले गोपनन्दिय ॥ २२ ॥

वच ॥ इन्तु नेगल्द कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमूलसङ्घद देशि गणद गोपनन्दि पण्डितदेवग्गे १०१५ नेय श्रीमुखसवत्सरद पौष्यशुद्ध १३ आदिवार सङ्क्रान्तियन्दु श्रीमत्-त्रिभुवनमल्लन् एरेगङ्ग-पोय्सल गङ्गमण्डलम सुखसङ्कथाविनोददि राज्य गेय्युत्तमिर्दु बेल्गोलद कल्वप्पुतीर्त्थद बसदिगल जीर्ण्णोधारणक देवपूजेग आहारदानक पात्रपावुलक राचनहल्लिसुम बेल्गोलपन्नेरडुम धारापूर्व्वक माडि बिट्ट दत्ति ॥

(स्वदत्ता परदत्तां वा—इत्यादि श्लोकों के पश्चात्
श्रीमन्महाप्रधान हिरिय दण्डाधिप मय्यङ्ग)

[चन्नरायपट्टन १४८]

[इस लेख में होय्सल नरेश विनयादित्य और उनके पुत्र एरेयङ्ग की कीर्त्ति के पश्चात् कहा गया है कि त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग ने उक्त तिथि को कल्बप्पु पर्व्वत की वस्तियो के जीर्णोद्धार तथा आहारदान व बर्तन वस्त्र आदि के लिए अपने गुरु मूलसंघ देशीगण कुन्दकुन्दान्वय के देवेन्द्रसैद्धान्तिक व चतुर्म्मुखदेव के शिष्य गोपनन्दि पण्डितदेव को राचनहल्लु व बेल्गोल १२ का दान दिया। लेख में गोपनन्दि आचार्य्य की खूब कीर्ति वर्णित है। उन्होंने जो जैनधर्म स्थगित हो गया था उसकी गङ्गनरेशों की सहायता से विभूति बढाई। उन्होंने साङ्ख्य, भौतिक, वैशेषिक, बौद्ध, वैष्णव, चार्वाक जैमिनि आदि सिद्धान्तवादियो को परास्त किया इत्यादि।]

४९२

चल्लग्राम के बयिरेदेव मन्दिर में एक पाषाण पर

(शक स० १०४७)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ १ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर द्वारावती-पुरवरेश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलप-

रोलु गण्डनुद्दण्डमण्डलिकशिरोगिरिवज्रदण्ड तलक ाडुगाण्ड वीर **विष्णुवर्द्धन**देवनातनन्वयक्रम यदुमोदलादनेकराजा सन्तानकदि बलिक्क ॥

यदुकुलकुलाद्रिशिखरदोल्
उदियिसिद दुर्न्निरीक्षतेजोहत स
म्पदरातिराजमण्डल
नुदात्तगुणरत्नवार्द्धि **बिनयादित्य** ॥ २ ॥

आतन तनय सकल-म
हीतल साम्राज्य लक्ष्मियु तनगेक
श्वेतातपत्रमागे पु-
रातननृपरेणोगे वन्दन् **एरेयङ्ग** नृप ॥ ३ ॥

आ विभुग नेगर्द् **एचल**
देविगमादत्तनूभवर्**बल्लाल**
श्री**विष्णुवर्द्धन**
राविक्रमनिधिगलनुजन् **उदयादित्य** ॥ ४ ॥

नेनेयल्पापक्षय नोडिदोडभिमत ससिद्धि सद्भक्तियिन्द मनमोल्दाराधिसल्क सुकृतदोदवनेवेल्वुदेम्बन्नेगम्मु

न्निन पुण्य वीररप्पा नलनहुषरोलन्यूननाद जगत्पाव
नसत्यत्यागशौचाचरणपरिणत वीर**विष्णु**क्षितीश ॥५॥

* निर वद्यक्षत्रधर्म्मान्वितरेनिप महाक्षत्रियर्ल्लोकदोलना-
ल्वरेमुन्न श्री**दिलीप दशरथ**तनय **कृष्णराज** बलिक्का

---

* यहां एक पक्ति की कमी है

यर सादृश्यकवन्द यदुकुलतिलक वीर विष्णुक्षितीश ॥६॥
अदियमनोडिदोटमने रोडिसि कल्तु **नृसिंहवर्म्मने**
डिदनवनोटम गुङ्गिसि चेङ्गिरि चेङ्गिरियल्लि कल्तु को
ण्डदटिन कोङ्गरा नेगर्द **कोङ्गरनीक्षिसि पाण्ड्यनोडिद**
यदुतिलकङ्गे **विष्णु**धरणीपतिगोडदरार्द्धरित्रियोल् ॥ ७ ॥
व ॥ अन्तदियमनदटलेदु **नृसिंह**वर्म्मसिंहम कदनदोलेच्चट्टि
वैरिगल शिरोगिरिगल दोर्दण्डवज्रदण्डदिन्दलर पोय्दु कल
पाल कुलम कलकुल माडि तगुल्दङ्गरन सप्ताङ्गमुमनेलकुलि-
गोण्डु दक्षिणसमुद्रतीर वर समस्तभूमियुमनेकच्छत्रछाययिं
प्रतिपालिसुत्तु **तलवनपुर**दोलसुखसङ्कथाविनोददिं राज्य
गय्युत्तमिर ॥

श्रीवीर**विष्णुवर्द्धन**

देव षटतर्क षण्मुख **श्रीपाल**

त्रैविद्यव्रतिगी-जै

नावसतमनधिकभक्तियि माडिसिद ॥ ८ ॥

पोसतेने ता माडिसिदी

बसदियुम वाडमिदरसम्बन्धियेन-

ल्केसेवा

बसदियुम तीर्त्थदल्लि कोट्ट मुददि ॥ ६ ॥

आकुलतिलकङ्गे गुरुकुलमाद श्रीम**द्द्रमिण**गणद **नन्दिस**
ङ्घद रुङ्गलान्वयदाचार्य्यावलियेन्तेन्दोडे ॥

क्रम ह **महावीर**

स्वामिय तीर्त्थकक्के **गौतमगणधररन्त** ।

आ मुनिथि बलिकाद म-

हा महि मरेनि ॥ १० ॥

श्रुतकेवलिगलु पलबरु

मतीतरादिम्बलिक्के तत्सन्ताने-

न्नतिथ **समन्तभद्र**-

व्रतिपर्त्तलेदरु समस्तविद्यानिधिगल् ॥ ११ ॥

अवरि बलिक्कम् **एकसन्धि सुमति** भट्टारकरवरिं बलिक्के वादीभसिंह श्रीमद**कलङ्क**देवरवरि **वक्रग्रीवा**चार्य्यरवरि **श्रीणन्द्या**चार्य्य यके राज्यवामुददिं **सिंहनन्द्या**चार्य्य-रवरि **श्रीपाल**भट्टारकरवरि श्री**कनकसेन वादिराज** देवरवरिं बलिक्के ॥

इतर व्या लेके म मनितुमिसु प्रभा स

हतिथिन्दे वस्तुतिप्पेर्द्धनद् अधिकमे

य्दिद किञ्चित्करकिञ्चिन्न्यूनमेन्दु

नोप्पद जगत्पूतमाश्चर्य्यभूत ॥ १२ ॥

अवरि श्रीविजयब्भुंवनविनूतरु **शान्तिदेवर** वरि

वनद न व्रतिपरु ॥

आ **पुष्पसेन** सिद्धान्तदेवरिं बलिक ॥

गतसर्वज्ञाभिमानस्सुगतनपगताम्नप्रयाद कणाद

कृत पादा

नतनाद मर्त्यमात्रङ्गल नुडिगलोल नेनसल्पर्व्वि लोको-

अतन्वत्तर्हन्मताम्भोनिधिविधुविभव **वादिराज** ॥१३॥
शान्तिषेणदेवरवरि बलिक्क ॥
पेरतें सप्तर्द्धि यिं सम्भविकुमोदवुगु प्रातिहार्य्यङ्गलेल्ल
नेरेदिक्कुं रीतियिन्दे-समवसितियुमी कष्टकालप्रभाव ।
पेरपिङ्गल्की महायागियोलेने तपमु योग्यतालब्धियु कण्-
देरेदन्तागिप्पुदिन्दन्दनुपममपरातीतदिव्यप्रभाव ॥ १४ ॥

कन्तुवनान्तुमेरदे यदोडिसि दुर्म्मदकर्म्मवैरि वि-
क्रान्तमनेरदे लङ्घिसि महापुरमाग दि ।
ना तीर्त्थनाथरेन रूढियनान्त **कुमारसेन** सै-
द्धान्तिकरादमुज्वलिसिदर्ज्जिनधर्म्मयशोविकासम ॥ १५ ॥

सले सन्द योग्यतय
लेसेद दुर्द्धरतपोविभूतिय पेम्पि ।
कलियुगगणधररेम्बुदु
नेलनेल्ल **मल्लिषेण** मलधारिगल ॥ १६ ॥

ह्वद्यस्याद्वादभूभृद्भुवनतुपमषट्तर्क्कभास्वन्नखम्पा
रद्युद्यदर्प्पान्धवादिद्विरदनघटेय विक्रमप्रौढियिन्द ।
विद्यासिंहीरतिव्याप्तियोले सुखियिसुत्तिप्पुदु उत्साहदि त्रै-
विद्य **श्रीपाल**-योगीश्वरनेनिप महावादिमत्तेभसिंह
॥१७॥

आवन विषयमो षट्त-
र्क्काविलबहुभङ्गिसङ्गत **श्रीपाल**-

त्रैविद्यगद्यपद्य व
चोविन्यास निसर्ग्गविजयविलास ॥ १८ ॥
तमगाज्ञावशमादुदुन्नतमहीभृत्कोटि वि
ण्पमर्द्दत्ती-धरेगेय्दे तम्म मुखदोल्षट्-तर्क्कवारासि-वि
भ्रममापोशनमात्रमादुदेनलीमातेनगस्त्य प्रभा
वमुम कील्पडिसित्तु पेम्पि श्रीपाल-योगीन्द्रन॥१९॥
वर्ग्गत्यागद सूचित
मार्ग्गोपन्यासदलवु मार्क्कोललन्ता
भर्ग्गाङ्गमरिदेनल्के नि
रर्ग्गलमादत्त वीर्य्य व्रतियाल् ॥ २० ॥

इन्तु निरवद्यस्याद्वादभूषणरु गणपोषणसमेतरुमागि वादीभसिंह वादिकोलाहल तार्क्किकचक्रवर्त्तियेम्ब निजान्वयनामङ्गल नोलकोण्डु अन्वयनिस्तारकरु श्रीमदकलङ्क मतावलम्बनरु षट्तर्कषण्मुखरुमसारससारव्यापारपराङ्मुखरुमाद श्रीपाल त्रैविद्यदेवर्ग्गे ॥

शल्यत्रयरहितर्ग्गी
शल्यग्राममनुपम कोट्टरिनृपह
स्शल्य सकलकलान्वय-
कल्य श्रीविष्णुभक्तिय ता मेरेद ॥ २१ ॥

अन्ती-बसदिय खण्डस्फुटितजीर्ण्णोद्धारकर्मी-सम्बन्धिय रिषिसमुदायदाहारदानक कम्विगोण्ड वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेव सकवर्ष १०४७ कोधिसवत्सरद उत्तरायणसङ्क्रमणदल्लु

कावेरी तीरद हुल्लयहोलेयलु शल्यदुरुव तीर्त्थदल्लि तम्म बसदियुम **श्रीपाल**त्रैविद्यदेवर्ग्गे कैधारे येरेदु श्री**वीर-विष्णु वर्द्धन** कोट्टियूर सीमा सम्बन्धमेन्तेन्दोडे (यहाँ सीमा का वर्णन है) इन्तीचतुस्सीमेयिन्दोलगुल्लद सर्व्वबाधापरिहारमागि बिट्टु कोट्ट श्री वीर**विष्णुवर्द्धन**देव कोट्ट **श्रीपाल** त्रैविद्य देवरु तम्म माडिसिद **होय**सल जिनालयक्के बिट्ट तलवृत्ति बेल्दलेवूर मुन्दण हादरिवालोलगागि मत्तरु नाल्कु अत्तिकेरेयुम हिरियकेरेय केलगे गद्द सलगे एलु तोण्ट ओन्दु **दोड्ड**गट्टद केरे बोलगागि चतुस्सीमेयुम बसदिगे माडि बिट्टु कोट्ट भूमियिदर सीमे मूडलु केसरकेरेगिलिद मणल हल्ल तेङ्कु होन्नमरक्के होद बट्टे हडुव हिरियकेरेयोलगेरे बडग होन्नेमरक्के होद होलेय बट्टे ।

[चन्नरायपट्टन १४६]

[इस लेख में होय्सल वश के विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन के प्रताप-वर्णन के पश्चात् कहा गया है कि विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेव ने उक्त तिथि को वस्तिओं के जीर्णोद्धार तथा ऋषियो को आहारदान के लिए श्रीपालत्रैविद्यदेव को शल्य नामक ग्राम का दान दिया । श्रीपाल त्रैविद्यदेव द्रमिण संघ व अरुङ्गलान्वय के आचार्य थे। इस अन्वय की परम्परा इस प्रकार दी हुई है । महावीर स्वामी के पश्चात् गौतम गणधर हुए। फिर कई श्रुतकेवलियों के पश्चात् समन्तभद्र व्रतीप हुए। उनके पश्चात् क्रम से एकसंधिसुमति भट्टारक, वादीभसिंह अकलङ्कदेव, वक्रग्रीवाचार्य, श्रीनन्द्याचार्य सिंहनन्द्याचार्य, श्रीपाल भट्टारक, कनकसेन, वादिराजदेव श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेनसिद्धान्त देव, वादिराज, शान्तिसेनदेव, कुमारसेन सैद्धान्तिक मल्लिषेण मलधारि

और त्रैविद्य श्रीपालयोगीश्वर हुए। कई जगह आचार्यों के नाम पढ़े नहीं गये इसलिए परम्परा का पूरा क्रम ज्ञात नही हो सका।]

४९४

बोम्मेनहल्लि ग्राम मे जैन बस्ती के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक स० ११०४)

श्रीमत्परम गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन शासन ॥ १ ॥

श्रीपति जन्मदिन्देसेव यादववशदोलाद दक्षिणो
र्व्वीपतियप्पनोर्व्वं सलनेम्ब नृप सलेयिन्द कोपन
द्विपियनान्दनोर्व्वे मुनि पोय् सलयेन्दडे पोय्दु गल्दु दि
ग्व्यापि-यश नेगल्ते वडेद गड पोय्सलनेम्ब नामदि
॥ २ ॥

स्वस्ति श्रीजन्मगेह निभृतनिरुपमोदात्ततेजोमहोर्व्व
विस्तारान्त कृतोर्व्वीतलमवनतभूभृत्कुलत्राणदक्ष ।
वस्तुव्रातोद्भवस्थानकममलयशश्चन्द्रसम्भूतिधाम
प्रस्तुत्य नित्यमम्भोनिधिनिभमेसेगु होय्सलोर्व्वी-
शवश ॥ ३ ॥

अदरोल्कौस्तुभदोन्दनर्घ्यगुणम देवेभदुद्दाम-स
त्वदगुर्व्वं हिमरश्म्युज्वलकलासम्पत्तिय पारिजा

तदुद्धारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्त तालिद तानल्ते पु-
ट्टिदुनुद्धृततमोविभेदि विनयादित्यावनीपालक ॥४॥
बुधनिधि विनयादित्यन
वधु केलेयब्बरसियेम्बलात्मास्थविभा
विधुरितविधु परिजन का-
मधेनु नेगल्दल्सुसीलगुणगणधाम ॥ ५ ॥
अवर्गेरेयङ्ग जनियिसि
दवनेचलदेविगादनाद्म्पतिगु-
द्भविसिदरजेयबल्ला-
ल वीर विष्णुप्रतापियुदयादित्यर् ॥ ६ ॥
अवरोल्मध्यमनागियु-
मवर्गेल्ल विष्णु पदकनायकदन्तो
प्पुवनुदितवीरलक्ष्मिय
सवति महापट्टदरसि लक्ष्मियधीश । ७ ॥
भूदेवसभोच्चारित
वेदध्वनिनिरतविष्णुभूपङ्ग ल-
क्ष्मादेविगमुदयिसिद
श्रीदयित नारसिंहदेवनृपाल ॥ ८ ॥
भूवल्लभविपुलयश-
श्श्रीवल्लभनारसिंहनृपपट्टमहा-
देवियेनल्नेगल्देचल
देविगे बल्लालदेवनुदय गेय्द ॥ ९ ॥

हेसरुवुङ्ग्रियकोटेय
नसहशभुजबलदे मुन्ने कोण्डरसुगला
रसहायशूरशनिवा-
रसिद्धिगिरिदुर्ग्गमल्लबल्लालनवोल् ॥ १० ॥
एकाङ्गवीर शूद्रुक-
नाकारमनोजनर्त्थिसुरतरु तुरगा
नीक वर-वत्स राजन
नेकपभगदत्तनल्ते बल्लालनृप ॥ ११ ॥

गद्य ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर । द्वारावती पुरवराधीश्वर । तुलुव बलजलधि बडवानल । पाण्ड्यकुलदावानल । मण्डलिकबेण्टकार चोलकटकसूरेकार । वासन्तिकादेवीलब्धवरप्रसाद । वितरणविनोद । यादव कुलाम्बरद्युमणि । मण्डलिकमुकुटचूडामणि । असहाय शूर नृपगुणाधार । शनिवारसिद्धि । सद्धर्म्मबुद्धि । गिरि दुर्ग्गमल्ल । रिपुहृदयसेल्ल । चलदङ्कराम । रणरङ्गभीम । कदनप्रचण्ड । मलपरोलगण्ड नामादिप्रशस्तिसहित कोङ्गनङ्गलितलकाडु नोलम्बवाडि बनवासेहानुङ्गल्गोण्ड भुजबलवीरगङ्गप्रतापहोय्सलबल्लालदेवर्दक्षिणमहीमण्डलम सद्धर्म्म परिपालिसुत्तु दोरसमुद्रद नलेवीडिनाल्सुखसङ्कथा विनोद राज्य गेय्युत्तुमिरे तत्पाद पद्मोपजीवि ॥
भरतागमतर्क्कव्या
करणोपनिषत्पुराणनाटककाव्यो-

त्करनविद्वज्जननुतनेनिप-

स्थिरपुण्य **चन्द्रमौलि**मन्त्रिललाम ॥ १२ ॥

नुतबल्लालनृपालदक्षिणभुजादण्ड पय पूरहा

र तुषारस्फटिकेन्दुकुन्दकमनीयोद्यद्यशोवार्द्धिवे

ष्टितदिकचक्रनपारपुण्यनिलय निश्शेषविद्वज्जन-

स्तुतनप्पी विभु**चन्द्रमौलि**सचिव धन्य पेरर्द्धन्यरे

॥ १३ ॥

आ **चन्द्रमौलि**गखिलक

लाचतुरङ्गमलकीर्त्तिगसदृशविभव

ङ्गा**चाम्बिके** गुणवार्द्धि स

दाचारसमेते चित्तवल्लभेयादल् ॥ १४ ॥

हरिणीलोचने पङ्कजानने घनस्रोणिस्तनाभोगभा

सुर बिम्बाधरे कोकिलस्वने सुगन्धश्वासे चञ्चत्तनू-

दरि भृङ्गावलिनीलकेशे कलहसीयाने सत्कम्बुक

न्धरेयप्पा**चल**देवि **कन्तु** सतिय सौन्दर्य्यदिन्देलिपल्

॥१५॥

त्रिकुलक ॥ सुकविसुरतरु**शि**लेयना

यक चन्द्राम्बिकेय मगनेनिप **सो**वण ना

यकनय्य तायि **बा**चा

म्बिक **दे**शिदण्डनायक हिरियण्णा ॥ १६ ॥

भयलोभदुर्ल्लभ **बम्मे**य

नायकनिद्धकीर्त्ति किरियण्णा **मा**

रेयनायक भगिनि च
लियब्बरसि **कामदेवनग्गुगिन** तम्म ॥ १७ ॥

भूविनुतनात्मजात
सोवण्ण चन्द्रमौलि पति तनगं कला
कोविदनेन्दन्दाचल
देवियवोल्नोन्त सतियराव्र्वसुमतियोल् ॥ १८ ॥

गौरितपङ्गल नेगल्दुतु नेरेदलगड **चन्द्रमौलिया**
ल्नारियर्गिन्नवे सोबगु पेल्पलवु भवदोल्निरन्तरम्
सारतपङ्गल पडेदु ताम्नेरेद गड **चन्द्रमौलिग**
म्भीरेयेनिप्प तन्ननेनिपाचलेवोल्सोबगिङ्गे नोन्तरार्
॥१९॥

तद्गुरुकुल श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्ड-कुन्दान्वयदोल् ॥

क ॥ विदित **गुणचन्द्र**सिद्धा
न्तदेव सुतनात्मवेदि परमतभूभृ-
द्भिदुर **नयकीर्त्ति**सिद्धा
न्तदेवनेसेद मुनीन्द्रनपगततन्द्र ॥ २० ॥

परमागमवारिधिहिम
किरण राद्धान्तचक्रि**नयकीर्त्ति**यमी-
श्वरशिष्यनमलनिजचि-
त्परिणतनध्यात्मि**बालचन्द्र** मुनीन्द्र ॥ २१ ॥

भरदिं बेलुगुल तीर्त्थदोल् जिनपतिश्रीपार्श्वदेवोद्धम-
न्दिरम माडिसिदल्विनूत **नयकीर्त्ति**ख्यातयोगीन्द्र
भासुरशिष्योत्तम **बालचन्द्र**मुनिपादाम्भोजिनीभक्ते सु-
स्थिरेयप्पाचलदेवि कीर्त्तिविशदाशाचक्रे मद्भक्तियि
॥ २२ ॥

व ॥ **शकवर्षद** सासिरदनूरनाल्कनेय **प्लवसंवत्सरद** पौष बहुलतदिगे शुक्रवारदुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु ॥

वृ ॥ शीलदि **चन्द्रमौलि**सचिव निजवल्लभेयाचिक्कना
लोलमृगाक्षि माडिसिद पार्श्वजिनेश्वरगेहदुद्धपू-
जालिगे बेडे बम्मेयनहल्लियनित्तनुदारि वीर-ब-
ल्लालनृपालक धरेयुमब्धियुमुल्लिनमेय्दे सल्विन
॥ २३ ॥

तदवनिपनित्त दत्तिय
नदनाचले **बालचन्द्र**मुनिराजश्री
पदयुगम पूजिसि चतु-
रुदधिवर निमिरे कीर्त्ति जिनपतिगित्तल् ॥ २४ ॥

अन्तु धारापूर्व्वकमागि कोट्ट तद्ग्रामसीमे (यहा नौ पक्तियो में सीमा आदि का वर्णन है)

श्रीमन्महामण्डलाचार्य्य**नयकीर्त्ति**देवरु बम्मेयनहल्लियलु कन्नेवसदिय माडिसि श्री**पार्श्वनाथ**प्रतिष्ठेय माडि देवरष्ट-विधार्च्चनेगे **सोमसमुद्रद** केरेय केलगे मोदलेरियल्लि गद्दे सलगे येरडु बडगण हालिनलु बेदलु नानूरुव **नयकीर्त्ति**देवरु मारेय

नायकन मग सोवण्णनु गौड गौडनोलगाद प्रजेगलु आचन्द्रतार बर सल्वन्तागि बिट्ट दत्ति मङ्गल महा श्री ॥

[चन्नरायपट्टन १५०]

[इस लेख मे लेख नं० ५६ के समान होय्सल वंश की उत्पत्ति व लेख न० १२४ के समान होय्सलनरेशों का बल्लालदेव तक व बल्लालदेव के मन्त्री चन्द्रमौलि और उनकी धर्मपत्नी आचलदेवी के वंश आदि का वर्णन है। तत्पश्चात् कहा गया है कि आचलदेवी ने बडी भक्ति से बेल्गुल तीर्थ पर पार्श्वनाथ मन्दिर निर्माण कराया और इसके लिए बल्लालदेव से बम्मेयनहल्लि ग्राम प्राप्त कर उसे अपने गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य बालचन्द्रमुनि की पादपूजा कर उस मन्दिर को दान कर दिया।

लेख के अन्तभाग मे उल्लख है कि महामण्डलाचार्य नयकीर्ति देव ने बम्मेयनहल्लि में एक नई बस्ती निर्माण कराई और उसमे पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा की और कुछ भूमि का दान दिया।]

४९५

कुम्बेन हल्लि ग्राम मे अञ्जनेय मन्दिर के समीप एक पाषाण पर

(लगभग शक स० ११५२)

श्रीमत्परम गम्भीर स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन शासन ॥ १ ॥

नमोऽस्तु ॥

श्रीपतिजन्मदिन्देसेव यादवव शदोलाद दक्षिणो
र्व्वीपतियप्पनोर्व्व सलनेम्ब नृप सलेयिन्दे कोपन-

द्वीपियनोन्दनोर्व्व मुनि पोथ्सलयन्दडे पोय्दु गेल्दु दि-
ग्व्यापियश नेगल्तेवडेदोण्गड **पोय्सलनेम्ब** नामदिं ॥२॥
विनयादित्यनृपालन
तनूजनेरेयङ्गभूपनातन पुत्र ।
कनकाचलोन्नत **वि-**
ष्णुनृपाल तनात्मज ॥ ३ ॥
य सकल-म
हीतलसाम्राज्य लक्ष्मिय ।
श्वेतातपत्रनागे पु
रातन नृपर्ग्गेखिसिद **बल्लाल**नृप ॥ ४ ॥
एकत्र गुणिनस्सर्व्वे **वादिराज** त्वमेकत ।
तवैव गौरव तत्र तुलायामुन्नति कथ ॥ ५ ॥
सले सन्द योग्यतेयिन-
ग्गलिसिद दुर्द्धरतपोविभूतिय पेम्पि ।
कलियुगगणधररेम्बुदु
जगवेल्ल **मल्लिषेण**मलधारिगल ॥ ६ ॥
तमगाज्ञावशमादुदुन्नतमहीभृत्कोटि तम्मिन्दे वि
ण्पमर्द्दत्ती-धरेगेय्दे तम्म मुखदोल्षट्तर्क्कवारासिवि-
भ्रममापोशनमात्रमादुदेनलि मातेनगस्त्यप्रभा-
वमुम कीलपडिसित्तु पेम्पिनेसक **श्रीपाल**योगीन्द्रन॥७॥
अवरप्रशिष्यरु श्री **वादिराज**देवरु तम्म सल्यद **कुम्बेयन**
हल्लियलु तम्म गुरुगलिगे परोक्तविनयमागि **परवादिमल्लजिनाल**

यमेन्दु कन्नेवसदिय माडिसि दवरष्टविधार्च्चनेग आहारदानक हिरियकेरेय गौडियहल्लिगदे सलगे एरडु कोलग हत्तु अल्लि तेङ्क बिट्टि सेट्टियकेरेयु अदर केलद बद्दे सलग एरडुव सर्व्वबाधा परिहारमागि बिट्ट दत्ति ॥

(स्वदत्ता परदत्ता आदि श्लोक)

श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि तन्त्राधिष्ठायक कम्मटद माचय्यनु माव बल्लय्यनु देवर नन्दादीविगेगे गाणद सुङ्कव बिट्टरु ॥ कण्डच्चनायकन मदवलिगे राचवेनायकितिय मग कुन्दाडहेग्गडे नयचक्रदेवर बेसदिं माडिसिद बसदि ॥ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लय्यङ्गल मैय्दुन अश्वाध्यक्षद हेग्गडे हरियण्ण कुम्बेयनहल्लिय देवर माडिसि कोट्ट ॥

श्रीपाल त्रैविद्यदेवर शिष्यरु पदद शान्तिसिङ्ग पण्डित र्गेयु अवर पुत्र परवादिमल्ल पण्डितर्गेयु अवर तम्म उमेयाण्डग आतन तम्म वादिराजदेवङ्ग वादिराजदेवरु धारापूर्व्वक माडि कोट्टरु ॥

[चन्नरायपट्टन १५१]

[इस लेख में पूर्ववत् बल्लालदेव तक होय्सल वंश के वर्णन के पश्चात् वादिराज मल्लिषेण मलधारि की कीर्त्ति का वर्णन है और फिर षड्दर्शन के अध्येता श्रीपाल योगीन्द्र का उल्लेख है। इनके शिष्य वादिराजदेव ने अपने गुरु के स्वर्गवास होने पर परवादिमल्ल जिनालय' निर्माण कराया और उसकी अष्टविध पूजन तथा आहार दान के लिये कुछ भूमि का दान दिया।

महाप्रधान सर्वाधिकारी तन्त्राधिष्ठायक कम्मट माचय्य तथा उनके श्वशुर बल्लय्य ने जिनालय में दीपक के लिए तेल के टेक्स का दान दिया।

कुण्डच्चनायक की भार्या राचवे तथा नायकिति के पुत्र कुन्दाड हेगडे न नयचक्रदेव की आज्ञा से बस्ती निर्माण कराई।

इसी प्रकार महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भण्डारी हुल्लय के साले अश्वाध्यक्ष ठरियण्ण ने कुम्बेयनहल्लि के देव की प्रतिष्ठा कराई।

वादिराजदव ने ये दान श्रीपाल त्रैविद्यदेव के शिष्य शान्तिसिंग पण्डित व परवादिमल्लपण्डित व उमेयाड व वादिराजदेव को दिये।]

४९६

चन्नरायपट्टन में गद्दे रामेश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक स० ११०८)

[ऊपर का भाग टूट गया है]

श्रेष्ठगुण पोगले सत्ययुधिष्ठिर नवसेकाररधि-
ष्ठायक यण्णन बुधनिधिय ॥

सोगयिसुव गङ्गवाडिगे
मोगमेने न पुददरोल्।
मिगे दिण्डिगूर शाखा
नगर बोट्टेनिपुदल्ते मोनेगनकट्ट ॥ १ ॥
कनकाचलकूटदवोलु
घनपथम मुट्टि नेट्टनमर्दोप्पुविन।

मोनेगनकट्टदलूर्जित

जिन गृहम **रामदेव**विभु माडिसिद ॥ २ ॥

तद्गुरुकुलमेन्तेन्दडे। श्री**नयकीर्त्ति**सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल शिष्यरु।

विदिताध्यात्मिक**बालचन्द्र**मुनिराजेन्द्राग्रशिष्यप्रशं-

स्तिदवन्द्यम्मुनि**मेघचन्द्र**रनघर्भास्वद्द्यासागरा-

भ्युदयपो**ं**स्तकगच्छ**दे**शिकगण श्रीकोण्डकुन्दान्वया-

स्पददीपक्कर्रमोप्पुवर्व्वसुधेयोलशास्वत्तपोलद्मियि ॥३॥

शकवर्ष ११०८ नेय विश्वावसु संवत्सरदुत्तरायण संक्रान्ति-यादिवारदन्दु **बनवसे**कारर **मो**त्तदनायकरु **दि**ण्डियूरवृत्तिय गावुण्डुप्रभुगलु **मे**लिसासिर्व्वरु शान्तिनाथदेवरष्टविधार्च्चनेग खण्डस्फुटजीर्णोद्धारक्क ऋषियराहारदानक्क सर्व्वाबाधपरिहार-मागि **मेघचन्द्र**देवर्गे धारापूर्वकं माडि बिट्ट गद्देबेद्दलेस्थलङ्ग लेन्तेन्दडे। (यहाँ दान का विवरण है)

[चन्नरायपट्टन १६६]

[गङ्गवाडि के मोनेगनकट्टे का दिण्डिगूर एक शाखा नगर था। मोनेगनकट्टे में रामदेवविभु ने एक विशाल जिनालय निर्माण कराया। रामदेव के गुरु, नयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्ती के शिष्य अध्यात्मिक बालचन्द्र मुनि के प्रधान शिष्य मेघचन्द्र थे। उक्त तिथि को बनवसे के कर्मचारी मोत्तद नायक तथा दिण्डियूरवृत्ति के गोण्ड और प्रभुओं ने शान्तिनाथ भगवान के अष्टविधार्चन के तथा जीर्णोद्धार व आहारदान के हेतु उक्त भूमि का दान मेघचन्द्रदेव को कर दिया।]

४९७

तगडूरु ग्राम मे पुरानी नगरी के स्थल पर एक पाषाण पर

(लगभग शक स० १०५०)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन शासन ॥ १ ॥

स्वस्ति श्री मेश्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुल-तिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतार सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलश्वर द्वारावती-पुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मले-परोलु गण्ड राजमार्त्तण्ड कोङ्गनङ्गलि तलकाडुवनवासे हानुङ्गलुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेवर कुलगगनदिवामणिय् ए गदेवनवन मग विष्णु नृप तङ्क मीश तनूभवने वाव ॥

पेसर्गोण्डावावदेशङ्गलनेणिसुवुदावावदुर्ग्गङ्गल ब
ण्णिसि पेलुत्तिप्पु दावावनिपतिगल लेक्किसुत्तिप्पु देम्बो-
न्देसक कडेवर सा-
धिसिद भूलोक तिलक वीरविष्णुक्षितीश॥२॥

सङ्कथाविनोददिं राज्य गेय्वुत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

भीमार्ज्जुन लवकुशरित्र
    रीमालकेयेनल्के तम्मुतिर्व्वर् ।
श्रीमन्मरियानयमु
    द्दामगुण भरतराजदण्डाधिपरु ॥ ३ ॥

श्रीविष्णु पाय्सलङ्खि-
    लावनिय दल साधिसि ।
विदित भरत चक्रियन्
    त्रिभुवनेयिसुगुमखिलधरेयोलभरत ॥ ४ ॥

मरुवक्कमनोडिसलु
    नेरे राज्यश्रीविलासम मेरेयलुवी
मरियाने नेरगु
    मेच्चे पट्टदानेयुमाद ॥ ५ ॥

आतन सति मुन्न् नेगल्दा
    सातेगरुन्धतिगे वा
        दोरेयनलल्लदे
    भूतलदोले जक्कणब्बेगुलिदर्दारेय ॥ ६ ॥
    याने दण्णायकनेरेयन न जक्कियब्बेग सुतरल
    परगु भरतबाहुबलिगलेनिप्पर् ॥ ७ ॥

अन्तवरेन्तेन ॥

श्रीमत्पेर्ग्गडे माचिराजगिरियोलपुट्टुत्ते सन्मार्ग्गदि
    न्दामाश्रीमरुदेवियेम्ब नलिनीवासक्के सन्दाजन-

प्रेमे श्रीजिनमार्ग्गदोन्देसकदानैर्म्मल्यदि पोर्द्दिदल

चाम पेर्ग्गडेदेवसज्जलधिय पुण्यापगारूपदि

॥ ८ ॥

रय चामियक्कन

सोदररापिरियचौण्डनेम्ब गान-

न्तादरद चन्दिय

दलदो बूचियणनुमन्दिवरप्पर् ॥ ९ ॥

परमजिनेश्वर मनदोलोप्पिर तन्नयकीर्त्ति नाकदो

लपरेदिरे दानधर्म्मविनयव्रतसीलचरित्रमेम्बल-

ङ्कररणद पेर्म्मे मानसके पोण्मे दयारसमुण्मे चित्तदो-

ल्गुरुवभिवन्दन मनदोलागददिक्कुदु चामियक्कन

॥ १० ॥

भारद्वाज सुगोत्रदो

लारु मुन्नान्तरिल्ल नेरपल्जसम ।

ताराद्रिसन्निभ तग-

डूर जिनालयमदेसेये चामलेयेसेदल् ॥ ११ ॥

जिनपूजाष्टविधार्चनक्के मुनियर्ग्गाहारदानक्के त

ज्जिनचैत्यालयजीर्णोदुद्धरणक सल्वन्तिद सोव-गौ-

ण्डन पुत्रक्कुलदीपकर्ज्जननुतश्रीरायगावुण्डनो-

ल्मनद मल्लयनायक गुणगणख्यातर्म्महोत्साहदिं

॥ १२ ॥

धारापूर्व्वकदिं तग-

दूर वग्गलबम्मगट्टव बसदिगे सले ।

धारिणियरियलिवट्ट-

र्भूरविशशितारमेरुगल्लिनलिवनेग ॥ १३ ॥

परमजिनेश्वरपूजेगे

पिरिदु सद्भक्तियिन्दे कोडियकेरेय ।

वरगुणरायगवुण्ड

निरुत **कल्याणकीर्त्ति** मुनिपङ्गित्त ॥ १४ ॥

भूविनुत कलि बोप्प

देवङ्ग चरुगिङ्गे नेमवेर्ग्गडेय मग ।

भूविदितमागे कोट्ट

तावरेगेरेयल्लि गद्दे खण्डुग वोन्द ॥ १५ ॥

कल्याणकीर्त्ति कीर्त्तिसु

वल्ल्युदय मूरुनोकम व्यापिसि कै

वल्यदोडगूडि सले मा

ण्गल्यमुमादत्तु चिन्ते चिन्त्यङ्गलवोल् ॥ १६ ॥

(स्वदत्तां परदत्तां वा आदि श्लोक)

[चन्नरायपट्टन १४८]

[इस लेख में चालुक्यत्रिभुवनमल्ल व विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेव के राज्य में नयकीर्त्ति के स्वर्गवास हो जाने पर चामले द्वारा तगडूर में जिनालय निर्माण कराये जाने व अष्टविधार्चन, आहारदान तथा

जीर्णोद्धार के हेतु रायगवुण्ड और मल्लय नायक द्वारा 'तगडूर' और 'बम्मगुट्ट' का दान दिये जाने का उल्लेख है। रायगवुण्ड ने जिन पूजन के लिए 'कोड' की भूमि कल्याणकीर्त्ति मुनि को दी। लेख में अन्य दानों का भी उल्लेख है। अन्त में कल्याणकीर्ति की प्रशंसा के पद्य हैं।]

४९८

गुडिव ग्राम के मदलहसिगे नामक स्थल में एक स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० १०००)

भद्रमस्तु जिनशासनस्य। स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर-नधटरादित्य **त्रिभुवनमल्ल चोलकोङ्गाल्वदेवर** पादारा-धक तु **रावसेट्टिय** मम्मगनदटरादित्य सावन्तबूवेय नायक-नुत्तरायण सक्रमणदन्दु हडुवण तुम्बिन मोदलेरियलु १$\frac{1}{2}$ खण्डुग बयल २ खण्डुग अडुविन मण्णुम **पद्मणन्दि** देवरिगे धारा पूर्व्वक माडिविट्टु कोट्टनु। (स्वदत्ता परदत्ता आदि श्लोक)

[होले नरसीपुर १६]

[त्रिभुवनमल्ल चोलकोङ्गाल्वदेव के पादाराधक व रावसट्टि के पौत्र बूवेय नायक ने उक्त तिथि को पद्मनन्दि देव को उक्त भूमि का दान दिया।]

४६६

मललकेरे ग्राम मे ईश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक स० ११७०)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन शासन ॥ १ ॥

भद्र भूयाज्जिनेन्द्राणा शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्त्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ २ ॥

वृ ॥ यदुव शक्तिपालक शशपुरी वासन्तिका
मदनागिर्प्पिन बुराजित मेल्पायेशा ूल
जैन मुनीश्वर पिडिद
पोडेद ॥ ३ ॥

आ. होय्सलान्वयदोल ॥
वृ ॥ भूनाथासेव्यपाद निखिलरिपुमहीपालविध्व स केली
कीनाश वैरिभूभृन्मृगगहनदवन्ताने दुर्गप्र
ना रामनेत्रोभयश श्रीललाम -
तानेन्दीविश्वलोक सलिसिद वीरबल्लालभूप
॥ ४ ॥

गोपतिगातपनिकर
गोपतिगे वागोदड ।

श्रूवरदेवरु दक्षिणमण्डलम दुष्टनिग्रहशिष्टपरिपालनपू र्व्वक राज्य गेय्वुत्तमिरे ।

तत्पादपद्मोपजीवि सेनानाथशिरोमणि वन्दिजन चिन्तामणि सुजनवनजवनपतङ्ग राजदलपत सलिगं कलिगलङ्कुश स्वामि दण्डेशनेन्तेप्पनेन्दडे ॥

वृ ॥ श्रीय विस्तीर्णवक्षस्थलनिलयदो
श्रीय कूर्व्वाल केलीसदनदोलोलविं तालिद विख्यातकीर्त्ति-
श्रीयिन्दाशान्तम रञ्जिसे निजविजय स्वान्तजात
य्यिय सैन्याधिनाथ नेगल्दनुरुगुणस्तोमनुर्व्वीललाम
॥ ८ ॥

आतननुज ॥

क ॥ रु देत्त
सिरम ब्रह्मसैन्यनाथ च्चिप्र ।
धुरदोलतिचतुर निज
वीर तिगे सिरदा तिय ॥ ९ ॥

आमन्त्रि ॥

मालिनी ॥ मनुचरितनुदार वत्समन्त्रिप्रगल्भ
जिनसदनसमूहाधारसारानुशा मू ।
तनगे पिपद पूर्णपुण्य
जननुतविजयण्ण मन्त्रिगोत्राग्रगण्य ॥ १० ॥

क ॥ काम कमनीयगुण
धीमन्तसिरोजबन्धललित ।

श्रीमज्जिनपदनलिन शि

लीमुखनमृताशुविशदकीर्त्तिप्रसर ॥ ११ ॥

तज्जननीजनकरु ॥

लोकांश्रयेन्नियोगयोगनिपुण **दुग्गा**म्बिकावल्लभ

नाकय्य भुवनाभिराम च नेम्बिन **कोङ्ग-दे**

शैकश्रीकरणाग्रगण्यनेसेद तत्सूनु **कामा**नु

शाकीर्ण्णायतकीर्त्तिकान्तनेसेव **सात** गुणब्रातदि

॥ १२ ॥

आ**कामा**त्मजरु ॥

परमजिनचरणदाम

वरविद्वद्धार्द्धिसोमनवला**काम** ।

करणगणाग्रणी **सोम**

कमलवाणी**राम** ॥ १३ ॥

सुरकुजके कामधेनुगे

परुसक्के **इन** सुतगे समने ।

सुर परिकिसे पुरुसरत्न

निरुपमनी **सोम**नमलगुणगणधाम ॥ १४ ॥

जीर्ण्णजिनभवनम भू

वर्ण्णिसलुद्धरि सरसगुण मकीर्त्ति दिगन्ता-

कीर्ण्णमेने धर्म्मसरस्या-

र्ण्ण **कण्ण** सवर्ण्य ॥ १५ ॥

श्रा **सात**ण्णनेन्तप्प ॥

सातिशयचरितभरित

भूलभवद्धाविभव्यजनससेव्य ।

सातरणनमलगुरास

भूत जिनपदपयोरुहाकरहस ॥ १६ ॥

मल्लिकामाले ॥ देवदेवन **शान्ति**नाथन गेहम पामतागि स-

द्बोधिप श्रोल्दु निर्म्मिसे तन्न कार्त्ति दिगन्तम-

न्तिन्ने भव्यचकोरिचन्द्रमनेन्दु बन्दले वर्ण्णिसल्

कावणावरज विचित्र चरित्र**सातण**नोप्पुव ॥ १७ ॥

क ॥ **सातरण**न वनिते गुण

रत्न दि भूतलदोल् ।

नोन्तिल्लवे **बाच** वे

सातिस ख्यातियिन्दे रञ्जिसुतिर्प्पल् ॥ १८ ॥

श्रा-दम्पतिगल गर्भदो

लादर्भकरेसेव **काम सात**ङ्गल वि

द्यादिगुणरूपिनोलिप-

न्दादु धरित्रिगोर्व्व पडेद ॥ १९ ॥

स्वस्ति श्री**मू**लसङ्घ **दे**सियगण **पो**स्तकगच्छद **को**ण्डकुन्दा

न्वय **सिद्धे**श्वर मानानूनचारुचरित्र श्री**माघणन्दि**सिद्धान्त-

चक्रवर्त्ति तप्प ॥

वृ ॥ स्वान्तभवप्रसृति रस ॥

नरचारित्रननूनपुण्यजनन क भा-
सुरनीरेजसुमित्रनाञ्जितदया ।
पवित्रनेन्दु भुवन सत्कीर्त्तिसलवर्त्तिप
वरसैद्धान्तिकमाघनन्दिमुनिप श्रीकोण्डकुन्दान्वय
॥ २० ॥

नच्छिष्यरु ॥

क ॥ चारुतरकीर्त्तिदिग्वि-
स्तारितनतनुप्रताप ।
य भानुकीर्त्ति वि
बुधनिकर ॥ २१ ॥

आ मुनिय शिष्यनखिल-क
लामयनुदारचरितनतिविशदयशो
धाम मुनिपुङ्गव
वर्णिपुदु माघणन्दिव्रतिय ॥ २२ ॥

वृ ॥ वरविद्यामहित सुराचलदवोल् श्रीमाघणन्दिव्रती
श्वरनिर्द दद्रिसानुसुपरीतानूनशिष्यौघम ।
त्रितुलप्रभूतियन्तारय्य ता को-
मण्डलवेन्दोडिन्नवर पेम्प पेलव्रेनेनेन्दोड॥२३॥

व ॥ यिन्तु विराजिसुत्तिर्द्दमसुदायदल्लि माघणन्दि भट्टारकर
गुड्ड सोवरस-सूनु सान्तण्णनु देन्तप्पुदु ॥

वृ ॥ जगतीसम्भूतधर्म्माङ्कुर देम्बन्ते भूकान्त रा
जगदि पेत्तिर्द्द पोण्गेलसद कलसविदेम्बन्ते भव्यावलीके-

लिगे रम्यस्थानमेम्बन्तिरे सुकृतिसुधासूतिविम्बोदयैन्द्री-
नगवे बन्दावग रञ्जिसिदुदु वसुधाचक्रदोल् जैनगेह ॥२४॥

क ॥ आ-जिनभवनदोलोप्पुव
मूजगपतिशान्तिनाथ॰तन्नमलपदा
म्भोजङ्गलोलदु भव्यस
माज लिगे नुदितोदयम ॥ २५ ॥

इन्तोल्दु मललकेरेयोल्
शान्तीशनिशान्तवेसेये निर्म्मिसि निखिला-
शान्तायतकीर्त्ति
सातनिप्पनुर्व्वीवर्ण्य ॥ २६ ॥

व ॥ अन्तिर्द्दु तन्निष्टगोत्रमित्रपुत्रकलत्रादिसुखसम्भूतिनिमित्त **सातरणानगण्यपुण्यप्रभाव शकवर्षद ११७० नेयप्लवङ्ग सवत्सरद फाल्गुण सु ५** आ श्रीशान्तिनाथस्वामिय प्रतिष्ठेय माडिया-जिनपरियर्च्चनेगमाहारदानक्कमेन्दु बिट्ट भूमि आ नाडुसेनबोव **विजयरणा सोवण्ण**-मदुकण्णानु समस्तनाडुगौडगलू मुख्यवागि **सोवण्णानु मललकेरेयल्लि** माडिसिद चैत्यालयक्के बिट्ट भूमिय सीमासम्बन्धवेन्तेन्दडे

(यहा सीमा वर्णन और अन्तिम श्लोक है)

[अर्केलगुड् १२]

[इस लेख में प्रथम होयसलवश के बल्लालदेव, नरसिंह और सोमेश्वरदेव का वर्णन है। सामेश्वरदेव के वर्णन मे कहा गया है कि उन्होंने कलिङ्गनरेश का मस्तक विदीर्ण किया, सेवुण राजा को नष्ट

किया, मालव नरेश को जीता मगर राज्य की नीव खोद डाली, चोल राज्य की प्रतिष्ठा की, पाण्ड्यवंश की रक्षा की, इत्यादि। इनके राज्यकाल में उनके सेनानाथ 'शान्त' ने शान्तिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। शान्त की भार्या का नाम 'भोग वे' तथा पुत्रों के नाम 'काम' और 'सात' थे। उनके गुरु की परम्परा इस प्रकार थी —मूलसंघ, देशीयगण, पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय में माघनन्दि व्रती हुए। उनके शिष्य भानुकीर्ति और उनके शिष्य माघनन्दि भट्टारक हुए। इन माघनन्दि भट्टारक के एक गृहस्थ शिष्य सोवरस के पुत्र सातण्ण ने मनलकेरे में शांतिनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया और उस पर सुवर्ण कलश की स्थापना कराई तथा उक्त तिथि को जिनार्चन व आहारदान के हेतु उक्त भूमि का दान दिया।]

५००

सोमवार ग्राम में पुरानी बस्ती के समीप एक पाषाण पर

(शक सं० १००१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ लाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन शासनं ॥ १ ॥
श्रीप्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवो जीयाच्चिरं भुवि।
विख्यातोभयसिद्धान्तरत्नाकर इति स्मृत ॥ २ ॥
अवनीचक्रक्के पूज्य निजपदमेनिसिर्द्दे सन्मार्ग्ग
क्तोदात्तसैद्धान्तिकनेसेदपनम्मम्म काणूर्ग्गण प्रो-
द्भवनु धर कुलिशधर ।
वि जिनागम नीराजहंस ॥ ३ ॥

जगदाश्चर्यमिदत्यपूर्व्वमिदरन्दक्कज्ज कूड ब-
ट्टिगेयन्तिट्टमिडल्किदेन्नरेदने पेलेम्ब कोङ्गाल्व जै
नगृह नाडे बेडङ्गुवेत्तदट्टरादित्यारनीनाथ की
र्त्तिगडर्प्पिर्प्पवोलिन्तु तार्प्पुदेने मर्त्ते वर्ण्णिप वर्ण्णिप ॥४॥
जगदोल्तानीव दा नेगलल् अदट्टरादित्य चैत्यालयक्कयै
दे गुणाम्भोराशि वीराग्रणि विजयभुजोद्भासिदिव्यार्न्चनक
नदु गड सद्भक्तियिन्द तरिगलनिय मण्णल्लि नाल्वर्त्तेरल्ख
ण्डुगबीजक्कित्तनत्युत्सवदिन् अदट्टरादित्यनादित्यतेज॥५॥
इनित सिद्धान्तदेवर्ग्गनुनयदरिदाच द्रुतार सलुत्ते
न्तेने धारापूर्व्वक कोट्टु दनुदधिजलस्थूलकल्लोललीला
वनिचक्रक्कैदे पव्विर्वत्तदनिदनुदनेनेन्दपै दानदोल्पा-
बनुम मिक्किर्प्पिन माडिसिदनेसेये सद्धर्म्मि कोङ्गाल्वभूप ॥६॥
स्वस्ति सकवर्ष १००१ नेय सिद्धार्त्थिसंवत्सर प्रवर्त्ति-
सुत्तिरे स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर ओर
यूर्प्पुरवराधीश्वर जटाचोलकुलोदयाचलगभस्तिमालि सूर्य्य
वंश-शिखामणि शरणागतवज्रपञ्जर श्रीमद्राजेन्द्रपृथुवीको-
ङ्गाल्व राज्य गेय्युत्तु श्रीमूलसङ्घद काणूर्गणद तगरिगलगच्छद
गण्डविमुक्तसिद्धान्तदेवर्ग्गे बसदिय माडिसि देवर्ग्गर्न्चना
भोगक्के तरिगलनेय माचुकल्लु हदगेदा बित्तुवट्ट काट्ट भूमि स
४२। (अन्तिम श्लोक) चतुर्भाषालिखितथकविद्याधर मन्त्र-
विग्रहि श्रीमत्कुलार्य्य बरेद मङ्गल महा श्री।

[अर्केल्गुद् ६६]

[इस लेख में उभयसिद्धान्तरत्नाकर प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव के उल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि कोङ्गाल्वनरेश अदटरादित्य ने जो अदटरादित्य चैत्यालय' निर्माण कराया था उसकी पूजन के हेतु राजा ने सिद्धा तदेव को 'तरिगलनि की ४२ खण्डुग भूमि दान कर दी।

चोलकुल के सूर्यवंशी महामण्डलेश्वर राजेन्द्र पृथुवीकोङ्गाल्व ने मूलसंघ कानूरगण, तगरिगल गच्छ के गण्डविमुक्तदेव के लिए एक बस्ती निर्माण कराई और देवपूजन के लिए उक्त भूमि का दान दिया।

यह लेख चार भाषाओ के ज्ञाता सान्धिविग्रहिक नकुलार्य का रचा हुआ है।]

अनुक्रमणिका



इस अनुक्रमणिका में जैन मुनि, आर्यिका, कवि व संघ, गण, गच्छ और ग्रन्थोंके नाम ही समाविष्ट किये गये है। नाम के पश्चात् ही जो अंक दिये गये हैं उनसे लेख नम्बर का अभिप्राय है। भू० के पश्चात् जो अंक दिये गये हैं वे भूमिका के पृष्ठ नम्बर हैं।

इस अनुक्रमणिका में निम्न लिखित संकेताक्षरों का प्रयोग किया गया है —

उ०=उपाधि। ग० वि०=गंडविमुक्त। त्रै० च०=त्रैविद्यचक्रवर्ती। त्रै० यो०=त्रैकाल्ययोगी। प०=पंडित। प० आ०=पंडिताचार्य। भ०=भट्टारक। म०=मलधारी। म० दे०=मलधारि देव। सि० च०=सिद्धान्तचक्रवर्ती। सि० दे०=सिद्धान्त देव। सै०=सैद्धान्तिक। श्वे०=श्वेताम्बर।

ग

च

छ

ज

त

द

ह

अनुक्रमणिका २

इस अनुक्रमणिकामें जैन मुनि आर्यिका, कवि व सघादिको छोड शेष सब प्रकारके नामोंका समावेश किया गया है। नामके पश्चात्के अकोंसे लेख-नबर व भू० के पश्चात्के अकोंसे भूमिका पृष्ठका तात्पय है।

इस अनुक्रमणिकामें निम्नलिखित सकेताक्षरोंका प्रयोग किया गया है।

उ०=उपाधि। को० न०=कोङ्गाल्व नरेश। ग० न०=गग नरेश। ग० रा०= गग राजकुमार। ग्र०=ग्रथ। ग्रा०=ग्राम। च० न०=चगाल्व नरेश। चा० न०= चालुक्य नरेश। चामु०=चामुण्डराय। चो० रा०=चोल राजधानी। चो० से०= चोल सेनापति। जा०=जाति। जै० म०=जैन मदिर। तृ =तृतीय। दा०=दाश निक। दु०=दुग। द्वि०=द्वितीय। न०=नरेश। नि० सर =निड्गल सरदार। नो० न०=नोलम्ब नरेश। पा० सर०=पाण्ड्य सरदार। पु०=पुरुष। पा ऋ०=पौरा- णिक ऋषि। पौ० न०=पौराणिक नरेश। प्र =प्रथम। म०=मत्री। मै० न०= मैसूर नरेश। मौ० न०=मौय नरेश। रा० न०=राष्ट्रकूट नरेश। रा० रा०=राष्ट्र कूट राजकुमार। रा० व०=राजवश। वि० न०=विजयनगर नरेश। शै० न०= शैशुनाग नरेश। सर =सरदार। सरो०=सरोवर। से० सेनापति। स्था =स्थान। हो० न०=होय्सल नरेश।

ख

ग

द

भ